प्रेरितों की क्रिया

---

१ पहिला पर्ब्ब

हे साओफलूस जोकुछ कि ईसा करता और सिखावतारहा।
२ उसदिनलों कि वुह धर्मात्मा से अपने चुनेहुए प्रेरितों को आज्ञा देके ऊपर उठायागया मैं वुह सब अगिले पुस्तक में
३ कहिचुका। कि उसने अपने मरने के पीछे आपको बहुतसे अचल प्रमाण से जीवता दिखाया कि वुह चालीस दिनलों उन्हें दिखाई दियाकिया और ईश्वर के राज्य की बातें
४ कहतारहा। और उनके संग एकठ्ठे होके उन्हें आज्ञा दिई कि यिरोशलीम से बाहर नजाओ परंतु जो बचनकि पिता ने दिया जिसकी चर्चा तुमलोग मुझसे सुनचुके उसी की
५ बाट जोहो। इसलिये कि यहिया ने तो जल से स्नान दिया परंतु तुमसब थोड़े दिन के पीछे धर्मात्मा से स्नान पाओगे।
६ सो जब वे एकठ्ठे हुए उन्हों ने यह कहिके उसको पूछा कि हे प्रभु क्या तू इसी समय इसराईल को फेर राज्य देगा।
७ उसने उन्हें कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि उन समयन अथवा कालन को जानो जिन्हें पिता ने अपनेही बश में
८ रक्खा है। परंतु जब धर्मात्मा तुम्हों पर आवेगा तुमलोग सामर्थ्य पाओगे और यिरोशलीम और सारी यहूदियः और सामरः में और पृथिवी के अत्यंत सिवानेलों मेरे साक्षी
९ होओगे। और जब वुह ये बातें कहिचुका उनके देखतेही वुह ऊपर उठायागया और मेघने उसको उनकी दृष्टि से
१० छिपालिया। और जब वे उसको ऊपर जाते आकाश के ओर तकरहेथे देखो कि दो मनुष्य उजला बस्त्र पहिने उनके

११ समीप खड़े ज़ए। और कहनेलगे कि हे जलीली लोगो तुमसब खड़े होके ऊपर स्वर्ग के ओर क्यों ताकरहेहो यही ईसा जो तुम्हों से स्वर्ग पर उठायागयाहै उसी रीति से आवेगा जिस रीति से तुमलोगों ने उसे स्वर्ग को जाते देखा।
१२ तब वे उस पहाड़ से जो जलपाई का कहावताहै और यिरोशलीम से एक बिश्रामदिन के टप्पे पर है यिरोशलीम
१३ को फिरे। और वे भीतर आके एक उपरौटी कोठरी में गये जहां पतरस और याकूब और यूहन्ना और अंद्रयास और फैलबूस और तूमा और बारसूलमा और मत्ती और हल्फा का पुत्र याकूब और शमऊन ज्वलन और याकूब का
१४ भाई यहूदा रहतेथे। ये सब स्त्रिअन के संग और ईसा की माता मरियम के और उसके भाइयों के संग मनलगाके
१५ प्रार्थना और बिनती कररहेथे। और उन्हीं दिनों में शिष्यन के मध्य में जो गिनती में एक सौ बीस के अंटकल थे
१६ पतरस खड़ा होके बोला। हे मनुष्य भाइयो उस लिखेज़ए का संपूर्ण होना अवश्य था जो धर्मात्मा ने दाऊद के मुंह से आगम कहाथा यहूदा के बिषय में जो ईसा के पकड़वैयन
१७ का अगुआ ज़आ। क्योंकि वुह हमलोगों में गिनाजाताथा
१८ और उसने उस सेवकाई का भाग पाया। अब इस मनुष्य ने बुराई के दाम से एक खेत मोललिया और औंधे मुह गिरा और उसका पेट फटगया और उसकी सारी
१९ अतड़ियां निकलपड़ीं। और यह यिरोशलीम के सारे बासियों को जानपड़ा इहांलों कि उस खेत का नाम उनकी ठीक भाषा में हकलदमा ज़आ अर्थात् रुधिर का खेत।
२० इसलिये कि भजन के पुस्तक में यह लिखाहै कि उसका घर उजाड़ होय और उसमें कोई मनुष्य नबसे और उसका पद
२१ दूसरा लेय। सो जो लोग उस समय में हमारे संग सदा चलतेथे अर्थात् जब से प्रभु ईसा हमों में आताजाताथा।

२२ यहिया के स्नान से आरंभकरके उस दिन लों कि वुह हमों मेंसे ऊपर उठायागया उनमेंसे उचित है कि एक जन जो उसके फेर उठने को साक्षी हो हमारे संग ठहरायाजाय।
२३ तब उन्हों ने दो को ठहराया एक यूसफ जो बारसाबास कहावताहै जिसकी पदवी जसतस है और दूसरा
२४ मतसैयास। और वे प्रार्थना में बोले हे प्रभु जो सब का अंतर्यामी है दिखाउ कि इन दोनों मेंसे तूने किसको चुनाहै।
२५ कि वुह उस सेवकाई और प्रेरितताई का भाग लेवे जिस्से यहूदा पाप करके भ्रष्ट हुआ कि वुह अपनेही स्थान को
२६ जाय। और उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी मतसैयास के नाम पर निकली तब वुह ग्यारह शिष्यन में मिलायगया।

२ दूसरा पर्ब्ब

और जब पचासवां दिन संपूर्ण आनपहुंचा वे सब एकमता
२ से एक स्थान में एकट्ठे थे। तब अचानक स्वर्ग से एक शब्द आया जैसे बहुत बड़ी आंधी का होताहै और उस्से सारा
३ घर जहां वे बैठेथे भरगया। और उन्हें अग्नि के समान जीभ अलग अलग दिखाई दिईं और उनमेंसे हरएक पर पड़ीं।
४ तब वे सबकेसब धर्मात्मा से भरगये अरु आनआन भाषा से
५ कहनेलगे जैसा कि आत्मा ने उनसे कहवायाथा। और कितने धर्मी यहूदी हरएक देश से जो स्वर्ग के तले है
६ यिरोशलीम में आरहेथे। और जब कि यह फैलगया मंडली एकट्ठी होके आई और व्याकुल हुई क्योंकि हरएक
७ मनुष्य ने उन्हें अपनी अपनी भाषा में बोलते सुना। और वे सब आश्चर्य और बिस्मित होके आपुस में कहनेलगे कि देखो
८ क्या ये सब जो बोलतेहैं जलीली नहीं। सो कैसा है कि हरएक हमोंमें से अपने देश की बोली सुनताहै जहां हम
९ उत्पन्न हुए। फारसी और माजो और ऐलामी और

इराकिअजम के रहवया और यहूदियः और कपादूकियः
१० और पनतस और आसिया के। और फरजियः और
पंफालियः और मिसर और लिबिया के उस सिवाने के बासी
जो करीनी के आसपास है और रूम के परदेशी और
११ यहूदी और नये यहूदी। करीती और अरबी हमसब
सुनतेहैं कि वे हमारी भाषा में ईश्वर की सुंदर बातें
१२ कहतेहैं। और उनसभों ने आश्चर्य किया और संदेह में
१३ होके एक दूसरेको कहनेलगा कि क्या होगा। कितनों ने
ठठा करके कहा कि ये लोग नई मदिरा के अमल में हैं।
१४ तब पतरस ने उन ग्यारह के संग खड़ा होके उन्हें बड़े
शब्द से बोलके कहा कि हे यहूदी मनुष्यो और समस्त जो
यिरोशलीम में बास करतेहो यह तुमसभों को जानाजाय
१५ और मेरा बचन कान लगाके सुनो। कि ये लोग जैसा
तुम लोग समुझते हो मतवाले नहीं हैं इसलिये कि यह दिन
१६ की तीसरी घड़ी है। परंतु यह वुह है जो जोईल
१७ आगमज्ञानी के ओर से कहागया। कि ईश्वर कहताहै
अंत्य समय में ऐसा होगा कि मैं हरएक मनुष्य पर अपना
आत्मा डालोंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां आगम
कहेंगी और तुम्हारे तरुण दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध स्वप्न
१८ देखेंगे। मैं उन दिनों में अपने दास और अपनी दासियों
१९ पर अपना आत्मा डालोंगा और वे आगम कहेंगे। और
मैं ऊपर स्वर्ग में अचरज और नीचे पृथिवी पर लक्षण
दिखाओंगा अर्थात् लोहू और आग और धूंए के उठान
२० होंगे। प्रभु के उस बड़े और प्रसिद्ध दिन के पहिले सूर्य
२१ अंधकार होजायगा और चंद्रमा लोहू। और ऐसा होगा
२२ कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा उद्धार पावेगा। हे
इसराईली मनुष्यो ये बातें सुनो कि ईसा नासरी एक
मनुष्य था जिसका ईश्वर के ओर से होना तुम्हारे समीप

ठहरगया उन पराक्रमश्रोर आश्चर्य्य और लक्षण के कारण
से जो ईश्वर ने उसके ओर से तुम्हारे बीच दिखाये जिसके
२३ तुमसब भी जानकार हो। ईश्वर के ठहरायेगये मत और
पूर्व्वज्ञान से सौंपेजऐ को तुम्हों ने पकड़ा और बुरे हाथों
२४ से कील गाड़के क्रूस पर टांगकर मारडाला। ईश्वर ने
मृत्यु के बंधन को खोलके उसे फेर उठाया क्योंकि यह
२५ अनहोना था कि वुह मृत्यु के बंधन में पड़ारहे। इसलिये
कि दाऊद उसके बिषय में कहताहै कि मैंने प्रभु को आगे से
सर्व्वदा अपने समीप देखा कि वुह मेरे दहिने ओर है नहोवे
२६ कि मैं टलजाऊं। इसकारण मेरा मन प्रसन्न है और
मेरी जीभ आनंद हां मेरा शरीर भी आशा में चैन से
२७ रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में नछोड़ेगा
२८ नअपने धर्मी को सड़ने देगा। तूने मुझे जीवन के मार्ग का
पहिचान दियाहै और तू अपने स्वरूप से मुझे आनंद से
२९ भरदेगा। हे मनुष्य भाइयो योग्य है कि मैं लोगों के प्रधान
दाऊद के बिषय में तुम्हें निश्चिंत से कहों कि वुह तो मरगया
और गाड़ा भी गया और आज लों उसकी समाधि हममेंहै।
३० सो वुह आगमज्ञानी होके जानताथा कि ईश्वर ने उससे
किरिया खाके कहा कि मैं मसीह को देह के बिषय में तेरी
कमर के फल से उठाओंगा कि तेरे सिंहासन पर बैठे।
३१ उसने यह पहिले जानके ईसा के जोउठने की कही कि
उसका प्राण परलोक में नछोड़ागया नउसका देह सड़ने
३२ पाया। इस ईसा को ईश्वर ने उठाया जिस बात के
३३ हमसब साक्षी हैं। सो ईश्वर के दहिने ओर बढ़ायाजाके
और पिता से प्रतिज्ञा पाके उसने यह बहाया जो तुमलोग
३४ अब देखते और सुनतेहो। इसलिये कि दाऊद स्वर्ग पर
नहीं गया परंतु उसने आप कहा कि प्रभु ने मेरे प्रभु को
३५ कहा। कि जबलों मैं तेरे शत्रुन को तेरे पांव का पीढ़ा

३६ कहो तू मेरे दहिने ओर बैठ। सो इसराईल का सारा घराना निश्चय जाने कि ईश्वर ने उसी ईसा को जिसे तुमसब
३७ ने क्रूस पर टांगा प्रभु और मसीह किया। जब उन्हों ने यह सुना तो उनके मन छेदगये और पतरस अरु और
३८ प्रेरितों को बोले कि हे मनुष्य भाइयो हम क्या करें। तब पतरस ने उनको कहा कि पछताओ और हरएक तुम्होंमें से पाप मोचन के कारण ईसा मसीह के नाम से स्नान पावे कि
३९ तुमलोग धर्मात्मा दान पाओगे। इसलिये कि यह प्रतिज्ञा तुमलोगों से और तुम्हारे बालकन से है और उन सभों से जो दूर हैं जितनों को हमारा प्रभु ईश्वर बुलावेगा।
४० और उसने बहुतेरे और और बचन से साक्षी लाके और उपदेश करके कहा कि आपको इस दुष्ट लोग से बचाओ।
४१ तब वे जो उसका बचन आनंद से ग्रहण कियेथे स्नान पाये और उसी दिन तीन सहस्र मनुष्य के अंटकल में उनमें
४२ मिलगये। और वे प्रेरितों की शिक्षा और संगति और
४३ रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में नित्य दृढ़ रहे। और हरएक प्राणी पर भय आया और बहुतसे अद्भुत और
४४ लक्षण प्रेरितों से प्रगट हुए। और वे सब जो बिश्वास लायेथे एकट्ठे थे और समस्त बस्तें उन्हें समान मिलीथीं।
४५ और अपना धन और सामग्री को बेचके सभों को जिसको
४६ जितना आवश्यक था बांटके देतेरहे। और वे एकमता होके प्रतिदिन मंदिर में रहतेथे और घरघर रोटियों को तोड़के प्रसन्नता और अंतःकरण की आनंदता से खातेथे।
४७ और ईश्वर की स्तुति करते और सब लोगों के निकट मर्यादा रखतेथे और प्रभु मंडली में उद्धार पावनिहारों को प्रतिदिन अधिक करताथा।

३ तीसरा पर्ब्ब

फिर पतरस और यूहन्ना एकट्ठे होके प्रार्थना के समय
२ नवईं घड़ी को मंदिर में जानेलगे। और लोग एक मनुष्य
को जो माता के गर्भ से लंगड़ाथा लेगयेथे उसे प्रतिदिन
मंदिर के द्वार पर जिसका नाम सुंदर है बैठातेथे कि
३ उन्हों से जो मंदिर में प्रवेश करतेथे भीख मांगे। उसने
जेउं पतरस और यूहन्ना को मंदिर में जाते देखा तो उनसे
४ भीख मांगी। तब पतरस ने यूहन्ना के संग उसको ध्यानसे
५ देखके कहा कि हम पर दृष्टि कर। और वुह इस आशा
६ से कि उनसे कुछ पावे उन्हें तक रहा। तब पतरस ने कहा
कि रूपा और सोना मेरे पास नहीं परंतु जो मेरे पास है
मैं तुझे देताहों ईसा मसीह नासरी के नाम से उठ और
७ चल। और उसने उसका दहिना हाथ पकड़के उठाया
८ और तुरंत उसके पाओं और घुट्ठियां बल पागईं। और
वुह कूदके उठखड़ाहुआ और चलता फिरता और उछलता
कूदता और ईश्वर की स्तुति करताहुआ उनके संग मंदिर
९ में प्रवेश किया। और सब लोगों ने उसे चलते फिरते
१० और ईश्वर की स्तुति करते देखा। और चीन्हा कि यह
वही है जो मंदिर के सुंदर द्वार पर भीख मांगते बैठताथा
और वे उस्से जो उसपर बीतगयाथा निपट आश्चर्य करके
११ बिस्मित हुए। और जेउं वुह लंगड़ा जो चंगाहुआ पतरस
और यूहन्ना को लपटाजाताथा सब लोग ओसारे में जो
सुलेमान का कहावताथा बड़े आश्चर्य से उनके ओर दौड़े
१२ आवतेथे। तब पतरस ने देखके मंडली से कहा कि हे
इसराईली मनुष्यो तुमसब उस मनुष्य पर क्यों आश्चर्य
करतेहो और क्यों हमें देखरहेहो जैसा कि हमने अपने
पराक्रम और पवित्रता से इस मनुष्य को चलनिहार किया।
१३ इबराहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे

पितरन के ईश्वर ने अपने पुत्र ईसा को ऐश्वर्यमान किया जिसको तुमसब ने सौंपदिया और पिलातूस के सन्मुख उसे
१४ मुकरगये जब उसने उचित जाना कि उसे छोड़देवे। परंतु तुमसब उस धर्मी और सत्यबादी से मुकरगये और एक बधिक की इच्छा किई कि तुम्हारे कारण छोड़दियाजाय।
१५ और जीवन के अध्यक्ष को मारडाला जिसको ईश्वर ने
१६ मृतकन मेंसे उठाया और उसके हम साक्षी हैं। और उसके नाम पर बिश्वास लावने से इस मनुष्य को जिसे तुमसब देखते और जानतेहो उसके नामने बली किया हां उस बिश्वास ने जो उसपर है तुमसब के सन्मुख उसे ऐसा ठीक
१७ चंगा किया। और अब हे भाइयो मैंने जाना कि तुमसभों ने और तुम्हारे प्रधानों ने भी अज्ञानता से यह किया।
१८ परंतु ईश्वर ने जोकुछ पहिले अपने समस्त आगमज्ञानियों के मुंह से कहाथा कि मसीह कष्ट पावेगा इसी रीति से
१९ उसने पुरा किया। सो अब पछताओ और फिरायेजाओ कि तुम्हारे पाप मिटाएजांय जिसतें प्रभु के समीप से
२० हरियाली होने के दिन आवें। और वुह ईसा मसीह को
२१ भेजेगा जिसका समाचार तुम्हें आगे से दियागयाहै। इस कारण कि जबलों समस्त बचन जो ईश्वर ने अपने समस्त धर्मी आगमज्ञानियों के ओर से जगत के आरंभ से कहा
२२ संपूर्ण नहों अवश्य है कि स्वर्ग उसे लियेरहे। क्योंकि मूसा ने पितरन से ठीक कहा कि प्रभु जो तुम्हारा ईश्वर है तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे कारण एक आगमज्ञानी को मेरे समान उदय करेगा तुम समस्त बस्तुन में जोकुछ कि
२३ वुह तुम्हें कहेगा उसे मानियो। और ऐसा होगा कि हरएक प्राणी जो उस आगमज्ञानी की नसुनेगा लोगों से
२४ निकाल दियाजायगा। हां और समस्त आगमज्ञानियों ने समुईल से लेके और वे जो उसके पीछे आये हैं जितनों ने

२५ कहाहै इन दिनों का भी संदेश दियाहै। तुमसब उन आगमज्ञानियों के संतान हो और वुह नियम जो ईश्वर ने हमारे पितरन से करके इब्राहीम से कहा कि तेरे
२६ बंश से पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे। ईश्वर ने अपने पुत्र ईसा को उठाके पहिले तुमसभों के पास भेजा कि वुह तुम्में से हरएक को उसकी बुराइयों से फिराके कल्याण देय।

४ चौथा पर्व्व

और जब वे लोगों से कहिरहेथे याजक और मंदिर के
२ प्रधान और ज़ादूकी उनपर लपके। कि वे उस बात से उदास ऊए कि उन्हों ने लोगों को उपदेश किया और
३ संदेश दिया कि ईसा के कारण से मृतक उठेंगे। तब उन्हों ने उनपर हाथ डाले और दूसरे दिनलों बंदीगृह में रक्खा
४ क्योंकि अब संध्याकाल ऊआथा। तथापि बऊत उनमें से जिन्हों ने बचन सुना बिश्वास लाये और सब समेत गिनती
५ में पांच सहस्र के लगभग थे। और दूसरे दिन ऐसा ऊआ कि उनके प्रधान और प्राचीन और अध्यापक।
६ और प्रधान याजक हन्ना और कयाफा और यूहन्ना और सिकंदर और बऊतसे जो प्रधान याजक के कुटुंब थे यिरोशलीम
७ में एकट्ठे ऊए। और उन्हों ने उन्हें मध्य में खड़ा करके पूछा कि तुम्हों ने किस पराक्रम और किस नाम से यह
८ किया। तब पतरस ने धर्मात्मा से भरपूर होके उन्हें कहा
९ कि हे लोगों के प्रधानो और इसराईल के प्राचीनो। जो उस शुभ कार्य के बिषय में जो इस रोगी मनुष्य पर कियागयाहै हमसे आज पूछाजाताहै कि वुह क्योंकर चंगा
१० ऊआ। तो तुम्हों को और सारे इसराईल के लोगों को जानाजाय कि ईसा मसीह नासरी के नाम से जिसको

तुमसभों ने क्रूस पर मारा और जिसे ईश्वर ने फेरके
जिलाया उसी से यह मनुष्य तुम्हारे सन्मुख चंगा खड़ाहै।
११ यह वुह पत्थर है जिसको तुमसब थवइयों ने निकम्मा
१२ ठहराया जो कोनेका सिरा ऊआ। और किसी दूसरे
में मोक्ष नहीं क्योंकि स्वर्ग के तले कोई दूसरा नाम मनुष्यन
को नहीं दियागयाहै जिस्से हमलोग उद्धार पासकें।
१३ और जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना की दृढ़ताई
देखी और जाना कि वे अपढ़े और मूर्खहैं वे बिस्मित
१४ ऊरे और जानगये कि वे ईसा के संग थे। और उस मनुष्य
को जो चंगा कियागयाथा उनके संग खड़ा देखके निरुत्तर
१५ ऊए। तब उन्हों ने आज्ञा किई कि वे सभा से बाहर
१६ जांय और आपुस में बिचार करनेलगे। कि हमसब इन
मनुष्यन को क्या करें क्योंकि यह यिरोशलीम के समस्त
बासियों पर प्रगट है कि उन्हों ने एक ठीक लक्षण दिखाया
१७ और हमलोग मुकर नहीं सक्ते। परंतु जिसतें वुह लोगों
में अधिक नफैले आओ हम उन्हें दृढ़ता से धमका देवें कि वे
१८ इस नाम की चर्चा फेर किसीसे नकरें। तब उनको बुलाके
आज्ञा किई कि ईसा के नाम से कधी नकहें और नसिखावें।
१९ तब पतरस और यूहन्ना ने उत्तर दिया और उन्हें कहा
क्या ईश्वर के समीप यह ठीक है कि हम तुम्हें अथवा
२० ईश्वर को अधिक मानें तुमहीं बिचार करो। क्योंकि यह
नहीं होसक्ता कि हम उन बस्तुन को जिन्हें हमने देखा
२१ और सुनाहै नकहें। तब उन्हों ने उनको अधिक धमकाके
छोड़दिया क्योंकि उन्हों ने कुछ दोष नपाया कि उन्हें दंड
देवें और लोगों से भी डरे क्योंकि सबलोग उसके लिये जो
२२ कियागयाथा ईश्वर की स्तुति करतेथे। और उस मनुष्य का
बय चालीस बरस से अधिक था जिस पर यह चंगाहोने का
२३ लक्षण दिखायागया। और वे बिदा होके अपने संगियों के

पास गये और सब कुछ जो प्रधान याजकों और प्राचीनों ने
२४ कहाथा उन्हें कहिसुनाये। और वे यह सुनके एकमता ऊए
और ईश्वर के ओर बड़ा शब्द करके बोले कि हे प्रभु तू वुह
ईश्वर है जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब
२५ कुछ जो उनमें हैं बनाया। तूने अपने दास दाऊद के मुंह
से कहा कि अन्यदेशी क्यों धूम मचातेहैं और लोग क्यों मिथ्या
२६ चिंता करतेहैं। प्रभु पर और उसके मसीह पर बीरोधी
२७ होके पृथिवी के राजा उठे और प्रधान एकट्ठे ऊए। क्योंकि
सचमुच हिरुदीस और पंतियूस पिलातूस अन्यदेशियों और
इसराईली लोगों के संग तेरे पवित्र पुत्र ईसा के जिसे तूने
२८ मसीह किया बिरोध में एकट्ठे ऊए। कि जोकुछ तेरे
हाथ और तेरे बिचार ने पहिले ठहराया उसे करें।
२९ और हे प्रभु अब उनकी धमकियों को देख और अपने दासों
को यह दान कर कि वे दृढ़ताई से तेरे बचन का बर्णन करें।
३० और अब इसलिये अपना हाथ चंगा करने को बढ़ा कि तेरे
पवित्र पुत्र ईसा के नाम से लक्षण और आश्चर्य प्रगट
३१ होवें। और जब वे प्रार्थना करचुके वुह स्थान जिसमें वे
एकट्ठे थे हिलगया और वे सब धर्मात्मा से भरगये और
३२ ईश्वर का बचन निर्भय से बोले। और बिश्वासियों की
मंडली एक मन और एक जीव थी और किसी ने अपनी
संपत्ति मेंसे कोई बस्तु को अपनी नकहा परंतु समस्त बस्तु
३३ सब की थी। और प्रेरितों ने बड़े पराक्रम से प्रभु ईसा
के फेर उठने पर साक्षी दिई और उनपर बड़ा अनुग्रह
३४ था। और उनके बीच में कोई दरिद्र नथा इसलिये कि
जितने कि भूमि और घर के स्वामी थे उन्हें बेंचतेथे और
३५ बेंचबेंचके उनके मोल को लावतेथे। और प्रेरितों के चरण
पास रखतेथे और हरएक को जिसे जितना आवश्यक था
३६ भाग दियाजाताथा। और यूससने जिसको प्रेरितों ने

३७ बरनबास कहा अर्थात् शांति का पुत्र। जो लूई के वंश से
३८ और कबरस का वासी था। अपनी भूमि को जो उसके
वश में थी बेंचा और मोल को लेके प्रेरितों के चरण पास
रक्खा।

५ पांचवां पर्व्व

और हनानिया नाम एक मनुष्य ने अपनी स्त्री सफीरा के
२ संग होके एक संपत्ति बेंची। और मोल मेंसे कुछ रखछोड़ा
उसकी स्त्री भी जानतीथी और कुछ लाके प्रेरितों के चरण
३ पास रक्खा। तब पतरस ने कहा हे हनानिया क्यों तेरे
मन में शयतान समागया कि तू धर्मात्मा के सन्मुख झूठा
४ ऊआ और भूमि के मोल मेंसे कुछ रखछोड़ा। क्या यह
जबलों तेरे वश में थी तेरी नथी और जब बेंचीगई तो
क्या तेरे वश में नथी तूने अपने मन में इस बात को क्यों
आनेदिया तू मनुष्य के आगे नहीं परंतु ईश्वर के आगे
५ झूठा ऊआ। और हनानिया ये बातें सुनतेही गिरपड़ा
और मरगया तब उनसभों को जिन्हों ने ये बातें सुनीं
६ बड़ा भय ऊआ। और तरुणलोगों ने आके उसे वस्त्र में
७ लपेटा और बाहर लेजाके गाड़दिया। और पहरभर
के अटकल बीते उसकी स्त्री उस बात को जो बीतगईथी
८ बिनाजानेऊए आई। तब पतरस ने उसे कहा मुझे बतला
९ तूने भूमि इतनेको बेंची वुह बोली हां इतनेको। फेर
पतरस ने उसे कहा कि तुम्हों ने एकमता होके किस कारण
से यह काम किया कि ईश्वर के आत्मा की परीक्षा करो
देख जिन्हों ने तेरे पति को गाड़ा उनके पांव द्वार पर हैं
१० और तुझे भी लेजायंगे। तब वुह तुरंत उसके चरण पास
गिरपड़ी और मरगई और तरुण लोगों ने आके उसको
मरीऊई पाया और बाहर लेजाके उसके पति के समीप

११ गाड़ा। उस समय समस्त मंडली को और उनसभों को
१२ जिन्हों ने ये बातें सुनीं बहुत भय हुआ। और लोगों के
बिषे प्रेरितों के हाथों से बहुतसे आश्चर्य कर्म दिखायेगये
और वे एकमता होके सुलेमान के ओसारे में रहतेथे।
१३ अब और लोगों मेंसे किसी को साहस नहुआ कि उनमें
१४ मिलें परंतु मंडली ने उनकी प्रतिष्ठा किई। तब पुरुष
और स्त्री मंडली की मंडली ईश्वर पर बिश्वास लाके
१५ अधिक होतीजातीथी। यहांलों कि लोग रोगिया को
मार्गों में लेआके बिछौने और खाटों पर रखतेथे कि
चलतेहुए पतरस की परछाहीं उनमें से किसीपर पड़े।
१६ और बहुतसे लोग चारों ओर के नगरों के भी रोगियों
को और उनको जो अपवित्रात्मा से ग्रस्त थे यिरोशलीम
१७ में लातेथे और सब चंगे होतेथे। तब प्रधान याजक
और उसके समस्त संगी जो जादूकियों के मत के थे डाह
१८ से भरगये। और प्रेरितों पर हाथ डाले और उन्हें
१९ सामान्य बंदीगृह में बंद किया। तब प्रभु के दूत ने रात
को बंदीगृह के द्वारन को खोला और उन्हें बाहर
२० निकालके कहा। जाओ मंदिर में खड़े होके उस जीवन
२१ की सारी बातें लोगों से कहो। वे यह सुनके बड़े तड़के
मंदिर में प्रवेश करके उपदेश करनेलगे तब प्रधान याजक
और उसके संगियों ने आके सभा को और इसराईल के
संतानों के समस्त प्राचीनों को एकठ्ठे बुलाया और आज्ञा
२२ करके बंदीगृह में भेजा कि उन्हें लेआवें। परंतु प्यादों ने
वहां पहुंचके उन्हें बंदीगृह में नपाया तब उलटे फिरके
२३ उन्हें संदेश दिया। कि हमों ने तो बड़ी सैंचेती से
बंदीगृह को बंद पाया और रखवारों को द्वार के आगे
खड़ेहुए देखा परंतु जब हमों ने खोला तो किसी को भीतर
२४ नपाया। सो जब बड़े याजक और मंदिर के प्रधान और

प्रधान याजकों ने येबातें सुनी तो घबराये कि यह क्या
२५ होगा। तब एक ने आके उनसे कहा देखो वे मनुष्य जिनको
तुम्हों ने बंदीगृह में डालाथा मंदिर में खड़े हैं और
२६ लोगों को उपदेश करतेहैं। तब प्यादों को लेके प्रधान
गया और उन्हें लेआया और लेआने में बरबस नकिया
२७ क्योंकि वे लोगों से डरे कि उनपर पथरवाह नकरें। और
उन्हें लाके सभा के सन्मुख खड़ा किया और प्रधान याजक
२८ ने उनसे पूछा। कि क्या हमसब ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा नकिई
कि तुमलोग इस नाम से उपदेश नकरो और देखो तुम्हों ने
यिरोशलीम को अपने उपदेश से भरदियाहै और चाहतेहो
२९ कि इस मनुष्य का लोहू हमसब पर रक्खो। तब पतरस
अरु और प्रेरितों ने उत्तर देके कहा हमें उचित है कि
३० ईश्वर को मनुष्य से पहिले मानें। हमारे पितरन के ईश्वर
ने ईसा को उठाया जिसे तुमसभों ने लकड़ पर लटकाके
३१ मारडालाथा। उस अगुआ और मुक्ति दाता को ईश्वर ने
अपने दहिने हाथ से बढ़ाया कि इसराईल को पश्चात्ताप
३२ करवाके पापों से छोड़ावे। और इन बातों के हमलोग साक्षी
हैं और धर्मात्मा भी जिसे ईश्वर ने उन्हें दियाहै जो उसे
३३ मानतेहैं। वे यह सुनके कटगये और परामर्ष किया कि
३४ उन्हें मारडालें। तब जमलईल नाम एक फरीसी ने जो
शास्त्र का अध्यापक और सब लोगों में आदरमान था उठके
३५ आज्ञा किई कि प्रेरितों को तनिक बाहर करो। और
उन्हें कहा हे इसराईल के मनुष्यो तुमलोग सैंचेत रहो
३६ कि उन मनुष्यन के विषय में क्या कियाचाहतेहो। क्योंकि
इन दिनों से आगे सूदास ने उठके अहंकार से अपने को
कुछ ठहराया और गिनती में चार सहस्र मनुष्य के लगभग
उसे मिलगये वुह मारागया और सब जितने कि उसके
३७ अधीन थे छिन्न भिन्न होके मिटगये। इस मनुष्य के

पिछे यहूदा जलीली कर लेने के दिनों में उठा और अपने पीछे बहुतसे लोगों को खींचलाया वुह भी नष्ट हुआ और
३८ जितने उसके अधीन थे मिटगये। सो अब मैं तुम्हों से कहताहों कि इन मनुष्यन से परे रहो और उन्हें रहनेदेउ क्योंकि जो यह परामर्ष और यह कार्य मनुष्य से है तो
३९ मिटजायगा। परंतु जो यह ईश्वर से है तुमसब उसे उलटा नहींसक्ते ऐसा नहो कि तुमलोग ईश्वर से लड़निहार
४० ठहरो। और उन्हों ने उसे माना और प्रेरितों को बुलाके मारा और आज्ञा किई कि ईसा के नाम से कुछ नबोलें
४१ और उन्हें छोड़दिया। सो वे सभा के सन्मुख से आनंद करते चलेगये कि हम इस योग्य के गिनेगये कि उसके नाम
४२ के लिये अपमान होवें। और वे प्रतिदिन मंदिर में और घर घर में उपदेश करनेसे और ईसा मसीह के मंगल समाचार सुनावने से अलग नरहे।

६ छठवां पर्ब्ब

और उन दिनों में जब शिष्यन् की बढ़ती होनेलगी यूनानियों ने इबरानियों से दंगा किया क्योंकि सेवा करने में प्रति
२ दिन उनकी बिधवन से आनाकानी करतेथे। तब उन बारहने शिष्यन की मंडली को बुलाके कहा यह उचित नहीं कि हम ईश्वर के बचन को छोड़के खाने पीने की सेवा
३ करें। सो हे भाइयो तुमसब अपने मेंसे सात परखेहुए मनुष्य को चुनो जो धर्मात्मा और ज्ञान से भरेहुएहों जिन्हें
४ हम इस कार्य पर ठहरावें। परंतु हम आप प्रार्थना में
५ और बचन की सेवा में नित्य लवलीन रहेंगे। सो उस बचन से समस्त मंडली प्रसन्न हुई और उन्हों ने इस्तीफान नाम एक मनुष्य को जो बिश्वास और धर्मात्मा से भराहुआथा और फैलबूस और परकरस और नीकानूर और तैमून

और पारमनास और नीकलाऊस नया यहूदी अंताकी को
६ चुनलिया। जिन्हें उन्हों ने प्रेरितों के सन्मुख खड़ाकिया
७ और प्रार्थना करके उन पर हाथ रक्खे। और ईश्वर
का बचन बढ़तागया और यिरोशलीम में शिष्यन की मंडली
बढ़गई और याजकों की बड़ी मंडली भी बिश्वास के आधीन
८ ऊई। और इस्तीफान जो सामर्थ्य और बिश्वास से परिपूर्ण
था बड़े आश्चर्य और लक्षण लोगों को दिखायाकिया।
९ तब लीबर्त्तियों और करनियों और स्कंदरियों और
कलकिया और आसिया के लोगों की मंडली मेंसे कितने
१० उठके इस्तीफान से बिबाद करनेलगे। और वुह ऐसाही
ज्ञान और आत्मा से बातें करताथा कि वे उसका सामना
११ नकरसके। तब उन्हों ने लोगों को भड़काया जो बोले
कि हमों ने उसको मूसा और ईश्वर के बिषय में पाषंडता
१२ बकते सुनाहै। और उन्हों ने मंडली और प्राचीनों
और अध्यापकों को उसकाया और लपकके उसे पकड़ा
१३ और सभा में लाये। और झूठेसाक्षी खड़ेकिये जिन्हों ने
कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान के और व्यवस्था के
१४ बिषय में पाषंडताबकना नहीं छोड़ता। क्योंकि हमों ने
उसे कहते सुनाहै कि यह ईसा नासरी इस स्थान को
ढायेगा और उन व्यवहारन को जो मूसा ने हमसभों को
१५ सौंपा बदल डालेगा। तब सभोंने जो सभा में बैठेथे उस
पर टक लगाके दृष्टिकिई और उसके स्वरूप को देखा कि
दूत के समान स्वरूप था।

७ सातवां पर्व्व

२ तब प्रधान याजक ने पूछा कि ये बातें योंहीं हैं। वुह
बोला कि हे मनुष्य भाइयो और हे पितरो सुनो हमारे
पिता इबराहीम पर तेजमय ईश्वर प्रगट ऊआ जब वुह

ईरम नहर में था उस्से पहिले कि वुह खरान में बसाथा।
३ और उसे कहा कि अपने देश और अपने कुटुंब मेंसे निकलजा और उस भूमि में चलाआ जो मैं तुझे दिखाओंगा।
४ तब उसने कल्दियों के देश से बाहर जाके खरान में बास किया और जब उसका पिता मरगया वुह वहां से इस देश
५ में उठआया जिसमें अब तुमलोग बसतेहो। और उसको वहां कुछ अधिकार पैरभर भूमिलों नदिई पर उसने बचन दिया कि मैं यह भूमि तेरे और तेरे पीछे तेरे बंश के बश में
६ देऊंगा और तब उसका कोई पुत्र नथा। और ईश्वर ने इस रीतिसे कहा कि तेरा बंश परदेश में जारहेगा और वे उनको बश में लावेंगे और चार सौ बरसलों उनसे बुरा ब्यवहार
७ करेंगे। और ईश्वर ने कहा कि उन लोगों को जिनके वे दास होंगे मैं दंड देऊंगा और उसके पीछे वे बाहर आवेंगे
८ और इस स्थान में मेरी सेवा करेंगे। और उसने उसे खत्नः का नियम दिया सो उस्से इसहाक उत्पन्न हुआ और आठवें दिन उसका खतनःकिया और इसहाक से याकूब
९ और याकूब से घराने के बारह प्रधान उत्पन्न हुए। और प्रधानों ने डाह से यूसफ को मिसर में बेंचा परंतु ईश्वर
१० उसके संग था। और उसने उसको समस्त कष्ट से छुड़ाया और मिसर के राजा फरऊन के आगे उसे अनुग्रह और ज्ञान दिया और उसने उसे मिसर और अपने समस्त घर
११ का अध्यक्ष किया। अब मिसर के समस्त देश और किनान में काल पड़ा और बड़ा क्लेश हुआ और हमारे पितरन
१२ को कुछ जीविका नमिलतीथी। परंतु जब याकूब ने सुना कि मिसर में अन्न है उसने पहिले हमारे पितरन को भेजा।
१३ और दूसरे बेर यूसफ ने आपको अपने भाइयों पर प्रगट किया और यूसफ का घराना फिरऊन को जानागया।
१४ तब यूसफ ने भेजकर अपने पिता याकूब और अपने समस्त

१५ घराने को जो पचहत्तर प्राणी थे बुलवाया। सो याकूब मिसर में पज्ञंचा और वुह और हमारे पितर मरगये।
१६ और उन्हें शखीम में लेगये और उस समाधि में गाड़ा जिसे इबराहीम ने कुछ दाम देके हमूर के बेटे शखीम के पिता से
१७ मोल लियाथा। परंतु जब उस बचन का समय निकट पज्ञंचा जिस पर ईश्वर ने इबराहीम से किरिया खाईथी तब लोग
१८ बढ़नेलगे और मिसर में बढ़ती होनेलगी। जबलों दूसरा
१९ राजा ज्ञआ जो यूसफ को नजानताथा। उसने हमारी जातिपांति से छल करके हमारे पितरन से बुरा ब्यवहार किया इहांलों कि उसने उनके बालकन को भी बाहर
२० निकलवादिया कि वे जीते नरहें। उसी समय में मूसा उत्पन्न ज्ञआ जो बज्ञत सुंदर था और तीन महीने लों अपने
२१ पिता के घर में पालागया। और जब वुह निकालागया फिरऊन की पुत्री ने उसे लेके अपना पुत्र करके पाला।
२२ और मूसा ने मिसरियों की समस्त बिद्या पढ़ी और वुह
२३ बोलचाल में निपुण था। और जब पूरे चालीस बरस का ज्ञआ तो उसके मन में आया कि अपने भाईबंद इसराईल
२४ के संतानों से मिले। और उनमें से एक को अंधेर सहते देखके उसने सहाय किया और उस मिसरी को प्राण से मारके उसका प्रतिफल लिया जिस पर उपद्रव ज्ञआथा।
२५ क्योंकि उसने समुझाथा कि उसके भाईबंद जानगये कि ईश्वर
२६ उन्हें उसके हाथ से उद्धार देगा परंतु वे नसमूझे। फेर दूसरे दिन जब वे लड़रहेथे वुह उनके समीप आया और चाहा कि उन्हें मिलादेवे और बोला कि हे मनुष्यो तुम तो
२७ भाई हो तुम एक दूसरे पर क्यों अंधेर करते हो। परंतु उसने जो अपने परोसी पर अंधेर कररहाथा उसे हटाके कहा कि तुझे किसने हमपर अध्यक्ष और आज्ञाकारी कियाहै।
२८ क्या जिस प्रकार से तूने कल मिसरी को मारडाला मुझे भी

२९ मारडालने चाहताहै। फेर मूसा उस कहने पर भागा
और मदियून देश में जारहा वहां उस्से दो पुत्र उत्पन्न
३० ज़ए। और जब चालीस बरस बीतगये तब प्रभु का दूत
सीनापर्बत के बन में एक भाड़ी में अग्नि के लवर में उस पर
३१ प्रगट ज़आ। जब मूसा ने देखा वुह उस दृष्टि से बिस्मित
ज़आ और जब वुह निकट गया कि उसे अच्छी रीति से
३२ देखे तो प्रभु का शब्द उसके पास आया। कि मैं तेरे
पितरन का ईश्वर और इबराहीम का ईश्वर और इसहाक
का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हा तब मूसा कंपित ज़आ
३३ और उसको हियाव नज़आ कि देखे। तब प्रभु ने उसे कहा
कि जूती अपने पांओं से उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है
३४ पवित्र भूमि ह। मैं अपने लोगों का दुख जो मिसर में हैं
देखरहा हों और मैंने उनका बिलाप सुना और उनको
छोड़ाने को उतरा हों अब तू इधर आ मैं तुझे मिसर में
३५ भजागा। यह मूसा जिसको उन्हों ने मुकर करके कहा कि
किसने तुझे हम पर प्रधान और न्यायी किया उसीको
उस दूत के ओर से जो भाड़ी में उसपर दिखाईदिया ईश्वर
३६ ने प्रधान और छोड़ावनिहार करके भेजा। वही मिसर के
देश में और लाल समुद्र में और बन में चालिस बरस
आश्चर्य और लक्षण दिखाके उन्हें बाहर निकाललाया।
३७ यही है वुह मूसा जिसने इसराईल के संतान को कहा कि
प्रभु ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक आगमज्ञानी
३८ को तुम्हारे लिये उदय करेगा तुम उसकी मानियो। यह वुह
है जो मंडली के बीच बन में उस दूत और हमारे पितरन
के संग जो सीना पर्बत में उस्से बोला उसीने जीवन का बचन
३९ पाया कि हमसब को सौंपे। हमारे पितर उसे मान्ने को
नचाहते थे परंतु अपने पास से दूर किया और उनके मन
४० मिसर को फिरगये। और हारून को कहा कि हमारे

कारण ऐसी देवतन को बनाउ जो हमारे आगे आगे चलें क्योंकि हमसब नहीं जानते कि यह मूसा क्या ज़आहै जिसने
४१ हमसब को मिसर की भूमि से बाहर निकाला। और उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा बनाया और मूर्त्ति को बलिदान
४२ दिया और अपने हाथ के कार्यन से मगन ज़ए। तब ईश्वर ने फिरके उन्हें छोड़दिया कि आकाश के सेना की पूजा करें जैसा कि आगमज्ञानियों के पुस्तकन में लिखाहै कि हे इसराईल के संतानो तुम्हींलोगों ने चालीस बरस बन में
४३ मुझे भेंट और बलिदान दिये। हां तुमसभों ने मलक के तंबू को और अपनी देवता रंफान की तारा को अर्थात उन मूर्त्तिन को उठाया जो तुमसब ने पूजा करनेको बनाईं और
४४ मैं तुन्हें बाबुल से परे लेजाऊंगा। हमारे पित रन के बिचे साक्षी का तंबू बन में था जैसा कि उसने ठहराया जिसने मूसा से बातें कियां कि जैसा तूने देखाथा उसी डौल का एक
४५ बना। उसे हमारे बापदादे अगिलों से पाके यशूअ के संग अन्यदेशियों के देश में लाये जिन्हें हमारे पितरन के सन्मुख
४६ दाऊद के समय लों ईश्वर दूर करतारहा। दाऊद ने ईश्वर के समीप अनुग्रह पाया और मांगा कि याकूब के
४७ ईश्वर के लिये एक तंबू बनावे। परंतु सुलेमान ने उसके
४८ लिये मंदिर बनाया। तथापि अति महान उन मंदिरन में नहीं रहता जो हाथ से बनेहैं जैसाकि आगमज्ञानी कहताहै।
४९ स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे पांव तले की पीढ़ी है प्रभु कहता है तुमसब मेरे लिये कौनसा घर बनाओगे और
५० मेरे बिश्राम का कौनसा स्थान है। क्या मेरे हाथ ने समस्त
५१ बस्तें नहीं बनाईं। हे कठोर और अंतःकरण और कान के अखतनः तुमसब नित्य धर्मात्मा का बिरोध करते हो जिस प्रकार से तुम्हारे पितरन ने किया वैसाही
५२ तुमलोग भी करतेहो। कौनसे आगमज्ञानियों को तुम्हारे

पितरन ने बसंताया और उन्हें नमारडाला जिन्हों ने उस धर्मी के आवने के आगेसे संदेश दिया और तुमलोग अब
५३ उसके पकड़वावनिहार और बधिक ऊएहो। तुमसब
५४ ने व्यवस्था को दूतन के ओर से पाया और नमाना। वे ये बातें सुनतेही अपने मनमें कटगये और उस पर दांत
५५ किचकिचावनेलगे। परंतु उसने धर्मात्मा से परिपूर्ण होके स्वर्ग पर ताकके दृष्टि किई और ईश्वर के ऐश्वर्य को और
५६ ईसा को ईश्वर के दहिने हाथ खड़ाऊआ देखा। और कहा कि देखो में स्वर्ग को खुला और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर के
५७ दहिने हाथ खड़े देखताहों। तब उन्हें ने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान को मूंदलिया और एकळे होके उस पर
५८ लपके। और नगरसे बाहर निकालके उस पर पथरवाह किया और साक्षियों ने अपने बस्त्र को सूलूस नाम एक तरुण
५९ के चरण पास रखदिया। और उन्हों ने इस्तीफान पर पथरवाह किया उस समय वुह प्रार्थना करता और कहताथा कि हे प्रभु ईसा मेरे आत्मा को ग्रहण कर।
६० और वुह घुठने टेकके बड़े शब्द से पुकारके बोला कि हे प्रभु यह पाप उन पर स्थापित मत कर और यह कहिके सोगया।

८ आठवां पर्व

और सूलूस भी उसके मारडालने पर संगी था और उस समय में यिरोशलीम की मंडली के लोगों पर बड़ी ताड़ना ऊई और प्रेरितों को छोड़ सबकेसब यहूदियः और सामरः
२ के देश में बिथरगये। और साधु लोगों ने इस्तीफान को
३ गाड़ा और उसपर बऊतसा बिलाप किया। और सूलूस घर घर घुसके मंडली के लोगों को सत्यानाश कियाकरताथा और पुरुषन और स्त्रिअन को खींचके बंदिगृह में डालताथा।

४ पर वे जो छिन्नभिन्न ज़ए थे हरएक स्थान में फिरफिर के
५ बचन का मंगलसमाचार देतेगये। तब फलबूस ने सामरः
के नगर में जाके वहां मसीह का मंगलसमाचार सुनाया।
६ और लोगों ने उन लच्चणन को जो फैलबूस दिखावताथा
सुनकर और देखकर एकमन होके उसकी बातें चित्त लगाके
७ सुनीं। क्योंकि अपवित्र आत्मा बड़े शब्द से चिल्लाके बज़तों
से जो ग्रस्त थे उतरे और बज़तेरे अर्द्धांगी और लंगड़े चंगे
८ ज़ए। और उस नगर में बड़ा आनंद ज़आ। परंतु उस्से
पहिले शमऊन नाम एक मनुष्य सामरः में प्रगट ज़आथा
जिसने टोना करके सामरः के लोगों को भुलादियाथा और
१० कहताथा कि मैं भी बड़ा कोई हों। और छोटे से बड़े लों
सब उसके बिश्वासी होके कहतेथे कि यह मनुष्य ईश्वर का
११ बड़ा पराक्रम है। और वे उस कारण से कि उसने बज़त
दिन से टोना करके उन्हें भुलादियाथा उसके चेले होरहेथे।
१२ परंतु जब उन्हों ने ईश्वर का राज्य और ईसा मसीह के
नाम के मंगलसमाचार को जो फैलबूस सुनावताथा प्रतीति
१३ किई तो क्या पुरुष क्या स्त्री सब स्नान पावनेलगे। और
शमऊन आप भी बिश्वास लाया और स्नान पाके फैलबूस के
संग रहाकिया और आश्चर्य कर्म और बड़े लच्चण जो प्रगट
१४ ज़एथे देखके बिस्मित ज़आ। जब प्रेरितों ने जो यिरोशलीम
में थे सुना कि सामरियों ने ईश्वर के बचन को ग्रहण किया
१५ उन्हों ने पतरस और यूहन्ना को उनके समीप भेजा। उन्हों
ने वहां जाके उनके कारण प्रार्थना किई कि वे धर्मात्मा को
१६ पावें। क्योंकि अबलों वुह उनमें से किसी पर नपड़ाथा केवल
१७ उन्हों ने प्रभु ईसा के नाम से स्नान पाया। तब उन्होंने उन
पर हाथ रक्खे और उन्हों ने धर्मात्मा को पाया। और जब
१८ शमऊन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से धर्मात्मा दिया
१९ जाताहै तो वुह उन्हें रुपए देके बोला। कि मुझको भी यही

पराक्रम देउ कि जिस पर मैं अपना हाथ रक्खों वुह धर्म्मात्मा
२० पावे। तब पतरस ने उसको कहा कि तेरा धन तेरे संग
नष्ट होय इस लिये कि तूने समुझा कि ईश्वर का दान धन से
२१ मोल लियाजाताहै। इस बस्तुमें नतो तेरा भाग नअधिकार
२२ है क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में तेरा मन शुद्ध नहीं। इस लिये
अपनी इस दुष्टता से पश्चात्ताप कर और ईश्वर से प्रार्थना
२३ कर क्या जाने तेरे मन का बिकार क्षमा कियाजाय। क्योंकि
मैं देखताहों कि तू कड़ुआहट के पित्त में और दुष्टता के
२४ बंधन में है। तब शमऊन ने उत्तर देके कहा कि तुम मेरे
लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि उन बस्तुन से जो तुम ने कहीहैं
२५ कुछ मुझपर नपड़े। और वे साक्षी देके और प्रभु का बचन
सुनाकर यिरोशलीम को फिरे और सामरियों के बऊतसे
२६ गांओं में मंगलसमाचार सुनाया। और प्रभु का दूत
फैलबूस को यह कहिकर बोला कि उठ और दक्षिण के ओर
उस मार्ग में जा जो यिरोशलीम से गज़ः को जाताहै और
२७ बन है। वुह उठके चलागया और देखो कि एक खोजा
मनुष्य हबशी जो हबश की रानी कंदाकी का एक बड़ा प्रधान
और उसके समस्त धन का भंडारी था और यिरोशलीम में
२८ प्रार्थना के कारण आयाथा। वुह फिरा चलाजाताथा और
अपने रथ पर बैठाऊआ अशीया आगमज्ञानी को पढ़ताथा।
२९ तब आत्मा ने फैलबूस को कहा कि समीप जा और अपने
३० को इस रथ से मिलाउ। तब फैलबूस ने उधर दौड़के उसे
अशीया आगमज्ञानी को पढ़ते सुना और कहा क्या तू जो
३१ कुछ पढ़ताहै समुझताहै। वुह बोला जब लों कोई मुझे
उपदेश नकरे यह मुझसे क्योंकर होसके और उसने फैलबूस
३२ से चाहा कि वुह ऊपर आके उसके संग बैठे। उस ग्रंथ का
पर्ब्ब जो वुह पढ़ता था यह था कि वुह उस भेड़ के समानजो
मारडालने के कारण लायागया और जैसे मेम्ना जो अपने

बाल कतरनिहार के आगे चुपचाप है अपना मुंह नहीं
३३ खोलता। उसकी दीनताई से उसका बिचार न होनेपाया
और उसके समय के लोगों की चर्चा कौन करेगा क्योंकि
३४ उसका जीवन पृथिवी से उठायागया। और वुह खोजा
फैलबूस को कहनेलगा कि मैं तुझे बिनती करताहों कि
आगमज्ञानी किसके बिषय में यह कहताहै अपने अथवा
३५ दूसरे मनुष्य के। तब फैलबूस अपना मुंह खोलके उस ग्रंथ
३६ से कारण पाके ईसा का मंगलसमाचार सुनानेलगा। और
वे जाते जाते एक झीलके निकट पहुंचे तब खोजेने कहा देख
३७ जल अब मुझ स्नान पावने से कौनसी बस्तु रोकतीहै। फैलबूस
ने कहा कि जो तू अपने सारे अंतःकरण से बिश्वास लायाहै
तो योग्य है उसने उत्तर देके कहा कि मैं बिश्वास लाताहों
३८ कि ईसा मसीह ईश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा
करनेको आज्ञा किई और वे दोनो फैलबूस और खोजा जल
३९ में उतरे और उसने उसे स्नान दिया। और जब वे जल से
बाहर निकले प्रभु के आत्मा ने फैलबूस को पकड़लिया और
खोजेने उसे फेर नदेखा और वुह आनंद से अपने मार्ग
४० चलागया। परंतु फैलबूस आज़ोतूस में दिखाईदिया और
उसने जातेहुए समस्त नगर में उपदेश किया जबलों कैसरिया
में आया।

९ नवां पर्ब्ब

और सूलूस अबलों प्रभु के शिष्यन के बिषय में धमकी और
मारडालने पर जी चलाके प्रधान याजक के पास गया।
२ और उसे दमिश्क की मंडलियों के लिये इस रीति की पत्री
मांगी कि जो मैं किसीको इस मत में पाओं क्या स्त्री क्या पुरुष
३ तो उन्हें बांधके यिरोश्लीम में लाओं। और जब वुह
चलाजाताथा और दमिश्क के समीप आया ऐसा हुआ कि

४ अकस्मात एक ज्योति स्वर्ग से उसके चारोंओर चमकी। तब
वुह भूमि पर गिरपड़ा और एक शब्द सुना कि उसे कहा
५ सूलूस हे सूलूस तू मुझे क्यों संताताहै। उसने पूछा कि हे
प्रभु तू कौन है प्रभु ने कहा कि मैं ईसा हों जिसे तू संताताहै
६ तुझे कठिन है कि कीलों पर लात मारे। वुह कंपित और
बिस्मित होके बोला हे प्रभु तू क्या चाहताहै कि मैं करों
प्रभु ने उसको कहा उठ और नगर में जा और जो कुछ तुझे
७ करनेको उचित है सो कहाजायगा। और उसके संगके
लोग बिस्मित खड़ेरहिगये क्योंकि शब्द सुनतेथे परंतु किसीको
८ नदेखतेथे। और सूलूस भूमि पर से उठा और आंखें
खोलतेऊए उसे कुछ सूझनपड़ा और वे उसका हाथ पकड़के
९ दमिश्क में लाये। और वुह तीन दिन लों बिना दृष्टि था
१० और नखाताथा नपीताथा। और दमिश्क में हनानिया
नाम एक शिष्य था जिसको प्रभु ने स्वप्न में कहा कि हे
११ हनानिया वुह बोला कि देख मैं हे प्रभु। प्रभु ने उसको कहा
कि उठकर उस मार्गको जा जो सीधा कहावताहै और सूलूस
नाम एक तरसी मनुष्य को यहूदा के घर में ढूंढ़ क्योंकि देख
१२ वुह प्रार्थना करताहै। और उसने स्वप्न में देखाहै कि
हनानिया नाम एक मनुष्य ने प्रवेश करके उसपर हाथ रक्खा
१३ कि वुह अपनी दृष्टि पावे। तब हनानिया ने उत्तर दिया कि
हे प्रभु मैंने बऊतेरों से उस मनुष्य के बिषय में सुनाहै कि उसने
१४ यिरोशलीममें तेरे साधुन के संग बऊत बुराई किईहै। और
वुह यहां भी प्रधान याजकों के ओर से मुखिया है कि उन
१५ सभोंको बांधे जो तेरे नाम लेतेहैं। परंतु प्रभुने उसको कहा
कि चलाजा क्योंकि वुह मेरे ओर चुनाऊआहै कि अन्यदेशियों
और राजालोगों के और इसराईल के संतानोंके आगे
१६ मेरा नाम पऊंचावे। क्योंकि मैं उसको दिखाओंगा कि उसे
१७ मेरे नाम के लिये कैसा बड़ा दुख उठावना अवश्य है। और

हनानिया ने जाके उस घर में प्रवेश किया और अपने हाथ उस पर रखके कहा कि हे भाई सूलूस प्रभु ने जो तुझे उस मार्ग में जिस्से तू आयाहै दर्शन दिया अर्थात ईसा ने मुझको भेजाहै कि तू अपनी दृष्टि पावे और धर्मात्मा से भरजाय।
१८ और तुरंत उसकी आंखों से कुछ छिलकेसे गिरे और उसने
१९ तत्काल दृष्टि पाई और उठके स्नान पाया। और कुछ भोजन करके बल पाया फेर सूलूस कई दिन दमिश्क में शिष्यन के
२० संग रहा। और तुरंत मंडलियों में मसीह का मंगलसमाचार
२१ सुनाया कि वुह ईश्वर का पुत्र है। और सब जो सुनतेथे विस्मित होगये और बोले क्या यह वुह नहीं जिसने यिरोशलीम में उन पर उपद्रव किया जो इस नाम को लेतेथे और यहां इस इच्छा से आया कि उन्हें बांधके प्रधान याजकों
२२ के पास लेजाय। परंतु सूलूस ने और भी दृढ़ता किई और यहूदियों को जो दमिश्क के बासी थे प्रमाण लालाके घबराया
२३ कि यह वही मसीह है। और जब कई दिन बीते तो यहूदियों
२४ ने उसके मारडालने के कारण परामर्ष किया। परंतु उनका घात में रहना सूलूस को जानपड़ा और उन्हों ने रातदिन
२५ द्वारन की चौकसी किई कि उसको मारडालें। तब शिष्यन ने रात को उसे लिया और टोकरी में बैठाके भीत परसे तले
२६ लटकादिया। और सूलूस ने यिरोशलीम में आके चाहा कि शिष्यन में मिलजाय परंतु वे उसे डरतेथे और बिश्वास
२७ नकरतेथे कि वुह शिष्य है। तब बरनबास उसको लेकर प्रेरितों के समीप आया और उनसे बर्णन किया कि उसने प्रभु को मार्ग में यों देखा और वुह उस्से बोला और उसने यों दृढ़ताई से दमिश्क में ईसा के नाम का उपदेश किया।
२८ और वुह उनके संग यिरोशलीम में आताजाताथा। और प्रभु ईसा के नामतें दृढ़ताई से कहताथा और यूनानियों के संग बिवाद करताथा और उन्हों ने उसको मारडालने का

३० डौल किया। और यह जानकर भाईलोग उसको कैसरिया
३१ में लाये और तरसस के ओर बिदाकिये। तब सारी
यहूदियः और जलील और सामरः की मंडलियों के लोगों
ने चैन पाया और बनगये और प्रभु के भय और धर्मात्मा की
३२ शांति से फिराकिये और बढ़गये। और ऐसा हुआ कि
पतरस सर्व्वत्र फिरते उन साधुन के पास आया जो लद्दा में
३३ रहतेथे। और वहां अनियास नाम एक मनुष्य को पाया जो
३४ आठ बरस से खाट पर पड़ाथा और अर्द्धांगी था। पतरस ने
उसको कहा कि हे अनियास ईसा मसीह तुझे चंगा करताहै
३५ उठ अपना बिछौना सुधार और वुह तुरंत उठा। तब लद्दा
३६ और सारून: के बासी उसे देखकर प्रभु के ओर फिरे। और
याफा में एक शिष्य स्त्री थी जिसका नाम ताबीता था अर्थात
दरकास यह सुकर्म और दान से जो उसने कियाथा भरपूर
३७ थी। ऐसा हुआ कि वुह उन दिनों में रोगी हुई और
मरगई और उसे नहलाके एक उपरौटी कोठरी में रक्खा।
३८ और इस लिये कि लद्दा याफा से निकट था और शिष्यन ने
सुनाथा कि पतरस वहीं है उन्हों ने दो मनुष्य को भेजकर
पतरस से बिनती किई कि हमारे समीप आवने में बिलंब
३९ नकरे। तब पतरस उठके उनके संग होलिया जब वुह उनके
समीप पहुंचा वे उसे उपरौटी कोठरी में लाये और समस्त
रांड़ उसके सन्मुख खड़ी होके रोतीथीं और कुरते और
जामें दिखावतीथीं जो दरकास ने बनायेथे जब वुह उनके
४० संग थी। तब पतरस ने उन सभों को बाहर किया और
घुटना टेकके प्रार्थना किई और लोथ के ओर फिरके कहा
कि हे ताबीता उठ तब उसने अपनी आंखें खोलीं और
४१ पतरस को देखके उठबैठी। और उसने हाथ देकर उसे
खड़ाकिया और साधुन को और रांड़ों को बुलाके उसे
४२ जीवती उन्हें सौंपदिया। तब यह बात सारी याफा में

४३ फैलगई और बज्जतेरे प्रभुके बिश्वासी ज्जरे। और ऐसा ज्जआ कि वुह बज्जत दिनलों शमजन नाम ऐक चर्मकार के संग रहा।

१० दसवां पर्ब्ब

कैसरियः में करनीलियूस नाम ऐक मनुष्य था जो उस सेना
२ का जो अतालीकी कहावतीथी ऐक सेनापति था। वुह धर्मी था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरताथा और लोगों को बज्जत दान देताथा और नित्य ईश्वर की प्राथना
३ करताथा। उसने दिन की नवईं घड़ी के अंटकल में दर्शन में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वर का दूत उसके पास आया और
४ उसको कहा कि हे करनीलियूस। और जब उसने उस पर दृष्टि किई तो भयखाके कहा कि हे प्रभु क्या है उसने उसे कहा तेरी प्रार्थना और तेरा दान स्मरण के लिये ईश्वर के
५ आगे पज्जंचा। अब याफा में लोगों को भेज और शमऊन को
६ जिसका नाम पतरस है बुला। वुह ऐक शमऊन चर्मकार के संग रहताहै जिसका घर नदी के तीर पर है जो कुछ
७ तुझे करना उचित है वुह तुझको कहेगा। और जब वुह दूत करनीलियूस से कहिके चलागया तो उसने अपने सेवकन में से दोको और उनमें से जो नित उसके पास
८ रहतेथे ऐक धर्मी सिपाही को बुलाया। और उसने
९ सब बातें उनसे कहीं और याफा में भेजा। बिहान होते जिस समय वे मार्ग में चलेजातेथे और नगर के समीप पज्जंचेथे पतरस छठवीं घड़ी के अंटकल में कोठे पर प्रार्थना
१० करनेको चढ़ा। उसे बड़ी भूख लगी और चाहा कि कुछ
११ खाय परंतु जब वे बनारहेथे वुह बेसुधि ज्जआ। और स्वर्ग को खुलाज्जआ देखा और ऐक पात्र जैसे बड़ी चद्दर जिसके चारों खूंट बंधेज्जए हों उसके आगे भूमि लों लटक आया।

१२ जिसमें पृथिवी के समस्त प्रकार के चौपाये और बनैले पशु
१३ और कीड़े मकोड़े और आकाश के पंछी थे। और एक
शब्द उसपास आया कि उठ हे पतरस मार और खा।
१४ तब पतरस बोला कि हे प्रभु ऐसा नहीं क्योंकि मैंने कधी
१५ कोई सामान्य अथवा अपवित्र बस्तु नहीं खाया। तब दूसरे
बेर उसके पास फेर शब्द आया कि जिन्हें ईश्वर ने पवित्र
१६ कियाहै तू सामान्य मत कह। यह तीन बार कहागया और
१७ वुह पात्र फेर स्वर्ग पर खींचगया। सो जबलों पतरस मन
में संदेह कररहाथा कि यह दर्शन जो मैंने देखाहै क्या होगा
देखो वे मनुष्य जिन्हें करनीलियूस ने भेजाथा शमऊन का
१८ घर पूछके द्वार पर खड़ेऊए। उन्हों ने पुकार के पूछा क्या
१९ शमऊन जो पतरस कहावताहै यहां रहताहै। जब पतरस
उस दर्शन को सोचरहाथा आत्मा ने उसको कहा कि देख
२० तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़तेहैं। इसलिये उठ और उतरके
२१ निःसंदेह उनके संग चलाजा कि मैंने उन्हें भेजाहै। तब
पतरस ने उन मनुष्यन के पास जो करनीलियूस के भेजेऊएथे
उतरजाके कहा कि देखो वुह जिसको तुमलोग ढूंढ़तेहो मैंहों
२२ क्या कारण है तुमसब किस लिये आयेहो। वे बोले कि
करनीलियूस सेनापति को जो धर्मी मनुष्य और ईश्वर से
डरताहै और यहूदियों के सारे लोगों में शुभनाम है
ईश्वर के ओर तें एक पवित्र दूत से चेतायागया कि तुझे
२३ अपने घर में बुलावे और तुझसे बार्त्ता सुने। तब उसने
उन्हें भीतर बुलाके उनका सिष्टाचार किया और दूसरे
दिन पतरस उनके संग गया और कई उन भाइयों में से जो
२४ याफा के थे उसके संग होलिये। और दूसरे दिन वे
कैसरियः में प्रवेश किये और करनीलियूस अपने कुटुंब और
२५ बड़े मित्रन को एकठे करके उनकी बाट जोहताथा। पतरस
के प्रवेश करतेऊए करनीलियूस उसे आगे आमिला और

२६ उसके चरण पर गिरके दंडवत किई। तब पतरस ने उसे
२७ उठाके कहा कि खड़ाहो मैं आप भी मनुष्य हों। और वुह
उस्से बात्तों करताहुआ भीतर गया और बहुतसे लोगों
२८ को एकट्ठे पाया। और उनको कहनेलगा कि तुमसब
जानतेहो कि यहूदी को अनुचित है कि अन्यदेशी से संगति
करें अथवा उसके यहां आवें परंतु ईश्वर ने मुझको दिखायाहै
कि मैं किसी मनुष्य को सामान्य अथवा अपवित्र नकहों।
२९ इसलिये मैं जो बुलायागया निःसंदेह आया सो मैं पूछताहों
३० कि तुमसभों ने मुझे किस लिये बुलाया। करनीलियूस ने
कहा चारदिन बीते मैं इस घड़ी लों व्रत करताथा और
नवईं घड़ी में अपने घर में प्रार्थना किई कि देखो एक मनुष्य
३१ झलकते बस्त्र में मेरे सन्मुख खड़ा हुआ। और बोला कि हे
करनीलियूस तेरी प्रार्थना सुनीगई और तेरे दान ईश्वर के
३२ आगे स्मरण कियेगये। सो याफा में भेज और शमऊन को
जो पतरस कहावताहै यहां बुला वुह नदी के तीर शमऊन
चर्मकार के घर में रहताहै वही जब आवेगा तुझे कहेगा।
३३ इस लिये तुरंत मैं ने तेरे पास भेजा और तू ने अच्छा किया
कि आया सो अब हमसब यहां ईश्वर के आगे खड़े हैं कि
३४ सब बातें जो तुझे ईश्वर ने कहीं हैं सुनें। तब पतरस ने
मुंह खोलके कहा कि मुझे ठीक समुझपड़ताहै कि ईश्वर
३५ किसीको प्रगट दशा पर दृष्टि नहीं करता। परंतु हरएक
देश के लोगों में जोकि उस्से डरताहै और धर्म का कार्य
३६ करताहै उस्से ग्रहण कियागयाहै। यह वही बात है जो
ईश्वर ने इसराईल के संतानों को कहलाभेजी क्योंकि
उसने संदेश दिया कि ईसा मसीह से जो सब का प्रभु है
३७ कुशल मिलेगा। वही बात जो उस स्नान के पीछे जिसका
समाचार यहिया ने दिया जो जलील से आरंभ होके सारे
३८ यहूदियः में होतारहा तुमसब जानतेहो। कि ईश्वर ने

किस रीति से ईसा नासरी को धर्म्मात्मा और पराक्रम से अभिषेक किया जो भला करता फिराकिया और सभों को जो शयतान के बश में थे चंगा करतारहा क्योंकि ईश्वर उसके
३९ संग था। और हमसब उन समस्त कार्य्यन के जो उसने यहूदियों के देश और यिरोशलीम में किये साक्षी हैं उसको
४० उन्हों ने लकड़ पर लटकाके मारडाला। परंतु ईश्वर ने उसको तीसरे दिन उठाया और उसे साक्षात् दिखाया।
४१ पर सब लोगों को नहीं परंतु कितने साक्षियों को अर्थात हमलोगों को जो पहिले से ईश्वर के चुनेऊए थे जिन्हों ने
४२ उसके जीउठने के पीछे उसके संग खाया और पीया। उसने हमसभों को आज्ञा किई कि जगत को सुनाओ और साक्षी देओ कि मैं वुह हों जिसको ईश्वर ने ठहराया कि जीवतन
४३ और मृतकन का न्यायी हों। उस पर समस्त आगमज्ञानी साक्षी देतेहैं कि जो कोई उस पर बिश्वास लावेगा उसके
४४ नाम से पाप का मोचन पावेगा। जब पतरस ये बातें
४५ कहिरहाथा सब सुननिहारों पर धर्म्मात्मा पड़ा। और जितने खतनः कियेगये बिश्वासी पतरस के संग आयेथे बिस्मित ऊए इसकारण कि अन्यदेशियों पर भी धर्म्मात्मा का
४६ दान बहायागया। क्योंकि उन्हों ने देखा कि वे भांति भांति
४७ की बोली बोलते और ईश्वर की स्तुति करतेथे। तब पतरस कहनेलगा क्या कोई जल को रोक सक्ताहै कि ये लोग स्नान
४८ नपावें जिन्हों ने हमारी नांई धर्म्मात्मा को पाया। तब उसने उन्हे आज्ञा किई कि वे प्रभु के नाम से स्नान कियेजांय फेर उन्हों ने उसको बिनती किई कि कुछ दिन यहां रहे।

११ ग्यारहवां पर्व्व

सो प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदियः में थे सुना कि
२ अन्यदेशियों ने भी ईश्वर का बचन ग्रहण किया। और जब

पतरस यिरोशलीम में आया तो खतनः कियेगये लोगों ने
३ विवाद करके कहा। कि तू उनके पास गया जिनका खतनः
४ नहुआ और उनके संग खायाहै। तब पतरस ने आरंभ से
उन बातों को दोहराया और उनके आगे ब्बस वर्णन
५ करके कहनेलगा। कि मैं याफा के नगर में प्रार्थना करताथा
और बेसुधि होके मैंने दर्शन देखा कि स्वर्ग से एक पात्र
उतरा जैसे बड़ी चद्दर चारों खूंट से लटकाहुआ और
६ मेरेही पास आया। जब मैंने उस पर ध्यान से दृष्टि करके
सोचा तो भूमि के चौपाए और बन के पशु और कीड़े मकोड़े
७ और आकाश के पंछियों को देखा। और मुझे कहतेहुए मैंने
८ एक शब्द सुना कि उठ हे पतरस मार और खा। तब मैं बोला
कि ऐसा नहीं हे प्रभु क्योंकि कोई सामान्य अथवा अपवित्र
९ वस्तु मेरे मुंह में कधी नहीं पैठी। और स्वर्ग से उत्तर में
मुझे फेर शब्द आया कि जो कुछ ईश्वर ने पवित्र कियाहै
१० उसको तू सामान्य मत कह। यह तीन बार हुआ तब सब
११ स्वर्ग में फेर खींचगये। और देखो कि तत्काल उस घर में
जहां मैं था तीन मनुष्य पहुंचे जो कैसरियः से मेरे पास
१२ भेजेगयेथे। और आत्मा ने मुझे कहा कि तू निश्चिंत उनके
संग चलाजा और ये छः भाई मेरे संग होलिये और हमसब
१३ उस मनुष्य के घर में प्रवेश किये। तब उसने हमसभों को
समाचार कहा कि मैंने यों अपने घर में दूत को देखा जिसने
खड़े होके मुझे कहा कि लोगों को याफा में भेज और
१४ शमऊन को बुला जो पतरस कहावताहै। वुह तुझे ऐसी
बातें बतादेगा जिनसे तू अपने समस्त घराने समेत उद्धार
१५ पावेगा। और ज्यों मैंने कहना आरंभ किया धर्मात्मा उनपर
१६ पड़ा जिस रीति से आरंभ में हमसब पर पड़ाथा। तब मैंने
प्रभु का बचन चेत किया कि यहिया ने तो जल से स्नान दिया
१७ परंतु तुमसब धर्मात्मा से स्नान पाओगे। जैसा कि ईश्वर ने

उन्हें वही दान दिया जो हमको दिया जब कि हम प्रभु ईसा मसीह पर बिश्वास लाये मैं कौन था जो ईश्वर को रोक
१८ सकता। जब उन्हों ने ये बातें सुनीं तो चुप रहे और यह कहिके ईश्वर की स्तुति किई तो ईश्वर ने अन्यदेशियों को भी
१९ जीवन के लिये पश्चात्ताप दिया। अब जो उस बिपत्ति के कारण छिन्नभिन्न ऊएथे जो इस्तीफान के समय में पड़ीथी उन्हों ने फूनीकी और कुबरूस और अंताकियः लों चलेजाके
२० यहूदियों को छोड़ किसी को बचन नकहा। और कितने उनमें से कुबरस और कुरीनः के बासी थे जिन्हों ने अंताकियः में प्रवेश करके यूनानी यहूदियों से बातें कियां और प्रभु
२१ ईसा का संदेश दिया। और प्रभु का सहाय उन पर था
२२ और बड़ी मंडली बिश्वास लाके प्रभु के ओर फिरी। तब उन बातों का समाचार यिरोशलीम की मंडली के कान लों पऊंचा और उन्हों ने बरनबास को भेजा कि अंताकियः लों
२३ जाय। वुह आके ईश्वर के अनुग्रह को देखकर आनंद ऊआ और उनको उपदेश किया कि अंतःकरण में ठानके प्रभु से
२४ मिलेरहें। क्योंकि वुह उत्तम मनुष्य और धर्मात्मा और बिश्वास से भराऊआथा और बऊत लोग प्रभु के ओर बढ़गये।
२५ तब बरनबास सूलूस को ढूंढ़ने के लिये तरसूस को चलागया।
२६ और उसको पाके अंताकियः में लाया और ऐसा ऊआ कि वे एक बरस लों मंडली में एकट्ठे रहे और बऊतसे लोगों को उपदेश किया और शिष्य लोग पहिले अंताकियः में
२७ क्रीश्चिआन कहलाये। और उन्हीं दिनों में कई एक
२८ आगमज्ञानी यिरोशलीम से अंताकियः में आये। और उनमें से अगबस नाम एक ने उठके आत्मा के ओर से बतलाया कि समस्त जगत में बड़ा काल पड़ेगा जैसा कि क्लादियूस
२९ कैसर के समय में पड़ाथा। उस समय शिष्यन मेंसे हरएक ने अपनी बिसात के समान चाहा कि उन भाइयों के उपकार

३० के कारण कुछ भेजें जो यहूदियः में रहतेथे। सो उन्हों ने किया और बरनबास और सूलूस के हाथ से प्राचीनों के पास भेजा।

१२ बारहवां पर्व्व

और उसी समय में हिरूदीस राजा ने हाथ बढ़ाये कि
२ मंडली में कितनों को सतावे। और यूहन्ना के भाई याकूब
३ को खड्ग से मारडाला। और जब उसने देखा कि यह यहूदियों को अच्छालगा तो उसे अधिक करके पतरस को
४ भी बीनखमीरीरोटी के दिनों में पकड़लिया। और उसने उसको पकड़के बंदीगृह में डाला और सिपाहियों के चार पहरे को सौंपदिया कि उसकी रखवारी करें इस इच्छा से
५ कि फसः पर्व्व के पीछे उसको लोगों कने लेजावें। सो बंदीगृह में पतरस की रखवारी होतीथी परंतु मंडली से उसके
६ लिये निरंतर ईश्वर की प्रार्थना किईजातीथी। और जब हिरूदीस ने चाहा कि उसको बाहर निकाले उसी रात दो सिपाहियों के मध्य में पतरस दो सीकरों से जकड़ाहुआ सोताथा और रखवार बंदीगृह के द्वार के सामने रखवारी
७ करतेथे। और देखो कि ईश्वर का दूत उस पर उतरा और उस घर में एक उंजियाला चमका और उसने उसकी पसुली पर हाथ मारा और उसे यह कहिके उठाया कि
८ तुरंत उठ तब सीकरें उसके हाथों से गिरपड़ीं। और दूतने उसको कहा कि कमर बांध और अपनी जूती पहिन और उसने वैसा किया तब उसने कहा कि अपना वस्त्र
९ पहिन के मेरे पीछेहोले। वुह निकलके उसके पीछेहोलिया और नजाना कि यह जो दूत ने किया सत्य है परंतु समुझा
१० कि कुछ धोखासा है। जब वे पहिले और दूसरे पहरे मेंसे निकलगये तो लोहे के द्वार पर पहुंचे जो नगर के ओरथा

वुह आपसेआप उनके लिये खुलगया और वे निकलके मार्ग से लंबे चलेगये और उसी घड़ी दूत उसके समीप से ११ जातारहा। तब पतरस ने चेत में आके कहा अब मैं ठीक जानताहों कि ईश्वर ने अपने दूत को भेजा और हिरूदीस के हाथ से और यहूदी लोगों की समस्त आशा से मुझे १२ बंचाया। और जब उसने सोचा तो मरियम के घर में आया जो यूहन्ना की जो मरकुस कहावताथा माताथी वहां १३ बहुतसे एकठे होके प्रार्थना कररहेथे। और जों पतरस ने घर का द्वार खटखटाया तो एक सहेली जिसका नाम १४ रूदा था गई कि सुने। और पतरस का शब्द पहिचानके उसने मारे आनंदके द्वार नखोला परंतु भीतर दौड़के कहा १५ कि पतरस द्वार पर खड़ाहै। वे बोले कि तू बौड़ही है उसने निश्चय से कहा कि योंहीं है तब वे बोले कि उसका १६ दूत होगा। परंतु पतरस खटखटातागया और जब उन्हों १७ ने खोलके उसको देखा तो आश्चर्य किया। और उसने उन्हें हाथ से सैन करके कहा कि चुपहोओ और बर्णन किया कि ईश्वर ने मुझे बंदीगृह से यों निकाला और कहा कि यह समाचार याकूब को और भाइयों को पहुंचाओ फेर वुह १८ निकलके किसी और स्थान में गया। और जब बिहान हुआ तो सिपाहियों में बड़ीघबराहट हुई कि पतरस क्या १९ हुआ। और हिरूदीस ने उसका खोज किया पर जब नपाया तो रखवारों को जांचके मारडालने को आज्ञा दिई २० और वुह यहूदियः से कैसरीया में जारहा। और हिरूदीस सूर और सैदा के लोगों से निपट उदास था तब वे एकठे होके उसके समीप आये और उन्हों ने राजा के शयनस्थान के अध्यक्ष अर्थात् बिलासतूस से मेल करके मिलाप चाहा इस कारण कि उनके देश का प्रतिपाल राजा के सिवाने से २१ होताथा। और हिरूदीस ने एक दिन जो ठहरायागयाथा

राजबस्त्र पहिनके सिंहासन पर बैठकर उनसे बार्त्ता किई।
२२ और मंडली पुकारके बोली यह तो ईश्वर का शब्द है
२३ मनुष्य का नहीं। और तुरंत ईश्वर के दूतने उसे मारा
क्योंकि उसने ईश्वर की बड़ाई नकिई और वुह कीड़ों से
२४ खायागया और मरगया। और ईश्वर का बचन बढ़ा
२५ और बहुत हुआ। और बरनबास और सूलूस यिरोशलीम
से सेवा करके फिरे और यूहन्ना को जिसकी पदवी मरक़स
थी अपने संग लाये।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

और अंताकियः की मंडली के कितने आगमज्ञानी और
उपदेशक थे अर्थात बरनबास और शमऊन जो नैजार
कहावताथा और लूकियूस क़ुरीनी और मानायन जो
चौथाई के स्वामी हिरूदीस का दूधभाई था और सूलूस।
२ जिस समय में वे प्रभु के लिये मंडली में प्रार्थना और ब्रत
करतेथे धर्मात्मा ने कहा कि मेरे लिये बरनबास और सूलूस
को अलग करो कि वुह कार्य करें जिसके लिये मैं ने उन्हें
३ बुलाया। तब उन्हों ने ब्रत और प्रार्थना करके और हाथ
४ उन पर रखके उन्हें बिदा किया। सो वे धर्मात्मा के भेजेहुए
सलूकियः को गये और वहां से नाव पर होके क़बरस को
५ चले। और सलमीन में पहुंचके यहूदियों की मंडली में
ईश्वर के बचन का उपदेश किया और यूहन्ना उनका सेवक
६ था। और उस टापू में सर्वत्र फिरके पफ़ास लों पहुंचे और
उन्हों ने बारीशू नाम एक यहूदी को पाया जो टोना
७ करनिहार और झूठा आगमज्ञानी था। जो उस देश के
अध्यक्ष सर्जयूस पूलूस के संग था यह प्रतिष्ठित मनुष्य था
उसने बरनबास और सूलूस को बुलाके चाहा कि ईश्वर
८ का बचन सुने। परंतु टोना करनिहार अलमास ने जिसके

नाम का यही अर्थ है उनका सामना किया इस इच्छा से कि
९ अध्यक्ष को बिश्वास से फिरावे। तब सूलूस अर्थात पूलूस ने
१० धर्मात्मा से पूर्ण होके उसपर दृष्टि किई। और कहा कि
अरे तू जो निरे कपट और सारे छलसे भराऊआ है शयतान
के बच्चे और समस्त धर्म के बैरी तू ईश्वर के सीधे मार्ग को
११ टेढ़ा करने से अलग नरहेगा। और अब देख प्रभु का
हाथ तुझ पर पड़ा है और तू अंधा होजायगा और बऊत
दिन लों सूर्य को नदेखेगा और तुरंत उसपर कुहिरा और
अंधकार पड़ा और वुह ढूंढ़ताफिरा कि कोई उसका
१२ हाथ पकड़के लेजाय। तब अध्यक्ष यह देखके प्रभुके उपदेश
१३ से बिस्मित होके बिश्वास लाया। तब पूलूस और उसके
संगी पफस से खोलके पंफूलियः के परजा में आये और
यूहन्ना उनसे अलग होके यिरोशलीम को फिरगया।
१४ और वे बरजा से होके पसदियः के अंताकियः में आये
१५ और बिश्राम के दिन मंडली में जाबैठे। और ब्यवस्था और
अगमज्ञान के पढ़ने के पीछे मंडली के प्रधानों ने उन्हें
कहलाभेजा कि हे मनुष्य भाइयो जो लोगों के कारण कोई
१६ उपदेश का बचन तुम्हारे पास होय तो कहो। तब पूलूस
खड़ाऊआ और हाथसे सैन करके बोला कि हे इसराईल
के बंश और हे लोगो जो ईश्वर से डरतेहो धीरज से सुनो।
१७ इस इसराइली लोगों के ईश्वर ने हमारे पितरन को
चुनलिया और लोगों को बढ़ाया जब कि वे मिसर के देश
में परदेशी थे और हाथ बढ़ाके उनको वहां से निकाला।
१८ और चालीस बर्ष एक वुह बन में उनको चालब्यवहार
१९ सहताथा। और जब उसने किनान के देश में सात राज्य
को नाश किया उसने उनके देश को चिठ्ठी डलवाके
२० बांटदिया। और उसके पीछे उसने चार सौ पचास बर्ष के
निकट समुईल आगमज्ञानी के समय लों न्याय करनिहारों

२१ को भेजा। और अंत को उन्हों ने एक राजा चाहा तब ईश्वर ने उन्हें कीस के पुत्र साऊल को दिया जो बन्यमीन के
२२ कुल में का था कि उनमें चालीस बर्ष रहे। और उसको निष्पद करके दाऊद को उदय किया कि उनका राजा होय और उसके लिये यह साक्षी दिई कि मैंने यस्सी के पुत्र दाऊद को अपना मनोनीत पाया जो मेरी समस्त
२३ इच्छा को पूरा करेगा। इसी मनुष्य के बंश से ईश्वर ने अपने बाचा के समान इसराईल के लिये एक उद्धार
२४ कारनिहार ईसा को उदय किया। और यहिया ने उसके आवने से पहिले इसराईल के समस्त लोगों को पश्चात्ताप
२५ के स्नान का उपदेश दिया। और जब यहिया अपने समय को समाप्त करनेपरथा तब वुह बोला कि तुमलोग क्या बिचार करतेहो मैं कौन हों मैं तो कोई नहीं परंतु देखो कि मेरे पीछे एक आताहै मैं जिसकी जूती का बंद खोलने के
२६ योग्य नहीं। हे मनुष्य भाइयो इबराहीम के संतान और हे लोगो जो ईश्वर से भय रखतेहो तुम्हारे लिये उस
२७ निस्तार का संदेश भेजागयाहै। इसकारण कि यिरोशलीम के बासियों ने और उनके प्रधानों ने नतो उसको और नआगमज्ञानियों की उन बातों को जाना जो हर बिश्राम के दिन में पढ़ी जातीहैं उसे दोषी ठहराके उन्हें पूराकिया।
२८ और यद्यपि उन्हों ने उसके मारडालने का कारण नपाया। तथापि उन्हों ने पिलातूस से चाहा कि वुह मारडालाजाय
२९ और जब वे सब कुछ जो लिखाथा कि उस पर होगा पूरा करचुके तो उसको लकड़े पर से उतार के समाधि में रक्खा।
३१ परंतु ईश्वर ने उसको मृतकन में से जिलाया। और वुह बहुत दिनलों उन्हें दिखाईदिया जो उसके संग जलील से यिरोशलीम में आयेथे और वे लोगों के आगे उसके साक्षी
३२ हैं। और हम तुम्हें मंगल समाचार सुनातेहैं कि वुह

३३ बाचा जो पितरन से किईगईथी। ईश्वर ने उसे उनके बालकन के कारण जो हम हैं संपूर्ण कियाहै कि उसने ईसा को फेर जिलाया जैसा कि दूसरे भजन में लिखाहै कि तू
३४ मेरा पुत्र है आज के दिन तू मुझसे उत्पन्न हुआ। और इस कारण से उसे जिलाया कि वुह सड़नजाय उसने यों
३५ कहा कि मैं तुम्हें दाऊद की ठीक दया देउंगा। इसलिये उसने दूसरे स्थल में भी यों कहा कि तू अपने प्रिय को सड़ने
३६ नदेगा। दाऊद तो अपने समय को पूरा करके ईश्वर की इच्छा पर सोगया और अपने पितरन के निकट गया और
३७ सड़गया। परंतु यह जिसको ईश्वर ने फेर उठाया सड़
३८ नगया। इसलिये हे मनुष्य भाइयो तुम्हें जानाजाय कि पापों से उद्धार इसी मनुष्य के कारण से तुमसभों के लिये
३९ उपदेश कियाजाताहै। और हरएक जन जो बिश्वास लावताहै उसीके ओर से समस्त बस्तुन से निर्दोष है जिनसे
४० तुमलोग मूसा के शास्त्र से निर्दोष नहीं होसक्ते। इसलिये सावधान होओ नहोवे कि वुह जो आगमज्ञानियों के
४१ पुस्तकन में कहागयाहै तुमसभों पर आपड़े। कि देखो हे निंदको और आश्चर्य करो और नाश होजाओ कि मैं तुम्हारे समय में एक ऐसा कार्य करताहों कि यद्यपि कोई
४२ तुम्हें सुनावे तुमसब उस पर कधी बिश्वास नकरोगे। और जब यहूदी मंडली से निकलगये अन्यदेशियों ने चाहा कि ये
४३ बचन दूसरे बिश्राम के दिन में हमसभों से कहेजायं। और जब भीड़ छूटगई बहुतसे यहूदी और धर्मी नये यहूदी पूलूस और बरनबास के पीछे होलिये और उन्हों ने उनसे बातचीत करके उपदेश किया कि तुमलोग ईश्वर के अनुग्रह
४४ में मिलेरहो। और अगिले बिश्राम के दिन में समस्त नगर
४५ के लगभग एकळे आये कि ईश्वर का बचन सुनें। परंतु यहूदी मंडलियों को देखके डाह से भरगये और उन बातों

के बिरुद्ध में बोले जो पूलुस ने कहीथीं और बिरोध करने
४६ और पाषंड कहनेलगे। तब पूलूस और बरनबास ने निर्भय
से कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हें कहाजाता
परंतु इसलिये कि तुमलोग उसको टालदेतेहो और तुमलोग
अपने को अनंत जीवन के अयोग्य ठहरातेहो देखो हम
४७ अन्यदेशियों के ओर जातेहैं। क्योंकि प्रभु ने हमों को ऐसी
आज्ञा किई कि मैं ने तुझको अन्यदेशियों का उंजियाला
कररखाहै कि तू पृथिवी के अंतलों निस्तार का कारण
४८ होवे। और अन्यदेशी यह सुनतेही आनंद ज़ए और प्रभु
के बचन की स्तुति किई और जितने कि अनंतजीवन के लिये
४९ ठहरायेगयेथे बिश्वास लाये। और प्रभु का बचन उस समस्त
५० देश में फैलगया। परंतु यह़ूदियों ने स्त्रिअन को जो धर्मी
और प्रतिष्ठित थीं और नगर के प्रधानों को उसकाया
और पूलूस और बरनबास पर उपद्रव किया और अपने
५१ सिवानों से निकालदिया। परंतु वे अपने पांव की धूर
५२ उनके लिये झाड़के यकूनियः को आये। और शिष्य आनंद
से और धर्मात्मा से भरगये।

१४ चौदहवां पर्व्व

और यकूनियः में ऐसा ज़आ कि वे यह़ूदियों की मंडली में
एकट्ठे गये और ऐसी कथा कही कि यह़ूदियों की और
२ यूनानियों की भी बड़ी मंडली बिश्वास लाई। परंतु अबिश्वासी
यह़ूदियों ने अन्यदेशियों को भड़काया और उनके मन में
३ भाइयों के ओर से बुरी चिंता करवाई। सो वे बज़त दिन
लों रहिके प्रभु के सहाय से साहस से कहतेरहे और वुह
अपने अनुग्रह के बचन पर साक्षी देता और कृपा करके
लक्षण और आश्चर्य उनके हाथों से प्रगट करतारहा।
४ और नगर के लोगों में बिभाग ज़आ कुछ तो यह़ूदियों के

५ संग रहे और कुछ प्रेरितों के संग। और जब अन्यदेशियों
ने और यहूदियों ने प्रधानों के संग हल्ला किया कि उनको
६ निंदित करें और उनपर पथरवाह करें। वे सोचेत होके
लसतरः और दर्बः में भागगये जो लकऊनियः के नगर और
७ उस सिवाने के देश में है। और वे वहां मंगलसमाचार का
८ संदेश देतेरहे। और लसतरः का एक मनुष्य पाओं का
दुर्बल बैठाथा जो अपनी माता के गर्भ से लंगड़ा था और
९ कभी नचलाथा। उसीने पूलूस को बातें करते सुना जिसने
उसपर ध्यान से दृष्टि करके बिचार किया कि उसको चंगा
१० होनेका बिश्वास है। उसने बड़े शब्द से कहा कि अपने पाओं
पर सीधा खड़ाहो वुह तुरंत उछला और चलनेलगा।
११ और जब लोगों ने देखा जोकि पूलूस ने कियाथा तो
लकऊनियः की भाषा में चिल्ला के कहनेलगे कि देवतालोग
१२ मनुष्य के भेष में होके हमसभों के पास उतरे। और उन्हों
ने बरनबास का बृहस्पति और पूलूस का बुध नाम रक्खा
१३ क्योंकि वुह पहिले बोलाकरताथा। और वे बृहस्पति को
अपने नगर का उपकारी जानतेथे और उसके पुरोहित ने
मंडली समेत बैल और फूलों के हार द्वारन पर लाके
१४ चाहा कि बलिदान करें। तब बरनबास और पूलूस दोनों
प्रेरितों ने सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगों में दौड़के
१५ बोले। कि हे मनुष्यो तुमलोग ये सब क्यों करतेहो हमभी
ऐसाही मनुष्य हैं जैसे तुमसब हो और तुम्हें उपदेश देतेहैं
कि तुमसब इन ब्यर्थ भावनन को छोड़के जीवते ईश्वर के ओर
फिरो कि उसीने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब
१६ कुछ जो उनमें है बनाया। और उसने बीतेहुए समयन में
समस्त लोगों को छोड़दिया कि अपने अपने मार्ग पर चलें।
१७ तथापि उसने अपने को साक्षी बिना नरक्खा कि उसने भला
किया और स्वर्ग से दृष्टि और फल के समयन को हमसब

को देके हमारे मन को संतुष्ट किया और आनंदतासे भरा।
१८ और यद्यपि उन्हों ने इतनी बातें कहीं तथापि लोगों को
१९ बड़े कठिन से बलिदान करने से रोक रक्खा। और कितने
यहूदियों ने अंताकियः और यकूनियः से आके मंडली को
बहकाके पूलूस पर पथरवाह किया और यह जानके कि
२० वुह मरगया नगर के बाहर खिचवाया। परंतु जब शिष्यलोग
उसके आसपास एकट्ठे ऊए वुह उठके नगर में आया
२१ और दूसरे दिन बरनबास के संग दर्बः को चलागया। और
उस नगर में मंगलसमाचार सुनाके और अनेकन को उपदेश
करके उन्हों ने लसतरः और यकूनियः और अंताकियः में
२२ फिरतेऊए। शिष्यन के मनको दृढ़ करके उपदेश किया कि
बिश्वास पर स्थिर रहें और बोले कि हमें अवश्य है कि
२३ बऊत परिश्रम से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करें। और
उन्हों ने हरएक मंडली के लिये कई एक अगुआ ठहराये
और ब्रत और प्रार्थना करके उन्हें प्रभु को सौंपदिया
२४ जिसपर वे बिश्वास लायेथे। और पसदियः से होके
२५ पंफूलियः में आये। और बरजा में बचन का उपदेश करके
२६ अतालियः में उतरआये। और वहां से नाव पर होके
अंताकियः को गये जहां से वे उस कार्य के कारण ईश्वर के
अनुग्रह से सौंपेगयेथे जिसको अब उन्हों ने संपूर्ण किया।
२७ और आके मंडली के लोगों को एकट्ठे करके सबकुछ बर्णन
किया कि ईश्वर ने उनके और से यों कियाथा और उसने
किस रीति से अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार खोला।
२८ और वे कुछ दिन लों शिष्यन के संग वहां रहे।

१५ पंदरहवां पर्व्व

और कितने मनुष्यन ने यहूदियः से आके भाइयों को
उपदेश किया कि जो तुमसब मूसा के शास्त्र के समान ख़तनः

२ नकराओ तो उद्धार नहीं पासक्ते। जब बड़ा बिरोध ज्ञआ और पूलूस और बरनबास ने उनसे बिवाद किया तब उन्हों ने ठहराया कि पूलूस और बरनबास और उनमें से कईएक यिरोशलीम को प्रेरितों और प्राचीनों कने इस प्रश्न के
३ कारण जावें। सो वे मंडली के लोगों से आगे बढ़ायेजाके फूनकी और सामरः से होके अन्यदेशियों के मन के फिरने का संदेश देते चलेगये और वे भाइयों के अति मगन के
४ कारण ज्ञए। और जब वे यिरोशलीम में आये तो मंडली के लोग और प्रेरितों और प्राचीनों ने उनका आदर किया और उन्हों ने सबकुछ जो ईश्वर ने उनसभों से कियाथा
५ कहिसुनाया। परंतु कईएक उनमें से जो फरीसियों के मत के थे और बिश्वास लायेथे कहनेलगे कि उनका खतनः करना और उन्हें आज्ञा करना कि उचित है कि मूसा के
६ शास्त्र पर चलें। तब प्रेरित और समस्त प्राचीनलोग एकट्ठे
७ ज्ञए कि उस बिवाद के बिषय में बिचार करें। और जब बज्ञत बिवाद ज्ञआ पतरस खड़ा होके उनसभों से बोला कि हे मनुष्य भाइयो तुमसब जानतेहो कि बज्ञत दिन ज्ञए कि ईश्वर ने हम्में से चुना कि अन्यदेशी मेरे मुंह से मंगल
८ समाचार का बचन सुनें और बिश्वास लावें। और ईश्वर ने जो अंतर्जामी है उनके लिये साक्षी दिई इसलिये कि जैसा
९ उसने हमों को धर्मात्मा दिया वैसा उन्हों को भी दिया। और उनके अंतःकरण को बिश्वास से पवित्र करके हम्में और
१० उनमें कुछ भेद नरक्खा। सो अब तुमसब क्यों ईश्वर को परखतेहो और शिष्यन के गले पर जूआ रखतेहो जिसको
११ न हम न हमारे पितर सह सक्तेथे। और हमसब को निश्चय है कि हम प्रभु ईसा मसीह के अनुग्रह से उन्हों की
१२ नाईं बचजायंगे। तब सारी मंडली चुप ज्ञई और बरनबास और पूलूस से उन समस्त लक्षण और आश्चर्य का बर्णन

सुन्नेलगे जो ईश्वर ने उनके ओर से अन्यदेशियों में दिखलाये।
१३ और जब वे चुपरहे याक़ूब ने कहा कि हे मनुष्य भाइयो
१४ मेरी सुनो। शमऊन ने बर्णन कियाहै कि ईश्वर ने पहिले
अन्यदेशियों पर किस रीति से कृपा किई कि उनमें से अपने
१५ नाम के लिये एक मंडली चुनलेय। और आगमज्ञानियों के
१६ बचन उस्से मिलतेहैं जैसा कि लिखाहै। उसके पीछे मैं
फिरोंगा और दाऊद के तंबू को जो गिरगयाहै फेरके
बनाओंगा और उसके उजाड़ों को फेर बनाओंगा और
१७ खड़ाकरोंगा। कि जो लोग रहिगयेहैं और समस्त अन्यदेशी
जो मेरे नाम के हैं प्रभु को ढूंढ़ें यह परमेश्वर की कहीऊईहै
१८ जो इन बस्तुन को पूरा करताहै। ईश्वर को उसके सकल
१९ कर्म जगत की उत्पत्ति से जानेऊएहैं। सो मेरा मंत्र यह है
कि उनको जो अन्यदेशियों में से ईश्वर के ओर फिरेहैं दुख
२० नदियाजाय। परंतु कि हम उन्हें लिखें कि मूर्त्तिन की
अपवित्रता और ब्यभिचार और मरीऊई बस्तुन से और
२१ रुधिर खाने से परे रहें। क्योंकि अगिले समय से हरएक
नगर में ऐसे लोग हैं जो मूसा का उपदेश देतेहैं जैसा कि
२२ मंडलियों में हर बिश्राम के दिन में पढ़ाजाताहै। तब
प्रेरित और प्राचीनलोग समस्त मंडली समेत प्रसन्न ऊए कि
कईएक मनुष्य को अर्थात यहूदा को जिसकी पदबी बरसबास
थी और सीलास को जो भाइयों में प्रधान था चुनके पूलूस
२३ और बरनबास के संग अंताकियः को भेजें। और उन्हों ने
उनके ओर से इस रीति से लिखभेजा कि भाइयों को जो
अंताकियः और शाम और किलकियः में हैं और आगे
अन्यदेशियों में के थे प्रेरितों और प्राचीनों और भाइयों
२४ का नमस्कार। जैसा कि हमसब ने सुना कि कितेक जन ने
हम्में से निकलकर तुमसभों को बातें कहिके व्याकुल किया
और तुम्हारे मन को यह कहिके ऊंचानीचा किया कि

खतनः करवाओ कर्म शास्त्र पर चलो जो आज्ञा हमों ने
२५ नदिईथी। सो हमसब ने एकमता होके योग्य जाना कि
चुनेझए मनुष्यन को अपने प्रिय बरनबास और सूलूस के
२६ संग तुम्हारे पास भेजें। जो ऐसे मनुष्य हैं जिन्हों ने अपने
प्राण को हमारे प्रभु ईसा मसीह के नाम के लिये सौंपदिया।
२७ सो हमसब ने यहूदा और सीलास को भेजाहै वे मुंह से भी
२८ ये बातें कहेंगे। क्योंकि धर्मात्मा को और हमसब को अच्छा
लगा कि केवल उन कार्यन के जो अवश्य हैं तुमसभों पर
२९ अधिक भार नडालें। कि तुमलोग मूर्ति पर के बलिदान से
और रुधिर से और मरीझई बस्तुन के खाने से और
व्यभिचार से परे रहो उनसे जो तुमसब अपने को अलग
३० रक्खोगे तो भला करोगे तुम्हारा भला होय। सो वे बिदा
होके अंताकियः में आये और मंडली को एकठे करके
३१ पत्री पझंचाई। वे उस कुसल की पत्री को पढ़के आनंद
३२ झए। और यहूदा और सीलास ने जो आपभी आगमज्ञानी
थे बझतसी बातों से भाइयों को उपदेश करके दृढ़ किया।
३३ और वे कुछदिन बीते कुशल से भाइयों से बिदा होके
३४ प्रेरितों के ओर गये। परंतु सीलास को यों प्रसन्न आया
३५ कि आप वहां रहे। पूलूस और बरनबास ने भी और
बझतों के संग प्रभु का बचन उपदेश करते और सिखावते
३६ अंताकियः में बासकिया। और कुछ दिन के पीछे पूलूस ने
बरनबास से कहा आओ हम अपने भाइयों से हरएक
नगर में जहां हम ने प्रभु के बचन का उपदेश दियाहै फिरके
३७ भेटकरें और देखें उनकी क्या दशा है। और बरनबास ने
चाहा कि यूहन्ना को जिसकी पदवी मरकुस थी अपने संग
३८ लेवे। परंतु पूलूस ने समुझा कि एक मनुष्य को संग लेना
ठीक नहीं जो पंफूलियः में उनसे अलग होगया और कार्य
३९ के कारण उनके संग नगया। और उनमें ऐसा बड़ा बिवाद

ऊआ कि वे आपुस में अलग होगये और बरनबास मरकुस
४० को लेके कबरस को नाव पर चलागया। और पूलुस ने
सीलास को लिया और भाइयों से ईश्वर के अनुग्रह को
४१ सौंपाजाके बिदाऊआ। और वुह शाम और किलकियः से
मंडलियों को दृढ करताऊआ चलागया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

फेर वुह दर्बः और लस्तरः में पऊंचा और वहां तीमताऊस
नाम एक शिष्य था जिसकी माता यहूदियः थी जो बिश्वास
२ लाई और उसका पिता यूनानी था। लस्तरः और यकूनियः
३ के भाईलोग उसकी भलाई के जानकार थे। उसको पूलुस ने
चाहा कि अपने संग लेचले सो लेके उन यहूदियों के लिये जो
उस सिवाने के थे उसका ख़तनः किया क्योंकि वे सब जानतेथे
४ कि उसका पिता यूनानी था। और उन्हों ने नगरों में
फिरतेऊए उन आज्ञा को जो यिरोशलीम के प्रेरितों और
प्राचीनों ने ठहराईथी उनके स्मरण के लिये पऊंचाया।
५ और समस्त मंडली बिश्वास में दृढ ऊई और गिनती में
६ प्रतिदिन बढ़तीगई। और जब वे फरूजः और गलतियः के
देश से जाचुके धर्मात्मा ने उन्हें बरजदिया कि आसिया में
७ बचन को नसुनावें। तब मूसियः में आके उन्हों ने बतूनियः
को जानेकी इच्छा किई परंतु आत्मा ने उन्हें जाने नदिया।
८ सो वे मूसियः से जाके तरवास में उतर आये। और पूलुस
को रात्री में दर्शन दिखाईदिया कि मकदूनियः का एक
मनुष्य खड़ा ऊआ उसको बिनती करके कहताहै कि पार
उतरके मकदूनियः में आ और हमारा उपकार कर।
१० और जब उसको दर्शन दिखाईदिया तुरंत हम ने मकदूनियः
में जानेको मन किया यह निश्चय जानके कि प्रभु ने हमें
११ बुलायाहै कि उनमें मंगलसमाचार का उपदेश करें। सो

हम तरवास से नाव खोलके सीधे सामूतराकी को आये
१२ और दूसरे दिन नेयापूलस को। और वहां से फिलिप्पी में
आये जो मकदूनियः के उधर के नगरन में बड़ा नगर और
परदेशियों का निवास है उसी नगर में कुछ दिन रहे।
१३ और बिश्राम के दिन हमसब उस नगर से निकलके नदी के
तीर पर गये जहां प्रार्थना किईजातीथी और बैठके उन
१४ स्त्रिअन से जो एकट्ठे हुईं बातें करनेलगे। और सुआतीरः
के नगर की एक स्त्री जिसका नाम लूदियः था जो बैंजनीरंग
की बेंचनहारी थी और ईश्वर को भजती थी हमारी सुनी
उसके मन को ईश्वर ने खोला कि बचन को जो पूलूस
१५ कहताथा मन लगाके सुन्नेलगी। और जब अपने परिवार
समेत स्नान पाचुकी तो बिनती करके कहनेलगी जो तुम मुझे
ईश्वर की बिश्वासिनी जानतेहो तो मेरे घर में आके रहो
१६ और हमोंको बरबस लेगई। और जब हम प्रार्थना को चले
तो ऐसा हुआ कि एक कन्या हमको मिली जो दैवज्ञात्मा से
ग्रस्त थी और अपने अधिकारियों को आगम कहि कहिके
१७ बहुत कुछ कमवादेतीथी। वुह पूलूस के और हमारे पीछे
पीछे चली और चिल्लाके कहनेलगी कि ये मनुष्य अतिमहान
ईश्वर के सेवक हैं और हमोंको निस्तार का मार्ग
१८ दिखावतेहैं। और वुह बहुत दिन लों यह करतीरही
परंतु पूलूस उदास होके फिरा और उस आत्मा को कहा
मैं ईसा मसीह के नाम से तुझको आज्ञा देताहों उसपर से
१९ उतर वुह उसी घड़ी उस पर से उतरगया। और जब
उसके अधिकारियों ने देखा कि लाभ की आशा जातीरही
तो पूलूस और सीलास को पकड़ा और हाट में खैंचेहुए
२० प्रधानों कने लेचले। और उन्हें अध्यक्षन के समीप लेआये
और बोले कि ये मनुष्य जो यहूदी हैं हमारे नगर को निपट
२१ सतावतेहैं। और हमसब को वुह ब्यवहार सिखावतेहैं

जिन्हें ग्रहण करना और पालन करना हमारे कारण योग्य
२२ नहीं क्योंकि हमलोग रूमी हैं। तब मंडली उनके बिरोध में
एकळे उठी और अध्यक्षन ने उनके कपड़े फाड़े और आज्ञा
२३ किई कि उन्हें मारें। और बज़तसी ताड़ना करके उन्हें
बंदीगृह में डाला और वहां के प्रधान को आज्ञा किई कि
२४ उनको बज़त चौकसो से रक्खें। उसने यह आज्ञा पाके उन्हें
भीतर के बंदीगृह में ढकेला और उनके पाओं को काठ में
२५ डाला। आधीरात को पूलूस और सीलास प्रार्थना में
२६ ईश्वर की स्तुति गानेलगे और बंधुए सुनतेथे। कि आकस्मात
बड़ा भुईंडोल ज़आ ऐसा कि बंदीगृह की नेवें हिलगईं
और तुरंत समस्त द्वार खुलगये और हरएक की पैकड़ी
२७ खुलगईं। तब बंदीगृह का प्रधान नींद से उठा और
बंदीगृह के द्वार खुले देखके समुझा कि बंधुए भागगये और
२८ खड्ग खींचकर चाहा कि अपने को प्राण से मारडाले। तब
पूलूस ने बड़े शब्द से कहा कि अपने को दुख न दे इसलिये कि
२९ हमसब यहीं हैं। तब वुह दीपक मंगवाकर लपकके भीतर
गया और थरथराताज़आ पूलूस और सीलास के आगे
३० गिरपड़ा। और उन्हें बाहार लाके कहा कि हे महाशय
३१ मैं क्या करों कि उद्धार पाओं। वे बोले कि प्रभु ईसा मसीह
पर बिश्वास लाउ कि तू और तेरा घराना उद्धार पावेगा।
३२ तब उन्हों ने उसको और उनसभों को जो उसके घर में थे प्रभु
३३ का बचन सुनाया। और उसने उन्हेंउसी घड़ी रात को लेके
उनके घावों को धोया और वहीं उसने और उसके सभों ने
३४ स्नान पाया। और उसने उनको अपने घर में लाके उनके
सन्मुख भोजन रक्खा और अपने सारे घर समेत ईश्वर पर
३५ बिश्वास लाके आनंद किया। और जब प्रातःकाल ज़आ
अध्यक्षन ने प्यादों के ओर से यह कहला भेजा कि उन
३६ मनुष्यन को छोड़देउ। और बंदीगृह के रखवार ने ये बातें

पूलूस को कहिसुनाईं कि अध्यक्षन ने कहलाभेजाहै कि तुम
३७ को छोड़देंउ सो अब निकलके कुशल से जाइये। परंतु
पूलूस ने उनको कहा कि यद्यपि हम रूमी हैं उन्हों ने हमें
दोषी ठहराए बिना प्रगट में मारा और बंदीगृह में डाला
और अब वे हमको चुपके से निकालदेतेहैं कधी नहोगा वे
३८ आप आके हमको निकालें। तब प्यादों ने जाके ये बातें
अध्यक्षन को सुनाईं जब उन्हों ने सुना कि वे रूमी हैं वे
३९ डरगये। और आकर उनको बिनती किई और बाहर लाके
४० छोड़दिया कि नगर से बाहर जांय। सो वे बंदीगृह से
निकलकर लूदियः कने गये और भाइयों को देखके धीरज
दिया और वहां से प्रस्थान किया।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब

तब वे अंफपूलस और अफलूनियः से होके तसलूनीकी में
२ आये जहां यहूदियों की एक मंडली थी। और पूलूस अपने
ब्यवहार पर उनमें प्रवेशकरके तीन बिश्राम के दिन लों ग्रंथ
३ पढ़ पढ़के उन्हें सुनावतारहा। और खोल खोलके और
साक्षी लालाके कहताथा कि अवश्य था कि मसीह दुख
उठावे और जी उठे और कि यह ईसा जिसका मैं तुम्हें
४ सुनावताहों मसीह है। तब उनमें से कइएक बिश्वास लाये
और पूलूस और सीलास से मिलगये और ऐसही धर्मी
यूनानियों में से एक बड़ीमंडली और ऐसही प्रधान स्त्रिअन
५ मेंसे कितनी। परंतु यहूदियों ने जो बिश्वास नलायेथे डाह
से भरके निंदित लोगों मेंसे कितने दुष्टन को अपने संग
लिया और एक मंडली को बटोरके सारे नगर में ऊल्लर
मचाया और यासून के घर को घेरके चाहा कि उन्हें लोगों
६ के पास लावें। और वे उनको नपाके यासून को कितने
भाइयों के संग नगर के प्रधानों के पास खींचलेगये और

चिल्लाते जातेथे कि जिन्हों ने जगत को उलटदिया यहां
७ भी आयेहैं। उनको यासून ने ग्रहण किया और ये सब कैसर
की आज्ञा से उलटा करके कहतेहैं कि राजा तो दूसरा
८ है अर्थात ईसा। सो उन्हों ने लोगों को और नगर के
९ अध्यक्षन को ये सुनाकर व्याकुल किया। तब उन्हों ने यासून
१० को अरु औरों को बिचवई लेके छोड़दिया। और भाइयों
ने तुरंत पूलूस और सीलास को रातेरात बरिया नगर
को बिदा किया वे वहां आके यहूदियों की मंडली में गये।
११ यहां के लोग तसलूनीकी के लोगों से अधिक प्रतिष्ठित थे कि
उन्हों ने बचन को बड़े आनंद से मानलिया और प्रतिदिन
ग्रंथन में ढूंढ़तेरहे कि ये बातें योंहीं हैं अथवा नहीं।
१२ इस कारण बऊत उनमें से और यूनानी की उत्तम स्त्रिअन
१३ में सेभी और पुरुषन में से बऊतेरे बिश्वास लाये। और
जब तसलूनीकी के यहूदियों ने जाना कि पूलूस बरिया में भी
ईश्वर के बचन को सुनावताहै उन्हों ने वहां भी आके मंडली
१४ को उसकाया। और भाइयों ने उसी समय पूलूस को बिदा
किया कि यों जावें जैसे नदी को जातेहैं परंतु सीलास और
१५ तीमताऊस वहीं रहे। और वे जो पूलूसके अगुआ थे उसे
असीनः में लाये और सीलास और तीमताऊस के लिये
आज्ञा लेके चलनिकले कि शीघ्र जैसे होसके उसके पास आवें।
१६ सो जब पूलूस असीनः में उनकी बाट जोहरहाथा और
सारे नगर को देवपूजक देखा तो उसका मन भीतर से
१७ जलउठा। इस कारण वुह मंडलियों में यहूदियों से और
धर्मीलोगों से हाट में और उनसे जो उसे मिलतेथे प्रतिदिन
१८ बिवाद करताथा। तब अफकूरी और सतूइकी के पंडितों
में से कईएक उसके सम्मुख ऊए और कितनों ने कहा कि
यह बकवादी क्या कहाचाहताहै और कितने बोले कि यह
परदेशी देवतन का प्रगट करनिहार समुझपड़ताहै क्योंकि

१९ वुह उन्हें ईसा का और जीउठने का संदेश देताथा। सो उन्हों ने उसे पकड़ा और मिर्रीख़ के पहाड़ पर लाके कहा कि क्या हमलोग जानसक्तेहैं यह नई बात जो तू कहताहै क्याहै।
२० क्योंकि तू अनोखी बातों को हमारे कान लों पहुंचाताहै
२१ हमसब उन बस्तुन का भेद जान्ने चाहतेहैं। यह इसलिये था कि सारे असीनः के बासी और परदेशी जो वहां जारहेथे केवल नई बात कहने अथवा सुन्ने के अपना समय
२२ और कोई कार्य्य में नकाटतेथे। तब पूलूस मिर्रीख़ के पहाड़ के मध्य में खड़ाहोके बोला कि हे असीनः के मनुष्यो मैं तुम्हों
२३ को हरएक बात में अधिक पूजेरी देखताहों। क्योंकि मैं ने जातेहुए और तुम्हारे देवालय पर दृष्टि करतेहुए एक बेदी पाई जिसकी पदवी यह है कि ईश्वर की जो गुप्त है सो जिसको तुमसब बिना जाने पूजतेहो मैं तुम्हें उसीका संदेश
२४ देताहों। ईश्वर जिसने संसार और सब कुछ जो उसमें है उत्पन्न किया यद्यपि आकाश और पृथिवी का प्रभु है मंदिरों में जो हाथों से बनायेगयेहैं बास नहीं करता।
२५ और वुह इसीलिये मनुष्य के हाथों से सेवा नहीं करवाता कि वुह किसी बस्तु का आधीन है क्योंकि उसीने सब को
२६ जीवन और श्वास और सबकुछ दिया। और एक लोहू से समस्त सिवानों के मनुष्यन को उत्पन्न किया कि सारी पृथिवी पर बास करें और उनके निवास के सिवानों को
२७ ठहराया। कि प्रभु को ढूंढ़ें क्या जानें उसको टटोलकर
२८ पावें यद्यपि वुह हम्में से किसी से दूर नहींहै। क्योंकि हम उसी से जीते और चलते फिरते और स्थिर हैं जैसा कि तुम्हारेही कितने कबितन ने भी कहाहै कि हम तो उसी के
२९ बंश हैं। सो जो हम ईश्वर के बंश हैं तो हमको उचित नहीं कि यह समुझें कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के समान है जो मनुष्य की बुद्धि और कारीगरी से

३० खोदागयाहै। सो अज्ञानता के समय में आनाकानी करके अब ईश्वर आज्ञा करताहै कि हरएक मनुष्य जो जहां है
३१ पश्चात्ताप करे। क्योंकि उसने एक दिन ठहरायाहै कि उस मनुष्य के ओर से जिसको उसने स्थापित कियाहै याथार्थ्य से संसार का न्याय करेगा और उसने सब को उस मनुष्य के
३२ फेर जिलावने से इस बात की दृढ़ता दिई। और जब उन्हों ने मृतकन के जी उठने की सुनी कितनों ने ठठ्ठा किया परंतु औरों ने कहा कि हम तुझ्से उसके बिषय में फेर
३४ सुनेंगे। सो पूलुस उनमें से जातारहा। तथापि कितने लोग उस्से मिलके बिश्वास लाये उनमें देयूनसयूस मंत्री था और एक स्त्री दमरस नाम की अरु उनके संग और कितने थे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब

२ उसके पीछे पूलूस अथीनः से जाके करंतूस में आया। और अकला नाम एक यहूदी को पाया जो पंतस के देश का था और उन्हीं दिनों में अपनी स्त्री परसकला के संग ऐतालिया से आयाथा इस लिये कि कलादियूसने आज्ञा किईथी कि सारे यहूदी रूम से निकलजावें सो वुह उनके पास आया।
३ और इस लिये कि वुह उन्हीं के ऐसा उंधमी था उनके संग रहा और कार्य करनेलगा क्योंकि उनका कार्य तंबू बनावनेका
४ था। और उसने हर बिश्राम के दिन मंडली में चर्चा किई और
५ यहूदियों और यूनानियों को मनालिया। और जब सीलास और तीमताऊस मकदूनियः से आये पूलूस मन में सचेत होके यहूदियों के पास साक्षी देता था कि ईसा वही मसीह है।
६ और जब उन्हों ने रोक किया और पाषंड बका उसने अपने बस्त्र को झाड़के उन्हें कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे सिर पर मैं पवित्र हों सो अब से मैं अन्यदेशियों के ओर जाताहों।
७ फेर उसने वहां से जाके एक मनुष्य के घर में प्रवेश किया

जो ईश्वर का भक्त था उसका नाम यूसतूस था और उसका
८ घर मंडली से मिलाहुआथा। तब क्रिसपस मंडली का
प्रधान अपने सारे घर समेत प्रभु पर बिश्वास लाया और
बहुतसे करंती सुनके बिश्वास लाये और उन्हें स्नान दियागया।
९ तब प्रभु ने रात को स्वप्न में पूलूस को कहा कि भय मतकर
१० कहताजा और चुपका मतरह। क्योंकि मैं तेरे संग हों
और किसी का हाथ नपड़ेगा कि तुझे सतावे क्योंकि इस
११ नगर में मेरे लोग बहुत हैं। सो वुह एक बर्ष छः महीने
वहां बास करके ईश्वर का बचन उन्में उपदेश करतारहा।
१२ और जब जलयून अखाया का अध्यक्ष हुआ यहूदियों ने
एकमता होके पूलूस को आघेरा और उसे न्याय के स्थान में
१३ लाके कहा। कि यह मनुष्य लोगों को बहकाताहै कि शास्त्र
१४ से उलटा ईश्वर को पूजें। और जब पूलूस ने चाहा कि मुंह
खोले जलयून ने यहूदियों को कहा कि हे यहूदियो जो यह
कुछ अंधेर अथवा नटखटी होती तो उचित था कि मैं तुम्हारा
१५ सहाय करता। परंतु जो यह बचन का और नाम का
और तुम्हारे शास्त्र का बिवाद है तुम्हीं जानो मैं नहीं
१६ चाहता कि इसका न्यायी हों। और उसने न्यायके स्थान से
१७ उन्हें हांकदिया। तब समस्त यूनानियों ने मंडलीके बड़े
प्रधान सस्थनीस को पकड़ा और उसे न्यायस्थान के सामें
१८ मारा और जलयून ने उन बस्तुन को कुछ नसमुझा। अरु
पूलूस और भी बहुत दिनलों वहां रहा फेर भाइयों से
बिदा होके कनकरिया में मनौती के कारण अपना सिर
मुंड़ाया और परसकला और अकला के संग नाव पर
१९ सिरिया को चलागया। और वुह अफसस में आया और
वहां उन्हें छोड़ा और आप मंडली में प्रवेश किया और
२० यहूदियों से बातें करनेलगा। जब उन्हों ने चाहा कि
२१ कुछ दिन हमारे संग रहे उसने नमाना। और आप

उनसे यह कहिके बिदा ऊआ कि मुझे अवश्य है कि आवनिहार पर्व्व को मैं यिरूशलीम में होऊं परंतु जो ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आओंगा और उसने अफसस
२२ से नाव खोली। और वुह कैसरिया में पऊंच के तीर पर गया और मंडली को नमस्कार करके अंताकियः में
२३ उतरपड़ा। और वहां कुछ दिन रहके चलागया और समस्त शिष्यन को दृढ़ करताऊआ एक ढबसे गलतियः के
२४ देश और बरजियः में सर्ब्बत्र फिरा। और अफालूस नाम एक यऊदी था जो अस्कंदरियः देश का और सुबक्ता और ग्रंथन के ज्ञान में बड़ा निपुण था सोई अफसस में आया।
२५ उस मनुष्य ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाईथी और मन के ज्वलन से प्रभु की बातें कहता और यत्न से सिखावताथा
२६ परंतु केवल यहिया के स्नान लों जानताथा। उसने निर्भय से मंडली में कहना आरंभ किया और अकला और परसकला ने उसका बचन सुनके उसे लिया और ईश्वर
२७ का मार्ग अति अच्छी रीति से उसे बर्णन किया। और जब उसने चाहा कि अखायः को पार उत्तर जाय तो भाइयों ने शिष्यन के पास लिखा कि उसे ग्रहण करें और उसने पऊंचके उनका जो अनुग्रह के द्वारा से बिश्वास लायेथे
२८ बऊत सहाय किया। क्योंकि उसने बड़ी दृढ़ताई से ग्रंथन में दिखाके कि ईसा वही मसीह था यऊदियों को प्रगट दोष दिया।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१ और ऐसा ऊआ कि जब अफालूस करनतस में था पूलूस ऊपर के सिवाने में फिरके अफसस में आया और कितने
२ शिष्यन को पाके। उन्हें कहा कि क्या जब से तुमलोग बिश्वास लाये तुम्हों ने धर्मात्मा को पाया उन्हों ने उसको कहा हमसब

३ न तो यह भी नहीं सुना कि कोई धर्मात्मा है। उसने उन्हें कहा तो तुम्हों ने कैसा स्नान पाया वे बोले कि हमसब ने
४ यहिया का स्नान पाया। तब पूलूस ने कहा कि यहिया ने पश्चात्ताप का स्नान देतेहुए लोगों को यों कहा कि तुमसब उसपर बिश्वास लाओ जो मेरे पीछे आताहै अर्थात् मसीह
५ ईसा पर। उन्हों ने यह सुनके प्रभु ईसा के नाम से स्नान
६ पाया। और जब पूलूस ने उनपर हाथ रक्खे धर्मात्मा उन पर उतरा और वे भांति भांति की भाषा बोले और आगम
८ की बातें कहनेलगे। वे सब मनुष्य बारह एक थे। और वुह मंडली में प्रवेश करके तीन महीने लों साहस से ईश्वर के राज्य के बिषय में बिवाद करता और समझातारहा।
९ परंतु जब मंडली के आगे कितने जो कठोर और अबिश्वासी थे उस मार्ग को बुरा कहनेलगे वुह उनसे अलग होकर शिष्यन को एकांत में लेके तरसस की पाठशाला में प्रतिदिन
१० बिवाद करनेलगा। और दो बर्ष लों यही हुआकिया यहांलों कि आसिया के निवासियों ने क्या यहूदी और क्या
११ यूनानी सभों ने प्रभु ईसा का बचन सुना। और पूलूस के
१२ हाथों से ईश्वर ठीक आश्चर्य दिखावताथा। यहांलों कि अंगउछा और धोती उसके शरीर को छुआके रोगियों पर डालतेथे और उनका रोग जातारहताथा और दुष्टात्मा
१३ उनपर से उतर जातेथे। तब द्वार द्वार फिरनिहार और मंत्र पढ़निहार और टोनाकरनिहार यहूदियों में से कितनों ने अपने ऊपर यह लिया कि जिनपर अपवित्र आत्मा की छाया थी उनपर प्रभु ईसा का नाम पढ़के कहनेलगे कि हमसब तुम्हें ईसा की किरिया देतेहैं जिसका
१४ उपदेश पूलूस करताहै। और सुकवा यहूदी प्रधान याजक
१५ के सात बेटे थे जो यही करतेथे। तब दुष्टात्मा ने उत्तर दिया और कहा कि ईसा को मैं जानताहों और पूलूस का

१६ भी जानकार हों परंतु तुमलोग कौन हो। और वुह
मनुष्य जिसपर दुष्टात्मा की छाया थी उनपर कूदा और
उनपर प्रबल होके उन्हें जीता यहांलों कि वे घर से नंगे
१७ और घायल निकलभागे। और यह सब यहूदियों और
यूनानियों को जो अफसस के बासी थे जानपड़ा और उन
सबको डरलगा और प्रभु ईसा के नाम की महिमा ऊई।
१८ और बक्रतों ने जो बीश्वास लायेथे आके मानलिया और
१९ अपनी क्रिया को दिखादिया। और बक्रतेरे उनमें से भी जो
इंद्रजाली करतेथे अपने ग्रंथन को एकठ्ठे लाये और सबके
सन्मुख फूंकदिया और उन्हों ने उनके मोलका जो लेखा
२० किया तो पचास सहस्र रूपऐ ऊए। ऐसे पराक्रम से ईश्वर
२१ का बचन बढ़ा और बलवंत ऊआ। जब ये बातें होचुकीं
पूलूस ने अपने मन में चाहा कि मक़दूनियः और अखानियः
से होके यिरोशलीम को जावे और कहा कि जब मैं वहां
२२ होलों तो अवश्य है कि रूम को भी देखों। और उन्में से जो
उसकी सेवा करतेथे उसने दोको मक़दूनियः में भेजा एक
तीमताउस और दूसरा आरास्तस परंतु वुह आप
२३ आसिया में कुछ दिन रहा। और उस समय उस मत के
२४ विषय में वहां बड़ा कोलाहल ऊआ। इस लिये कि
दीमीतरयूस नाम एक सुनार था जो अरतमस के मंदिर
के स्वरुप रूपे के बना बनाके कारीगरों को बक्रत लाभ प्राप्त
२५ करावताथा। उसने उनको ऐसे कामकाजियों के संग एकठ्ठे
बटोरके कहा कि मित्रो तुमसब जानतेहो कि हमारा धन
२६ इसी उद्यम से है। और तुमसब देखते और सुनतेहो कि
केवल अफसस में नहीं परंतु समस्त आसिया में इस पूलूस
ने बक्रतसे लोगों को फुसिलाके भटकायाहै और कहताहै
२७ जो हाथों से बनेहैं सो ईश्वर नहीं होते। सो केवल यही
तो भय नहीं कि हमारे उद्यम का निरादर होजाय परंतु

अरतमस महेश्वरी का मंदिर भी निंदित होजायगा और
जिसकी पूजा समस्त आसिया और संसार करतेहैं उसकी
२८ महिमा जाती रहेगी। वे यह सुनके क्रोध से भरगये और
चिल्लाके यों बोले कि अफिसियों की अरतमस महान है।
२९ तब सारा नगर बड़ी घबराहट से भरगया और गायूस
और अरिस्तर्खुस को जो मक़दूनियः के बासी और पूलुस के
३० संगी थे पकड़के एकमन से क्रीड़ा स्थान को दौड़गये। और
जब पूलुस ने चाहा कि मंडली में प्रवेश करे शिष्यन ने उसको
३१ नछोड़ा। और आसिया के प्रधानों में से भी कितनों ने जो
उसके मित्र थे उसे बिनती करके कहलाभेजा कि तू क्रीड़ा
३२ स्थान में जानेसे परे रह। तब कितनों ने कुछ चिल्लाके कहा
और कितनों ने कुछ क्योंकि मंडली व्याकुल थी और बहुतेरे
३३ नजानतेथे कि हम किस लिये एकट्ठे हुएहैं। और उन्हों ने
असकंदर को मंडली में से बढ़ाया और यहूदी उसे
धकियावतेथे और असकंदर ने हाथ से सैन करके चाहा कि
३४ लोगों के आगे अपने विषय में बार्त्ता करे। परंतु जब उन्हों
ने जाना कि वुह यहूदी है तो सबके सब दोघड़ी लों गला
मिलाके चिल्लाये कि अफसीयों की अरतमस महान है।
३५ और अध्यापक ने मंडली को धीमा करके कहा कि हे अफसी
मनुष्यो कौनसा मनुष्य है जो नहीं जानता कि अफसस का
नगर महेश्वरी अरतमस का और उस मूर्त्ति का पूजेरी है जो
३६ वृहस्पति से गिरीहै। अब जैसा कि ये बातें नाह करने के
योग्य नहीं तुम्हों को उचित है कि चैन से रहो और बिन
३७ धीरज से कुछ नकरो। इसलिये कि तुमसब इन मनुष्यन को
यहां लायेहो जो न तो मंदिर के चोर हैं और नतुम्हारी
३८ ईश्वरी के पाषंड के बकवादी हैं। इसलिये जो दिमीतरयूस
और कारीगर जो उसके संग थे किसी पर अपवाद रखतेहैं
आज अदालत बैठी है और अध्यक्ष हैं एक दुसरे से परस्पर

३९ करे। परंतु जो तुमसब आनआन बात के बिषय में पूछो तो
४० वुह योग्य के सभा में निर्णय कियाजायगा। क्योंकि हमसब आज के कार्य के लिये भय में हैं कि हमपर इस हुल्लर का दोष नलगायाजाय इसलिये कि हमारे पास कोई ऐसा
४१ कारण नहीं जो इस झगड़े का कुछ उत्तर होसके। और उसने यों कहिके उस सभा को बिदा किया।

२० बीसवां पर्व्व

जब हुल्लर थीमा हुआ पूलूस ने शिष्यन को बुलाया और
२ मिलके चलनिकला कि मक़दूनियः को जाय। और उसने उन समस्त देशों से पार होके और उन्हें बहुतकुछ कहिके उपदेश
३ दिया और यूनान में आया। तीन महीने के पीछे जब वुह सुरिया में जाने पर था यहूदी लोग उसकी घात में लगे तब
४ उसने उचित जाना कि मक़दूनियः में होके फिरे। और सूपतरस बराई का और अरिस्तरखस और सकंदस और जायूस दरबी का और तीमताउस और आसिया का तख़कस
५ और तरफ़मस उन सभों के संग आसिया लों गये। ये सब आगे
६ आके तरवास में हमारी बाट जोहनेलगे। बिनख़मीरी रोटी के दिनों के पीछे फ़लिप्पी से हम नाव पर चले और पांच दिन के पीछे तरवास में उनके पास पहुंचे और सात दिन
७ वहां काटे। और अठवारे के पहिले दिन जब शिष्यलोग एकट्ठे होके रोटी तोड़ने आये पूलूस सिद्ध होके कि तड़के चलाजाय उनसे कथा कहनेलगा और यहांलों बचन को
८ फैलादिया कि आधी रात होगई। और ऊपर के स्थान में जहां वे एकट्ठे थे बहुतसे दीपक थे। वहां एक तरुण
९ यूतख़स नाम का खिड़की में बैठाथा जो सोचला और जबकि पूलूस ने बातें बढ़ाईं वुह नींद में पड़के तीसरी अंटारी से
१० गिरपड़ा और उठावतेहुए उसको मराहुआ पाया। तब

पूलूस उतरके उसे लपटगया और गले में लगाके कहा
११ तुमसब मत घबराओ क्योंकि उसका प्राण उसमें है। फेर
वुह ऊपर आया और रोटी तोड़के और खाके अबेर लों
बातें करता रहा यहां लों कि भोर हुआ तब बिदा हुआ।
१२ और वे उस तरुण को जीता लाये और बहुत शांत हुए।
१३ और हम आगे नाव पर जाबैठे और असस को चले इस
इच्छासे कि पूलूस को वहां चढ़ालेवें क्योंकि वुह पैदल जाने
१४ की इच्छा करके ऐसा कहिगयाथा। जब वुह असस में हम
१५ को मिला हम उसे लेकर मतलीनी में आये। और वहां से
नाव खोलके दूसरे दिन ख़यूस के साम्ने आये और उसके
दूसरे दिन सामस में पहुंचे और तरजलियून में रहिके दूसरे
१६ दिन मिलीतस में आये। क्योंकि पूलूस ने मन में कियाथा कि
अफसस से होके जाय ऐसा नहो कि आसिया में उसका
रहना बहुत होय इस लिये वुह शीघ्र करताथा कि जो
१७ होसके तो तंबू का पर्व्व यिरोशलीम में होय। और उसने
मीलीतस और अफसस के ओर संदेश भेजकर मंडली के
१८ प्रधानों को बुलाया। जब वे उसके पास आये तो उन्हें कहा
तुमलोग जानतेहो कि पहिले दिन से जब मैं आसिया में आया
१९ मैं किस रीति से नित तुम्हारे संग था। और अत्यंत दीनताई
से बहुत से आंसू बहा बहाके उन परीक्षन में प्रभु की सेवा
करताथा जिनमें मैं यहूदियों के घात में रहने से पड़ा।
२० क्योंकि मैं ने कोई बस्तु जो लाभ की थी नछोड़ी परंतु तुम्हें
संदेश दिया और तुम्हों को मंडली में और घर घर
२१ सिखलाया किया। और यहूदियों और यूनानियों के आगे
साक्षी दिई कि ईश्वर के ओर मन से फिरो और हमारे प्रभु
२२ ईसा मसीह पर बिश्वास लाओ। और अब देखो मैं आत्मा
में बंधाहुआ यिरोशलीम को चलाहों और नहीं जानता कि
२३ वहां मुझ पर क्या क्या कुछ बीतेगा। परंतु इतना कि धर्मात्मा

हरएक बस्ती में यह कहिके साक्षी देताहै कि सीकरें और
२४ पीड़ा मेरे लिये धरीहैं। पर मैं उसे कुछ नहीं बूझता और
नमैं आप अपने प्राण को प्रिय जानताहों जिस्तें मैं अपने
दौड़ को और उस सेवा को आनंद से संपूर्ण करों जो मुझे
प्रभु ईसा से मिली कि ईश्वर के अनुग्रह का मंगलसमाचार
२५ देउं। और अब देखो मुझे निश्चय है कि तुम्में से जिनमें मैं
ईश्वर के राज्य का उपदेश देताफिराहों कोई मेरा मुंह फेर
२६ नदेखेगा। इस कारण मैं आजके दिन तुम्हें खोलके कहि
२७ सुनाताहों कि हरएक के लोहू से मैं पावन हों। क्योंकि मैं
तुम्हारे आगे ईश्वर की समस्त मता बर्णन करने से अलग
२८ नरहा। अब अपने लिये और उस सारे झुंड के लिये जिस
पर तुम्हें धर्मात्मा ने रखवार किया सौचेत रहो कि ईश्वर
की मंडली को चराओ जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया।
२९ क्योंकि मैं यह जानताहों कि मेरी यात्रा के पीछे फाड़निहार
३० झुंड़ार तुम्में प्रवेश करेंगे जो झुंड पर दया नकरेंगे। तुम्हों में
से भी कितने मनुष्य उठेंगे जो टेढ़ी बातें कहेंगे कि शिष्यन को
३१ अपने ओर खींच लेजावें। इसलिये जागतेरहो और स्मरण
करो कि मैं तीन बरस लों रात दिन रो रोके हरएक को नित
३२ चेतावतारहा। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और
उसके अनुग्रह के बचन को सौंपताहों कि वुह सामर्थी है कि
तुम्हें संपूर्ण करे और तुमसभों को उनमें जो पवित्र कियेगयेहैं
३३ अधिकार देवे। मैं ने किसीके रूपे अथवा सोने अथवा बस्त्र
३४ का लोभ नकिया। तुमलोग जानतेहो कि इन्हीं हाथों ने मेरी
३५ आवश्यक सेवा और मेरे संगियों की सेवा किई। मैं ने तुम्हें
सबकुछ बतादियाहै कि क्योंकर तुम्हें उचित है कि परिश्रम
करके दुर्बलों का प्रतिपाल करो और प्रभु ईसा के बचन का
स्मरण करो क्योंकि उसने आपी कहाहै कि देना लेने से
३६ अधिक धन्य है। और उसने यों कहिके घुठने टेके और उन

३७ सभों के संग प्रार्थना किई। और वे सब निपट रोए और
३८ पूलूस के गले पर गिरगिरके उसे चूमा। और निजकरके
उस बात पर जो उसने कही कि तुमसब मेरा मुंह फेर
नदेखोगे बक्त उदासीन क्त्ए और नाव लों उसके संग गये।

२१ इक्कीसवां पर्व्व

और यों क्त्आ कि जब हमलोग उनसे दूर पड़े और नाव
खुली तो चलते चलते कौस में आये और दूसरे दिन रूदस
२ को और वहां से पतरः को गये। और एक नाव पार
फूनीकी को जातीक्त्ई पाके हमलोग उसपर चढ़बैठे और
३ चलनिकले। और जब क़ुबरस का टापू दिखाईदिया उसे
बाएं हाथ छोड़के सुरिया को चले और सूर में लगाया क्योंकि
४ वहां नाव की बोझाई उतारनेको थी। और शिष्यन को
पाके हमसब वहां सात दिन ठहरगये और उन्हों ने आत्मा
५ के ओर से पूलूस को कहा कि यिरोशलीम को मतजा। और
उन दिनों को पूरा करके हम चलनिकले और अपना मार्ग
पकड़ा और वे सब स्त्रिअन और बालकन समेत नगर के
बाहर लों हमारे संग आये और हमने नदी के तीर पर
६ घुटने टेकके प्रार्थना किई। और हम आपुस में बिदा होकर
७ नाव पर चढ़े और वे अपने अपने घर को फिरे। और हम
लोग नाव पर सर्वत्र फिरके सूर से तलमाऊस में आये और
भाइयों को नमस्कार किया और एक दिन उन्हों के संग
८ रहे। दूसरे दिन हम जो पूलूस के संगी थे बिदा होके
कैसरियः में आये और फैलबूस मंगलसमाचार के उपदेशक
के यहां जो उन सात में से था उतरके उसके संग रहे।
९ और उस मनुष्य की चार कुआंरी पुत्री थीं जो आगम की
१० बातें कहतीथीं। और जब हमों ने वहां बक्तदिन लों
बास किया यहूदियः से अगबस नाम का एक आगमज्ञानी

११ आया। उसने हमारे पास आकर पूलुस की कमर का पटुका उठालिया और अपने हाथ पाओं को बांधके कहा कि धर्मात्मा ने यों कहाहै कि यिरोशलीम में यहूदी उस मनुष्य को जिसका यह पटुका है यों बाधेंगे और अन्यदेशियों
१२ के हाथ में सौंपेंगे। जब हमने ये बातें सुनी तो हमसब ने और वहां के बासियों ने उसकी बिनती किई कि यिरोशलीम
१३ को नजाय। तब पूलुस ने उत्तर दिया कि तुमसब क्यों रोतेहो और मेरे मन को तोड़तेहो क्योंकि मैं केवल बांधेजाने को नहीं परंतु यिरोशलीम में प्रभु ईसा के नाम के लिये
१४ मरने को भी तियारहों। और जब उसने नमाना हम यों
१५ कहिके चुपरहे कि प्रभुकी इच्छा होय। और उन दिनों के
१६ पीछे हम अपनी सामग्री लेके यिरोशलीम को चले। तब हमारे संग कैसरियः में के कितने शिष्य भी गये कि हमों को एक मनुष्य मनसून क़बरसी पुराने शिष्य के यहां लेजांय
१७ कि हम उसके घर में रहें। और जब हमसब यिरोशलीम
१८ में पहुंचे भाईलोग आनंद से हमें आगे से आमिले। और दूसरे दिन पूलुस हमारे संग याक़ूब के यहां आया और
१९ समस्त प्राचीन भी एकट्ठे थे। और उसने उन्हें नमस्कार करके सब कार्यन को जो ईश्वर ने अन्यदेशियों के मध्य में उसकी सेवकाईके ओर से कियेथे अलग अलग बर्णन किया।
२० उन्हों ने सुनके प्रभुकी स्तुति किई और उसे कहा कि भाई तू देखताहै कि कितने सहस्र यहूदी हैं जो बिश्वास रखतेहैं
२१ और सबकेसब मूसा के शास्त्र पर ज्वलित हैं। उन्हों ने तेरा संदेश पायाहै कि तू सारे यहूदियों को सिखावताहै जो अन्यदेशियों में हैं कि मूसा से फिरें और कहताहै कि अपने पुत्रन का खतनः नकरो और व्यवस्था के व्यवहारन पर मत
२२ चलो। सो यह क्याहै कि मंडली निःसंदेह एकट्ठे होगी
२३ क्योंकि वे सुनेंगे कि तू आयाहै। अब तू यह कर जो हम

तुझे कहतेहैं हमारेपास चार मनुष्य हैं जिनको मनौती पूरी
२४ करनाहै। उन्हें लेके आप को उनके संग प्रगट कर और
उनके लिये कुछ उठान कर कि वे अपना सिर मुंडावें तब
सब जानजायेंगे कि वे बातें जो हमसब ने उसके बिषय में
सुनीथीं कुछ नथीं परंतु तू भी व्यवस्था की रीति पर
२५ चलताहै। उन अन्यदेशियों के बिषय में जो बिश्वास लाएहैं
हम ने उन्हें कहिदियाहै कि हम ने यों ठहराया कि तुमसब
ऐसी कोई बस्तु धारण नकरो परंतु केवल इतना करो कि
मूर्त्तिन के प्रसाद से और लोहू से और गलाघोंटीहुई बस्तु
२६ के खाने से और व्यभिचार करने से परे रहो। तब पूलूस
ने उन मनुष्यन को लिया और दूसरे दिन उनके संग अपने
को पवित्र करके मंदिर में प्रवेश किया और कहिदिया कि
जब लों उनमें से हरएक का बलिदान चढ़ायाजाय पवित्र
२७ करने का समय संपूर्ण होजायगा। और जब वे सात दिन
बीतने पर आये यहूदियों ने जो आसिया के थे उसे मंदिर
में देखकर समस्त मंडलियों को उसकाया और उसपर
२८ हाथ डालके चिल्लाये। कि हे इसराइली मनुष्यो सहाय
करो यह वुह मनुष्य है जो हर स्थान में लोगों के और
व्यवस्था के और इस स्थान के बिरोध में सबको सर्वत्र
सिखावताहै और उस्सेभी अधिक यूनानियों को भी मंदिर
२९ म लाया और इस पवित्र स्थान को अशुद्ध किया। इसलिये
कि उन्हों ने आगे नगर में त्रफ़मस अफ़सस के बासी को
देखाथा और समझाथा कि पूलूस उसे मंदिर में लाया।
३० तब समस्त नगर में हुल्लर मचा और सब लोग दौड़के
एकट्ठे हुए और पूलूस को पकड़के मंदिर में से बाहर
३१ घसीटा और झट द्वार बंद कियेगये। और जब वे उसके
मारडालने पर थे प्रधान सेनापति को संदेश पहुंचा कि
३२ सारे यिरोशलीम में कोलाहल है। तब वुह तुरंत प्यादों

और सेनापतिन को लेके उनपर दौड़पड़ा और वे प्रधान और सिपाहियों को देखके पूलूस के मारने से अलग रहे।
३३ तब प्रधान ने निकट आके उसे पकड़ा और आज्ञा किई कि उसको दो सीकरों से बांधें और पूछा कि यह कौनहै और
३४ इसने क्या कियाहै। तब कितने कुछ बड़बड़ाए और कितने कुछ और जब वुह कोलाहल से ठीक नजानसका तो आज्ञा
३५ किई कि उसे गढ़ में लेजावें। और जब वुह सीढ़ीलों पऊंचा ऐसा ऊआ कि उसको लोगों के कारण प्यादों ने उठाया।
३६ क्योंकि पीछे बड़ी भीड़ थी जो चिल्लातीथी कि उसको
३७ उठाडालो। और जब पूलूस को गढ़में लेजानेलगे तो उसने प्रधान को कहा कि मैं तुझे कुछ कहों वुह बोला कि तू यूनानी
३८ बोलसक्ताहै। क्या तू वुह मिसरी नहीं जिसने इन दिनों से आगे दंगा मचाया और चार सहस्र मनुष्य को जो हत्यारे
३९ थे बन में लेगया। पूलूस ने कहा कि मैं तो एक यहूदी मनुष्य हों किलकियः के तरसस का बासी जो ऐसा हलुक नगर नहीं है और मैं तेरी बिनती करताहों कि मुझे मंडली से
४० बोलनेदे। जब उसने उसे आज्ञा दिई पूलूस ने सीढ़ी पर खड़ेहोके लोगों को हाथ से सैन किया जब वे चुपचापऊए तो वुह इबरी भाषा में बोला और कहा।

२२ बाईसवां पर्व्व

हे मनुष्य भाइयो और हे पितरो मेरे बचाव की बात सुनो
२ जो अब तुमसभों से कहीजातीहै। जब उन्हों ने सुना कि वुह इबरी भाषा में उनसे बातें करताहै तो वे तनिक
३ नबोले। तब उसने कहा कि मैं यहूदी मनुष्य हों जो कलकियः के तरसस में उत्पन्न ऊआ और इस नगर में गमलईल के चरण पास प्रतिपाल पाया और पितरन की व्यवस्था के मत के तत्व में उपदेश पाया और ईश्वर के लिये ऐसा ज्वलित था

४ कि तुम्में आज के दिन कोई होगा। और मैं इस पंथ के लोगों को दुख देतेहुए उनके मरने लों भी संतायाकिया और बंदीगृहन में भेजाकिया क्या पुरुषों को क्या स्त्रियों को।
५ जैसा कि प्रधान याजक भी और समस्त प्राचीन मेरे लिये साक्षी देतेहैं उनसे मैं भाइयों के लिये पत्री पाके दमिश्क को जाताथा कि उन्हें भी जो वहां होवें बांधके यिरोशलीम में
६ लाओं कि ताड़ना पावें। और यों हुआ कि जब मैंने यात्रा किई और दमिश्क के निकट पहुंचा दोपहर के अंटकल में ऐसा हुआ कि मेरे चारों ओर आकस्मात स्वर्ग से बड़ी
७ ज्योति का प्रकाश हुआ। और मैं भूमि पर गिरपड़ा और एक शब्द सुना जो मुझे कहा साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों
८ सतातहै। तब मैंने उत्तर देके कहा हे प्रभु तू कौनहै उसने
९ मुझे कहा कि मैं ईसा नासरी हों जिसे तू संतातहै। और उन्हों ने जो मेरे संग थे उस ज्योति को तो देखा और डरगये
१० परंतु जिसने मुझे कहा उन्हों ने उसका शब्द नसुना। तब मैंने कहा कि हे प्रभु मैं क्या करों प्रभु ने मुझे आज्ञा किई कि उठकर दमिश्क में जा और वहां सारी बातें जो तेरे करने
११ के लिये ठहराईगईहैं तुझे कही जायेंगी। और जैसा कि उस ज्योति के तेज के कारण से मैं देख नसका तो अपने
१२ संगियों का हाथ पकड़के दमिश्क में आया। और एक मनुष्य हनानियास नाम का व्यवस्था की रीति का धर्मी जिसकी
१३ भलाई को सारे यहूदी मानतेथे। मेरे पास आया और खड़ा होके मुझे कहा हे भाई साऊल अपनी दृष्टि पा और
१४ उसी घड़ी मैंने उसपर दृष्टि किई। उसने कहा कि हमारे पितरन के ईश्वर ने तुझे चुनाहै कि तू उसकी इच्छा को जाने और उस धर्मी को देखे और उसके मुंह का शब्द सुने।
१५ इस लिये कि तू सब लोगों के आगे उसके कारण उन समस्त
१६ वस्तुन का साक्षी होगा जो तूने देखीं और सुनीं हैं। और

अब तू क्यों बिलंब करताहै उठके स्नान पा और प्रभु का
१७ नाम लेके अपने पापों को धोडाल। जब मैं यिरोशलीम में
फिरगया और मंदिर में प्रार्थना करनेलगा यों हुआ कि मैं
१८ बेसुधि होगया। और उसको देखा कि मुझे कहताथा कि
शीघ्र कर और यिरोशलीम से तुरंत निकल इसलिये कि मेरे
१९ बिषय में तेरी साक्षी ग्रहण नकरेंगे। तब मैंने कहा हे प्रभु
वे जानतेहैं कि मैं उन्हें जो तेरे बिश्वासी हुए बंदीगृह में
२० डालतारहा और हरएक मंडली में माराकिया। और
जब कि तेरे साक्षी इस्तीफान का लोहू बहायागया मैं भी
वहां था और उसके मारडालने में संगी था और उसके
२१ बधिकों के बस्त्र की रखवारी करताथा। तब उसने मुझे
आज्ञा किई कि चलाजा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास
२२ दूर भेजोंगा। और उन्हों ने इस बात लों उसकी सुनी तब
वे चिल्लाके बोले कि ऐसों को भूमि पर से उठाडाल क्योंकि
२३ इसका जीना योग्य नहीं। और जब वे चिल्लाये और अपने
२४ कपड़े फेंकके धूल उड़ानेलगे। तब अध्यक्ष ने आज्ञा किई कि
उसको गढ़ में लावें और कहा कि उसे कोड़े मारके ताड़ें
२५ जिसतें जानें कि वे क्यों उसके बिरोध में यों चिल्लाये। और
जब उन्हों ने उसे चमोटी से बांधा पूलूस ने उस सेनापति
को जो समीप खड़ाथा कहा क्या तुम्हारे लिये योग्य है कि
एक मनुष्य को जो रूमी है और निरपराध है कोड़े मारो।
२६ सेनापति सुनके गया और अध्यक्ष को बोला कि सौंचेत रह
२७ कि तू क्या कियाचाहताहै कि यह मनुष्य तो रूमी है। तब
अध्यक्ष ने पास आके उसे कहा कि मुझसे कह क्या तू रूमी है
२८ उसने कहा कि हां। तब अध्यक्ष ने कहा कि मैंने बहुतसा
धन देके इस दशा को पाया पूलूस बोला परंतु मैं ऐसाही
२९ उत्पन्न हुआ। तब व जो उसे ताड़ा चाहतेथे उससे हाथ
उठाये और अध्यक्ष भी यह जानके कि वुह रूमी है और

३० मैंने उसको बांधा। बिहान होके इस इच्छा से कि तत्व को जाने कि यहूदियों ने उसे क्यों दोष दिया उसने उसका बंधन खोला और आज्ञा किई कि प्रधान याजक और उनकी समस्त सभा आवें और पूलूस को निकाल के उनके मध्य में खड़ा किया।

२३ तेईसवां पर्व्व

तब पूलूस ने सभा को ध्यान से देखके कहा कि हे मनुष्य भाइयो मैंने मनकी निर्दोषता से इस दिन लों ईश्वर के आगे
२ अपने समय को काटा। तब हनानिया प्रधान याजक ने उन्हें जो उसके पास खड़ेथे आज्ञा किई कि उसके मुंह पर थपेड़ा
३ मारें। पूलूस ने उसको कहा कि हे श्वेतकिईगई भीत ईश्वर तुझ को थपेड़ा मारेगा क्योंकि तू बैठाहै कि मुझपर शास्त्र की रीति से न्याय करे और शास्त्र से उलटी आज्ञा करताहै
४ कि मुझे थपेड़ा मारें। तब वे जो समीप खड़ेथे कहनेलगे कि
५ क्या तू ईश्वर के प्रधान याजक को बुरा कहताहै। तब पूलूस ने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानताथा कि यह प्रधान याजक है क्योंकि लिखाहै कि तू लोगों के प्रधान को बुरा मत कह।
६ और जब पूलूस जानगया कि उनमें एक भाग सादूकी और एक भाग फरीसी हैं तो सभा में चिल्लाया कि हे मनुष्य भाइयो मैं फरीसी और फरीसी का पुत्र हों मृत्यु से
७ जीउठनेकी आशा के बिषय में मुझे दंड देतेहैं। जब उसने यों कहा फरीसियों और सादूकियों में झगड़ा हुआ और
८ मंडली के दो भाग होगये। क्योंकि सादूकी तो जीउठने के और दूत के और आत्मा के होने के बिषय में मुकरतेहैं परंतु
९ फरीसी सब को मानते हैं। तब वहां बड़ा होरा मचा और फरीसियों के ओर के अध्यापक उठे और चुप करके कहने लगे कि हमलोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पावते परंतु

जो किसी आत्मा अथवा दूत ने उस्से कहाहै तो हमलोग
१० ईश्वर से लड़ाई नकरें। और जब बड़ा झगड़ा हुआ तो
सेना के अध्यक्ष ने इस भय से कि नहो कि वे पूलुस का टुकड़ा
टुकड़ा करें उसने जाके सिपाहियों को आज्ञा किई कि उसे
११ उनमें से खींचलाके गढ़ में लावें। अगिली रात को प्रभु ने
उसके पास आके कहा हे पूलुस धीरज धर कि जिस रीति से
तूने मेरे बिषय में यिरोशलीम में साक्षी दिईहै सो अवश्य है
१२ कि तू रूम में भी साक्षी देय। और जब दिन हुआ यहूदियों
में से कितनों ने एकमता किया और कहा कि हमपर
धिक्कार है हम जब लों पूलुस को नमारडालें नखायेंगे
१३ नपीयेंगे। और वे जिन्हों ने यह एका कियाथा चालीस से
१४ ऊपर थे। सो उन्हों ने प्रधान याजकों और प्राचीनों के
समीप आके कहा कि हमों ने अपने पर धिक्कार पर
धिक्कार कियाहै कि जब लों पूलुस को नमारडालें हमलोग
१५ कुछ नचीखेंगे। अब इसलिये सभा के संग होके सेना के
अध्यक्ष को कहो कि कल उसको तुम्हारे पास निकाललावें
जैसा कि तुमसब चाहतेहो कि उसके समाचार को अधिक
बिचार करो और हमलोग उस्से पहिले कि वुह उसलों
१६ पहुंचे उसके मारडालने पर लैस होरहेंगे। और पूलुस का
भांजा उनके गुप्त छल को सुनकर गया और गढ़ में प्रवेश
१७ करके पूलुस को कहिदिया। तब पूलुस ने सेनापतिन में से
एक को बुलाके कहा कि इस तरुण को सेना के अध्यक्ष पास
१८ लेजा कि वुह उस्से कुछ कहाचाहताहै। वुह उसे लेगया
और सेना के प्रधान कने लाके कहा कि पूलुस बंधुआने मुझे
बुलाके चाहा कि इस तरुण को तेरे पास लाओं कि तुस्से
१९ कुछ कहाचाहताहै। तब सेना के अध्यक्ष ने उसका हाथ
पकड़ा और एकांत में लेजाके पूछा कि तू मुझे क्या कहा
२० चाहताहै। उसने कहा कि यहूदियों ने एका किया की तुस्से

चाहें कि तू पूलूस को कल सभा में निकाललावे जैसा कि वे
२१ उसके बिषय में अच्छी रीति से बिचार कियाचाहतेहैं। परंतु
तू उनकी प्रतीति मत कर कि उन्में चालीस से अधिक हैं जो
उसके घात में लगरहेहैं और आपुस में किरिया खायेहैं कि
जबलों उसे नमारडालें नखायेंगे नपीयेंगे और अब वे लैस
२२ होके तेरी आज्ञा की बाट जोहरहेहैं। तब सेना के अध्यक्ष ने
उस तरुण को बिदा किया कि जावे और कहा कि देख कोई
२३ नजाने कि तूने ये बातें मुझसे कहीं। और दो सेना पतिन को
बुलाके कहा कि दोसौ सिपाही कैसरिया को जानेके लिये
और सत्तर घोड़े के चढ़वैये और दोसौ भलइत पहर रात
२४ गये लैस रहें। और बाहन सहेजो कि वे पूलूस को चढ़ाके
२५ फीलकस अध्यक्ष के पास कुशल से पहुंचावें। फेर उसने इस
२६ प्रकार की पत्री लिखी। फीलकस महामहिमन अध्यक्ष को
२७ कलादियूस लिसियास का नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों
ने पकड़ा और उनके हाथ से माराजाता तब यह समुझके
कि वुह रूमी है मैं ने सेना समेत जाके उसको छुड़ाया।
२८ जिसतें जानों कि उन्हों ने किस कारण से उसपर दोष
२९ लगाया मैं उसे उनकी सभा में लेगया। सो उसको मैं ने
उनके शास्त्र के बिषमें प्रश्न करते पाया परंतु कोई बात
नपाई जो उसके मारडालने अथवा बंधन के योग्य होय।
३० और जब मुझे संदेश पहुंचा कि यहूदी उस मनुष्य के लिये
घात में हैं मैंने तुरंत तेरे पास भेजा और उसके दोष देनहारों
को भी आज्ञा किई कि दोष का कारण तेरे आगे कहें तुझ
३१ पर कुशल। तब सिपाहियों ने जैसी आज्ञा पाईथी पूलूस
३२ को लेके राते रात अंतपातरस में आये। और बिहान होके
उन्हों ने घोड़े के चढ़वैयन को छोड़ा कि उसके संग जायें और
३३ वे गढ़ को फिरे। सो जब वे कैसरिया में आये पत्री अध्यक्ष
३४ को दिई और पूलूस को भी उसके सन्मुख किया। अध्यक्ष ने

पत्री पढ़के पूछा कि वुह किस देश का है और जानके कि
३५ वुह कलकियः का है। उसने कहा कि जब तेरे दोषदेनहार
भी आलेंगे मैं तेरे समाचार को सुनेंगा और आज्ञा किई कि
उसे हिरूदीस के बिचार स्थान मे रखें।

२४ चौबीसवां पर्व्व

पांच दिन के पीछे प्रधान याजक हनानिया प्राचीनों के और
तरतलस नाम एक सुवक्ता के संग निकला और अध्यक्ष के
२ आगे पूलूस के दोषका बर्णन किया। और जब वुह बुलायागया
तरतलस ने यों कहिके उसे दोष देना आरंभ किया कि हे
महाराज फीलकस हमसब पूरा धन्य मानके हर समय और
३ हर स्थान में बड़े कुशल से रहतेहैं। क्योंकि हमलोग तेरे
कारण से बड़ा चैन पावतेहैं और तेरीही प्रबीणता से इन
४ लोगों को बज़तसे लाभ हैं। परंतु जिसतें मैं तुझे अधिक क्लेश
नदेऊं मैं तेरी बिनती करताहों कि कृपा करके हमारी दो
५ बातें सुन। कि हमोंने इस मनुष्य को सब यहूदियों में जो
जगत में हैं बिगाड़ करनिहार और दंगइत पाया और
६ नासरियों के पंथ का अगुआ है। उसने यह भी मन में
कियाथा कि मंदिर को अपवित्र करे सो उसको हमने पकड़ा
७ और चाहा कि अपने शास्त्र की रीति पर न्याय करें। परंतु
लसियास सेना के अध्यक्ष ने आके बड़ेबल से उसको हमारे
८ हाथ से छीनलिया। और उसके दोष देनहारों को आज्ञा
किई कि तेरे पास आवें कि तू आप उसे जांचके उन सब
बातों का जिनके कारण हमसब उसपर दोष देतेहैं बिचार
९ करसक्ताहै। और यहूदियों ने भी उसीके समान कहा कि
१० ये बातें योंहीं हैं। फेर जब अध्यक्ष ने पूलूस को सैन किया
कि उत्तर देवे वुह बोला जैसा कि मैं जानताहों कि तू बज़त
बरसों से इन लोगों का न्यायी है सो मन की अधिक सुचिताई

११ से अपना उत्तर देताहों। क्योंकि तू समुझ सक्ताहै कि बारह दिन से अधिक नहीं ऊए जब कि मैं पूजा के लिये
१२ यिरोशलीम में गयाथा। और उन्हों ने मुझे किसी के संग मंदिर में बिवाद करते अथवा लोगों को भड़कावते नपाया
१३ नतो मंडली में न नगर में। और नवे उन बस्तुन को ठहरा
१४ सक्तेहैं जिनका वे मुझ पर दोष देतेहैं। परंतु मैं तेरे आगे यह मानलेताहों कि उस पंथ के समान जिसे वे उपद्रव कहतेहैं मैं अपने पितरन के ईश्वर की पूजा करताहों और सब बातों को जो शास्त्र और आगमज्ञानियों में लिखीहैं
१५ निश्चय जानताहों। और ईश्वर से यह आशा रखताहों कि मृतकन का जीउठना होगा क्या धर्मी क्या अधर्मी का जिसे
१६ वे आप भी मानतेहैं। और मैं इसी ब्यवहार में रहताहों कि ईश्वर के और मनुष्यन के आगे कभी मेरा मन मुझे दोषी
१७ नकरे। अब मैं बऊत बरसों के पीछे आया कि अपने लोगों
१८ के लिये दान और नैवेद्य लाओं। इसमें आसिया के कितने यहूदियों ने मुझको मंदिर में पवित्र कियाऊआ पाया मैं कुछ
१९ दंगा और बिगाड़ में संगी नथा। उन्हें उचित था कि तेरे सन्मुख आवें और जो उनका मुझ पर कुछ दोष होवे तो
२० दोष देवें। अथवा उस समय में जब मैं सभा के आगे खड़ा ऊआ जो इन्हों ने मुझ में कुछ बुराई पाईहो तो कहें।
२१ परंतु यह एक शब्द के लिये है कि मैं उनमें खड़ेऊए पुकारा कि मृतकन के जीउठने के कारण से आज मैं तुमसभों से
२२ पूछाजाताहों। फीलकस जो इस पंथ को अच्छी रीति से जानताथा उसने जब ये बातें सुनी तो उन्हें दूर किया और कहा कि जब लसियास सेना का अध्यक्ष आवेगा मैं तुम्हारी
२३ दशा को अच्छी रीति से बूझोंगा। फेर उसने एक सेनापति को आज्ञा किई कि पूलूस को दृष्टि में रक्खे और उसे चैन करनेदेय और उसने जानपहिचान को उसकी सेवा करने

२४ से और उसपास आवने से नबरजे। और कितने दिनों के पीछे फीलकस अपनी स्त्री दरूसलः एक यहूदियः के संग आया और पूलुस को बुलाके मसीह के मत का उसे सुना।
२५ और जब वुह धर्म और संयम और आवनिहार न्याय का कहिरहाथा फीलकस कांपगया और उत्तर दिया कि अबतो
२६ तू जा मैं अवकाश पाके फेर तुझे बुला भेजोंगा। उसे यह आशा भी थी कि पूलुस से कुछ धन पावे कि उसे छोड़देय इस लिये वुह उसे बारंबार बुलायाकिया और बातचीत
२७ करतारहा। और दो बरस के पीछे पर्कयूस फसतस फीलकस की संती में आया और फीलकस ने यह चाहा कि यहूदियों को प्रसन्न करे पूलुस को बंधाहुआ छोड़ा।

२५ पचीसवां पर्व्व

और फसतस उस जनपद में प्रवेश करके तीन दिन के पीछे
२ कैसरिया से यिरोशलीम को गया। तब प्रधान याजक और यहूदियों के मुखियों ने पूलुस के विरोध में उसे कहा
३ और बिनती किई। और उस्से इतना अनुग्रह चाहा कि वुह उसे यिरोशलीम में बुलाले और घात में थे कि उसे माग
४ में मारडालें। तब फसतस ने उत्तर दिया और कहा कि पूलुस यहीं कैसरिया में रहे और मैं आप भी शीघ्र वहां
५ जानेपरहों। और तुम्में से जो मेरे संग जासकें सो चलें और
६ जो उसमें कुछ बुराई है उसपर दोषदेवें। सो उनमें दस दिन से ऊपर रहके कैसरिया को गया और वहां पहुंचके दूसरे दिन बिचार के आसन पर बैठा और आज्ञा किई
७ कि पूलुस को लेआवें। जब वुह सन्मुख हुआ यहूदियों ने जो यिरोशलीम से आयेथे उसके पास खड़े होके पूलुस पर
८ बहुत बुरे बुरे दोष दिये जो ठहरा नसके। तब वुह अपने बिषय में उत्तर देके यही कहनेलगा कि मैं ने कोई कार्य नतो

यहूदियों के शास्त्र के नमंदिर के और नकैसर के बिरोध
९ में किये। तब फसतस ने यहूदियों के मनरखने के लिये
पूलुस से कहा क्या तू चाहताहै कि यिरोशलीम को जावे
१० कि मेरे सन्मुख उन दोषन का निर्णय कियाजाय। पूलुस
ने कहा कि मैं कैसर के बिचार स्थान में खड़ाहों उचित
है कि मेरा न्याय यहीं कियाजाय यहूदियों का मैं ने कुछ
अपराध नकिया जैसा कि तू भी अच्छी रीति से जानताहै।
११ क्योंकि जो मैं दोषी हों अथवा मैंने ऐसा कोई कर्म कियाहै
जिस्से मेरा मारडालना योग्य हो तो मैं माराजाने से नाह
नहीं करता और जो उन दोषन में से जो ये मुझ पर देतेहैं
कुछ नहींहै तो कोई मुझ को उन्हें सौंप नहीं सक्ता मैं
१२ कैसर की दोहाई देताहों। तब फसतस ने सभा से
बातचीत करके उत्तर दिया कि तू कैसर को दोहाई देताहै
१३ तू कैसरही के पास भेजाजायगा। और कितने दिनों के
पीछे अगरपा राजा और बरनीकी कैसरिया में पहुंचे कि
१४ फसतस को नमस्कार करें। और जब वे वहां कई दिन रहे
फसतस ने पूलुस का समाचार राजा से कहा कि यह एक
१५ मनुष्य है जिसे फीलकस बंधन में छोड़गया। जब मैं
यिरोशलीम में था प्रधान याजकों और यहूदियों के प्राचीनों
ने उसके बिषय में संदेश देके चाहा कि उसपर दंड की
१६ आज्ञा किईजाय। उन्हें मैं ने उत्तर दिया कि रूमियों का यह
व्यवहार नहीं कि दोषी जबलों अपने दोषदेनहारों के
सन्मुख नहोवे और बचाव की बात करने नपावे उसे बधिक
१७ को सौंपदें सो जब वे यहां एकठे आये मैं ने कुछ बिलंब
नकिया परंतु बिहानहीं को बिचार के आसन पर बैठके
१८ आज्ञा किई कि उस मनुष्य को लावें। और उसके दोष
देनिहारों ने खड़े होके उन दोषन में से जो मैं समुझताथा
१९ कोई बात बर्णन नकिई। परंतु वे अपने मत की और किसी

ईसा के बिषय में जो मरगया जिसे पूलूस कहताहै कि जीता
२० है कुछ अपबाद उस पर करतेथे। और मैं जैसा कि उस
रीति के बिवादों से संदेह में पड़ा मैं ने पूछा कि जो तू चाहे
तो यिरोशलीम में जा और वहां उन बातों का न्याय
२१ कियाजाय। परंतु जब पूलूस ने दोहाई दिई कि मेरा न्याय
महाराज के बिचार पर छोड़ाजाय मैं ने आज्ञा किई कि
२२ उसे रक्खें जबलों उसे कैसर के पास भेजों। तब अगरपा ने
फसतस को कहा कि मैं भी चाहताहों कि उसके मुंह से
२३ सुनों वुह बोला कि तू कल सुनेगा। और बिहान को जब
अगरपा और बरनीकी बड़े बिभव से सेनापतिन और नगर
के प्रधानों के संग बिचार के स्थान में प्रवेश किये फसतस की
२४ आज्ञा से पूलूस सन्मुख कियागया। तब फसतस ने कहा कि
हे राजा अगरपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हो तुमलोग
इस मनुष्य को देखतेहो जिसके कारण यहूदियों की समस्त
मंडली यिरोशलीम से लेके यहां लों मेरे पीछे पड़ीहैं और
यहां भी चिल्लातेहैं कि उचित है कि उसे जीता नछोड़ो।
२५ परंतु जब मैं ने देखा कि उसने ऐसा कोई कार्य नकिया जिसे
वुह मारडालने के योग्य होवे और वुह आप महाराज की
२६ दोहाई देताहै तो मैंने ठहरायाहै कि उसे भेजदेउं। मुझे
उसके बिषय में किसी बात का निश्चय नहीं जो मैं अपने प्रभु
को लिखों इस कारण मैं ने उसे तुम्हारे आगे और निज
करके हे राजा अगरपा तेरे आगे खड़ाकियाहै कि मैं
२७ बिचार के पीछे कुछ लिखसकों। क्योंकि मुझे अनुचित
समुझपड़ताहै कि एक बंधुए को भेजिये और दोषन को जो
उस परहैं बर्णन नकीजिये।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब

तब अगरपा ने पूलूस को कहा कि तुझे आज्ञा है अपने बचाव की बात कह तब पूलूस ने हाथ बढ़ाके अपने बचाव में उत्तर
२ दिया। कि हे राजा आगरपा मैं जो आज के दिन तेरे आगे उन सब दोषन से जो यहूदी मुझपर देतेहैं अपने बचाव की बात करों यह मेरी समुझ में मेरा बड़ा भाग्य है।
३ इस लिये कि तू यहूदियों के समस्त व्यवहारों और कहावत का बड़ा ज्ञानी है इस कारण मैं तेरी बिनती करताहों कि
४ धीरज से मेरी सुन। तरुणाई से जैसी कुछ मेरी चलन थी जो पहिले से यिरोशलीम में अपने लोगों में थी समस्त
५ यहूदी जानतेहैं। जो वे साक्षी दियाचाहें तो मेरा समाचार पहिले से जानतेहैं कि मैं उनके मत के अत्याचार के समान
६ अपना समय काटताथा अर्थात एक फरीसी था। और अब मैं उस बचन की आशा में जो ईश्वर ने हमारे पितरन को
७ दिया बिचार स्थान में खड़ाकियागया हों। और हमारे बारह घराने रात दिन बड़े अभिलाष से प्रार्थना करने में आशा रखतेहैं कि उस बचन लों पहुंचें हे राजा अगरपा इसी आशा के कारण से यहूदियों ने मुझपर दोष दियाहै।
८ यह क्या तुम्हारे समुझ में बिश्वास के योग्य नहीं कि ईश्वर
९ मृतकन को जिलावे। मैं भी निश्चय समुझताथा कि मुझपर उचित है कि ईसा नासरी के नाम के बिरोध में बहुतसा
१० कार्य्य करों। सो मैं ने यिरोशलीम में यही किया और प्रधान याजकों से पराक्रम पाके बहुतेरे साधुन को बंदीगृह में डाला और जब वे मारडालेजातेथे मैं उनके बिरुद्ध में
११ कहताथा। और मैं ने बारंबार हरएक मंडली में उन्हें ताड़नादिई और बरबस से पाषंड बकवाया और उनके बैर में अत्यंत उन्मद होके मैं बिराने नगरों में भी जाके उन्हें
१२ सतावताथा। इस रीति से जब मैं प्रधान याजकों से पराक्रम

१३ और आज्ञा पाके दमिश्क को चलाजाताथा। दिन का
दोपहर के समय में हे राजा मैंने मार्ग में स्वर्ग से एक ज्योति
को देखा जो सूर्य से भी अधिक तेजमय थी कि मेरे और मेरे
१४ संगियों के चारों ओर चमकी। और जब हमसब भूमि पर
गिरपड़े मैं ने एक शब्द सुना कि इबरानी भाषा में मुझे
यों कहा कि साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों संतावता है कठिन
१५ है कि तू कांटों पर लात मारे। तब मैं ने कहा हे प्रभु तू
१६ कौन है वुह बोला कि मैं ईसा हों जिसे तू संतावताहै। अब
उठ और अपने पाओं पर खड़ाहो कि मैं ने अपने को इस
लिये तुझे दिखायाहै कि तुझे उन वस्तुन का जो तू ने देखीं हैं
और उन वस्तुन का जो मैं तुझे दिखाओंगा सेवक और
१७ साक्षी बनाओं। तुझे उस लोग से और अन्यदेशियों से
बचाओंगा और उन सभों के पास अब मैं तुझे भेजदेताहों।
१८ कि उनकी आंखों को खोलों और अंधियारे से उंजियाले के
ओर और शयतान के वश से ईश्वर के ओर फेरों जिसतें
उनके पाप क्षमाकियेजांय और उनके मध्य में जो मेरे
१९ बिश्वासी होके पवित्र ऊए अधिकार पावें। सो हे राजा
२० अगरपा मैं ने स्वर्ग के दर्शन का विरुद्ध नकिया। परंतु
पहिले उनको कहा जो दमिश्क में और यिरोशलीम में
और यहूदियों के सारे सिवाने में हैं और पीछे अन्यदेशियों
को कहा कि पश्चात्ताप करो और ईश्वर के ओर फिरो
२१ और वे कार्य करो जो पश्चात्ताप के योग्य हैं। इन वस्तुन के
कारण से यहूदी मंदिर में मुझे पकड़के लेस ऊए कि
२२ मारडालें। सो ईश्वर से उपकार पाके मैं आज के दिन लों
छोटे और बड़े के आगे साक्षी देतारहा और उन वस्तुन
को छोड़ कुछ नकहताथा जिनके होनेका संदेश आगमज्ञानियों
२३ ने और मूसा ने दिया। कि मसीह दुख उठावनिहार
होगा और मृतकन में से पहिले जीउठके लोगों और

२४ अन्यदेशियों के आगे ज्योति को प्रकाश करेगा। और जब उसने यों अपने बचाव की बात कही फसतस ने बड़े शब्द से कहा कि हे पूलूस तू आप में नहींहै बिद्या की बहुताई
२५ ने तुझे बौड़ाहा करदिया। तब उसने कहा कि हे महामहिमन फसतस मैं बौड़ाहा नहीं परंतु धर्म की और
२६ सज्ञान की बातें मुंह से निकालताहों। कि उन बातों को राजा जानताहै और मैं उसके सन्मुख खोलके निर्भय कहताहों क्योंकि मुझे निश्चय है कि उनमें से कोई बस्तु उसपर छिपी
२७ नहीं इस कारण कि यह बात कोने में नहीं हुई। हे राजा अगरपा क्या तू आगमज्ञानियों का बिश्वासी है मैं जानताहों
२८ कि तू बिश्वासी है। तब अगरपा ने पूलूस को कहा तनिक
२९ है कि तू मुझे समुझा के क्रीष्टिआन बनाडाले। पूलूस बोला मैं तो ईश्वर से चाहताहों कि तूही केवल नहीं परंतु सबकेसब जो आज के दिन मेरी सुनतेहैं तनिक क्या पूरे
३० ऐसेही होते जैसा मैं हों पर उन सीकरों को छोड़के। और जब उसने यों कहा राजा और अध्यक्ष और बरनीकी और
३१ उनके संगी उठे। और वे अलग जाके आपुस में कहनेलगे कि यह मनुष्य तो ऐसा कुछ नहीं करता जो मारडालने के
३२ अथवा बंधन के योग्य होय। तब अगरपा ने फसतस से कहा जो यह मनुष्य कैसर की दुहाई नदेता तो उचित था कि वुह बंधन से छूटजाय।

२७ सताईसवां पर्ब्व

और जब ठहरायागया कि हम नाव पर चढ़के ईतलियः को जावें उन्हों ने पूलूस को कितने और बंधुओं के संग यूलियूस नाम सेनापति को जो अगसतूस की सेना में का था
२ सौंपदिया। और हमने अदरमतीनी नाव पर बैठके इस इच्छा से खोलदिया कि आसिया के सिवाने से होके जांय

और अरिस्तरखस मकदूनी तसलूनी का हमारे संगथा।
३ दूसरे दिन हम सैदा में पऊंचे और यूलियूस ने पूलूस का
आदर करके छोड़दिया कि अपने मित्रन में जाके चैन करे।
४ हम वहां से जाके कबरस के नीचे पंऊचे क्योंकि बयार सन्मुख
५ की थी। और जब हम किलकियः और पंफूलियः के समुद्र
६ के पार गये तो लूकियः के मरा में आये। वहां उस सेनापति
ने एक अस्कंदरानी नाव ऐतलियः को जातेऊए पाके हमको
७ उस पर चढ़ाया। और जब हम बऊत दिन लों रसायन से
चलेगये और कठिन से कंदस के पार आये कि बयार ने हमें
८ जाने नदिया तो हम क्रीत को सलमूनी के सन्मुख चले। और
कठिन से वहां से आगे बढ़के एक स्थान में आये जिसका
नाम सुंदर घाट है और लासिया का नगर वहां से समीप
९ था। और जब समय बऊत बीतगया और चलेजाने में
भरमीला था क्योंकि ब्रत का समय होगयाथा पूलूस ने
१० चेताया। और उन्हें कहा हे मनुष्यो मैं देखताहों कि इस
यात्रा में कष्ट होगा और बऊत टूटी पड़ेगी केवल सामग्री
११ को और नावकी नहीं परंतु हमारे प्राण की भी। परंतु
सेनापति को पूलूस के कहने से मांझी और नाव के स्वामी का
१२ अधिक बिश्वास था। और इस लिये कि वुह घाट इस योग्य
नथा कि वहां जाड़ा काटाजाय बऊतेरों ने संमत दिया कि
वहां से भी चलनिकलें कि किसी रीति से फिनीकी लों पऊंचके
जाड़ा काटें कि वुह क्रीत का घाट था नैऋत और बायु
१३ कोण के ओर को। और जब दक्षिण की बयार चली उन्हों
ने निश्चय करके कि अभिलाष पूरा ऊआ नाव खोली और
१४ क्रीत के समीप होके चलेगये। परंतु तनिक पीछे आंधी की
१५ बयार ने जिसका नाम यूरक्लीदून है नाव को उड़ाया। और
१६ जब नाव रोकीगई और बयार से ठहर नसकी। हमने
छोड़ दिई कि चलीजाय और एक टापू के तले जिसका नाम

कलाउदी है हमसब बड़े कठिन से छोटी नाव को बश में
१७ लाये। सो जब उन्हों ने थांमा तब जतन करके नाव को
बांधके और उस डर से कि हम बालू में फस जावें पाल
१८ गिरादिये और उसी रीति से चलेजातेथे। और जब हम
आंधी से निपट संतायेगये तो दूसरे दिन उन्हों ने नाव को
१९ हलुक किया। और तीसरे दिन हमने अपने हाथों से नाव
२० की सामग्री को फेंकदिया। और जब बहुत दिन लों सूर्य
और तारे दिखाई नदिये और आंधी भी नथंमी अंतको
२१ बचने की आश हमों से सबकीसब जातीरही। और बहुतसे
उपवास के पीछे पूलूस उनके मध्य में खड़ाहोके बोला कि
हे मनुष्यो तुम्हें उचित था कि मेरी सुनते और क्रीत से नखोलते
२२ जिसतें क्लेश और टूटी न उठावते। और अब मैं तुम्हारी
बिनती करताहों कि धीरज धरो क्योंकि तुम्हारे बीच में
२३ किसी के प्राण का नाश नहोगा परंतु केवल नाव का। क्योंकि
जिस ईश्वर का मैं हों और जिसकी सेवा करताहों उसके
२४ दूत ने रात को मेरे पास आके। यों कहा कि हे पूलूस मत
डर उचित है कि तू कैसर के आगे खड़ा होवे और देख
२५ कि ईश्वर ने इनसभों को जो मेरे संग जातेहैं तुझे दिया। इस
कारण हे मनुष्यो धीरज धरो क्योंकि मैं ईश्वर पर बिश्वास
२६ रखता हों कि जैसा मुझे कहागया वैसाही होगा। परंतु
२७ अवश्य हम किसी टापू में जापड़ेंगे। सो जब चौदहवीं रात
आई और हम अद्रिया में मारेफिरे आधी रात के समय में
डांड़ियों ने अटकल से जाना कि किसी देश के निकट पहुंचे।
२८ तब पानी की थाह लिई और बीस पुरसा पाया और
थोड़ा आगे जाके फेर थाह लिई तो पंद्रह पुरसा पाया।
२९ तब उस भय से कि नहो कि पत्थरों पर जातीरहे उन्हों ने
नाव की पतवार से चार लंगर डाले और बिहान होने की
३० आशा में रहे। और जब डांड़ियों ने चाहा कि नाव पर से

भागजायें और छोटी नाव इस बाहाने से उतारी कि
३१ गलही से लंगर डालें। पूलुस ने सेनापति और सिपाहियों
को कहा कि जो ये सब नाव पर नरहें तो तुमलोग बच नहीं
३२ सक्ते। तब सिपाहियों ने छोटी नाव के रस्से काटे और उसे
३३ बहादिया। और जब दिन चढ़नेलगा पूलुस ने सब की
बिनती किई कि भोजन करो और कहाकि तुमलोग चौदह
दिन से तकतेहो और उपवास कररहेहो और कुछ नहीं
३४ खाये। अब मैं तुम्हारी बिनती करताहों कुछ खालो कि इस
में तुम्हारी रक्षा है क्योंकि तुम्में से किसी के सिर का एक
३५ बाल नगिरेगा। उसने यों कहिके रोटी लिई और तोड़के
३६ खानेलगा। तब उन सब के मन में धीरज ऊआ और वे भी
३७ खानेलगे। और हमसबकेसब जितने उस नाव पर थे दोसौ
३८ छिहतर प्राणी थे। और जब वे रुचिके खाचुके तो उन्हों ने
३९ गोहूं को समुद्र में डालके नाव को हलुक किया। जब बिहान
ऊआ उन्हों ने उस भूमि को नपहिचाना परंतु एक कोल
देखी जिसके तीर पर बालू था उसपर उन्हों ने चाहा कि
४० जो होसके तो नाव को धकियाके लेजावें। तब उन्हों ने लंगर
काटके समुद्र में छोड़े और तुरंत पतवार की रस्सी खोली
४१ और बयार के रुख पर पाल चढ़ाके तीर के ओर गये। और
एक स्थान में जहां दो समुद्र का संगम था पऊंचके नाव को भूमि
पर दौड़ादिया तब गलही धक्का खाके फसगई और लहरों
४२ के बल से पतवार की धज्जियां उड़गईं। तब सिपाहियों का
मंत्र था कि बंधुओं को मारडालें ऐसा नहो कि उनमें से कोई
४३ पैरके चलदे। परंतु सेनापति ने पूलुस के बचावनेकी इच्छा
से उनकी चाह से उन्हें रोकरक्खा और आज्ञा किई कि वे जो
पैर सक्तेहों पहिले कूदके तीर पर जांय। अरु औरों ने
४४ कितनो सिल्लियों पर और कितने नाव के टुकड़ों पर और
योंहीं ऊआ कि वे सबकेसब भूमि पर कुशल से पऊंचे।

२८ अठाईसवां पर्व्व

और उनके बचजाने के पीछे वे जानगये कि उस टापू का नाम
२ मलता था। और वहां के बनैले लोगों ने हमसभों पर बड़ा
अनुग्रह किया क्योंकि उन्हों ने आगसुलगा के हमोंको
पास बुलाया इस कारण से कि मेघ की झड़ी और जाड़ा था।
३ और जब पूलूस ने लकड़ियों को एकट्ठे करके आग पर रक्खा
एक सर्प ताप पाके निकला और उसके हाथ पर लपटगया।
४ तब उन बनैले लोगों ने उस जंतु को उसके हाथ पर लटकते
देखकर आपुस में कहा कि निःसंदेह यह मनुष्य कोई
हत्यारा है कि यद्यपि यह समुद्र से बच निकला है तथापि
५ दंडदाता उसे जीने नहीं देता। तब उसने उस जंतु को
६ आग में झटक दिया और कुछ दुख नपाया। परंतु वे
देखतेरहे कि वुह सुजजायगा अथवा आकस्मात गिरके
मरजायगा परंतु जब उन्हों ने बड़ी बेरलों दृष्टि करके देखा
कि उसको कुछ दुख नहुआ तब कुछ और समुझे और बोले
७ कि यह देवता है। इस सिवाने में उस टापू के ठाकुर
का अधिकार था जिस का नाम पबलयूस था उसने हमोंको
घर में लेजाके प्रेम से तीन दिन लों हमारा शिष्टाचार
८ किया। और यों हुआ कि पबलयूस का पिता ज्वर से और
रक्तातिसार से रोगी पड़ाथा पूलूस ने उसके पास जाके
प्रार्थना किई और अपने हाथ उस पर रखके उसे चंगा
९ किया। सो जब यह हुआ तो और भी जो उस टापू में
१० रोगी थे आये और चंगेहुये। उन्हों ने भी बहुत आदर से
हमारा सन्मान किया और जब हमलोग चलनेलगे तो
११ जो जो हमें आवश्यक था उन्हों ने लाददिया। तीन महीने
के पीछे हमलोग इस्कंदरियः की एक नाव पर चलनिकले जो
१२ जाड़े भर टापू में थी जिसके चिह्न दो देव बच्चे थे। और
१३ सोराकोसो में लगाके तीन दिन रहे। फेर वहां से चक्कर

खाके रीजयूम में आये और एक दिन के पीछे दक्षिण की
१४ बयार चली तब हमलोग दूसरे दिन पतयूली में पहुंचे। वहां हमलोग भाइयों को पाके उनकी बिनती से सात दिन रहे
१५ और चलते चलते रूम में आये। वहां से भाइयों ने हमारा संदेश सुना तो अपीफोरम और तीन सरा लों हमारे मिलने को आये पूलूस ने उन्हें देखके ईश्वर की स्तुति किई
१६ और जीव पाया। और जब हम रूम में आये सेनापति ने बंधुओं को निज सेना के प्रधान को सौंपदिया परंतु पूलूस को आज्ञा थी कि अकेला उस प्यादे के संग रहे जो उसका
१७ रखवार था। और ऐसा हुआ कि तीन दिन के पीछे पूलूस ने प्रतिष्ठित यहूदियों को बुलाया सो जब वे एकट्ठे आये उन्हें कहा हे भाइयो मैंने कोई कर्म्म लोगों के व्यवहार का अथवा पितरन का उलटा नकिया परंतु मैं बंधुआ होके
१८ यिरोशलीम से रूमियों के हाथ में सौंपागया। उन्हों ने मेरा विचार करके चाहा कि छोड़देंय इसलिये कि मुझ में मृत्यु का
१९ कोई कारण नथा। पर जब यहूदियों ने बिरोध की बातें कहीं मैं ने सकेती से चाहा कि कैसर की दोहाई देऊं इस लिये नहीं कि मैं अपने लोगों पर किसी बस्तु का दोष देऊं।
२० सो इसी कारण से मैं ने तुम्हें बुलाया कि देखों और बातचीत करों क्योंकि इसराईल की आशा के लिये मैं इस सीकर से
२१ बंधाहों। उन्हों ने उसे कहा कि हमसभों ने तेरे बिषय में यहूदियः से पत्री नहीं पाई और नकिसी ने भाइयों में से
२२ आके कुछ संदेश दिया अथवा कुछ तेरी बुराई कही। परंतु हमलोग चाहते हैं कि तुझसे सुनें कि तू क्या समुझताहै क्योंकि हमलोग जानतेहैं कि हरएक स्थान में इस पंथ की निंदा
२३ किईजाती है। और वे उसके संग एक दिन ठहराके उसके ठेकाने में बहुताई से आये उनके आगे वुह बर्णन करके क्या मूसा के शास्त्र के ओर से क्या आगमज्ञानियों के ओर से

बिहान से संध्यालों ईश्वर के राज्य पर साक्षी देता और
२४ ईसा के मत पर प्रमाण लावताथा। तब कितनों ने उन
बातों पर जो कहीजातीथीं बिश्वास किया और कितनों ने
२५ नकिया। जब वे आपुस में एक मता नहुए उस्से पहिले कि
वे चलेजांय पूलस ने उन्हें यह बचन कहा कि धर्म्मात्मा ने
हमारे पितरन को अशीया अगमज्ञानी के ओर से ठीक
२६ कहा। कि लोगों के पास जा और कह कि तुमलोग कानों
से सुनोगे और नसमुझोगे आंखों से देखोगे और नजानोगे।
२७ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हुआ और उनके कान सुन्न में
भारी हुए हैं और उन्हों ने अपनी आखें मूंद लियांहैं ऐसा
नहोवे कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और अंतःकरण
२८ में समुझें और फिरजांय और मैं उन्हें चंगा करों। सो यह
तुम्हें जानाजाय कि ईश्वर का उद्धार अन्यदेशियों में भेजागयाहै
२९ और वे उसे सुनलेंगे। जब वुह ये बातें कहचुका यहूदी
३० आपुस में बड़ा बिबाद करतेहुए चलेगये। और पूलूस पूरा
दो बरस भाड़े के घर में रहा और उन सभों को जो उसके
३१ पास आये ग्रहण करके। बड़े निर्भय से ईश्वर के राज्य का
उपदेश करतारहा और प्रभु ईसा मसीह के मार्ग का
उपदेश दिया और किसी ने उसको नरोका।

पूलूस की पत्री रूमियों को

१ पहिला पर्व्व

१ ईसा मसीह का सेवक पूलूस बुलायाहुआ एक प्रेरित और
२ ईश्वर के मंगलसमाचार के लिये अलग कियागया। जो उसने
अपने आगमज्ञानियों के ओर से पवित्र पुस्तकों में प्रण किया।
३ अपने पुत्र हमारे प्रभु ईसा मसीह के बिषय में जो शरीर
४ के संबंध से दाऊद के बंश से हुआ। परंतु पवित्रता के
आत्मा के संबंध से ईश्वर का पुत्र है जैसा कि उसके जीउठने
५ के दृढ़ प्रमाण से ठहरगया। जिस्से हमों ने अनुग्रह और
प्रेरितत्व पाया कि समस्त लोग आधीनता के लिये उसके
६ नाम पर बिश्वास लावें। जिन्हों में तुमलोग भी ईसा मसीह
७ के बुलायेहुएहो। उन सब रूमियों को जो ईश्वर के प्यारे
और बुलायेहुए सिद्ध हैं हमारे पिता ईश्वर और प्रभु
ईसा मसीह से अनुग्रह और कुशल तुम्हों पर होवे।
८ पहिले मैं ईसा मसीह के ओर से तुम्हारे लिये अपने ईश्वर
का धन्य मानताहों कि तुम्हारा बिश्वास समस्त जगत में
९ कहाजाताहै। क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है जिसकी सेवा
मैं अपने आत्मा से उसके पुत्र के मंगलसमाचार में करताहों
१० कि मैं कैसे तुम्हारी बार्ता निरंतर करताहों। और सदा
अपनी प्रार्थना में बिनती करताहों कि जो अब ईश्वर की
इच्छा से मेरी यात्रा कुशलसे होय तो तुम्हारे पास आओं।
११ क्योंकि मैं तुम्हों से भेंट करने को निपट लालसा रखताहों
कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक दान पहुंचाओं कि तुमलोग दृढ़
१२ होजाओ। अर्थात कि मैं तुम्हों में मिलके उस बिश्वास के

कारण जो तुम्हों में और मुझमें है आपुस में शांति पाओं।
१३ और हे भाइयो मैं चाहताहों कि तुमलोग उसे अज्ञान
नरहो कि मैं ने तुम्हारे पास आवने को बारंबार मनकिया
कि जैसा मुझ को आनआन लोगों से फल मिला वैसाही
१४ कुछ तुम्हों से भी पाओं परंतु आज लों रुकारहा। क्योंकि
मैं यूनानियों और मूर्खों और ज्ञानियों और अज्ञानियों का
१५ ऋणी हों। सो मैं तुम्हों को भी जो रूम में हो सामर्थ्यभर
१६ मंगलसमाचार का संदेश देनेको सिद्ध हों। क्योंकि मैं मसीह
के मंगलसमाचार से लज्जित नहींहों इसलिये कि वुह
हरएक बिश्वासी का उद्धार करने के लिये ईश्वर का सामर्थ्य
१७ है पहिले यहूदी का फेर यूनानी का। क्योंकि उसमें ईश्वर
का धर्म प्रगट हुआहै जो निर्केवल बिश्वास से है जैसा
१८ लिखाहै कि धर्मी विश्वास से जीवेगा। क्योंकि ईश्वर का क्रोध
मनुष्यन की समस्त अधर्मता और असत्यता पर स्वर्ग से प्रगट
१९ हुआ जो सत्य को असत्यता से बंद करतेहैं। इसलिये कि ईश्वर
का बिषय जो कुछ जानाजासक्ताहै उनपर प्रगटहै क्योंकि
२० ईश्वर ने उनपर प्रगट कियाहै। इसलिये कि उसके गुण जो
जगत की उत्पत्ति से अदृश्य हैं अर्थात उसका अनंत पराक्रम
और ईश्वरत्व सृष्टि पर दृष्टि करनेसे पहिचानाजाताहै
२१ इहांलों कि वे निरुत्तर हैं। क्योंकि उन्हों ने ईश्वर को चीन्हके
उसकी महिमा उसके ईश्वरत्व के योग्य नकिया और नउसका
धन्य माना परंतु अपनी भावना से बहकगये और उनके
२२ अंतःकरण अज्ञानता से अंधियारे हुए। वे अपने को ज्ञानी
२३ ठहराके मूर्ख बनगये। और उन्हों ने अबिनाशी ईश्वर
की महिमा को बिनाशमान मनुष्य की और पंछिअन और
२४ पशुन और रेंगनिहार जंतुन के स्वरूप से बदलडाला। इस
कारण ईश्वर ने भी उन्हें त्याग किया कि अपने अपने मन की
कामना के समान अपवित्रता में रहें और आपुस में अपने

२५ शरीरों का निरादर करें। उन्हों ने ईश्वर की सच्चाई की संती झूठ को स्थापन किया और सिरजीऊई वस्तु की पूजा और सेवा किई और सिरजनहार को छोड़दिया जो
२६ सर्वदा स्तुति के योग्य है आमीन। इस कारण ईश्वर ने उन्हें नीच अभिलाषों में रहनेदिया क्योंकि उनकी स्त्रियोंने भी अपनी प्रकृति के कार्य को उस्से जो प्रकृति से बिरुद्ध है
२७ बदलडाला। और उसी रीति से उनके पुरुष भी स्त्रियों से प्रकृति ब्यवहार को छोड़कर आपुस में अपनी कामना में जलगये पुरुषों ने पुरुषों के संग लज्जा के कर्म किये और वुह
२८ प्रतिफल जो उनकी चूक के योग्य था अपने में पाया। और जैसा कि उन्हों ने ईश्वर को अपने ज्ञान में रखने नचाहा ईश्वर ने भी उन्हें मूढ़ बुद्धि में छोड़ दिया कि वे अयोग्य कर्म
२९ करें। और समस्त असत्यता और ब्यभिचार और बुराई और लोभ और छल और कुटिलता से भरपूर होवें और
३० फुसफुसहा और चवाई ईश्वर के बैरी झगड़ालू अंहकारी गालफटाक बुराइयों के उत्पादक माता पिता के अपमानी।
३१ निर्बुद्धि और बाचाके तोड़वैया मयारहित निष्प्रेम निर्दय
३२ होवें। और यद्यपि वे ईश्वर की आज्ञा को जानतेहैं कि ऐसे कार्य करनिहार मारडालने के योग्य हैं केवल आपही नहीं करते परंतु करनिहारों से भी प्रसन्न होतेहैं।

२ दूसरा पर्व्व

१ सो हे जन जो दोष लगावताहै कोई नहो तू निरुत्तर है क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगावताहै अपने पर दोष ठहरावताहै इस कारण कि तू जो दोष लगावताहै
२ वही करताहै। परंतु हम निश्चय जानतेहैं कि ऐसे कर्म करनिहारों पर ईश्वर के और से दंड की आज्ञा अवश्य
३ होगी। सो हे मनुष्य तू जो ऐसे कर्म करनिहारों पर दोष

लगावताहै और वही कियाकरताहै क्या तू यह समुझताहै
४ कि तू ईश्वर के न्याय से बचनिकलेगा। अथवा तू उसकी
अत्यंत दया और धीरज और संतोष की निंदा करताहै
और नहीं जानता कि ईश्वर की दया तो तेरे पश्चात्ताप के
५ लिये है। परंतु तू कठोरता करके और मनमें कड़ाई रखके
अपने लिये क्रोध को संग्रह करताहै जो क्रोध के और ईश्वर
६ के सत्य न्याय के दिन में प्रगट होगा। वुह हरएक को उसके
७ कर्म के समान प्रतिफल देगा। उन्हों को जो संतोष से नित्य
भलाई करने में महिमा और आदर और अमृत की खोज
८ करतेहैं अनंत जीवन देगा। परंतु उनके लिये जो झगड़ालू
हैं और सत्य को नहीं मानते परंतु असत्य को मानतेहैं
९ जलजलाहट और क्रोध होगा। और हरएक मनुष्य के
प्राण पर जो बुराई करताहै बिपत्ति और कष्ट होगा पहिले
१० यहूदी पर फेर यूनानी पर। परंतु हरएक जन को जो
भलाई करताहै महिमा और आदर और कुशल मिलेगा
११ पहिले यहूदी को फेर यूनानी को। इस लिये कि ईश्वर
१२ किसी की प्रगट दशा पर दृष्टि नहीं करता। क्योंकि जितनों
ने बिना व्यवस्था पाप कियाहै बिना व्यवस्था नाश भी होंगे
और जितनों ने व्यवस्था पाके पाप कियाहै उनका न्याय
१३ व्यवस्था से कियाजायगा। क्योंकि व्यवस्था के सुननिहार ईश्वर
के आगे धर्मी नहीं हैं परंतु व्यवस्था के पालनिहार धर्मी
१४ ठहराएजायंगे। क्योंकि जब अन्यदेशी जिन्हों को व्यवस्था
नहीं मिली अपने स्वभाव से व्यवस्था का कार्य करतेहैं वे
१५ व्यवस्था हीनहोके आपही अपनी व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था का
कार्य अपने अंतःकरण में लिखाहुआ दिखावतेहैं कि उनके मन
साक्षी देतेहैं और उनके चिंतन आपुस में दोषी अथवा
१६ निर्दोषी ठहरावतेहैं। उस दिन में जब ईश्वर मेरे मंगल
समाचार के समान ईसा मसीह के द्वारा से मनुष्यन के गुप्त

१७ कार्य्य का न्याय करेगा। देख तू यहूदी कहावताहै और व्यवस्था पर आशा रखताहै और ईश्वर की बड़ाई करताहै।
१८ और उसकी इच्छा जानताहै और व्यवस्था का उपदेश पाके
१९ विरुद्ध बस्तुन का बेवरा जानताहै। और अपने को निश्चय जानताहै कि मैं अंधों का अगुआ और उनका जो अंधकार
२० में हैं प्रकाश हों। और मूर्खों का उपदेशक और बालकों का सिखावनिहार हों और ज्ञान का और सचाई का ढब
२१ मेरे लिये व्यवस्था में है। सो तू जो दूसरे को सिखावताहै अपने को नहीं सिखावता तू जो उपदेश करताहै कि चोरी
२२ मतकर क्या आपही चोरीकरताहै। तू जो कहताहै कि परस्त्री गमन मत कर क्या आपही परस्त्री गमन करताहै तू जो मूर्त्तिन से घिन करताहै क्या आपही मंदिर को लूटताहै।
२३ तू जो व्यवस्था की बड़ाई करताहै तूही व्यवस्था से उलटा
२४ करके ईश्वर का अपमान करताहै। क्योंकि जैसा लिखाहै कि ईश्वर का नाम अन्यदेशियों के बीच तुम्हारे कारण
२५ पाषंडतासे कहाजाताहै। क्योंकि खतनः से तो लाभ है जों तू व्यवस्था पर चले परंतु जों तू व्यवस्था से उलटा करे तो तेरा
२६ खतनः अखतनः है। सो जों अखतनः व्यवस्था के व्यवहारों पर
२७ चले तो क्या उसका अखतनः खतनः में नगिनाजायगा। और जो अपने स्वभावसे अखतनः है और व्यवस्था के समान चले क्या वुह तुझे दोष नदेगा जो अक्षर और खतनः की व्यवस्था
२८ से उलटा चलताहै। क्योंकि जो बाहर से यहूदीहै यहूदी नहीं है नवुह खतनः जो मांस में बाहर से है खतनः है।
२९ परंतु वही यहूदी है जो भीतर से यहूदी है और खतनः वुह है जो अंतःकरण में और मन में है नकि अक्षर में जिसकी बड़ाई मनुष्यन से नहीं परंतु ईश्वर से है।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ सो क्या यहूदी को कुछ लाभ और खतनः का कुछ फल नहीं। २ समस्त प्रकार से बहुत है निजकरके यह कि उन्हें ईश्वर की ३ बाणी सौंपीगई। और यद्यपि कईएक बिश्वास नलाये तो क्याहुआ क्या उनकी अबिश्वासता ईश्वर के बिश्वास को व्यर्थ ४ करसक्ती है। ऐसा नहोवे ईश्वर सच्चा यद्यपि हरएक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखाहै कि तू अपने बचन में निर्दोषी ५ निकले और जब तेरा न्याय कियाजाय तू जयपावे। परंतु जो हमारा अधर्म ईश्वर के धर्म को प्रगटकरताहै तो हम क्या कहें कि ईश्वर अन्यायी है जो दंड देताहै मैं तो मनुष्य की नाईं ६ बोलताहों। ऐसा नहोवे नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगत का ७ न्याय करेगा। क्योंकि जो मेरे झूठ के कारण से ईश्वर की सच्चाई प्रगट हुई और उस्से उसकी महिमा अधिक हुई फेर किसलिये मैं पापी की नाईं धर्मसभा में पकड़ाजाताहों। ८ और क्यों नकहें जैसा हमों पर कलंक लगायाजाताहै और कितने बोलतेहैं कि हमलोग कहतेहैं कि आओ बुराई करें ९ जिसतें भलाई निकले उनपर दंड की आज्ञा ठीक है। पर क्या हमलोग उनसे भले हैं कधी नहीं हम तो पहिले बर्णन करचुके कि यहूदी और अन्यदेशी सबकेसब पाप के तले हैं। ११ जैसा लिखाहै कि कोई धर्मी नहीं एक भी नहीं। कोई १२ बूझनिहार नहीं कोई ईश्वर का ढूंढ़निहार नहीं। सब भटकेहुएहैं सबकेसब निकम्मे हैं कोई भलाकरनिहार नहीं १३ एक भी नहीं। उनकी नरेटी खुलीहुई समाधि है उन्हों ने जीभ से छल बल कियाहै उनके होंठों के नीचे संपोलियों का १४ बिष है। उन्हों के मुंह स्राप और कड़वाहट से भरेहुएहैं। १६ उनके पांव रुधिर बहावने के लिये चंचल हैं। बिनाश और १७ क्लेश उनके मार्गों में हैं। और उन्हों ने कुशल का मार्ग नहीं १९ जाना। उनकी आंखों के आगे ईश्वर का भय नहीं। अब हम

जानतेहैं कि व्यवस्था जो कुछ कहतीहै उन्हीं को कहतीहै जो व्यवस्था के बशमें हैं जिसतें हरएक का मुंह बंद होवे और
२० समस्त जगत ईश्वर के आगे पापी ठहरे। इसलिये कोई मनुष्य व्यवस्था के कर्म से उसके आगे निर्दोष ठहर नहीं सक्ता
२१ क्योंकि व्यवस्था से पाप का ज्ञान हुआ। परंतु अब ईश्वर का धर्म प्रगट हुआहै जो व्यवस्था से बाहर है जिसपर व्यवस्था
२२ और आगमज्ञानियों ने साक्षी दिईहै। अर्थात ईश्वर का वुह धर्म जो ईसा मसीह पर बिश्वास लावने से मिलताहै और उनसब के लिये और उन सभों में है जो बिश्वास
२३ लावतेहैं कि उनमें कुछ बीच नहीं। इस कारण कि सभों ने
२४ पाप कियाहै और ईश्वर की महिमा लों नपहुंचे। सो उसके अनुग्रह से उस मुक्ति के कारण जो ईसा मसीह में है सेंत से
२५ धर्मी गिनेजातेहैं। जिसको ईश्वर ने उसके लोहू के बिश्वास के द्वारा से प्रायश्चित्त ठहराया कि अपने धर्म को पिछले पापोंके मोचन के लिये ईश्वर के संतोषके समान प्रगट करे।
२६ कि इस समय में अपने धर्म को दिखावे जिसतें वुह धर्मी रहे और उसको जो ईसा मसीह पर बिश्वास लावतेहैं
२७ धर्मी जाने। अब अहंकारकरना कहां रहा वुह तो उड़गया किस रीति से क्या करनी से नहीं परंतु बिश्वास की रीति से।
२८ सो हम यह सिद्धांत निकालतेहैं कि मनुष्य बिना कर्म शास्त्र
२९ बिश्वास से धर्मी गिनाजाताहै। क्या वुह केवल यहूदियों का ईश्वर है और अन्यदेशियों का नहीं निश्चय वुह अन्यदेशियों
३० का भी है। क्योंकि एकही ईश्वर है जो खतनः कियेगयेन को बिश्वास के कारण से और अखतनः लोगों को भी बिश्वासही
३१ की रीति से धर्मी जानेगा। क्या हम व्यवस्था को बिश्वास से व्यर्थ करते हैं ऐसा नहोवे हम तो व्यवस्था को स्थापित करतेहैं।

४ चौथा पर्व्व

१ सो हम क्या कहें कि इबराहीम ने जो शरीर के संबंध से
२ हमसभों का पिता है कुछ पाया। क्योंकि जो इबराहीम
करनी से निर्दोषी गिनाजाता तो उसकी बड़ाई का बिषय था
३ परंतु ईश्वर के आगे नहीं। क्योंकि ग्रंथ क्या कहताहै कि
इबराहीम ईश्वर पर बिश्वास लाया और वुह उसके लिये
४ धर्म ठहरा। अब बनिहार को बनो देना दान नहीं है
५ परंतु ऋण का है। किंतु वुह जो करनी नहीं करता परंतु उस
पर बिश्वास लावताहै जो अधर्मियों को निर्दोषी ठहरावताहै
६ उसीका बिश्वास धर्म में गिनाजाताहै। और जैसा कि दाऊद
भी उस मनुष्य की धन्यता का बर्णन करताहै जिसके
७ और ईश्वर बिना करनी से धर्म गिनताहै। कि धन्य वे हैं
जिनके अपराध क्षमा कियेगये और जिनके पाप ढांपेगये।
८ धन्य वुह है जिसके और प्रभु पाप नहीं गिनता। सो क्या
यह धन्यता केवल खतनः कियेगयेन को है अथवा अखतनः
लोगों की भी हम तो कहतेहैं कि इबराहीम का बिश्वास धर्म
१० में गिनागया। सो वुह कब गिनागया क्या उस के खतनः
कियेगये अथवा अखतनः के समय में खतनः कियेगये में नहीं
११ परंतु अखतनः में। और उसने खतनः चिह्न के लिये पाया
कि वुह उसके बिश्वास के धर्म पर छाप होय जो अखतनः में
मिलाथा जिसतें वुह उन सभों का जो अखतनः में बिश्वास
लावतेहैं पिता होय कि उनके और भी धर्म गिनाजाय।
१२ और खतनः कियेगयेन का भी पिता होय नकेवल उनका जो
खतनः कियेगयेहैं परंतु उनका भी जो हमारे पिता इबराहीम
१३ के बिश्वास पर चलतेहैं जो अखतनः में था। क्योंकि यह
बाचा जो इबराहीम से और उसके बंश से ऊआ कि तू जगत
का अधिकारी होगा ब्यवस्था के कारण से नहीं परंतु बिश्वास
१४ के धर्म के कारण से कियागया। क्योंकि जो वे जो ब्यवस्था के

हैं अधिकारी होवें तो बिश्वास व्यर्थ और बाचा निष्फल
१५ ज्ञआ। क्योंकि व्यवस्था क्रोध का कारण होतीहै क्योंकि
१६ जहां कहीं व्यवस्था नहीं तहां उलंघन भी नहीं। सो
इसलिये बिश्वास के कारण से कियागया कि वुह अनुग्रह से
ठहरे जिसतें समस्त बंश के लिये स्थिर होय केवल उनके
कारण नहीं जो व्यवस्था रखतेहैं परंतु उनके कारण भी जो
१७ हमसभों के पिता इबराहीम के बिश्वास पर चलतेहैं। जिसके
आगे वुह बिश्वास लाया अर्थात ईश्वर के जो मृतकन को
जिलावताहै और नास्ति बस्तुन को अस्ति के समान बुलावताहै
जैसा लिखाहै कि मैं ने तुझे बज्ञतसे लोगों का पिता बनाया।
१८ वुह निराशा के स्थान में आशा से बिश्वास लाया जिसतें वुह
बज्ञतसे लोगों का पिता होय उस लिखेगये के समान कि
१९ तेरा बंश ऐसाही होगा। और जैसा कि उसने बिश्वास में
दुर्बल नहोके अपने शरीर को मृतक नजाना यद्यपि उसका
बय सौ बरस के निकट था और सारा के गर्भ के मुरझाने
२० को भी नसोचा। और अबिश्वासी नथा कि ईश्वर के बाचा
पर संदेह करता परंतु बिश्वास की दृढ़ताई से ईश्वर का
२१ यश मानताथा। और निश्चय किया कि जोकुछ उसने बाचा
२२ कियाहै उसको पूरा भी करसक्ताहै। इस कारण उसके
२३ और धर्म गिनागया। और यह बात केवल उसीके लिये
२४ नहीं लिखीगई कि वुह उसके और गिनागया। परंतु हमारे
लिये भी गिनागया जो हम उसपर बिश्वास लावें जिसने
२५ हमारे प्रभु ईसा को मृतकन में से जिलाया। जो हमारे
अपराधों के कारण पकड़ागया और हमों को निर्दोष
ठहराने के लिये फेरके जिलायागया।

जिनके और वुह गिनाजायगा

५ पांचवां पर्व्व

१ सो जब कि हम बिश्वास लाके निर्दोषी ऊरे तो हमारे प्रभु ईसा मसीह के कारण से हमों में और ईश्वर में मिलाप है।
२ और उसी के कारण से हम बिश्वास लाके उस अनुग्रह में पऊंचतेहैं जिसपर हम स्थिर हैं और ईश्वर के ऐश्वर्य की
३ आशा में आनंद करतेहैं। और केवल ऐसा नहीं परंतु बिपत्ति में भी आनंद करतेहैं यह जानके कि बिपत्ति से
४ संतोष। और संतोष से परीक्षा और परीक्षा से आशा
५ उत्पन्न होतीहै। और आशा लज्जित नहीं करती क्योंकि धर्मात्मा हमें दियागया जिसके ओरसे हमारे मन में ईश्वर
६ का प्रेम बहायागया। क्योंकि जब हम निर्बल थे तब
७ अधर्मियों के कारण ठीक समय में मसीह मूआ। अब ऐसा कोई है जो किसी धर्मी के लिये प्राण देय और क्या जानें किसी में यह दृढ़ता होय कि किसी उत्तम मनुष्य के लिये
८ प्राण देय। परंतु ईश्वर ने अपने प्रेम को हमसभों पर ऐसा प्रगट किया कि जब हमलोग पाप करते चलेजातेथे मसीह
९ हमारे कारण मूआ। सो उसके लोहू से निर्दोषी ठहरके
१० कितना अधिक उसके कारण से क्रोध से बचजायंगे। क्योंकि जो शत्रु होके हमलोग उसके पुत्र की मृत्यु से ईश्वर से मिलायेगये तो कितना अधिक मिलायाजाके उसके जीवन से
११ बचजायंगे। और केवल ऐसाही नहीं परंतु हम अपने प्रभु ईसा मसीह के कारण से ईश्वर में बड़ाई करतेहैं जिसके
१२ कारण से अब हमलोग मिलायेगयेहैं। सो जैसा कि एक मनुष्य के कारण से पाप ने जगत में प्रवेश किया और पाप के कारण से मृत्यु ने और इसी रीति से मृत्यु समस्त मनुष्यन
१३ पर फैलगया क्योंकि सभों ने पाप किया। क्योंकि व्यवस्था के प्रगट होने लों पाप जगत में था परंतु जहां व्यवस्था नहींहै
१४ तहां पाप नहीं गिनाजाता। तिसपरभी मृत्यु ने आदम से

लेके मूसा लों उन्हों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के तुल्य पाप नकिया वुह उस आवनिहार का
१५ चिह्न था। तथापि जैसा अपराध था वैसा अनुग्रह नहीं है क्योंकि जो एकही के अपराध से बहुत मरगये तो कितना अधिक ईश्वर का अनुग्रह और दान जो अनुग्रह से है एक मनुष्य अर्थात ईसा मसीह से बहुतों पर अधिक हुआ।
१६ और दान ऐसा नहीं है जैसा एक से पाप हुआ क्योंकि एक से दंडके लिये बिचार कियागया परंतु दान बहुतेरे अपराधों
१७ से निर्दोष ठहरावता है कि धर्मी ठहरें। सो जो एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने एकही के ओर से राज्य किया तो वे जो बहुत से अनुग्रह और धर्म के अधिक दान को पावते हैं एक के अर्थात ईसा मसीह के कारण से क्योंकर जीवन में
१८ राज्य नकरेंगे। सो जैसा कि एक अपराध से समस्त मनुष्यन पर दंड की आज्ञा हुई वैसाही एक धर्मके कारण से समस्त
१९ मनुष्य जीवन के लिये निर्दोषी ठहरे। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा भंगकरने से बहुत से लोग पापी ठहरायेगये वैसाही एकके आज्ञा पालनकरने से बहुतसे लोग धर्मी
२० ठहरायेजायंगे। और इसे अधिक ब्यवस्था आई कि अपराध बहुत होवे परंतु जहां पाप बहुत हुआ तहां
२१ अनुग्रह भी उसके परिमाण से बहुत अधिक हुआ। कि जैसा पाप ने मृत्यु लों राज्य किया वैसाही अनुग्रह धर्म से इहांलों राज्य करे कि हमारे प्रभु ईसा मसीह की सहायता से अनंत जीवन लों पहुंचावे।

६ छठवां पर्ब्ब

१ सो अब हम क्या कहें क्या हम पाप कियाकरें कि अनुग्रह
२ अधिक होवे। ऐसा नहोवे हम जो पाप के ओर से मरे हैं
३ फेर किस रीति से आगे को उसमें जीयंगे। क्या तुमलोग नहीं

जानते कि हम्में से जितनों ने ईसा मसीह का ज्ञान पाया
४ उसके मृत्युका ज्ञान पाया। इसलिये हमलोग मृत्यु के ज्ञान के कारण से उसके संग गाड़ेगये कि जिस रीति से पिता की महिमा से मसीह मरके उठायागया हमसब भी जीवन की
५ नवीनता में चलें। क्योंकि जो हमलोग उसके मृत्यु की समानता में बोयेगये तो उसके जीउठने में भी समान होंगे।
६ यह जानके कि हमारी पुरानी मनुष्यता उसके संग क्रूस पर खैंचीगई कि पाप का शरीर नष्ट होय जिसतें हमलोग आगेको
७ पाप की सेवा नकरें। क्योंकि जो मरगया सो पाप से छूटा।
८ सो जो हमलोग मसीहके संग मरेहैं तो निश्चय जानतेहैं कि
९ उसके संग जीयेंगे। यह जानके कि मसीह मृत्युसे उठायाजाके फेर नहीं मरता मृत्यु का राज्य उस पर और नहींहै।
१० क्योंकि वुह जो मरा तो पाप के लिये एक बार मरा परंतु
११ वुह जो जीवताहै सो ईश्वर के लिये जीवताहै। इसी रीति से तुमलोग भी अपने को पाप के ओर से मृतक जानो परंतु ईश्वर के ओर से हमारे प्रभु ईसा मसीह में जीवता समुझो।
१२ सो पाप तुम्हारे मरनिहार शरीर में राज्य नकरनेपावे कि
१३ तुमलोग उसकी कामना के बश में होओ। और अपने अंगन को पाप को नसौंपो कि अधर्म के हथिआर बनें परंतु अपने को ऐसा ईश्वर को सौंपो जैसा सचमुच मरके जीउठेहो और अपने अंगन को ईश्वर को सौंपो कि धर्म के हथिआर
१४ होजायं। क्योंकि पाप तुम्हों पर राज्य नपावेगा क्योंकि तुमलोग व्यवस्था के बशमें नहीं परंतु अनुग्रह के बशमें हो।
१५ सो इसलिये कि हमलोग व्यवस्था के बशमें नहीं हैं परंतु
१६ अनुग्रह में हैं तो क्या पाप करें ऐसा नहोवे। क्या तुमलोग नहीं जानते कि जिसकिसी को तुम्हों ने अपने को आज्ञा मान्ने के लिये दास के समान सौंपा उसके दास होओ जिसको तुमलोग मानतेहो चाहे पाप के जिसका अंत मृत्यु है अथवा

१७ अधीनता के जिसका अंत धर्म है। परंतु धन्य ईश्वर को कि तुमलोग जो आगे पाप के सेवक थे शिक्षा के सांचा में सौंपा
१८ जाके अंतःकरण से आधीन ऊए। और पाप से मोक्ष पाके
१९ धर्म के दास ऊए। मैं तुम्हारे शरीर की दुर्बलता पर दृष्टि करके मनुष्य की नाईं कहताहों क्योंकि जैसा तुम्हों ने अपने अंगन को अपवित्रता को और बुराई करने को सौंपाथा कि उनके सेवक होवें वैसाही अब अपने अंगन को धर्म की सेवकाई
२० करने के लिये सौंपो कि पवित्र होयं। क्योंकि जब तुमलोग
२१ पाप के दास थे तब धर्म से न्यारे थे। और जिन कार्यन से तुमलोग लज्जित हो उनसे तुम्हों ने क्या फल पाया क्योंकि
२२ उन वस्तुन का अंत मृत्यु है। परंतु अब पाप से छूटके और ईश्वर के दास बनके पवित्रता के लिये फल लावतेहो जिसका
२३ अंत अनंत जीवन है। क्योंकि पाप का फल मृत्यु है परंतु ईश्वर का दान अनंत जीवन है जो हमारे प्रभु ईसा मसीह के कारण से है।

७ सातवां पर्ब्ब

१ हे भाइयो क्या तुमलोग नहीं जानते क्योंकि मैं व्यवस्था के ज्ञानियों से कहताहों कि जबलों मनुष्य जीवताहै व्यवस्था के
२ बश में है। क्योंकि बिवाहिता स्त्री पति के जीवने लों व्यवस्था से बंधीऊईहै परंतु जो उसका पति मरजाय तो वुह अपने
३ पति की व्यवस्था से छूटगई। सो जो अपने पति के जीतेजी वुह दूसरे पुरुष की होजाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी पर जो उसका पति मरजाय तो वुह उस व्यवस्था से छूटगई सो वुह व्यभिचारिणी नहीं है यद्यपि दूसरे पुरुष से बिवाह करे।
४ सो हे भाइयो तुमलोग भी मसीह के शरीर से व्यवस्था के ओर से मरगये जिसतें तुम्हारा बिवाह दूसरे से होय अर्थात उसे जो मरके जीउठा कि हमलोग ईश्वर के लिये फलजावें।

५ क्योंकि जब हमलोग शरीर में थे तब पापों की इच्छा जो
व्यवस्था के कारण से थीं हमारे अंगअंग में यों प्रवेश करतीथीं
६ कि मृत्यु के लिये फललावें। परंतु अब हमलोग व्यवस्था से
छूटगये क्योंकि जिसमें बंधेथे वुह मरगया कि हमलोग आत्मा
की नवीनता से सेवाकरें और अक्षर की प्राचीनता से नहीं।
७ सो हम क्या कहें कि व्यवस्था पाप है ऐसा नहोवे मैं तो
व्यवस्था बिना पाप को नजानता क्योंकि मैं कामना को नजानता
८ जो व्यवस्था नकहती कि तू लालच मत कर। परंतु पाप ने
आज्ञा के कारण से अवसर पाके मुझ में समस्त रीति की
लालसा उत्पन्न किई क्योंकि व्यवस्था बिना पाप मृतक था।
९ इसलिये कि बिना व्यवस्था आगे मैं जीवताथा परंतु जब आज्ञा
१० आई तब पाप जीउठा और मैं मरगया। और वुह आज्ञा
११ जो जीवन के लिये थी मैंने मृत्यु के लिये पाई। क्योंकि पाप ने
आज्ञा के कारण से अवसर पाके मुझे ठगा और उसीके
१२ कारण से मुझे मारडाला। सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा
१३ पवित्र और ठीक और भली है। सो क्या जो वस्तु भली है
वही मेरे लिये मृत्यु ठहरी ऐसा नहोवे परंतु पाप ने कि उसका
पाप होना प्रगट होवे अच्छी वस्तु के कारण से मृत्यु को मुझ में
उत्पन्न किया कि आज्ञा के कारण से पाप की बुराई अत्यंत
१४ होवे। क्योंकि हम जानतेहैं कि व्यवस्था आत्मिक है परंतु मैं
१५ शारीरिक और पाप के हाथ में बिकगयाहों। क्योंकि जो
करताहों सो मुझे नहीं भावता क्योंकि जो मैं चाहताहों सो
१६ नहीं करता परंतु जिस्से घिनाताहों वही करताहों। सो जो
वुह करों जो नहीं कियाचाहताहों तो मैं व्यवस्था की भलाई
१७ का माननिहार हों। सो अब उसका करनिहार मैं नहीं
१८ परंतु पाप जो मुझ में बसताहै। क्योंकि मैं जानताहों कि मुझ
में अर्थात मेरे शरीर में कोई भली वस्तु नहीं बसती क्योंकि
इच्छा तो मुझ में है परंतु भला करने नहीं पावताहों।

१९ क्योंकि जो भलाई चाहताहों सो नहीं करता परंतु जो बुराई नहीं चाहताहों सो करताहों। अब जो मैं वुह करों जिसे नहीं चाहता तो उसका करनिहार मैं नहींहों परंतु
२१ पाप जो मुझ में बसताहै। सो मैं एक व्यवस्था पावताहों कि जब मैं भला किया चाहताहों तब बुराई मेरे पास धरीहै।
२२ क्योंकि अंतःकरण की मनुष्यता से मैं ईश्वर की व्यवस्था से
२३ प्रसन्नहों। परंतु दूसरी व्यवस्था को अपने अंगअंग में देखताहों जो मेरे मन की व्यवस्था से युद्ध करतीहै और मुझे पाप की व्यवस्था के बंधन में लावतीहै जो मेरे अंगअंग में है।
२४ आह दुर्गत मनुष्य जो मैं हों कौन मुझे इस शरीर की मृत्यु
२५ से निस्तार करेगा। हमारे प्रभु ईसा मसीह के द्वारा से मैं ईश्वर का धन्यबाद करताहों सो मैं अपने मन से तो ईश्वर की व्यवस्था की सेवाकरताहों परंतु शरीर से पाप की व्यवस्था का दास हों।

८ आठवां पर्ब्ब

१ सो जो लोग ईसा मसीह में हैं उनकी चाल शरीर के व्यवहार पर नहीं परंतु आत्मा के व्यवहार पर है उन पर कोई दंड
२ की आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने जो ईसा मसीह में है मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से
३ छुड़ायाहै। क्योंकि व्यवस्था से जिस बात का अनहोनाथा इसलिये कि शरीर के कारण से निर्बल थी ईश्वर ने अपनेही पुत्र को पाप के शरीर के स्वरूप में भेजकर पापको पाप के
४ लिये शरीर में नष्ट किया। कि व्यवस्था का धर्म हमों में संपूर्ण होवे जो शरीर के व्यवहार पर नहीं परंतु आत्मा के
५ व्यवहार पर चलतेहैं। क्योंकि जो शरीर के बश में हैं उनका स्वभाव भी शारीरिक है परंतु जो आत्मा के बश में हैं उनका
६ स्वभाव आत्मिक है। क्योंकि शारीरिक स्वभाव होना मृत्युहै

७ परंतु आत्मिक स्वभाव होना जीवन और कुशल है। इस कारण कि शारीरिक स्वभाव ईश्वर से शत्रुता है क्योंकि वुह
८ ईश्वर की व्यवस्था के बश में नहीं है और न हो सक्ता है। सो जो
९ शरीर में हैं ईश्वर को प्रसन्न नहीं करसक्ते। पर तुमलोग शरीर में नहीं हो परंतु आत्मा में हो जो ऐसा होय कि ईश्वर का आत्मा तुम्हों में बसे और जिसमें मसीह का आत्मा नहीं
१० है वुह उसका नहीं है। और जो मसीह तुम्हों में होय तो देह पाप के कारण से म्टतक है परंतु आत्मा धर्म के कारण से
११ जीवता है। और जो उसका आत्मा जिसने ईसा को म्टतकन मेंसे जिलाया तुम्हों में बास करे तो मसीह का जिलावनिहार तुम्हारे म्टतक शरीरों को अपने उस आत्मा के सहाय से
१२ जिलावेगा जो तुम्हों में बसता है। सो हे भाईयो हमलोग शरीर के ऋणी नहीं हैं कि शरीर के व्यवहार पर चलें।
१३ इसलिये कि जो तुमलोग शरीर के व्यवहार पर चलो तो मरोगे परंतु जो आत्मा की सहायता से शरीर की बान को
१४ मारो तो जीओगे। क्योंकि जितने लोग ईश्वर के आत्मा की
१५ शिक्षा पावते हैं वे ईश्वर के पुत्र हैं। इसलिये कि तुम्हें बंधन का आत्मा नहीं मिला कि फेरके डरो परंतु तुम्हों ने लेपालक का आत्मा पाया है जिस्से हमलोग आबा पिता करके
१६ पुकारते हैं। वुह आत्मा आपी हमारे आत्मा के संग साक्षी
१७ देता है कि हमलोग ईश्वर के पुत्र हैं। और जो पुत्र ऊए तो अधिकारी ठहरे ईश्वर के अधिकारी और अधिकार में मसीह के साझी हैं जो ऐसा होय कि हमलोग उसके संग
१८ दुख उठावें जिसतें उसके संग बिभव भी पावें। क्योंकि मेरे अंटकल में इस समय के दुखों को योग्य नहीं की उस महिमा
१९ से जो हमों पुर प्रकाश होगी तुल्य करें। क्योंकि सृष्टि का अत्यंत अभिलाष ईश्वर के पुत्रन के प्रगट होने की आशा से
२० है। क्योंकि सृष्टि व्यर्थ के बश में ऊई अपनी इच्छा से नहीं

२१ परंतु उसकी जिसने उसे बश में करदिया। और आशा से है कि नाश के बंधन से छूटके ईश्वर के पुत्रन की परममुक्ति में
२२ प्रवेश करें। क्योंकि हम जानतेहैं कि समस्त सृष्टि मिलके
२३ अबलों चीखें मारतीहै और पीरउठावतीहै। और केवल वही नहीं परंतु हमलोग भी जिन्हों ने आत्मा का पहिला फल पाया अर्थात हमलोग आप अपने अंतःकरण में चीखें मारतेहैं और अपने शरीर के उद्धार की बाट जोहतेहैं जो हमारा
२४ लेपालक होनाहै। क्योंकि हमलोग आशा से बंचगयेहैं परंतु जो आशा देखीजातीहै सो आशा नहींहै इसकारण कि
२५ जिसे कोई देखताहै क्योंकर उसकी आशा करताहै। परंतु जिसे हमलोग नहीं देखते जो उसकी आशा करें तो संतोष
२६ से उसकी बाट जोहतेहैं। इसी रीति से वुह आत्मा भी हमारी दुर्बलता में उपकार करताहै क्योंकि जैसा प्रार्थना करने को हमें उचित है हम नहीं जानते परंतु वुह आत्मा आपही ऐसी आहें करके जिनका बर्णन नहीं होसक्ता हमारे
२७ ओर से बिनती करताहै। और वुह जो अंतःकरण को परीक्षा करताहै जानताहै कि आत्मा का क्या अभिप्राय है इसलिये कि वुह ईश्वर की इच्छा के समान साधुन के ओर से
२८ बिनती करताहै। और हम जानतेहैं कि जो लोग ईश्वर को प्यार करतेहैं उनकी भलाई के लिये समस्त बस्तें मिलके कार्य करतीहैं ये वे हैं जो उसके ठहराएहुए के समान
२९ बुलायेगयेहैं। क्योंकि जिन्हें उसने आगे से जाना उनके लिये ठहराया भी कि उसके पुत्र के स्वरूप के समान होवें जिसतें
३० वुह बहुत से भाइयों में पहिलौठा होवे। और जिन्हें उसने ठहराया उसने उनको बुलाया और जिन्हें उसने बुलाया उनको धर्मी किया और जिन्हें उसने धर्मी किया उनको
३१ महिमा भी दिई। सो हमलोग क्या कहें जो ईश्वर हमारे
३२ ओर होय तो कौन हमारा बिरोधी होगा। वुह जिसने

अपने पुत्र को भी नछोड़ा परंतु उसको हमारी संती दिया तो
३२ वुह उसके संग सब बस्तें क्योंकर नदेगा। ईश्वर के चुनेऊए
लोगों पर कौन अपवाद करेगा ईश्वर उन्हें धर्मी ठहराताहै।
३४ कौन दंड की आज्ञा देगा मसीह मरगया हां जी भी उठा
और वुह ईश्वर के दहिने ओर है और हमारे लिये बिनती
३५ करताहै। कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा क्या
क्लेश अथवा कष्ट अथवा ताड़ना अथवा अकाल अथवा
३६ नंगापन अथवा संकट अथवा खड्ग। जैसा लिखाहै कि
हमलोग तेरे लिये दिन भर बध कियेजातेहैं और ऐसे
३७ गिनेगयेहैं जैसे भेड़ें जो बध के लिये हैं। हां हमलोग उन
सब बस्तुन में उसके कारण से जिसने हमों से प्रेम किया
३८ हरएक जयमान पर जयमान हैं। क्योंकि मुझे ठीक निश्चय
है कि नम्रत्यु नजीवन नदूत नराज्य नपराक्रम नवर्त्तमान की
३९ बस्तें नभविष्य की बस्तें। और नऊंचाई ननीचाई नकोई
और बस्तु हमसभों को ईश्वर के उस प्रेम से जो हमारे प्रभु
मसीह ईसा में है अलग करसकेगी।

९ नवां पर्व्व

१ मैं मसीह में सच बोलताहों झूठ नहीं कहता और मेरा
२ मन भी धर्मात्मा से मेरी साक्षी देताहै। कि मुझे बड़ा शोक
३ है और मेरे मन में नित्य उदासी है। क्योंकि मैं चाहसक्ता
कि मैं अपने भाइयों की संती जो शरीर के संबंध से मेरे
४ नातेगोते हैं मसीह के तुल्य स्रापित होओं। वे इसराईली हैं
और लेपालकहोना और महिमा और नियम और व्यवस्था
का पावना और सेवा और प्रणकरना उनका भाग है।
५ और पितरलोग उन्हीं में के हैं और शरीर के संबंध से
मसीह भी उन्हीं में से निकला जो सबका प्रधान नित्यानंद
६ ईश्वर है आमीन। परंतु ऐसा नहीं कि ईश्वर का बाचा

व्यर्थ ऊआहै इसलिये कि सब इसराईल नहीं जो इसराईल
७ से हैं। और न इस कारण कि वे इबराहीम के वंश हैं सब
८ संतान हैं परंतु इसहाक़ से तेरा वंश कहाजायगा। अर्थात
वे नहीं जो केवल शरीर के संतान हैं ईश्वर के संतान हैं
९ परंतु बाचा का संतान बंशके लिये गिनागयाहै। क्योंकि
बाचा की बात यही है कि मैं उसी समय में आओंगा और
१० सारा एक पुत्र जनेगी। और केवल इतना नहीं परंतु
रबक़ा भी एक से अर्थात हमारे पिता इसहाक़ से गर्भवती
११ ऊई। और लड़कों के उत्पन्न होने से पहिले जब वे भले बुरे
१२ के कर्त्ता नथे उसे कहागया कि ज्येष्ठ कनिष्ठ की सेवा करेगा
जिसतें ईश्वर की इच्छा पर जो उसके मन के समान है स्थिर
१३ होवे करनी से नहीं परंतु उसे जो बुलावनिहार है। जैसा
लिखाहै कि मैंने याक़ूब से प्रेम किया और असू से बैर रक्खा।
१४ सो हम क्या कहें कि ईश्वर के पास अधर्म है ऐसा नहोवे।
१५ क्योंकि वुह मूसा से कहताहै कि मैं जिसपर दया करने
चाहोंगा उसपर दया करोंगा और जिसपर अनुग्रह करने
१६ चाहोंगा उसपर अनुग्रह करोंगा। सो इच्छा करनिहार
पर नहीं और नदौड़निहार पर परंतु ईश्वर पर जो दया
१७ करताहै। और ग्रंथ फरऊन से कहताहै कि मैंने तुझे इस
लिये बढ़ाया कि अपना पराक्रम तुझ में प्रगट करों और
१८ जिसतें मेरा नाम समस्त पृथिवी में बिदित होवे। सो वुह
जिसपर चाहताहै दया करताहै और जिसे चाहताहै
१९ कठोर करताहै। सो तू यह मुझे कहेगा फेर वुह क्यों दोष
२० देताहै किसने उसकी इच्छा को रोकाहै। हे मनुष्य तू कौन
है जो ईश्वर से बिवाद करताहै क्या बनाईऊई वस्तु
बनावनिहार को कहिसक्तीहै कि तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया।
२१ और क्या कुम्हार मिट्टी पर पराक्रम नहीं रखता कि एकही
पिंड से एक पात्र प्रतिष्ठित और दूसरा अप्रतिष्ठित बनावे।

२२ जो ईश्वर ने इस इच्छा से कि अपने क्रोध को जनावे और
अपने पराक्रम को प्रगट करे क्रोध के पात्रन पर संतोष
२३ किया जो नष्ट होनेके लिये तैयार थे। और जिसतें वुह
अपनी महिमा की अधिकाई को दया के पात्रन पर प्रगट
करे जिन्हें उसने आगेसे महिमा के लिये सिद्ध कियाथा।
२४ अर्थात हमों को जिन्हें उसने बुलाया केवल यहूदियों में से
२५ नहीं परंतु अन्यदेशियों में से भी। जैसा कि वुह होशआ के
ओरसे कहताहै कि मैं पराये लोगों को अपना लोग कहोंगा
२६ और जो प्रिय नथा उसे प्रिय कहोंगा। और यों होगा कि
उस स्थान में जहां उनसे कहागया कि तुम मेरे लोग नहीं हो
२७ वे जीवते ईश्वर के पुत्र कहावेंगे। और अशीया इसराईल के
विषय में पुकारताहै कि यद्यपि इसराईल के बंश गिनती में
समुद्र के बालू की नाईं होयं तथापि थोड़े बचाएजायंगे।
२८ क्योंकि प्रभु लेखा एकट्ठा करताहै और संक्षेप से धर्म में
समाप्त करताहै इसकारण कि प्रभु पृथिवी पर संक्षेप से
२९ लेखा करेगा। और जैसा अशीया ने आगे कहा कि जो
सेनन का प्रभु हमारे लिये बीज नछोड़जाता तो हमलोग
३० सदूम के समान और गमरः के तुल्य होते। सो अब हम
क्या कहें कि अन्यदेशियों ने जो धर्म के खोज में नथे धर्म को
३१ प्राप्तकिया अर्थात उस धर्म को जो बिश्वास से है। परंतु
इसराईल धर्मकी व्यवस्था का पीछा करके धर्म की व्यवस्था लों
३२ नहींपऊंचाहै। किस लिये इसलिये कि उन्हों ने उसका पीछा
बिश्वास से नकिया परंतु व्यवस्था के कर्म के समान क्योंकि उन्हों
३३ ने उस ठोकर खिलावनिहार पत्थर से ठोकर खाया। जैसा
लिखाहै कि देखो मैं सीहून में धक्का देनहारी चटान और
ठोकर खिलावनिहार पत्थर रखताहों और जो कोई उस
पर बिश्वास लावताहै सो लज्जित नहोगा।

१० दसवां पर्ब्ब

१ हे भाइयों मेरे मन का अभिलाष और मेरी प्रार्थना ईश्वर
२ से इसराईल के लिये है कि वे त्राण पावें। क्योंकि मैं उनके
कारण साक्षी देताहों कि वे ईश्वर के लिये ज्वलित हैं परंतु
३ ज्ञान की रीति से नहीं। क्योंकि वे ईश्वर के धर्म से अज्ञान
होके और अपने धर्म के ठहरावने की इच्छा रखके ईश्वर के
४ धर्म के आधीन नहुए। क्योंकि हरएक बिश्वासी के धर्म के
५ लिये मसीह व्यवस्था का अभिप्राय है। इसलिये कि वुह धर्म
जो शास्त्र का है मूसा उसका बर्णन करताहै कि जो मनुष्य
६ उन कार्यन को करताहै उनसे जीवतारहेगा। परंतु धर्म जो
बिश्वास का है यों कहताहै कि तू अपने मन में मत कह कि
७ स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा अर्थात कि मसीह को नीचे लावे। अथवा
गहिराव में कौन पैठेगा अर्थात कि मसीह को मृतकन मेंसे
८ फेरलावे। परंतु वुह क्या कहताहै यह कि बचन तेरे निकट
तेरे मुंह में और तेरे अंतःकरण में है अर्थात बिश्वास का
९ बचन जिसे हमलोग सुनावतेहैं। क्योंकि जो तू अपने मुंह से
प्रभु ईसा को मानलेवे और अपने अंतःकरण से बिश्वास लावे
कि ईश्वर ने उसे फेरके जिलाया तो तू बचायाजायगा।
१० क्योंकि धर्म के लिये अंतःकरण से मनुष्य बिश्वास लावताहै
११ और त्राण के लिये मुंह से मानाजाताहै। क्योंकि ग्रंथ यों
कहताहै कि जो कोई उसपर बिश्वास लावताहै सो लज्जित
१२ नहोगा। क्योंकि यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद
नहीं क्योंकि वुह जो सबका प्रभु है सबके लिये जो उसका नाम
१३ लेतेहैं धनी है। क्योंकि जोकोई प्रभु का नाम लेगा सोई त्राण
१४ पावेगा। सो जिसपर वे बिश्वास नहीं लाये उसका नाम
क्योंकर लेवें और जिसका संदेश उन्हों ने नहीं सुना उसपर
क्योंकर बिश्वास लावें और उपदेशक बिना क्योंकर सुनें।
१५ और जो भेजे नजावें तो क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखाहै

कि जो कुशल का और उत्तम बस्तु का समाचार देतेहैं उनके
१६ क्या सुंदर चरण हैं। परंतु सभों ने मंगल समाचार को
नमाना क्योंकि अशीया कहताहै कि हे प्रभु कौन हमारे
१७ उपदेश पर बिश्वास लाया। सो बिश्वास सुनलेने से और
१८ सुनलेना ईश्वर के बचन से आवताहै। परंतु मैं कहताहों
क्या उन्हों ने नहीं सुना निश्चय उनका शब्द तो समस्त एथिवी
में फैलगया और उनकी बातें जगत के सिवाने लों पक्कंचीं।
१९ परंतु मैं कहताहों क्या इसराईल ने नजाना मूसा ने पहिले
कहा कि मैं तुम्हें पराये लोगों से डाह दिलाओंगा और मूर्ख
२० लोगों से कोपित कराओंगा। और अशीया बड़े साहस से
कहताहै कि जिन्हों ने मेरी खोज नकिई मुझे पागये जिन्हों ने
२१ मुझे नचाहा मैं उनपर प्रगट ऊआ। परंतु इसराईल को
यों कहताहै कि मैं एक लोग के लिये जो आज्ञाभंगकरनिहार
और बिवादी हैं अपने हाथ दिन भर बढ़ाएक्रएहों।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ सो क्या मैं कहताहों कि ईश्वर ने अपने लोगों को त्यागकिया
ऐसा नहोवे क्योंकि मैं भी इसराईली हों इब्राहीम के बंश
२ से बन्यमिन के घराने से हों। ईश्वर ने अपने लोगों को जिन्हें
उसने आगे से जाना त्याग नहीं किया क्या तुमलोग नहीं
जानते कि इलियास के बिषय में ग्रंथ क्या कहताहै वुह
क्योंकर ईश्वर से इसराईल पर अपबाद करके कहताहै।
३ कि हे प्रभु उन्हों ने तेरे आगमज्ञानियों को मारडाला और
तेरी यज्ञवेदिन को ढादिया और मैं अकेला बचरहाहों
४ और वे मेरे प्राण के खोजीहैं। परंतु ईश्वर की बाणी उसको
क्या कहतीहै कि मैंने अपने लिये सात सहस्र मनुष्य अलग
५ कियेहैं जिन्हों ने बआल के आगे घुटने नहीं टेके। सो ऐसा
इस समय में भी अनुग्रह से एक मंडली चुनीऊई होके

६ बचरहीहै। और जो अनुग्रह से है तो करनी से नहीं नहीं तो अनुग्रह अनुग्रह नरहेगा परंतु जो करनी से है तो अनुग्रह फिर कुछ नहीं नहीं तो करनी करनी नरहेगी।
७ सो क्या है इसराईल ने जिस बस्तु को ढूंढ़ा वुह उसे नहीं मिली परंतु चुनेहुए लोगों को मिली अरु और लोग अंधे
८ होगये। जैसा लिखाहै कि ईश्वर ने उन्हें ऊंघनिहार आत्मा और अंधी आंखें और बहिरे कान इसदिनलों दियेहैं।
९ और दाऊद कहताहै कि उनका मंच जाल और फंदा और ठोकर खिलावनिहार पत्थर उनके लिये प्रतिफल होवे।
१० और उनकी आंखें अंधियारी होजावें कि वे नदेखसकें और
११ उनकी पीठ को सदा भुका रख। सो मैं कहताहों कि क्या उन्हों ने ऐसा ठोकर खायाहै कि गिरपड़ें ऐसा नहोवे परंतु उनके गिरने से अन्यदेशियों को उद्धार मिला कि उन्हें
१२ फुरतीला करे। पर जो उनका गिरना जगत के लिये धन है और उनकी घटती अन्यदेशियों के लिये बढ़ती है तो
१३ उनकी पूर्णता कितनी अधिक होगी। क्योंकि मैं अन्यदेशियों का प्रेरित होकर तुम अन्यदेशियों से बोलताहों और अपने
१४ पद की बड़ाई करताहों। जिसतें मैं अपने कुटुंबों को
१५ फुरतीला करों और उनमें से कितनों को बचाओं। क्योंकि जो उनका त्यागकियाजाना जगत के मिलायेजाने का कारण है तो उनका मिलयाजाना जैसा मृत्यु से जीउठना होगा।
१६ क्योंकि जो पहिला फल पवित्र होय तो पिंड भी ऐसाहै
१७ और जो जड़ पवित्र होय तो डारें भी ऐसीहैं। सो जो डारों में से कईएक तोड़ीगईं और तू जंगली जलपाई होके उनमें पेवंद हुआ और जलपाई की जड़ और रस में
१८ भागी हुआ। तो डारों पर अभिमान मत कर और जो अभिमान करे तो तू जड़का आधार नहीं परंतु जड़ तेरा
१९ आधारहै। सो तू कहेगा कि डारें इसलिये तोड़ीगईं कि मैं

२० पेवंद होओं। अच्छा वे अविश्वास के कारण तोड़ीगईं और तू अब बिश्वास से स्थिर है अभिमान मत कर परंतु डर।
२१ क्योंकि जो ईश्वर ने प्रकृत के डारों को नछोड़ा नहो कि तुझे
२२ भी नछोड़े। सो ईश्वर की कोमलता और कठोरता को देख उनपर जो काटीगईं कठोरता और तुझ पर कोमलता जो तू भलाई पर स्थिर रहे और नहीं तो तू भी काटाजायगा।
२३ और जो वे भी अबिश्वास में नरहें तो पेवंद कियेजायंगे क्योंकि
२४ ईश्वर उन्हें फेरके पेवंद करसक्ता है। इसलिये कि जब तू उस जलपाई के वृक्ष से जिसकी प्रकृति जंगली है काटागया और प्रकृति से उलटा अच्छे जलपाई के वृक्ष में पेवंद कियागया तो वे जो प्रकृति की हैं अपनेही जलपाई के वृक्ष में क्योंकर
२५ जोड़ी नजायंगी। हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुमलोग इस गुप्त भेद से अज्ञान रहो नहो कि तुमलोग अपने को श्रेष्ठ समुझो कि कुछ अंधापन इसराईल के बंश पर आनपड़ी
२६ जबलों अन्यदेशियों की भरपूरी नहोले। और यों समस्त इसराईल बचायाजायगा जैसा लिखाहै कि सीहून से मुक्तिदाता निकलेगा और याकूब से अधर्मता को दूरकरेगा।
२७ और मेरा यह नियम उनके संग होगा जब मैं उनके पापों
२८ को क्षमा करोंगा। वे मंगलसमाचार के बिषय में तुम्हारे
२९ कारण शत्रु हैं परंतु चुनेहुए की रीति से प्रिय हैं। क्योंकि
३० ईश्वर का दान और बुलावा पछतावा से रहित है। क्योंकि जैसा तुमलोग आगे ईश्वर पर बिश्वास नहीं लाये परंतु अब
३१ उनके अबिश्वास के कारण से दया पायेहो। वैसाही तुम्हारी दया पावने के कारण से बिश्वास नहीं लाये कि उनपर भी
३२ दया किईजाय। इसलिये कि ईश्वर ने उनसभों को अबिश्वासता
३३ में बंद किया जिसतें वुह सभों पर दया करे। वाह ईश्वर के ज्ञान और बुद्धि की गहिराई उसका बिचार कैसाही
३४ खोज से बाहर है और उसका मार्ग अपार है। क्योंकि

X [handwritten:] Vid. above "for the father's sake" wanting in the translation.

किसनें ईश्वर की इच्छा को जानाहै अथवा कौन उसका मंत्री
३५ था। अथवा किसने उसे पहिले कुछ दियाहै कि उसे
३६ फेरदियाजायगा। क्योंकि उसीसे और उसीके कारण और
उसीके लिये समस्त वस्तें ऊईहैं सर्बदा स्तुति उसी के लिये है
आमीन।

१२ बारहवां पर्व्व

१ सो हे भाइयो मैं ईश्वर की दया का कारण देके तुम्हों से
बिनती करताहों कि तुमलोग अपने शरीर ईश्वर को समर्पण
करो कि जीवता और पवित्र और ग्राह्य बलिदान होय कि
२ यह तुम्हारी उचित सेवा है। और इस जगत के समान मत
होवो परंतु अपने मन की नबीनता में बदलजाओ जिसतें
तुमलोग ईश्वर की इच्छा को निश्चय से जानो कि वुह भली
३ और ग्राह्य और सिद्ध है। और मैं उस अनुग्रह से जो
मुझे दियागयाहै तुम्हों में से हरएक को कहताहों कि अपने
माहात्म्य से अपने को बड़ा मत समुझो परंतु समानता से
बाहर नजाके ऐसा स्वभाव रक्खो जैसा ईश्वर ने हरएक
४ मनुष्य को परिमाण से बिश्वास दिया। क्योंकि जैसा हमारे
एक शरीर में बऊत से अंग हैं और हरअंग का कार्य्य भिन्न
५ भिन्नहै। सो हमलोग जो बऊत सेहैं मिलके मसीह का एक
६ शरीर ऊएहैं और हरएक आपुस में अंग हैं। सो हमों ने
उस अनुग्रह के समान जो हमें दियागया अलगअलग दान
पाया सो जो वुह आगम की बात है तो बिश्वास के परिमाण
७ के समान कहें। अथवा सेवा है तो सेवा में रहें अथवा
८ सिखावनिहार तो सिखावने में। अथवा उपदेशक तो उपदेश
में स्थिर रहे दानी नीति से देवे और अध्यक्ष परिश्रम से जो
९ दयाकरताहै आनंद से करे। प्रेम निष्कपट होय बुराई से घिन
१० करो भलाई से मिले रहो। भाई कीसी प्रीति से आपुस में

दयारक्खो आदर की रीति से एक दूसरे को प्रतिष्ठा देओ।
११ कामकाज में आलस नकरो आत्मा में फुरतिला होओ प्रभु
१२ की सेवा में रहो। आशा में मगन होओ बिपत में संतोषी
१३ प्रार्थना में नित्य रहो। सिद्धों की दरिद्रता को बांटलेओ
१४ अतिथि की सेवा करो। उनके लिये जो तुम्हें संतावतेहैं बर
१५ मांगो भला मनाओ स्राप नदेओ। आनंदकरनिहारों के
संग आनंदकरो और रोदन करनिहारों के संग रोदन
१६ करो। आपुस में एकसा स्वभाव रक्खो अभिमानी मत
होओ परंतु दीनों के संग दीन होओ अपने को बुद्धिमान
१७ मत समुझो। बुराई की संती किसीसे बुराई मत करो उन
कार्यन पर जो समस्त मनुष्यन की दृष्टि में भलेहैं आगे से
१८ चिंताकरो। जो होसके अपने सामर्थ्य भर हरएक मनुष्य के
१९ संग मिलेरहो। हे प्रिय अपना पलटा मत लेओ परंतु क्रोध
का मार्गछोड़देओ क्योंकि यह लिखाहै कि प्रभु कहताहै कि
२० पलटा लेना मेरा काम मैंहीं दंड देऊंगा। सो जो तेरा शत्रु
भूखा होय तो उसको कौरदे जो प्यासा होय तो उसे पीने
को दे क्योंकि तू यों करके उसके सिर पर आग के अंगारों की
२१ ढेर करेगा। बुराई के बश में मत होओ परंतु बुराई को
भलाईसे जीतो।

१३ तेरहवां पर्व्व

१ हरएक प्राणी बड़े पराक्रम के बश में रहे क्योंकि ऐसा कोई
पराक्रम नहीं जो ईश्वर के ओर से नहो जितने पराक्रम हैं
२ सो ईश्वर के ठहराएहुएहैं। सो जोकोई पराक्रम का साम्ना
करताहै सो ईश्वर के ठहरायेहुए का साम्ना करताहै और
३ वे जो साम्ना करतेहैं सो अपने दंड को पावेंगे। क्योंकि
पराक्रमी भले कार्यन को नहीं डरावते परंतु बुरेको सो जो
तू चाहे कि पराक्रम से नडरे तो भला कर और तू उस्से

४ बखान पावेगा। क्योंकि वुह ईश्वर का सेवक तेरी भलाई के लिये है परंतु जो तू बुरा करे तो डर कि वुह खड्ग व्यर्थ नहीं पकड़ता क्योंकि वुह ईश्वर का सेवक बुराई करनिहारों के लिये
५ क्रोध का दंडदाताहै। सो तुमलोग केवल क्रोध के भय से
६ नहीं परंतु बिवेक से भी मानो। इसलिये तुमलोग कर भी
७ देउ कि वे उसी कार्य के लिये ईश्वर के सेवक हैं। सो सबका जो आवताहो भरदेउ जिसको कर चहिये कर और जिसे शुल्क चहिये शुल्क देउ और जिसे डराचहिये डरो और
८ जिसको प्रतिष्ठा चहिये प्रतिष्ठा देउ। प्यार को छोड़ किसी को कुछ मतधारो क्योंकि वुह जो औरों को प्यार करताहै
९ उसने व्यवस्था को पूरा कियाहै। क्योंकि यह कि तू परस्त्री गमन मतकर हत्या मतकर चोरी मतकर झूठी साक्षी मतदे लालच मतकर अरु और आज्ञा जो इन्हों से अधिक हैं सो संक्षेप से इसीमें हैं अर्थात अपने परोसी को ऐसा प्यार कर
१० जैसा आप को करताहै। प्यार अपने परोसी से बुराई नहीं
११ करता इस कारण प्यार व्यवस्था का संपूर्ण करनाहै। और समय को पहिचान के कि नींद से जागने का समय अब आनपहुंचाहै क्योंकि जिस समय से हमलोग बिश्वास लाये
१२ तब से अब हमारी मुक्ति समीप है। रात बहुत बीतगई और भिनसार होचला सो हम अंधियारे के कार्यन को
१३ त्यागकरें और प्रकाश का झिलिम पहिनलेवें। और जैसा कि दिन का व्यवहार है सवंर के चलें ऊधम और मतवालपन में नहीं व्यभिचार और लुचपन में नहीं झगड़ा और डाह में
१४ नहीं। परंतु प्रभु ईसा मसीह को पहिनलेउ और शरीर की कामना को पालने के लिये चिंता नकरो।

१४ चौदहवां पर्व्व

१ जो बिश्वास में निर्बल है उसको ग्रहण करो परंतु मेद्दीन
२ अर्थन के बिवाद के लिये नहीं। एक बिश्वास करताहै कि
हरएक बस्तु खासक्ताहै परंतु जो निर्बल है केवल सागपात
३ खाताहै। सो वुह जो खाताहै उसकी जो नहीं खाता निंदा
नकरे और जो नहीं खाता सो खानेवाले का बिचार नकरे
४ क्योंकि ईश्वर ने उसे ग्रहण कियाहै। तू कौन है जो दूसरे
के सेवक पर आज्ञा करताहै वुह तो अपने प्रभु के आगे
खड़ाहै अथवा पड़ाहै हां वुह खड़ाकियाजायगा क्योंकि
५ ईश्वर उसे खड़ा करसक्ताहै। कोई मनुष्य एक दिन को दूसरे
दिन से श्रेष्ठ मानताहै और कोई हरएक दिन को समान
मानताहै हरएक मनुष्य को चहिये कि अपने मन में पूरी
६ प्रतीति रक्खे। और वुह जो दिन की चिंता करताहै सो प्रभु
के कारण चिंता करताहै और जो दिन की चिंता नहीं करता
सो प्रभु के कारण नहीं करता जो खाताहै सो प्रभु के कारण
खाताहै क्योंकि वुह ईश्वर की स्तुति करताहै और जो नहीं
खाता सो प्रभु के लिये नहीं खाता और ईश्वर की स्तुति
७ करताहै। क्योंकि कोई हम्में से अपने कारण नहीं जीता
८ और कोई अपने लिये नहीं मरता। जो हम जीतेहैं तो प्रभु
के कारण जीतेहैं और जो मरतेहैं तो प्रभु के कारण
मरतेहैं इसलिये जो हम जीवें अथवा मरें सो प्रभुही के हैं।
९ क्योंकि मसीह इसी बात के लिये मरा और उठा और जीआ
१० कि मृतकन और जीवतन का प्रभु होवे। परंतु तू किस लिये
अपने भाई पर आज्ञा करताहै अथवा तू किस लिये अपने
भाई को कुछ नहीं समुझता क्योंकि हमलोग मसीह के
११ सिंहासन के आगे खड़े कियेजायंगे। क्योंकि लिखाहै प्रभु
कहताहै कि अपने जीवन की सों हरएक घुठना मेरे आगे
१२ झुकेगा और हरएक जीभ ईश्वर के आगे मानलेगी। सो

हरएक हम्में से ईश्वर के आगे अपना अपना लेखा देगा।
१३ इसलिये चहिये कि हम एक दूसरे पर आज्ञा नकरें परंतु
पहिले यह ठहरावें कि वुह बस्तु जो ठोकर खिलाने के अथवा
१४ गिरपड़ने के कारण होवे अपने भाई के आगे नरक्खें। मैं
जानताहों और प्रभु ईसा मसीह से प्रबोध पायाहै कि कोई
बस्तु आपही अशुद्ध नहींहै परंतु जो किसी बस्तु को अशुद्ध
१५ समुझताहै वुह उसके लिये अशुद्ध है। जो तेरा भाई तेरे
भोजन से उदास होवे तो तू प्रेम की रीति पर नहीं चलता
जिसके कारण मसीह मरा अपने भोजन से उसको नाश मत
१७ कर। चहिये कि तेरी भलाई बुरी नकहीजाय। क्योंकि ईश्वर
का राज्य खाने अथवा पीने में नहीं है परंतु धर्मात्मा में धर्म
१८ और कुशल और आनंद है। और जो कोई इन्हीं बातों में
मसीह की सेवा करताहै सोई ईश्वर का भाया और मनुष्यन
१९ का सराहाहूआ है। इसलिये आओ ऐसे कार्यन का पीछा
करें जो कुशल के कारण होय और जिस्से एक दूसरे को
२० बढ़ासके। और भोजन के लिये ईश्वर का कार्य मत बिगाड़ो
समस्त बस्तें तो पवित्र हैं परंतु वुह उस मनुष्य के लिये जो
२१ भोजन करके ठोकर खिलाताहै बुरा है। भला यह है कि
मांस नखाना मदिरा नपीना और ऐसा कर्म नकरना जिस्से
तेरा भाई धक्का अथवा ठोकर खाय अथवा निर्बल होजाय।
२२ तेरा बिश्वास जो ठीक है तो उसे ईश्वर के आगे अपने लिये
रखछोड़ धन्य वुह जो अपने को उस कार्य में जो उसे
२३ भावताहै दोष नहीं देता। परंतु वुह जो संदेह रखके
खाताहै दोषी है इस कारण कि बिश्वास से नहीं है क्योंकि
जो कुछ बिश्वास से बाहर है सो पाप है।

१५ पंदरहवां पर्व्व

१ सो हमलोगों को जो बली हैं चाहिये कि निर्ब्बलों की दुर्बलता
२ को सहें और अपना स्वार्थ नकरें। हरएक हमों से भलाई
के लिये अपने परोसी का स्वार्थ करे कि वुह संवरजाय।
३ क्योंकि मसीह ने भी अपनी इच्छा नकिई पर जैसा लिखाहै
४ कि तेरे निंदकों की निंदा मुझपर आपड़ी। क्योंकि जोकुछ
आगे लिखागया सो हमारी शिक्षा के लिये लिखागया कि
हमलोग संतोष से और ग्रंथों के सांत्व से भरोसा पावें।
५ अब संतोष और सांत्वन का ईश्वर तुम्हों को यह देवे कि
६ मसीह ईसा के समान आपुस में एक मन होरहो। जिसतें
एकमन और एक बोली होके हमारे प्रभु ईसा मसीह के
७ पिता ईश्वर की महिमा करो। इस कारण हरएक तुम्हों में से
दूसरे को मिलालेवे जैसाकि मसीह ने भी हमों को ईश्वर की
८ महिमा में मिलालिया। अब मैं कहताहों कि ईसा मसीह
खतनः कियेगयों का सेवक ईश्वर की सच्चाई के लिये ऊआ कि
९ उन प्रतिज्ञाओं को जो पितरों से किईगई पूरी करे। जिसतें
अन्यदेशी भी दया के कारण से ईश्वर की महिमा करें जैसा
लिखाहै कि इसकारण मैं अन्यदेशीयों के मध्य में तुझे मानलेउंगा
१० और तेरे नाम की स्तुति गाओंगा। और वुह फेर कहताहै
११ कि हे अन्यदेशियो उसके लोगों के संग आनंद करो। और
फेर कि हे समस्त अन्यदेशियो प्रभु की स्तुति करो और
१२ हे लोगो उसकी स्तुति करो। और फेर अशीया कहताहै
कि यस्सी का एक मूल होगा और अन्यदेशियों पर राज्य
करने को एक उदय होगा और अन्यदेशी उसपर आशा
१३ रक्खेंगे। अब आशा का ईश्वर तुम्हों को बिश्वास लावने से
समस्त आनंद और शांति से भरपूर करे कि तुमलोग धर्मात्मा
१४ के सामर्थ से आशा में बढ़तेचलेजाओ। और हे मेरे भाइयो
मेरा तो तुम्हारे विषय में यह बिश्वास है कि तुमलोग भलाई

से भरपूर और नाना प्रकार के ज्ञान से भरेहो और एक
१५ दूसरे को समुझासक्तेहो। सो हे भाइयो मैं ने निडर से चेत
दिलाने की रीति से कुछ थोड़ासा तुम्हें लिखभेजा क्योंकि
१६ ईश्वर ने मुझ पर इसलिये अनुग्रह किया। कि मैं ईसा
मसीह का सेवक अन्यदेशियों के लिये होके ईश्वर के मंगल
समाचार की सेवकाई करों जिस्तें अन्यदेशियों की भेंट
१७ धर्मात्मा से पवित्र होके ग्रहण किईजाय। सो मैं ईसा मसीह
के कारण उन कार्यन में जो ईश्वर के हैं बड़ाई करसक्ताहों।
१८ क्योंकि मेरा इतना हियाव नहीं कि उन कार्यन को छोड़ जो
मसीह ने मुझसे करवाया बर्णनकरों कि अन्यदेशियों को बचन
१९ में और करनी में आधीन करे। बड़ेबड़े लक्षण और आश्चर्यन
से और ईश्वर के आत्मा के पराक्रम से इहां लों कि मैं ने
यिरोशलीम से फिरतेफिरते अलूरकूम लों मसीह के मंगल
२० समाचार का पूरा उपदेश किया। सो मैं उस प्रतिष्ठा का
अभिलाषी था कि जहां जहां मसीह का नाम नहीं लियागया
वहां तहां मंगलसमाचार पऊंचाओं नहो कि मैं दूसरे की
२१ नेउं पर रहा रक्खों। परंतु जैसा लिखाहै कि जिन्हों को
उसका संदेश नहीं पऊंचा वे देखेंगे और जिन्हों ने नहीं
२२ सुना समुझेंगे। इसी कारण से मैं तुम्हारे पास आवने से
२३ बऊत रोकागया। परंतु अब इन देशों में कोई स्थान बच
नरहा और तुम्हों से भेंट करने को बऊत बरस से अभिलाषी
२४ हों। जब मैं असपनियः को यात्रा करोंगा तुम्हारे पास भी
आजाऊंगा मैं आशा रखताहों कि जातेजाते तुम्हों को देखों
और तुम्हारी भेंट से संतुष्ठ होके तुम्हीं से उधरी को
२५ बढ़ायाजाऊं। परंतु अब मैं सिद्धों की सेवा करनेके लिये
२६ यिरोशलीम को जाताहों। क्योंकि मकदूनियः और अखाइयः
के बासियों की इच्छा यों है कि यिरोशलीम के दरिद्र सिद्धों
२७ के लिये कुछ भेजें। यह उनकी इच्छा ऊई और वे उन्हों के

ऋणी भी हैं क्योंकि जब अन्यदेशी आत्मिक बस्तुन में उनके भागी ऊए हैं तो उचित है कि वे शारीरिक बस्तुन में उन्हों की
२८ सेवा करें। सो मैं इस कार्य्य को पूरा करके और यह फल उनके हाथ में देके तुम्हारे पास से होकर असपनियः को
२९ जाउंगा। और मैं जानताहों कि मेरा आवना तुम्हारे पास मसीह के मंगलसमाचार की भरपूरी से होगा। और हे
३० भाइयो मैं तुम्हों से अपने प्रभु ईसा मसीह के और आत्मा के प्रेम का कारण देके बिनती करताहों कि तुमलोग मेरे लिये
३१ मेरे संग ईश्वर की प्रार्थना करने में परिश्रम करो। जिसतें मैं यहूदियः के अबिश्वासियों से बचजाओं और मेरी वुह सेवा जो यिरोशलीम के लिये है सो सिद्धन को ग्राह्य होय।
३२ कि मैं ईश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनंद से आओं और
३३ तुम्हारे संग चैन पाओं। अब सांत का ईश्वर तुमसभों के संग रहे आमीन।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

१ मैं तुमसभों से फीबी का सराहना करताहों जो हमारी
२ बहिन है और कंकरयः नगर की मंडली की दासी है। कि तुमलोग उसको प्रभु में यों ग्राह्य करो जैसा सिद्धों को योग्य है और जोजो कार्य्य में वुह तुम्हों से प्रयोजन रखतीहोय उसका उपकार करो क्योंकि वुह बऊतों की और मेरी
३ भी उपकारिणी थी। परसकला और अकला को जो मसीह ईसा में मेरे उपकारक हैं मेरा नमस्कार कहो।
४ उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपनाही गला धरदिया उनका केवल मैं नहीं परंतु अन्यदेशियों की समस्त मंडली भी धन्य
५ मानतीहैं। और मंडली को जो उनके घर में हैं नमस्कार कहो और मेरे प्रिय अपीनतस को जो आखायः का मसीही
६ पहिला फल है नमस्कार कहो। और मरियम को जिसने

७ हमारे लिये बज्जत परिश्रम किया नमस्कार कहो। और अंदरनीकस और यूनियः को जो मेरे कुटुंब हैं और बंदीगृह में मेरे साथी थे और प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले ८ मसीह में भी थे नमस्कार कहो। अंम्लियास को जो प्रभु में ९ मेरा प्रिय है नमस्कार कहो। और मसीह में मेरे संगी सेवक अरबानूस को और मेरे प्यारे स्तकीस को नमस्कार १० कहो। और अपल्लीस को जो मसीह में परखाज्ज्आ है नमस्कार कहो और अरस्तबूलस के लोगों को नमस्कार कहो। ११ मेरे कुटुंब हिरूदियून को नमस्कार कहो और नार्किस्स के १२ लोगों को जो प्रभु में हैं नमस्कार कहो। और तरिफीना और तरिफूसा को जिन्हों ने प्रभु में परिश्रम किया है और प्यारे परसस को जिसने प्रभु के लिये बज्जत परिश्रम किया है १३ नमस्कार कहो। और रूफस को जो प्रभु में चुनाज्ज्आ है और उसको जो उसकी और मेरी माता है नमस्कार कहो। १४ और असनकरतस और फलगून और हरमास और पतरवास और हरमीस और भाइयों को जो उनके संग हैं १५ नमस्कार कहो। और फलुलूगस और यूलिया और नीरियूस और उसकी बहिन को और उलंपास और समस्त १६ संतन को जो उनके संग हैं नमस्कार कहो। और पवित्र चूमा से एक दूसरे को नमस्कार कहो मसीह की समस्त १७ मंडली तुम्हें नमस्कार कहती हैं। अब हे भाइयो मैं तुम्हों से बिनती करताहों कि उन लोगों को जो इस उपदेश से उलटा चलतेहैं और बिगाड़ के और ठोकर खिलावने के कारण हैं १८ चौकस रक्खो और उनसे परे रहो। क्योंकि जो ऐसे हैं सो हमारे प्रभु ईसा मसीह की नहीं परंतु अपने उदर की सेवा करतेहैं और सुबचन और लल्लोपत्तो की बातों से सूधे लोगों १९ को ठगतेहैं। क्योंकि तुम्हारी आधीनता सभों लों पज्जंचीहै इसकारण मैं तुम्हों से आनंदित होंा परंतु मैं यह चाहताहों

कि तुमलोग भलाई में चतुर और बुराई में भोला होओ।
२० और कुशल का ईश्वर शयतान को तुम्हारे पाओं तले शीघ्र
लताड़ेगा हमारे प्रभु ईसा मसीह का अनुग्रह तुम्हारे संग
२१ होवे आमीन। मेरे संग का परिश्रमी तीमताऊस और मेरा
कुटुंब लूकयूस और यासून और सूपतरस तुम्हें नमस्कार
२२ कहतेहैं। मैं तर्तयूस जो इस पत्री का लेखक हों तुम्हों को
२३ प्रभु में नमस्कार कहताहों। गायूस जो मेरा और सारी
मंडली का आतिथ्य करनिहार है तुम्हें नमस्कार कहताहै
आरास्तस जो नगर का भंडारी है और भाई कारतस
२४ तुम्हों को नमस्कार कहतेहैं। हमारे प्रभु ईसा मसीह का
२५ अनुग्रह तुमसभों पर होवे आमीन। अब वुह जो तुम्हों को
मेरे मंगलसमाचार के और ईसा मसीह के उपदेश के
समान स्थिर करसक्ताहै अर्थात प्रगट किएझए भेद के
२६ समान जो जगत के आरंभ से गुप्त था। परंतु अब
आगमज्ञानियों के ग्रंथों से अनंत ईश्वर की आज्ञा के समान
समस्त लोगों पर प्रगट कियागया कि आधीनता के लिये
२७ बिश्वास लावें। अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को ईसा मसीह के
आर से सर्बदा महिमा पऊंचीकरे आमीन।

पूलूस की पहिली पत्री करिंतियों को

१ पहिला पर्ब्ब

१ पूलूस जो ईश्वर की इच्छा से ईसा मसीह का बुलायाऊआ
२ प्रेरित और भाई सूसतनीससे। ईश्वर की मंडली को जो करनतस में है उनको जो ईसा मसीह में होके पवित्र कियेगयेहैं और साधु कहायेहैं उन सब समेत जो हरएक स्थान में ईसा मसीह का नाम जो हमारा और उनका प्रभु
३ है लियाकरतेहैं। हमारे पिता ईश्वर के और प्रभु ईसा
४ मसीह के ओरसे अनुग्रह और कुशल तुम्हारे लिये होवे। मैं तुम्हारे लिये नित्य अपने ईश्वर का धन्य मानताहों कि ईश्वर
५ का अनुग्रह ईसा मसीह में तुम्हों को दियागया। कि हरएक बस्तु में और समस्त उच्चारण और समस्त ज्ञान में उसी के
६ कारण से तुमलोग धनी कियेगयेहो। जैसा कि मसीह की साक्षी
७ तुम्हों में ठहराईगई। इहां लों कि तुमलोग किसी अनुग्रह में घाट नहींहो और हमारे प्रभु ईसा मसीह के प्रगट होने की
८ बाट जोहतेहो। वही तुम्हें अंत्य लों स्थिर रक्खेगा जिसतें तुमलोग हमारे प्रभु ईसा मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।
९ ईश्वर धर्मी है जिस्से तुमलोग उसके पुत्र हमारे प्रभु ईसा
१० मसीह की संगति में बुलायेगयेहो। अब हे भाइयो मैं प्रभु ईसा मसीह के नाम के कारण तुम्हारी बिनती करताहों कि तुमलोग एकही बात बोलो और बिभाग तुम्हों में नहोवे परंतु एकही मन और एकही ज्ञान में मीलेजुले रहो।
११ क्योंकि हे भाइयो मुझे कलाई के लोगों से कहागयाहै कि
१२ तुम्हों में झगड़ेहैं। सो मैं कहताहों कि तुम्हों में हरएक कहताहै कि मैं पूलूस का मैं अपलूस का मैं काफा का मैं

१३ मसीह का हों। तो क्या मसीह बिभाग होगया क्या पूलूस तुम्हारे कारण क्रूस पर खींचागया अथवा तुम्हों ने पूलूस के
१४ नाम से स्नान पाया। मैं तो ईश्वर का धन्य मानताहों कि मैं ने करसपस और गायूस को छोड़ तुम्हों में किसीको स्नान
१५ नदिया। नहोवे कि कोई कहे कि उसने अपने नाम से स्नान
१६ दिया। और मैं ने इस्तीफान के घराने को भी स्नान दिया और उनसे अधिक मैं नहीं जानता कि मैं ने किसी और को
१७ स्नान दिया। क्योंकि मसीह ने मुझे स्नान देनेको नहीं परंतु मंगल समाचार का उपदेश करनेको भेजा बचन के ज्ञानसे
१८ नहीं नहोवे कि मसीह का क्रूस निरर्थ होजाय। क्योंकि क्रूस का उपदेश उनके लिये जो नष्टहोतेहैं मूर्खता है परंतु
१९ हमारे लिये जो बचायेगयेहैं ईश्वर का सामर्थ्य है। क्योंकि लिखाहै कि मैं ज्ञानियों के ज्ञानको नाश करोंगा और
२० बुद्धिमानों की बुद्धि को मिटाडालोंगा। कहां ज्ञानी कहां अध्यापक कहां इस जगत के बिवादी क्या ईश्वर ने इस जगत
२१ के ज्ञान को मूर्ख नकिया। इस लिये कि जब ईश्वर के ज्ञान से यों ऊआ कि जगत ने अपने ज्ञान से ईश्वर को नपहिचाना तो ईश्वर की यह इच्छा ऊई कि मंगलसमाचार की मूर्खता
२२ से बिश्वासियों को बचावे। क्योंकि यहूदी कोई लक्षण चाहतेहैं
२३ और यूनानी ज्ञान ढूंढ़तेहैं। परंतु हम मसीह का जो क्रूस पर मारागया संदेश देतेहैं वुह यहूदियों के लिये ठोकर
२४ का बिषय है और यूनानियों के लिये मूर्खताहै। पर मसीह उनके लिये जो बुलायेगयेहैं क्या यहूदी क्या यूनानी ईश्वर
२५ का सामर्थ्य और ईश्वर का ज्ञान है। क्योंकि ईश्वर की मूर्खता मनुष्यन से अधिक ज्ञानी है और ईश्वर की दूर्बलता मनुष्यन
२६ से बलवंत है। हेभाइयो अपने बुलाएऊए पर दृष्टिकरो कि बऊतसे शारीरिक ज्ञानी और बऊत पराक्रमी और बऊतसे
२७ प्रतिष्ठित नहींहैं। परंतु ईश्वर ने जगत की मूर्ख बस्तुन को

चुनलिया कि ज्ञानियों का अपमान करे और ईश्वर ने जगत
की दुर्बल वस्तुनको चुनलिया कि बलवंत को लज्जित करे।
२८ और जगत की नीच वस्तुन को और निंदित वस्तुन को और
वस्तुन को जो नहीं हैं ईश्वर ने चुनलिया कि उन वस्तुन को
२९ जो हैं मिटाडाले। जिसतें कोई शरीर उसके आगे बड़ाई
३० नकरे। परंतु तुमलोग उसीसे मसीह ईसा में हो जो ईश्वर
से हमारे लिये ज्ञान और धर्म और पवित्रता और मुक्ति
३१ ऊआहै। कि जैसा लिखाहै कि जो बड़ाई करे सो प्रभु पर
बड़ाई करे।

२ दूसरा पर्व्व

१ और हे भाइयो जब मैं तुम्हारे पास आया तब बचन की
उत्तमता अथवा ज्ञान से ईश्वर की साक्षी देताऊआ नहीं
२ आया। क्योंकि मैंने ठहराया कि तुम्हों में कुछ नजानों
केवल ईसा मसीह को और उसके क्रूस पर मारेजाने को।
३ और मैं दुर्बलता में और भय में और निपट थरथराताऊआ
४ तुम्हारे पास था। और मेरी भाषा और मेरा उपदेश
मनुष्य के ज्ञान के फुसलाने की बातें नथीं परंतु आत्मा के
५ सामर्थ्य और प्रत्यक्ष प्रमाण के संग थीं। जिसतें तुम्हारा
बिश्वास मनुष्य के ज्ञान में नहीं परंतु ईश्वर के सामर्थ्य पर
६ ठहरे। तिसपरभी हम उनके आगे जो सिद्ध हैं ज्ञान की
बातें बोलतेहैं तथापि इस लोक का और इस नाशमान
७ लोक के अध्यक्षन का ज्ञान नहीं बोलते। परंतु हम ईश्वर
का निगूढ़ ज्ञान बोलतेहैं वही गुप्त ज्ञान जिसे ईश्वर ने जगत
८ से पहिले हमारे माहात्म्य के कारण ठहराया। जिसे किसी
ने इस जगत के अध्यक्षन में से नजाना क्योंकि जो वे जानतेहोते
९ तो माहात्म्य के प्रभु को क्रूस पर नमारते। परंतु जैसा कि
लिखाहै कि ईश्वर ने अपने प्रेमियों के लिये उन वस्तुन को

सिद्ध कियाहै जिन्हें आंखों ने नदेखा और न कानों ने सुना
१० और न मनुष्यन के अंतःकरण में प्रवेश ऊई। परंतु ईश्वर ने
उनको अपने आत्मा के ओर से हमसभों पर प्रगट किया
क्योंकि आत्मा समस्त बस्तुन को हां ईश्वर के गंभीर बस्तुन
११ को भी बिचार करताहै। क्योंकि कौन मनुष्य मनुष्य के आत्मा
को छोड़ जो उस में है मनुष्य का भेद जानताहै इसी रीति
से ईश्वर के आत्मा को छोड़ ईश्वर का भेद कोई नहीं
१२ जानता। अब हमों ने जगत के आत्मा को नहीं परंतु उस
आत्मा को पाया जो ईश्वर के ओर सेहै जिसतें हम उन
१३ बस्तुन को जानें जो ईश्वर ने हमें दिईं। जो हम कहतेहैं
मनुष्य की बुद्धि के सिखावने के बचन में नहीं परंतु धर्मात्मा
की सिखाईऊई आत्मिक बस्तुन को आत्मिक से मिलावतेहैं।
१४ परंतु शारीरिक मनुष्य ईश्वर के आत्मा की बस्तुन को ग्रहण
नहीं करता कि वे उसके आगे मूर्खता हैं और न वुह
जानसकताहै क्योंकि वे आत्मिक रीति पर बूझीजातीहैं।
१५ परंतु वुह जो आत्मिक है सो सब बातों को समुझताहै पर
१६ वुह आप किसीसे नहीं समुझाजाता। क्योंकि प्रभु के मन को
किसने जानाहै कि उसका मंत्री होवे परंतु मसीह का मन
हमों में है।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ और हे भाइयो मैं तुम्हों से ऐसा नकहिसका जैसा आत्मिकों
से परंतु ऐसा जैसा शारीरिकों से अर्थात जैसा उनको जो
२ मसीह में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया और मांस
नखिलाया क्योंकि तुमलोग अशक्त थे और अबलों भी तुम्होंमें
३ शक्ति नहीं। क्योंकि तुमलोग अबलों शारीरिक हो इसलिये
जब कि तुम्हों में डाह और झगड़ा करना और बिभाग
होना है तो क्या तुमलोग शारीरिक नहीं हो और मनुष्यन

४ के ब्यवहार पर नहीं चलतेहो। क्योंकि जब एक कहताहै कि मैं पूलूस का हों और दूसरा कि मैं अफलूस का तो क्या तुम
५ शारीरिक नहीं। पूलूस कौन और अफलूस कौन है केवल सेवक जिनके ओर से तुमलोग बिश्वास लाये सो भी इतना
६ जितना प्रभु ने हरएक को दिया। मैं ने वृक्ष लगाया और
७ अफलूस ने सींचा परंतु ईश्वर ने बढ़ाया। सो लगावनिहार कुछ नहीं और नसींचनिहार परंतु ईश्वर जो बढ़ावनिहार
८ है। सो लगावनिहार और सींचनिहार दोनो एकहैं और
९ हरएक अपने परिश्रम के समान फल पावेगा। क्योंकि हमलोग ईश्वर के बनिहार हैं और तुमलोग ईश्वर की खेती
१० और ईश्वर के बसाव हो। मैं ने ईश्वर के अनुग्रह की रीति पर जो मुझे दियागया बुद्धिमान थवई के समान नेउं डाली और दूसरा उसपर घर धरताहै सो हरएक सौंचेती करे
११ कि वुह किस रीति से उसपर घर धरताहै। क्योंकि उस नेउं को छोड़ जो डालीगईहै कोई दूसरी नेउं डाल नहीं सक्ता
१२ वुह ईसा मसीह है। परंतु जों कोई इस नेउं पर सोने रुपे
१३ अति मोल के पत्थर लकड़ी घास भूसे का घर रक्खे। तो हरएक का कार्य्य प्रगट होगा कि वुह दिन उसको प्रगट करदेगा कि ऐसा कार्य्य आग से परखेजायंगे और हरएक
१४ का कार्य्य जैसा है आग ठहरावेगी। जों किसीका कार्य्य स्थिर
१५ रहे वुह फल पावेगा। और जों किसीका कार्य्य जलजाय वुह टूटी उठावेगा तथापि आप तो बचजायगा परंतु ऐसा
१६ जैसा कोई आग से बचनिकलताहै। क्या तुमलोग नहीं जानते कि तुम ईश्वर के मंदिर हो और ईश्वर का आत्मा
१७ तुम्हों में बसताहै। जों कोई ईश्वर के मंदिर को बिगाड़े तो ईश्वर उसको बिगाड़ेगा क्योंकि ईश्वर का मंदिर पवित्र है
१८ और वुह तुमलोग हो। कोई मनुष्य अपने को छल नदेवे जों कोई तुम्हारे बिषे अपने को जगत में ज्ञानवान जाने तो मूर्ख

१९ बने कि ज्ञानी होवे। क्योंकि लौकिक ज्ञान ईश्वर के आगे मूर्खता है जैसा कि लिखा है कि वुह ज्ञानियों को उनकी
२० चतुराइयों में फंसाताहै। और यह कि प्रभु ज्ञानियों की
२१ चिंतों को जानताहै कि वे व्यर्थ हैं। इसलिये कोई मनुष्य
२२ मनुष्य पर बड़ाई नकरें क्योंकि समस्त बस्तें तुम्हारी हैं। क्या पूलूस क्या अफलूस क्या काफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण
२३ क्या बर्त्तमान की बस्तें क्या भविष्य की सब तुम्हारी हैं। और तुम मसीह के हो और मसीह ईश्वर का है।

४ चौथा पर्ब्ब

१ मनुष्य हमों को ऐसा जाने जैसे मसीह के सेवक और ईश्वर के
२ भेद के भंडारी। और भंडारी में इस बात की खोज
३ किईजातीहै कि वुह धर्मी पायाजाय। परंतु मुझको उसकी कुछ चिंता नहीं कि तुम्हों से मेरा बिचार कियाजाय अथवा किसी मनुष्य के बिचार करने से हां मैं आप भी अपना
४ बिचार नहीं करता। क्योंकि मेरा मन किसी बात में मुझे दोष नहीं देता तथापि मैं उस्से कुछ धर्मी नहीं ठहरता
५ परंतु मेरा बिचार करनिहार प्रभु है। इसकारण जबलों प्रभु नआवे तुमलोग समय से पहिले बिचार मतकरो वुह अंधकार के गुप्त भेदों को प्रकाशित करेगा और मन के परामर्ष को प्रगट करेगा और तब हरएक जन ईश्वर से
६ बड़ाई पावेगा। और हे भाइयो मैं ने इन बातों में तुम्हारे कारण अपना और अफलूस का बर्णन दृष्टांत की रीति पर किया कि तुमलोग हमारे ओर से सीखो कि लिखेऊए से अधिक नसमुझो नहोवे कि तुमलोग एक से दूसरे की अधिक
७ बड़ाई करके फूलो। क्योंकि कौन तुझे दूसरे से बिभेद करताहै और तुझ पास क्या है जो तूने नहीं पाया सो जो तूने पाया
८ तो क्यों बड़ाई करताहै जैसा कि तूने नहीं पाया। सो अब

तुमलोग संतुष्ट और धनमान हो और हमारे बिना तुम्हों ने
राजाओं के समान राज्य किया और मैं चाहताहों कि तुमलोग
राज्य करते कि हमलोग भी तुम्हारे संग राज्य करते।
९ क्योंकि मेरी बुद्धि में ईश्वर ने हमों को जो पिछले प्रेरित हैं
ऐसा प्रगट किया जैसा कि हमारे मारडालने पर आज्ञा
किईगईहै कि हम जगत के और दूतों के और मनुष्यन के
१० लिये एक सवांग ऊएहैं। हम मसीह के कारण से मूर्ख हैं
परंतु तुमलोग मसीह में ज्ञानी हो हम दुर्बल तुम बलवान
११ हो तुम प्रतिष्ठित हम निंदतहैं। हां हम इस घड़ी लों भूखे
१२ और प्यासेऔर नंगे हैं और धैालखातेहैं और मारेफिरतेहैं।
और अपने हाथों से परिश्रम करतेहैं निंदित होके हम भला
१३ मनातेहैं संताएजाके हम सहतेहैं। वे अपवाद लगावतेहैं हम
बिनती करतेहैं और हम जगत के कूड़े की और समस्त वस्तुन
१४ की मैल के समान आजलों हैं। मैं ये बातें नहीं लिखताहों
कि तुम्हें लज्जित करों परंतु अपने प्रिय पुत्रों के समान मैं
१५ चेतावताहों। क्योंकि यद्यपि मसीह में तुम्हारे दस सहस्र
उपदेशक हों तथापि तुम्हारे पिता बऊतसे नहीं इसलिये कि
मैं अकेला मंगलसमाचार के द्वारासे मसीह ईसा में तुम्हारा
१६ पिता ऊआ। सो मैं तुम्हारी यह बिनती करताहों कि मेरे
१७ पीछे चलनिहार होओ। इस कारण मैंने तीमताऊस को
जो मेरा प्रिय पुत्र है और प्रभु में बिश्वासी है तुम्हारे पास
भेजा कि बुह मेरे चलन को जो मसीह मेंहैं जैसा मैं हरएक
१८ स्थान हर मंडली में सिखावताहों तुम्हें स्मरण करावे। कितने
यह समुझ के फूलतेहैं कि मैं तुम्हारे पास नहीं आवनेका।
१९ परंतु जो प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र आओंगा और
अभिमानियों की बातों को नहीं परंतु उनके पराक्रम के
२० तल को बूझोंगा। क्योंकि ईश्वर का राज्य बचन में नहीं
२१ परंतु पराक्रम में है। तुमलोग क्या चाहतेहो कि मैं

तुम्हारे पास छड़ी लेके आओं अथवा प्रेम और आत्मा की कोमलता से।

५ पांचवां पर्व्व

१ यह सर्व्वत्र सुनायाजाताहै कि तुम्हारे बिषे ब्यभिचार है और ऐसा ब्यभिचार जिसका नाम अन्यदेशियों में भी नहीं कि २ मनुष्य अपने पिता की स्त्री को रक्खे। और तुमलोग फूलतेहो बिलाप नहीं करते जो उचित था कि जिसने यह कर्म किया ३ तुम्हों से निकालाजाय। क्योंकि मैं तो शरीर में अलग हों परंतु आत्मा में ऐसा समीप हों जैसा सचमुच समीप था उस ४ पर जिसने ऐसा किया यह आज्ञा करचुका। कि हमारे प्रभु ईसा मसीह के नाम में जब तुमलोग और हमारा आत्मा ५ हमारे प्रभु ईसा मसीह के पराक्रम के संग एकठेहो। तो ऐसे मनुष्य को शरीर में कष्ट खींचने के लिये शयतान को सौंपदेउ जिसतें हमारे प्रभु ईसा के दिन में आत्मा बचजाय। ६ तुम्हारा घमंड करना ठीक नहीं क्या तुमलोग नहीं जानते कि थोड़ासा ख़मीर सारे पिंडे को ख़मीर करडालताहै। ७ सो पुराने ख़मीर को निकालफेंको जिसतें तुमलोग नया पिंड बनो जैसा कि तुम अख़मीर हो क्योंकि हमारा फसः अर्थात ८ मसीह हमारे लिये बलिदान कियागया। इसलिये हमलोग पुराने ख़मीर से नहीं और नबुराई और दुष्टता के ख़मीर ९ से परंतु निर्म्मलता और सच्चाई के ख़मीर से पर्व्व करें। मैं ने पत्री में तुम्हों को लिखा कि ब्यभिचारियों की संगति मतकरो। १० परंतु केवल इस जगत के ब्यभिचारियों की नहीं अथवा लोभियों की अथवा निचारियों की अथवा देवपूजकों की नहीं ११ तब तो तुम्हें जगत से निकलजाना अवश्य होता। पर मैं ने अब तुम्हें लिखाहै कि जो कोई भाई कहाके ब्यभिचारी अथवा लोभी अथवा देवपूजक अथवा निंदक अथवा मद्यप

अथवा निचोरी होय तो तुमलोग ऐसे की संगति नकरना हां
१२ ऐसे के संग भोजनभी नखाना। क्योंकि मुझे क्या काम है कि
उनपर जो बाहर हैं आज्ञा करों क्या तुमलोग उनपर जो
१३ भीतर हैं आज्ञा नहीं करते। परंतु उनपर जो बाहर हैं
ईश्वर आज्ञा करता है सो इस कारण तुमलोग उस दुष्ट
मनुष्य को अपने बीच में से बाहर करो।

६ छठवां पर्व

१ क्या तुम्हों में किसी का यह हियाव है कि दूसरे से बिवाद
२ रखके अधर्मियों के पास जावे और सिद्धन कने नहीं। क्या
तुमलोग नहीं जानते कि साधुलोग जगत का बिचार करेंगे
जो तुम्होंसे जगत का बिचार कियाजाय तो क्या तुमलोग
३ सहज बिवादों के बिचार करने के अयोग्य हो। क्या तुम नहीं
जानते कि हमलोग दूतों का बिचार करेंगे तो कितना अधिक
४ इस जीवनके बस्तुन के बिषय में। सो जो तुम्हों में इस जीवन
को बस्तुन के बिषय में बिवाद होय तो मंडली के उन लोगों को
५ जो छोटे हैं पंच मानो। मैं तुम्हारी लाज के लिये कहताहों
क्या तुम्हारे बिघे एक बुद्धिमान भी नहीं जो अपने भाइयों के
६ बिषय में न्यायसे चुकासके। परंतु भाई भाईसे बाद करताहै
७ और सो अबिश्वासियों के आगे। सो यह सर्बथा तुम्हारा दोष
है कि तुम आपुस में झगड़ा करतेहो तुमलोग क्यों नहीं अंधेर
८ सहते और तुमलोग क्यों नहीं अपनी घटी सहते। परंतु
तुमलोग आपही एक तो अंधेर और बरबस्ती करतेहो
९ और दूसरे भाइयों पर। क्या तुमलोग नहीं जानते कि
अधर्मी ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहोंगे छल नखाओ
नब्यभिचारी नदेवपूजक नपरस्त्रीगामी नजुमेहरे नपुरषगामी।
१० नचोर नलालची नमद्यप ननिंदक ननिचोरी ईश्वर के राज्य
११ के अधिकारी होंगे। और कितने तुम्हों में ऐसे थे परंतु प्रभु

ईसा के नाम से और हमारे ईश्वर के आत्मा से स्नान पाये
१२ और पवित्र ज्ञए और धर्मी भी ठहरे। समस्त बस्तें मेरे
लिये योग्य हैं परंतु सब बस्तें अवश्य नहीं हैं यद्यपि सब बस्तें
१३ मेरे बश में हैं पर मैं किसी के बश में नहोंगा। भोजन पेट के
लिये और पेट भोजन के लिये परंतु ईश्वर उसको और
उनको नष्ट करेगा परंतु देह व्यभिचार के लिये नहीं परंतु
१४ प्रभु के लिये और प्रभु देह के लिये। और ईश्वर ने प्रभु को
उठायाहै और हमों को भी अपनेही सामर्थ्य से उठावेगा।
१५ क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर मसीह के अंगहैं
सो क्या मैं मसीह के अंगन को लेकर बेश्या का अंग बनाओं।
१६ ऐसा नहोवे क्या तुमलोग नहीं जानते कि जो कोई बेश्या से
संयुक्त है एक देह ज्ञआ क्योंकि कहागयाहै कि ऐसे दोनों
१७ एक देह होंगे। परंतु वुह जो प्रभु से मिलाज्ञआ है सो एक
१८ प्राण ज्ञआहै। व्यभिचार से भागो जो पाप मनुष्य करताहै
देहसे बाहर है परंतु बुह जो व्यभिचार करताहै अपनेहीं
१९ शरीर के बिरुद्ध पाप करताहै। क्या तुमलोग इस्से अज्ञान
हो कि तुम्हारा देह धर्मात्मा का मंदिर जो तुम्हों में है जिसको
तुम्हों ने ईश्वर से पायाहै और तुमलोग अपनेही नहीं हो।
२० क्योंकि मोललियेगयेहो सो तुमलोग अपने तन से और अपने
मन से जो ईश्वर के हैं ईश्वर की स्तुति करो।

७ सातवां पर्व्व

१ अब उन बस्तुन के बिषय में जो तुम्हों ने मुझे लिखाहै भला यह
२ है कि पुरुष स्त्री को नछूवे। तिसपरभी व्यभीचार से बचनेको
हरएक पुरुष अपनी पत्नी और हरएक स्त्री अपना पति
३ रक्खे। पति अपनी पत्नी पर ऐसा शील रक्खे जैसा योग्य है
४ और ऐसही पत्नी अपने पति पर भी। पत्नी का शरीर
अपने बश में नहीं परंतु पति के इसी रीति से पति का शरीर

५ भी अपने बश में नहीं परंतु पत्नी के। तुम एक दूसरे से अलग नरहो पर थोड़े दिन के लिये आपुस की प्रसन्नता से जिसतें तुमलोग ब्रत और प्रार्थना करने के कारण अवकाश पाओ और फेर एकट्ठे होओ नहो कि शयतान तुम्हारे इंद्रियन
६ के अबश के कारण तुम्हारी परीक्षा करे। परंतु मैं छुट्टी की
७ रीति पर यह कहताहों आज्ञा नहीं करता। क्योंकि मैं चाहताहों कि जैसा मैं हों वैसाही सब होते पर सभोंने अपना अपना दान ईश्वर से पाया एक ने इस रीति से दूसरे
८ ने उस रीति से। सो मैं अनब्याहे पुरुषों और बिधवों से
९ कहताहों कि भला है कि वे ऐसे रहें जैसा मैं हों। परंतु जो सहि नसकें तो बिवाह करें क्योंकि बिवाह करना जलने
१० से अतिभला है। परंतु मैं उनको जिनका बिवाह हुआहै
११ आज्ञा करताहों मैं नहीं परंतु प्रभु कि पत्नी पति को नछोड़े। और जो छोड़े तो वुह अनब्याही रहे अथवा पति से फेर
१२ मिलाप करे और पति पत्नी को त्याग नकरे। सो जो कुछ रहिगयाहै प्रभु नहीं मैं कहताहों कि जो किसी भाई की पत्नी अबिश्वासिनी होय और उसके संग रहने पर प्रसन्न
१३ होय तो वुह उसे नछोड़े। और जो किसी स्त्री का पति अबिश्वासी होय और वुह उसके संग रहने को चाहे तो वुह
१४ उसको नछोड़े। क्योंकि अबिश्वासी पति पत्नी के कारण से पवित्र है और अबिश्वासिनी पत्नी पति के कारण से पवित्र है नहीं तो तुम्हारे संतान अपवित्र होते परंतु अब पवित्र हैं।
१५ पर जो अबिश्वासी आपको अलग करे सो करे हमारे भाई अथवा बहिन ऐसी बातों के बंधन में नहीं और ईश्वर ने
१६ हमों को मिलाप में बुलाया है। हे पत्नी क्या जाने तू पति को
१७ बचावे अथवा हे पुरुष क्या जाने तू पत्नी को बचावे। परंतु जैसा ईश्वर ने हरएक को भाग दिया और जिस प्रकार से प्रभु ने हरएक को बुलाया वुह वैसाही रहे और मैं सारी

१८ मंडलियों में ऐसाही ठहरावताहों। जो कोई ख़तनः किया गया होकर बुलायागया होय तो वुह अख़तनः नहोवे जो कोई अख़तनहो में बुलायागया होय तो ख़तनः नकरावे।
१९ ख़तनः कुछ नहीं और अख़तनः भी कुछ नहीं परंतु ईश्वर की
२० आज्ञा पर चलनाहै। जो जिस उद्यम में बुलायागया वुह
२१ उसी में रहे। जो तू दासता में बुलायागया होय तू चिंता नकर परंतु जो तू छुटकारा पासके तो पहिले ग्रहण कर।
२२ क्योंकि जिस दास को प्रभु ने बुलाया वुह ईश्वर का निर्बंध पुरुष है और इसी रीति से जो निर्बंध में बुलायागया सो
२३ मसीह का दास है। तुमलोग दाम से मोल लियेगयेहो सो
२४ मनुष्यों के दास नहोओ। हे भाइयो जो जिस दशा में
२५ बुलायागया सो उसी दशा में ईश्वर के संग रहे। पर कुंआरियों के बिषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझपास नहीं परंतु जैसा मैं प्रभु से दया पाके धर्मी बनाहों वैसाही संमत
२६ देताहों। सो मैं समुझताहों कि बर्त्तमान कष्ट के लिये यह भलाहै कि मनुष्य के लिये अर्थात अच्छा है कि जैसा है वैसा
२७ रहे। जो तू पत्नी के बंद में है तो छुटकारा मत ढूंढ़ जो तू
२८ पत्नी से छुटा है पत्नी को मत ढूंढ़। परंतु जो तू बिवाह करे तो पाप नहीं करता और जो कुंआरी ब्याही जावे तो वुह पाप नहीं करती तथापि ऐसे लोग शरीर में दुख पावेंगे
२९ पर मैं तुम्हों पर क्षमा करता हों। परंतु हे भाइयो मैं तुम्हों से यह कहताहों कि समय सकेत है इस कारण चहिये कि
३० जो पत्नी युक्त हैं ऐसे होवें जैसा कि उनकी नहींहैं। और रोदनकरनिहार ऐसे जैसा कि नहीं रोते और आनंद करनिहार ऐसे जैसा कि आनंद नहीं करते और कीननिहार
३१ ऐसे जैसा कि अधिकारी नहीं। और जगत के ब्यवहारी ऐसे होवें कि उनका काम अधिकाई को नपहुंचे क्योंकि जगत
३२ का ब्यावहार बीता चालाजाताहै। सो मैं चाहताहों कि

तुमलोग निश्चिंत रहो वुह जो अनब्याहा है प्रभु के बस्तुन के लिये चिंता करताहै कि वुह क्योंकर प्रभु को प्रसन्न करे।
३३ परंतु वुह जो ब्याहा है सो जगत के लिये चिंता करताहै कि
३४ वुह क्योंकर पत्नी को प्रसन्न करे। पत्नी और कुंआरी में भेद है कि अनब्याही प्रभु के लिये चिंता करतीहै कि वुह देह और आत्मा में पवित्र होय परंतु वुह जो ब्याही है जगत के लिये चिंता करतीहै कि किस रीति से पति को प्रसन्न करे।
३५ पर मैं तुम्हारेही लाभ के लिये यह कहताहों तुम्हों पर जाल फेकने को नहीं परंतु शोभा के लिये जिसतें तुमलोग प्रभु की
३६ सेवा पर सुचित से स्थिर रहो। परंतु जो कोई समुझे कि अपनी कुंआरी के बिषय में अयोग्य ब्यवहार करताहों जो वुह तरुणाई से बीतजाय और ऐसाही अवश्य जाने तो जो
३७ चाहे सो करे वुह पाप नहीं करता बिवाह करे। पर जो कोई अवश्य नसमुझके अपने मन में दृढ रहे और अपनीही इच्छा पर सामर्थ्य रखताहो और अपने मनमें ठाने होय कि
३८ मैं अपनी कुंआरी को रखछोडोंगा वुह भला करताहै। सो वुह जो ब्याह देताहै भला करताहै परंतु जो ब्याह नहीं देता
३९ सो और भी भला करताहै। पत्नी ब्यवस्था से बंधीहै जबलों उसका पति जीवताहै परंतु जो उसका पति मरजाय तो
४० वुह छूटगई जिस्से चाहे बिवाह करे केवल प्रभु में। परंतु जो वुह ऐसीही रहे तो वुह मेरे बिचार में अतिसुखी है और मैं जानताहों कि ईश्वर का आत्मा मुझ में है।

८ आठवां पर्व्व

१ अब उन बस्तुन के बिषय में जो मूर्त्तिन को बलिदान किईजाती हैं हम जानतेहैं कि हमलोग ज्ञान रखतेहैं ज्ञान फुलावताहै
२ परंतु प्रेम सुधारताहै। और जो कोई जाने कि मैं कुछ जानताहों तो वुह अबलों जैसा चाहिये कि जाने नहीं जानता।

३ परंतु जो कोई मनुष्य ईश्वर को प्यार करे वुह उस्से
४ जानागयाहै। सो उन बस्तुन के भोजन करने के बिषय में जो मूर्त्तिन को बलि किईजातीहैं हम जानतेहैं कि मूर्त्ति जगत में
५ कुछ नहीं और कोई ईश्वर नहीं परंतु एक। क्योंकि यद्यपि स्वर्ग में अथवा पृथिवी में बक्रतसे ईश्वर कहावते हैं जैसा कि
६ बक्रतेरे ईश्वर और बक्रतेरे प्रभु हैं। तथापि हमारा एक ईश्वर है जो पिता है जिस्से समस्त बस्तें ऊईहैं और हम उसके लिये हैं और एक प्रभु ईसा मसीह जिस्से समस्त बस्तें
७ हैं और हम उस्से हैं। परंतु सब में यह ज्ञान नहीं क्योंकि कितने मूर्ति पर निश्चय करके मूर्तिन पर की भेंट यह समुझ के कि मूर्ति की है आजलों खातेहैं और उनके मन जो निर्बल
८ हैं अशुद्ध होतेहैं। परंतु भोजन हमें ईश्वर के आगे नहीं सराहता क्योंकि जो खावें तो हमें बढ़ती नहीं और जो
९ नखावें तो कुछ घटी नहीं। परंतु सोचित रहो नहोवे कि जो तुम्हारे लिये योग्य है कहीं दुर्बलों के लिये ठोकर खिलावने
१० का कारण होवे। क्योंकि जो कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मंदिर में बैठाऊआ देखे क्या उसका मन जो दुर्बल है मूर्तिन
११ की भेंट खाने पर निर्भय नहोगा। और तेरा वुह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह मूआ तेरे ज्ञान से नष्ट होगा। परंतु जब तुमलोग भाइयों का यों अपराध करतेहो और उनके निर्बल मन को घायल करतेहो तो तुम मसीह का अपराध
१३ करतेहो। इस लिये यदि भोजन मेरे भाई के ठोकर खाने का कारण होवे मैं तो कधी मांस नखाऊंगा नहोवे कि मैं अपने भाई के ठोकर का कारण होओं।

९ नवां पर्व्व

१ क्या मैं प्रेरित नहीं और निर्बंध नहीं हों क्या मैं ने हमारे प्रभु ईसा मसीह को नहीं देखा तुमलोग प्रभु में मेरे कार्य

२ नहीं हो। यद्यपि मैं औरों का प्रेरित नहीं तथापि तुम्हारा
तो निःसंदेह हों क्योंकि तुमसभों का प्रभु में होना मेरे
३ प्रेरितत्व पर छाप है। जो मुझे परखतेहैं उनके लिये मेरा
४ यह उत्तर है। क्या खाने पीने को हमारा बश नहीं।
५ क्या हमारे बश में नहीं कि किसी बहिन को पत्नी कर के अपने
संग लियेफिरें जैसा आन आन प्रेरित और प्रभु के भाई
६ और काफा करतेहैं। अथवा केवल मेरा और बरनबास
७ का बश नहीं कि परिश्रम नकरें। कौन अपनी उठान करके
युद्ध करताहै कौन दाख की बारी लगावताहै और उसका
फल नहीं खाता अथवा कौन झुंड को चरावताहै जो उस
८ झुंड का कुछ दूध नहीं पीता। क्या मैं मनुष्य की नाईं ये बातें
९ बोलताहों और व्यवस्था भी यों नहीं करती। क्योंकि मूसा
की व्यवस्था में लिखाहै कि तू बैलका जो दावताहै मुंह मत
१० बांध क्या ईश्वर को बैल की चिंता है। अथवा बिशेष करके
वुह हमारे कारण कहताहै हां निःसंदेह हमारे कारण
लिखाहै कि जोतनिहार आशा से जोते और वुह जो आशा
११ से दावताहै अपनी आशा का भाग पावे। जो हम ने तुम्हारे
लिये आत्मिक बस्तें बोई हैं क्या बड़ी बात है कि हम तुम्हारी
१२ शारीरिक बस्तें काटें। जो और लोगों का सामर्थ्य तुम्हों पर
होय तो कितना अधिक हमारा परंतु हम ने इस सामर्थ्य को
प्रगट नकिया पर सारी बातें सहतेहैं नहोवे कि हम मसीह
१३ के मंगलसमाचार को रोकें। क्या तुमलोग नहीं जानते कि
जो पवित्र बस्तुन की सेवा करतेहैं सो मंदिर मेंसे खातेहैं और
१४ जो बेदी के सेवक हैं सो बेदी में से भाग लेतेहैं। और प्रभु ने
भी यों ठहरायाहै कि जो मंगलसमाचार का उपदेश करतेहैं
१५ मंगलसमाचार से उपजीवन पावें। पर मैं आप इन बस्तुन मेंसे
किसी को व्यवहार में नलाया और नइस इच्छा से लिखा कि
मेरे लिये यों होय क्योंकि मुझे मरना अति भला है कि कोई

१६ मेरी बड़ाई व्यर्थ करे। क्योंकि जो मैं केवल मंगलसमाचार का उपदेश करों तो मेरी कुछ बड़ाई नहीं क्योंकि मुझे अवश्य आनपड़ाहै और मुझ पर संताप है जो मैं मंगल
१७ समाचार का उपदेश नकरों। जो मैं यह प्रसन्नता से करों तो फल पाओंगा परंतु जो अप्रसन्नता से करों तो भी
१८ भंडारपन मुझे सौंपागयाहै। तो मेरा फल क्या है निश्चय यह कि जब मैं मसीह के मंगलसमाचार का उपदेश करों मैं मंगलसमाचार को बिन दाम ठहराऊं कि मैं अपने सामर्थ्य
१९ को जो मंगलसमाचार में है अनरीति से नकरों। क्योंकि सबसे निर्बंध होके मैं ने अपने को सब का सेवक किया
२० जिसतें मैं अधिक को लाभ में पाओं। और मैं यहूदियों में यहूदी की नाईं ऊआ कि मैं यहूदियों को प्राप्त करों उनमें जो व्यवस्था के बश में थे जैसा व्यवस्था के बश कि मैं व्यवस्थाबशी
२१ लोगों को प्राप्त करों। और व्यवस्था हीनों में मैं व्यवस्था हीन की नाईं ऊआ तथापि मैं ईश्वर के समीप व्यवस्था हीन नहीं ऊआ परंतु मसीह के लिये व्यवस्था के बश में था कि मैं व्यवस्था
२२ हीनों को प्राप्त करों। निर्बलों में निर्बल की नाईं ऊआ जिसतें मैं निर्बलों को प्राप्त करों मैं समस्त मनुष्यन के कारण सब
२३ कुछ बना कि मैं किसी प्रकार से कितनों को बचाओं। और मैं यह मंगलसमाचार के कारण करताहों जिसतें मैं उसमें
२४ भागी होजाउं। तुमलोग नहीं जानते कि दौड़ारी में जो दौड़तेहैं सब तो दौड़तेहैं परंतु दावं एकही पाताहै ऐसा
२५ दौड़ो कि तुमलोग प्राप्त करो। और हरएक जो इसमें हिस्सा करताहै सब बातों में मध्यम है वे तो नाशमान मुकुट
२६ के लिये करतेहैं परंतु हम अबिनाशी के लिये। सो मैं दौड़ताहों संदेह करनिहारों के समान नहीं मैं लड़ताहों
२७ नउसके समान जो पवनको मारताहै। परंतु मैं अपने शरीर को पीसे डालताहों और आधीन करताहों नहोवे कि औरों को उपदेश करके मैं आप त्यक्त होओं

१० दसवां पर्ब्ब

१ सो हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुमलोग इस्से अज्ञान रहो कि हमारे समस्त पितर मेघ के नीचे थे और समुद्र में
२ से होके सब निकलगये। और सभों ने उस मेघ और समुद्र
३ से मूसाई स्नान पाया। और सभों नें एकही प्रकार का
४ आत्मिक भोजन खाया। और सभों ने एकही प्रकार का आत्मिक पान पीया क्योंकि उन्हों ने उस आत्मिक पहाड़ी से जो उनके पीछे पीछे चलीगई पीया और वुह पहाड़ी
५ मसीह था। तथापि उनमें से ईश्वर बऊतों से प्रसन्न नथा
६ इसलिये वे बन में मारेपड़े। सो ये बातें हमारे चेतावने के लिये थीं कि हम बुराई की लालसा नकरें जैसा उन्हों न
७ लालसा किई। और तुमलोग उनमें से कितनों के समान देवपूजक मत होओ जैसा लिखाहै कि लोग खाने पीने बैठे
८ और लीला करने उठे। और हम व्यभिचार नकरें जैसा कि उनमें से कितनों ने किया और दिन भर में तेईस सहस्र
९ मारेपड़े। और हम मसीह की परीक्षा नकरें जैसा कि उनमें
१० से कितनों ने भी किई और सांपों से नष्ट ऊए। और मत कुड़कुड़ओ जैसा उनमें से कितने कुड़कुड़ाये और नाशक से
११ नष्ट ऊए। ये सब जो उन पर पड़े चेतावने के लिये ऊए और ये हमारे सिखावने के लिये लिखेगये जिन पर पिछला समय
१२ आनपड़ा। सो जो कोई अपने को दृढ़ बूझताहै सो सैंचेत
१३ रहे ऐसा नहो कि गिरपड़े। तुमलोग किसी रीति की परीक्षा में नहीं पड़ेहो परंतु केवल वैसी जैसी मनुष्यन से किई जातीहै और ईश्वर धर्मी है जो तुम्हीं को तुम्हारे बूता से अधिक परिक्षा में पड़ने नदेगा परंतु परीक्षा के संग निकलने का भी
१४ पंथ ठहरायेगा कि तुमलोग सहिसको। इस कारण हे मेरे
१५ प्रिय तुमलोग देवपूजा से भागो। मैं जैसे ज्ञानमानों से
१६ बोलताहों जो कि मैं कहताहों बिचार करो। क्या अशीष का

कटोरा जिसे हम आशीष देतेहैं मसीह के लोहू का भागी होना नहीं रोटी जो हम तोड़तेहैं मसीह के अंग का भागी
१७ होना नहीं। क्योंकि हम बहुत होके एक रोटी और एक
१८ देह हैं क्योंकि हमलोग एकही रोटी के भागी हैं। जो शरीर को रीति से ईसराईल हैं उनपर दृष्टि करो क्या जो
१९ बलिदान से खाते हैं वे बेदी से भागी नहीं। सो मैं क्या कहों
२० कि मूर्ति अथवा मूर्तिन का बलिदान कुछ बस्तु हैं। परंतु अन्यदेशी जो बलिदान करतेहैं देवों के कारण करतेहैं ईश्वर के लिये नहीं और मैं नहीं चाहता कि तुमलोग देवों के संग
२१ भागी होओ। तुमलोग प्रभु का और देवों का कटोरा नहीं पीसक्ते और प्रभु के और देवों के मंच से भागी नहीं होसक्ते
२२ क्या हम प्रभु को डाह दिलावतेहैं क्या हम उस्से अधिक
२३ बलवान हैं। सब बस्तें मेरे लिये कर्त्तव्य हैं परंतु सब बस्तें योग्य नहीं सब बस्तें मेरे लिये कर्त्तव्य हैं परंतु समस्त बस्तें
२४ सुधारती नहीं। कोई अपना स्वार्थ नढूंढ़े परंतु हरएक
२५ दूसरे की भलाई चाहे। सो जो कुछ कसाई की हाट में बिकताहै उसे खाओ और बिवेक के लिये कुछ पूछो मत।
२७ क्योंकि पृथिवी और उसकी भरपूरी प्रभु की है। और जो कोई अबिश्वासीयों में से तुम्हारा नेवता करे और जाने को तुम्हारा मन होय तो जो कुछ तुम्हारे आगे धराजाय उसे
२८ खाओ और बिवेक के लिये कुछ पूछो मत। परंतु जो कोई तुम्हें कहे कि यह मूर्त्तिन को बलिदान कियागयाहै तो उसके लिये जिसने कहाहै और बिवेक के लिये नखाओ क्योंकि
२९ पृथिवी और उसकी भरपूरी प्रभु की है। बिवेक मैं कहताहों तेराही नहीं परंतु दूसरे का क्योंकि मेरा निर्बंध होना किस
३० लिये दूसरेके बिवेक से बिचार कियाजाय। क्योंकि अनुग्रह से जो मैं भागी हुआ तो जिस बस्तुके लिये मैं धन्य मानताहों
३१ उसके कारण किसलिये मेरी निंदा होतीहै। इसलिये खाओ

अथवा पीओ अथवा जोकुछ करो सबकुछ ईश्वर के माहात्म्य
३२ के लिये करो। न यहूदियों को न यूनानियों को न ईश्वर की
३३ मंडली को ठोकर खिलाओ। जैसा कि मैं सब बातों में सब
को रिझावताहों और अपना लाभ नहीं ढूंढ़ता परंतु
बहुतेरों का जिसतें वे उद्धार पावें।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ तुमलोग मेरा पीछा करो जैसा मैं भी मसीह का करताहों।
२ और हे भाइयो मैं तुम्हारी बड़ाई करताहों कि तुमलोग
समस्त बातों में मुझे स्मरण करतेहो और उन बस्तुन को
३ ऐसा धारण करतेहो जैसा मैंने तुम्हें सौंपाहै। परंतु मैं
चाहताहों कि तुमलोग जानो कि हरएक पुरुष का सिर
मसीह है और स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर
४ ईश्वर। हरएक पुरुष जो प्रार्थना करते अथवा उपदेश करते
अपने सिर को ढांपताहै अपने सिर का अपमान करताहै।
५ और वुह स्त्री जो नंगेसिर प्रार्थना करती अथवा उपदेश
करतीहै अपने सिर का अपमान करतीहै क्योंकि वुह ऐसी
६ है जैसा कि वुह मुंड़ाईगई। सो यदि स्त्री ओढ़नी नओढ़े तो
वुह मुंड़ाई भी जाय और जो स्त्री का चोटी कटनेसे अथवा
७ सिर मुंड़ाने से अपमान होताहै तो ओढ़नी ओढ़े। क्योंकि
पुरुष को तो नचाहिये कि अपना सिर ढांपे क्योंकि वुह ईश्वर
की मूर्ति और उसकी शोभा है परंतु स्त्री पुरुष की शोभा।
८ क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं परंतु स्त्री पुरुष से है। और पुरुष
१० स्त्री के लिये नहीं सिरजागया परंतु स्त्री पुरुष के लिये। सो
दूतों के कारण स्त्री को चाहिये कि अपने सिर को बश में
११ रक्खे। तिसपरभी प्रभु में न पुरुष स्त्री से अलग न स्त्री पुरुष
१२ से अलग है। क्योंकि जैसा स्त्री पुरुष से है वैसाही पुरुष भी
१३ स्त्री से है परंतु सबकुछ ईश्वर से है। तुमलोग आपही

बिचार करो क्या उचितहै कि स्त्री बिना ओढ़नी ओढ़के ईश्वर
१४ की प्रार्थना करे। क्या प्रकृति तुमलोगों को नहीं सिखावती
१५ कि जो पुरुष लंबा बाल रक्खे तो उसके लिये लज्जाहै। परंतु
जो स्त्री का लंबा बाल होय वुह उसकी शोभा है क्योंकि
१६ उसका बाल छायने के कारण उसे दियागयाहै। परंतु यदि
कोई भगड़ालू दिखाई देवे तो जान रक्खे कि नहमारा
१७ नईश्वर की मंडलियों का कोई ऐसा ब्यवहार है। और मैं
तुम्हें ये कहताहों और तुम्हारी बड़ाई नहीं करता कि
तुमलोग एकळे होके आतेहो कुछ उसमें तुम्हारी भलाई
१८ नहीं परंतु अधिक बुराई है। क्योंकि मैं सुनताहों कि
पहिले जब तुमलोग मंडली में एकळे होके आतेहो तो तुम्हों
१९ में बिभाग होतेहैं और मैं उसे कुछ बिश्वास करताहों। क्योंकि
अवश्य है कि तुम्हों में बिगाड़ भी होवे कि वे जो ग्रहण
२० कियेगयेहैं प्रगट होजायं। इसलिये जब तुमलोग एकही
स्थान में एकळे होके आतेहो यह तो प्रभु की बियारी खाने
२१ के लिये नहीं है। क्योंकि हरएक जन पहिले अपनी बियारी
खालेताहै और एक भूखा और दूसरा मतवाला होताहै।
२२ क्या तुमलोग खाने पीने के लिये घर नहीं रखते अथवा ईश्वर
की मंडली की अवज्ञा करतेहो और कंगालों को लज्जित
करतेहो अब मैं तुम्हों से क्या कहों क्या मैं तुम्हारी बड़ाई करों
२३ मैं इस बात में तुम्हारी बड़ाई नहीं करने का। क्योंकि मैं ने
प्रभु से पाया और तुम्हें भी सौंपा कि प्रभु ईसा ने जिस रात को
२४ पकड़वायागया रोटी लिई। और धन्य मानके तोड़ी और
कहा कि लेओ खाओ यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये
तोड़ाजाताहै तुमलोग मेरे स्मरण के लिये यह कियाकरो।
२५ और उसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोराभी लिया
और कहा कि यह कटोरा मेरे लोहू में नया नियम है जब
२६ जब तुमलोग पीओ मेरे स्मरण के लिये यों करो। क्योंकि

जब जब तुमलोग यह रोटी खाओ और यह कटोरा पीओ तब तब प्रभु के म्टत्यु को प्रगट करतेहो जबलों वुह नआलेय।
२७ इस कारण जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खावे अथवा प्रभु का कटोरा पीवे वुह प्रभु के देह और लोहू का अपराधी
२८ होगा। सो मनुष्य पहिले अपने को जांचे और इसी रीति से
२९ रोटी खावे और कटोरा पीवे। क्योंकि जो अनुचित रीति से खाता और पीता है सो प्रभु के देह का सोच नकरके अपना
३० दंड खाता और पीता है। इसी कारण से तुम्हों में बऊतेरे
३१ निर्बल और रोगी हैं और कितने सोगयेहैं। क्योंकि जो हमलोग अपने को बिचारते तो हमारा बिचार नकियाजाता।
३२ परंतु जब हमलोगों का बिचार कियाजाताहै तब प्रभु से ताड़ना पावतेहैं जिसतें जगत के संग हमपर दंड की आज्ञा
३३ नकिईजाय। सो हे मेरे भाइयो जब तुमलोग खानेको एकळे
३४ आओ तो एक दूसरे के लिये ठहरो। और जो किसी को भूख लगे तो वुह अपने घर में खावे जिसतें तुमलोग दंड पावने को एकळे नआओ और जो जो बातें रहिगई हैं मैं आके सुधारोंगा।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुमलोग आत्मिक दान के
२ बिषय में अज्ञान रहो। तुमलोग जानतेहो कि तुमसब अन्यदेशी थे और गूंगी मूर्तिन के पीछे जैसे चलायेगये वैसे
३ चलते थे। सो मैं तुम्हें जनावताहों कि कोई ईश्वर के आत्मा के ओर से कहतेऊए ईसा को स्रापित नहीं कहता और बिना धर्मात्मा के ओर से कोई ईसा को प्रभु नहीं कहिसक्ता।
४ अब नाना प्रकार के दान हैं परंतु आत्मा एकही। और
६ सेवकाई के अनेक प्रकार हैं परंतु प्रभु एकही। और नाना प्रकार की क्रिया हैं परंतु ईश्वर एकही जो सब में सब कुछ

७ करताहै। परंतु आत्मा का प्रकाश हरएक के लाभ के लिये
८ दियाजाताहै। क्योंकि एक को आत्मा से ज्ञान की बात
दिईगईहै और दूसरे को उसी आत्मा से विद्या की बात।
१० और को बिश्वास दूसरे को चंगाकरने का सामर्थ्य। और को
आश्चर्य कर्म दूसरे को आगमकहना और को आत्मा का
पहिचान्ना दूसरे को भांतिभांति की भाषा और को भाषाओं
११ का अर्थ करना। परंतु वुह एकही आत्मा इन सभों का
१२ कर्त्ता है जैसा चाहताहै हरएक को बांटाकरताहै। क्योंकि
जैसे देह एक होके अंग बहुत रखताहै और उसी देह में
१३ इतने अंग मिलके एक देह हैं मसीह भी ऐसा है। क्योंकि
हमों ने क्या यहूदी क्या यूनानि क्या दास क्या निर्बंध एकही
आत्मा से एक देह में स्नान पाया और एक आत्मा में हमसब
१५ पिलायेगये। देह एक अंग नहीं परंतु बहुत हैं। यदि पावं
कहे कि मैं हाथ नहीं तो क्या वुह इसकारण से देह का नहीं।
१६ और यदि कान कहे कि मैं आंख नहीं इस कारण मैं देह का
१७ नहीं तो क्या वुह देह का नहींहै। जो सारा देह आंख
होता तो श्रवण कहां होता और यदि समस्त देह श्रवण
१८ होता तो सूंघना कहां होता। परंतु अब ईश्वर ने हरएक
१९ अंग को देह में अपनी इच्छा के समान रक्खा। पर जो सब
२० एकही अंग होते तो देह कहां होता। परंतु अब बहुतसे
२१ अंग हैं तथापि देह एकही है। और आंख हाथ से नहीं
कहिसक्ती कि मैं तेरा प्रयोजन नहीं रखती और सिर भी
पावं को नहीं कहिसक्ता कि मैं तुम्हारा प्रयोजन नहीं रखता।
२२ परंतु देह में वे अंग जो दूर्बल समुझपड़तेहैं सबसे अधिक
२३ अवश्य हैं। और हम जिन अंगों को औरों के तुल्य अप्रतिष्ठित
जानतेहैं उन्हीं को अधिक प्रतिष्ठा देतेहैं और हमारे बेडौल
२४ अधिक सुडौल होजातेहैं। परंतु हमारे सुडौल अंगों को
प्रयोजन नहीं पर ईश्वर ने हीन अंगों को बहुत अधिक

२५ प्रतिष्ठा देके देह को मिलाया। कि बिभाग देह में नहोवे परंतु कि समस्त अंग एक दूसरे के लिये समान चिंता करें।
२६ और जो एक अंग पीड़ा पावे तो समस्त अंग उसके संग पीड़ा पावतेहैं अथवा जो एक अंग प्रतिष्ठा पावे तो समस्त अंग
२७ उसके संग आनंद करतेहैं। सो तुमलोग मसीह के देह हो
२८ और भिन्न भिन्न अंगहो। और मंडली में ईश्वर ने कितनों को ठहराया पहिले प्रेरितों को और दूसरे आगमज्ञानियों को और तीसरे उपदेशकों को उसके पीछे आश्चर्य कर्म तब चंगा करने के सामर्थ्य फेर उपकार और प्रधानता और
२९ नाना प्रकार की भाषा दिईं। क्या सकल प्रेरित हैं सकल आगमज्ञानी हैं सकल उपदेशक हैं सकल आश्चर्यकर्म
३० करनिहार हैं। क्या सब को चंगा करने का सामर्थ्य है क्या सबकोई भांति भांति की भाषा बोलतेहैं क्या सब अर्थ
३१ करतेहैं। अच्छे अच्छे दानों की लालसा करो मैं एक मार्ग जो उन्हों से कितना अच्छा है तुम्हें बतावताहों।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

१ जो मैं मनुष्य अथवा दूतों की भाषा बोलों परंतु प्रेम नरक्खों
२ तो मैं झंझंनाता पीतल अथवा ठंठनाता झांझ हों। और जो मैं आगम की बात कहिसकों और गुप्त की सारी बातें और सारी बिद्या को जानों और मेरा बिश्वास पूरा होय इहांलों कि मैं पहाड़ों को चलाओं परंतु प्रेम नरक्खों तो मैं
३ कुछ नहींहों। और जो मैं अपनी समस्त संपत्ति भीख में देडालों अथवा जो मैं अपना देह देउं कि जलायाजाय परंतु
४ प्रेम नरक्खों तो मुझे कुछ लाभ नहीं। प्रेम संतोष करताहै दयालहै प्रेम डाह नहीं करता प्रेम अपनी गालफटाकी
५ नहीं करता अभिमानी नहीं। कुचाल नहीं चलता अपना स्वार्थ नहीं ढूंढ़ता जलजलाहट नहीं बुरी चिंता नहीं

६ करता। कुकर्म से प्रसन्न नहीं परंतु सच्चाई से प्रसन्न है।
७ सब बातों को ढांपताहै सब कुछ प्रतीति करताहै समस्त
८ वस्तुन की आशा रखताहै सब का संतोष करताहै। प्रेम
कभीं अलग नहीं होता परंतु जो आगम की बातें हैं सो
नाशहोजायंगी जो भाषा हैं सो बंद हो जायंगी जो बिद्या है
९ सो लोप होजायगी। क्योंकि हमारा ज्ञान अल्प है और
१० हमारा आगम कहना अल्प है। परंतु जब वुह जो संपूर्ण है
११ आवेगा तो वुह जो अल्प है नष्ट होजायगा। जब मैं बालक
था तब मेरी बोली बालक की नाईं थी और मेरा स्वभाव
बालक की नाईं था और मेरी समुझ बालक की नाईं थी
परंतु जब मैं तरुण हुआ तब मैंने बालकपन से हाथ उठाया।
१२ अब हमलोग दर्पण में धुंधलासा देखतेहैं परंतु उस समय
आमनेसाम्ने देखेंगे अब मेरी बिद्या अल्प है परंतु तब मैं ऐसा
१३ जानेंगा जैसा कि मैं भी जानगयाहों। सो अब ये तीन धरी
हैं बिश्वास और आशा और प्रेम परंतु इन में प्रेम सब से
बड़ा है।

१४ चौदहवां पर्व्व

१ प्रेम का पीछा करो और आत्मिक दान की लालसा रक्खो
२ निजकरके आगम कहने की। क्योंकि जो कोई भाषा बोलताहै
सो मनुष्यन से नहीं परंतु ईश्वर से बोलताहै क्योंकि कोई
नहीं समुझता यद्यपि वुह आत्मा में गुप्त भेद बोलताहै।
३ और जो कोई आगम की बातें कहताहै सो बातों से मनुष्यन
४ को सुधारता और बोध करता और संतोष देताहै। और
जो कोई किसी भाषा में बार्त्ता करताहै सो अपने को
सुधारताहै परंतु जो कोई आगम की बातें कहताहै मंडली
५ को सुधारताहै। मैं चाहताहों कि तुमलोग सबकेसब
बोलियां बोलो परंतु निजकरके कि आगम की बातें कहो

क्योंकि जो बोलियां बोलताहै यदि वुह मंडली के सुधारने के लिये अर्थ नकरे तो वुह जो आगम की बातें कहताहै उस्से
६ बड़ाहै। अब हे भाइयो जों मैं तुम्हारे पास बोलियां बोलतेऊए आवता और तुम्हों से खोलके अथवा समुझाके अथवा आगम की बातें कहिके अथवा उपदेश से नबोलता
७ तो मुस्से तुम्हें क्या लाभ होता। सो ऐसा निर्जीव बस्तें जिनसे शब्द निकलतेहैं जैसे तुरही अथवा बीन जों उनके शब्द बेवरा के संग नहोवें तो क्योंकर जानाजायगा कि क्या फूंका अथवा
८ क्या बजायाजाताहै। और जों नरसिंगा अनर्थ शब्द करे तो
९ युद्ध के लिये कौन लैसहोगा। सो वैसाही जों तुमलोग भी जिह्वा से ऐसे बचन जो सहज से सुमुझेजायं उच्चारण नकरो तो क्योंकर जानाजायगा कि क्या कहागया क्योंकि तुमलोग
१० बयार से बात्ता करोगे। जगत में नाना प्रकार की भाषा हैं
११ और कोई उनमें से अर्थ हीन नहीं। तथापि जों वुह भाषा मुझे नआतीहो तो बक्ता के आगे मैं मूढ़ रहोंगा और बक्ता
१२ मेरे आगे मूढ़। सो तुमलोग भी जैसा कि आत्मिक दान के अभिलाषी हो तो मंडली के सुधारने के लिये ढूंढो कि तुम्हें
१३ अधिक बढ़ती होय। इसकारण जो जिस भाषा में बोलताहै
१४ सो प्रार्थना करे कि अर्थ भी करसके। क्योंकि जों मैं किसी अनजान भाषा में प्रार्थना करों तो मेरा आत्मा प्रार्थना
१५ करताहै परंतु मेरी बुद्धि निष्फल है। सो क्या है आत्मा से प्रार्थना करोंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करोंगा और
१६ आत्मा से भजन गाओंगा और बुद्धि से भी गाओंगा। और जों तू आत्मा से आशीष कहे तो वुह जो अल्प पद रखताहै तेरे धन्यबाद में आमीन किसरीति से कहेगा क्योंकि जो
१७ कुछ तू कहताहै वुह नहीं समुझता। क्योंकि तू अच्छी रीति से धन्य कहताहै ठीक परंतु दूसरा नहीं सुधाराजाता।
१८ मैं अपने ईश्वर का धन्य मानताहों कि मैं तुमसभों

१९ से अधिक भाषा बोलताहों। परंतु मैं मंडली में पांच बातें अपनी बुद्धि से बोलने को अधिक चाहताहों जिसतें औरों को सिखाओं कि दस सहस्र बातें किसी अनजान भाषा में
२० बोलों। हे भाइयो बुद्धि में बालक नबनो परंतु बुराई में
२१ बालक बनो पर बुद्धि में तरुण होओ। व्यवस्था में लिखाहै कि मैं आन बोली और आन होंठों से इन लोगों से बोलोंगा
२२ तथापि प्रभु कहताहै कि वे मेरी नसुनेंगे। सो बोलियां बिश्वासियों के लिये नहीं परंतु अबिश्वासियों के लिये चिन्ह हैं परंतु आगम कहना अबिश्वासियों के लिये नहीं परंतु
२३ बिश्वासियों के लिये है। सो जो समस्त मंडली एकळे होके एक स्थान में आवें और सबकेसब भाषा बोलें और अपढ़ा अथवा अबिश्वासी उनमें आवें तो क्या वे नकहेंगे कि तुमलोग
२४ बौड़हे हो। परंतु जो सब उपदेश करें और कोई अबिश्वासी अथवा अपढ़ा भीतर आजाय तो वुह हरएक से प्रबोध कियाजायगा और वुह हरएक से बिचार कियाजायगा।
२५ और यों उसके मन के भेद प्रगट होंगे तब वुह औंधा गिरके ईश्वर को दंडवत करेगा और कहेगा कि ईश्वर सचमुच
२६ तुम्हारे मध्य में है। सो हे भाइयो क्या है कि जब तुमलोग एकळा आवतेहो हरएक तुम्हों में भजन अथवा कोई उपदेश अथवा कोई भाषा अथवा प्रकाशित अथवा कोई अर्थ रखताहै
२७ सो चाहिये कि हरएक बस्तु सुधारने के लिये होवे। जो कोई किसी भाषा में बोले तो दो और अत्यंत तीन एक एक
२८ करके बोले और एक जन अर्थ करे। पर यदि कोई अर्थ करनिहार नहोवे तो वुह मंडली में चुपका रहे और अपने
२९ और ईश्वर के संग बोले। सो दो अथवा तीन आगमज्ञानी
३० बोलें अरु और लोग बिचार करें। परंतु यदि दूसरे पर जो
३१ बैठा है कुछ खुलजावे तो पहिला चुपकारहे। क्योंकि तुम सबकेसब एक एक करके आगम की बात कहिसको कि सब

३२ सीखें और सब शांति पावें। क्योंकि आगमज्ञानियों के आत्मा
३३ आगमज्ञानियों के बश में हैं। ईश्वर गड़बड़ से प्रसन्न नहीं
परंतु मिलाप से प्रसन्न है जैसा कि संतन की समस्त मंडलियों
३४ में है। तुम्हारी स्त्रीलोग मंडली में चुपचाप रहें क्योंकि उन्हें
बोलने की आज्ञा नहीं परंतु आधीन रहने की आज्ञा
३५ किईगईहै। और जो वे सीखाचाहें तो घर में अपने पति से
३६ पूछें क्योंकि लाजहै कि स्त्री मंडली में बोलें। क्या ईश्वर की बात
३७ तुम्हों में से निकली अथवा केवल तुम्हीं लों पऊंची। जो कोई
अपने को आगमज्ञानी अथवा आत्मिक जाने तो वुह उन
बस्तुन को जो मैं तुम्हें लिखताहों मानलेवे कि प्रभु की आज्ञा
३९ हैं। परंतु जो कोई अज्ञान होय तो होनेदे। सो हे भाइयो
आगम की बात कहने की लालसा रक्खो परंतु भाषा बोलने
४० से मत बरजो। और सारी बातें सुडौल और बिधि से होवें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब

१ अब हे भाइयो मैं तुम्हें उस मंगलसमाचार को जनावताहों
जो मैंने तुम्हें उपदेश किया था तुम्हों ने पाया भी और जिनमें
२ ठहरेहो। जिनसे तुमलोग बचभी गयेहो यदि तुमलोग मेरे
किएऊए उपदेश को स्मरण करो जो तुम्हारा बिश्वासलावना
३ ब्यर्थ नहोवे। क्योंकि मैंने तुम्हें पहिले सौंपा जो मैंने भी पाया
कि मसीह लिखेऊए के समान हमारे पापों के लिये मूआ।
४ और कि गाड़ागया और कि तीसरे दिन लिखेऊए के समान
५ जीउठा। और कि काफा से फेर उन बारहों से देखागया।
६ उसके पीछे जो पांच सौ भाई से अधिक थे एकसाथ उनसे
देखागया जिनमें अधिक भाग अबलों हैं परंतु कईएक सोगये।
८ फेर वुह याक़ूब से देखागया फेर समस्त प्रेरितों से। और
सब के पीछे मुझे भी देखागया जो असमय में उत्पन्न ऊआ।
९ क्योंकि मैं समस्त प्रेरितों में अत्यंत छोटा हों और योग्य

नहीं हों कि प्रेरित कहाओं इस कारण कि मैं ने ईश्वर की
१० मंडली को सताया। परंतु ईश्वर के अनुग्रह से हों जो हों
और उसका अनुग्रह जो मुझ पर ऊआ सो अकारथ नऊआ
परंतु मैं ने उन सभों से अधिक परिश्रम किया तथापि मैं ने
११ नहीं परंतु ईश्वर के अनुग्रह ने जो मेरे संग था। सो क्या मैं
क्या वे ऐसा उपदेश करते हैं और तुमलोग वैसाही बिश्वास
१२ लाये हो। परंतु जो उपदेश किया गया है कि मसीह मृतकन
में से जी उठा तो तुम्हों में कितने क्यों कहते हैं कि मृतकन का
१३ पुनरुत्थान नहीं है। क्योंकि जो मृतकन का पुनरुत्थान नहीं है
१४ तो मसीह भी फेर नहीं उठा। और जो मसीह नहीं उठा
तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा बिश्वास भी व्यर्थ।
१५ हां हम ईश्वर के झूठे साक्षी ठहरे क्योंकि हमने ईश्वर के
लिये साक्षी दिई है कि उसने मसीह को उठाया है जो मृतक
१६ नहीं उठते तो उसने उसको भी नहीं उठाया। क्योंकि जो
१७ मृतक नहीं उठते तो मसीह भी नहीं उठाया गया। और
जो मसीह नउठाया गया तो तुम्हारा बिश्वास मिथ्या और
१८ तुमलोग अबलों अपने पाप में पड़े हो। तब वे भी जो मसीह
१९ में होके सो गये हैं नष्ट ऊए। जो हमलोग केवल इसी जगत
में मसीह से आशा रक्खें तो समस्त मनुष्यन से अधिक हमारा
२० दुर्भाग्य है। परंतु अब मसीह तो मृतकन में से उठा है और
२१ उनमें जो सो गये हैं पहिला फल ऊआ। क्योंकि जब मनुष्य से
२२ मृत्यु है तो मनुष्य ही से मृतकन का पुनरुत्थान भी है। क्योंकि
जैसा आदम में सबकोई मरते हैं वैसाही मसीह में सबकोई
२३ जिलाये जायेंगे। परंतु हरएक अपनी अपनी दशा में पहिला
२४ फल मसीह फेर वे जो मसीह के हैं उसके आये पर। तब
अंत होगा जब वुह राज्य ईश्वर को जो पिता है सौंप देगा
जब सारी प्रभुता और समस्त पराक्रम और सामर्थ्य को
२५ नाश करेगा। क्योंकि जबलों वुह समस्त शत्रुन को अपने पांव

२६ के तले नकरे अवश्य है कि वुह राज्य करे। मृत्यु भी जो
२७ पिछला शत्रु है नष्ट होगा। क्योंकि उसने समस्त बस्तें उसके
पांव तले कियां और जब वुह कहता है कि समस्त बस्तें उसके
बश में हुईं तो प्रगट है कि एक वही रहिगया जिसने
२८ सब कुछ उसके बश में करदिया। और जब सब कुछ उसके
बश में कियाजायगा तब पुत्र आप उसके जिसने समस्त बस्तें
उसके बश में कियां बश में होगा कि ईश्वर सब में सब होवे।
२९ नहीं तो वे जो मृतकन की संती स्नान पावतेहैं क्या करेंगे जो
३० मृतक नउठे तो क्यों मृतकन की संती स्नान पावतेहैं। और
३१ फेर हमसब क्यों हर घड़ी जोजोखिम में हैं। मुझे अपनी उस
बड़ाई की सों जो हमारे प्रभु मसीह ईसा में है मैं प्रतिदिन
३२ मरताहों। जो मनुष्यन की नाईं मैं अफसस में बनैला पशुन
के संग लड़ा तो मुझे क्या फल है जो मृतक नउठें आओ खावें
३३ पीवें कि कलके दिन मरेंगे। छल नखाओ बुरी संगति अच्छे
३४ स्वभाव को बिगाड़तीहै। धर्म के लिये जागो और पाप
नकरो क्योंकि कितनों में ईश्वर का ज्ञान नहीं मैं यह तुम्हारी
३५ लज्जा के लिये कहताहों। परंतु कोई कहे कि मृतक किस
३६ रीति से उठतेहैं और किस देह से आवतेहैं। हे बेसमझ
जो तू बोता है यदि वुह नमरे तो कभी जिलाई नजायगी।
३७ और जोकुछ तू बोताहै बुह देह नहीं बोता जो होयेगा
परंतु निरा एक बीज है चाहे गोहूं अथवा और कुछ होवे।
३८ परंतु ईश्वर अपनी इच्छा के समान उसको एक देह देताहै
३९ और हरएक बीज को अपना निज देह। समस्त शरीर
एकही रीति का नहीं है परंतु मनुष्यन का शरीर भिन्न है
पशुन का भिन्न मछलियों का भिन्न है पंछियों का भिन्न।
४० स्वर्गीय के भी शरीर हैं और पार्थिव के भी हैं परंतु स्वर्गीय
४१ का तेज और है और पार्थिव का तेज और। सूर्य का तेज
और है चंद्रमा का तेज और तारों का तेज और है क्योंकि

४२ तारों के तेज भिन्न भिन्न हैं। सो मृतकन का पुनरुत्थान
ऐसाही है वुह सड़ाहट में बोयाजाताहै और असड़ाहट
४३ में उठायाजाताहै। अनादरता में बोयाजाताहै और ऐश्वर्य
में उठायाजाताहै निर्बलता में बोयाजाताहै पराक्रम में
४४ उठायाजाताहै। जंतु का देह बोयाजाताहै और आत्मिक
देह उठायाजाताहै एक जंतु का देह है और एक आत्मिक
४५ देह। और यों लिखा है कि पहिला पुरुष आदम जीवता
४६ प्राणी ऊआ और पिछला आदम जीव दाता आत्मा। तथापि
आत्मिक पहिले नथा परंतु वुह जो जंतु का है और उसके
४७ पीछे आत्मिक। पहिला मनुष्य पृथिवी से पार्थिव ऊआ दूसरा
४८ मनुष्य स्वर्ग से प्रभु है। जैसे पार्थिव वैसे वे भी जो पार्थिव हैं
४९ और जैसा स्वर्गीय वैसे वे भी जो स्वर्गीय हैं। और जैसा कि
हमों ने पार्थिव का स्वरूप पायाहै स्वर्गीय का भी स्वरूप
५० पावेंगे। हे भाइयो मैं यह कहताहों कि देह और रुधिर
ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होसक्ते और नसड़ाहट
५१ असड़ाहट का अधिकारी होसक्ताहै। देखो मैं तुम्हें गुप्त की
एक बात कहताहों कि हम सबकेसब नसोवेंगे परंतु सबकेसब
५२ बदलेजायंगे। एक पल में एक पलक में पिछला सूर फूंकतेऊए
सूर फूंकाजायगा और मृतक असड़निहार उठायेजायंगे और
५३ हमलोग बदलेजायंगे। क्योंकि चाहिये कि यह सड़निहार
असड़ाहट को पहिनलेय और यह मरनिहार अमृत को
५४ पहिनलेय। सो जब यह सड़निहार असड़निहार को
और यह मरनिहार अमृत को पहिनचुकेगा तब वुह
बात जो लिखीहै पूरी होगी कि जयने मृत्यु को निगल
५५ लिया। हे मृत्यु तेरा डंक कहां है और हे समाधि तेरा जय
५६ कहां रहा। मृत्यु का डंक पाप है और पाप का बल
५७ व्यवस्था है। परंतु धन्य ईश्वर को जो हमें हमारे प्रभु ईसा
५८ मसीह के कारण से जय देताहै। सो हे मेरे प्यारे भाइयो

तुमलोग स्थिर और अचल होओ और ईश्वर के कार्य में सदा लवलीन रहो क्योंकि तुम जानतेहो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में अकारथ नहींहै।

१६ सोलहवां पर्व्व

१ अब बेहरी के कारण जो संतन के लियेहै जैसा मैं ने गलतियः
२ की मंडलियों को आज्ञा किईहै वैसाही तुमलोग करो। हर अठवारे के पहिले दिन तुम्हों में हरएक अपने प्राप्ति के समान एकठा करके अपने पास रखछोड़े कि जब मैं आओं
३ तो बेहरी में अबेर नहोवे। और मैं आके उन्हीं के ओर से जिनको तुमलोग अपनी पत्री से ठहराओगे तुम्हारा दान
४ यिरोशलीम में पहुंचावने को भेजोंगा। और जों मेरा भी
५ जाना उचित होय तो वे मेरे संग जायंगे। क्योंकि मैं मकदूनियः में होके निकलोंगा क्योंकि मैं मकदूनियः में होके जाउंगा तब
६ मैं तुम्हारे पास आओंगा। क्या जानें मैं तुम्हारे पास कुछदिन ठहरों हां जाड़ा भी काटों कि तुमलोग मुझे आगे को
७ बिदाकरो जिधर मैं जानेचाहों। क्योंकि मैं अब की जातेहुए तुम्हों को नदेखोंगा परंतु जों ईश्वर चाहे तो आशा रखताहों
८ कि कुछ दिन तुम्हारे संग रहों। और मैं पचासवें के पर्व्वलों
९ अफसस में रहोंगा। क्योंकि एक बड़ा द्वार जो गुणकारी है
१० मेरे लिये खुला है और बैरी बहुतसे हैं। और जों तीमताऊस आवे तो देखो कि वुह तुम्हारे पास निर्भय से रहे क्योंकि वुह
११ मेरे समान प्रभु का कार्य करताहै। कोई उसकी अवज्ञा नकरे परंतु उसको कुशल से इधर को बिदा कीजियो कि मेरे पास आवे क्योंकि मैं उसकी बाट जोहताहों कि भाइयों के
१२ संग आवे। रहा भाई अपलूस सो मैं ने उसको बहुत बिनती किई कि तुम्हारे पास भाइयों के संग जाय तथापि उसकी इच्छा तनिक नथी कि अब की जाय परंतु जों अवकाश होगा

१३ तो वुह आनिकलेगा। जागते रहो बिश्वास में स्थिर रहो
१४ पुरुषार्थ करो बलवान होओ। और तुम्हारे समस्त कार्य
१५ प्रेम के संग होयं। अब हे भाइयो तुमलोग तो इस्तिफानस
के घराने को जानतेहो कि वुह आखाइयः का पहिलाफल
१६ है और वे सब संतन की सेवा करने को सिद्ध रहेहैं। मैं
तुम्हारी बिनती करताहों कि तुमलोग ऐसों के और हरएक
१७ के जो कार्य करनिहार है आधिन होओ। और मैं
इस्तिफानस फरतूनातूस और अखायकस के आवने से आनंद
१८ हों क्योंकि उन्हों ने तुम्हारी घटती को भरदिया। क्योंकि
उन्होंने मेरे और तुम्हारे आत्मा को संतुष्ट किया इसलिये
१९ तुमलोग ऐसों को मानो। और आसिया की समस्त मंडली
तुम्हें नमस्कार कहतीहैं अकला और परसकला उस मंडली
समेत जो उनके घर में हैं तुम्हें प्रभु में बऊत बऊत नमस्कार
२० कहतेहैं। समस्त भाई तुम्हें नमस्कार कहतेहैं सो तुमलोग
२१ पवित्र चूमा से आपुस में नमस्कार करो। अब पूलूस का
२२ नमस्कार अपनेही हाथ से। जो कोई जन प्रभु ईसा मसीह
२३ पर प्रेम न रक्खे तुह स्रापित होवे प्रभु आताहै। प्रभु ईसा
२४ मसीह का अनुग्रह तुम्हों पर होवे। मेरा प्रेम तुम्हारे संग
ईसा मसीह में होवे आमीन।

पूलूस की दूसरी पत्री करिंतियों को

१ पहिला पर्व्व

१ पूलूस के जो ईश्वर की इच्छा से ईसा मसीह का प्रेरित है और भाई तीमताऊस के ओर से ईश्वर की मंडली को जो करिंतस में है और समस्त संतन को जो समस्त अखायः २ में हैं। अनुग्रह और शांति हमारे पिता ईश्वर और ३ प्रभु ईसा मसीह के ओर से होवे। धन्य ईश्वर और हमारे प्रभु ईसा मसीह के पिता को जो दया का पिता ४ और समस्त सांत्व का ईश्वर है। वुह हमारे समस्त क्लेश में हमें धीरज देताहै कि हम उन्हों को जो किसी क्लेश में हैं उसी धीरज के कारण से जो हम आप ईश्वर से धीरज ५ पावतेहैं धीरज देसकें। क्योंकि जैसे मसीह का दुख हम्में बढ़ताहै वैसा हमारा सांत्व भी मसीह के कारण से बढ़ताहै। ६ क्योंकि जों हमलोग दुख पावतेहैं तो तुम्हारे सांत्व और उद्धार के कारण जो हमारे उन्हीं दुखों को जो हम पावतेहैं संतोषसे सहनेसे सिद्ध होताहै अथवा जों हम सांत्व पावतेहैं ७ तो तुम्हारे सांत्व और उद्धार के लिये। और हमारी आशा तुम्हारे बिषय में दृढ़ है यह जानके कि जैसा तुमलोग ८ कष्टों में साझी हो वैसाही सांत्व में भी होओगे। हे भाइयो हम नहीं चाहते कि तुमलोग उस क्लेश से जो आसिया में हमों पर पड़ा अज्ञान रहो कि हम बेपरिमाण दबगये ९ इहांलों कि हम जीवन से भी निरास ऊए। परंतु हमों ने अपनेही में मृत्यु की आज्ञा पाई जिसतें हमलोग अपनही भरोसा नरक्खें परंतु ईश्वर का जो मृतकन को जिलावताहै।

१० उसने हमको ऐसी महा मृत्यु से बचाया और बचावताहै उस पर हमारा भरोसा है कि वुह आगेको भी बचावेगा।
११ तुमलोग भी मिलके प्रार्थना से हमारे सहायक ऊरे कि वुह दान जो बऊतसे लोगों के कारण से हमों को मिला बऊतसे
१२ लोगों से हमारे लिये स्तुति किईजाय। क्योंकि हमारे मन की साक्षी हमारा आनंद करना है कि हमने सीधाई से और ईश्वर की सचाई से नकि शारीरिक बुद्धि से परंतु ईश्वर के अनुग्रह से जगत में और निजकरके तुम्हारे समीप अपना
१३ निर्वाह किया। क्योंकि हम दूसरी बातें नहीं परंतु वेही बातें तुम्हें लिखतेहैं जिन्हें तुमलोग जानतेहो और मानतेहो और मैं
१४ आशा रखताहों कि अंतलों मानोगे। जैसा कि तुम्होंने हमें थोड़ासा मानाहै कि हम प्रभु ईसा के दिन तुम्हारा आनंद
१५ करना हैं जैसा तुमसब भी हमारे हो। और मैंने इसी भरोसा से इच्छा किई कि मैं पहिले तुम्हारे पास आओं कि
१६ तुमलोग दूसरा पदारथ पाओ। और तुम्हों में होके मकदूनियः को जाओं और मकदूनियः से फेर तुम्हारे पास आओं और अपनी यात्रा में तुम्हों से यहूदियः के ओर
१७ पऊंचाया जाउं। सो जब मैंने यह इच्छा किई तो क्या मैंने हलुकापन किई अथवा कि जो इच्छा मैं करताहों क्या मैं शरीर की रीति पर करताहों कि मुझे हांहां और नहीं
१८ नहीं होवे। सच्चे ईश्वर की सों हमारी बात तुम्हों से हां
१९ और नहीं नथी। क्योंकि ईश्वर का पुत्र ईसा मसीह जो हमों से अर्थात मुझे और सलवानिससे और तीमताऊस से तुम्हों में उपदेश कियागया सो हां और नहीं नथा परंतु
२० उसमें हां था। क्योंकि ईश्वर की समस्त प्रतिज्ञा उसमें हां और उसमें आमीन हैं कि हमों से ईश्वर की बड़ाई
२१ किईजाय। अब वुह जो हमको तुम्हारे संग मसीह में स्थिर
२२ करताहै और हमको अभिषेक किया ईश्वर है। जिसने

हमोंपर छाप भी कियाहै और आत्मा को हमारे अंतःकरण
२३ में बयाना दिया। परंतु मैं ईश्वर को अपने आत्मा पर
साक्षी लावताहों कि मैं तुम्हों पर क्षमा करनेको अबलों
२४ करिंतस में नहीं आया। इस कारण नहीं कि हम तुम्हारे
बिश्वास पर कुछ प्रभुता रखतेहैं परंतु तुम्हारे आनंद के
सहायक हैं क्योंकि बिश्वास से तुमलोग खड़ेहो।

२ दूसरा पर्व

१ परंतु मैंने अपने मन में यह ठाना कि मैं तुम्हारे पास फिरके
२ उदासीन नआओं। क्योंकि जो मैं तुम्हें उदासीन करों तो
कौन है जो मुझे हर्षित करताहै परंतु वही जो मुझसे उदास
३ कियागया। और मैंने तुम्हों को यों लिखा नहो कि जब मैं
आओं मैं उन्हों के कारण उदासी पाओं जिन्से उचितहै कि
हर्षित होओं तुमसभों के बिषय में निश्चय रखके कि मेरा
४ हर्ष तुमसभों का है। क्योंकि मैंने बड़े कष्ट और मन के शोक
से बज़तसे आंसू बहा बहाके तुम्हें लिखा नइसलिये कि
तुमलोग उदास कियेजाओ परंतु कि तुमलोग मेरे उस प्रेम
५ को बढ़ती को जानो जो मुझे तुम्हों से है। और जो किसीने
उदास कराया तो उसने केवल मुझी को थोड़ा उदास किया
६ कि मैं तुमसभों को अधिक बोझ नदेउं। ऐसे मनुष्य के लिये
७ वही दपट जो बज़तों से कियागया बस है। सो अब उसे
उलटा निजकरके उसपर क्षमा करो और शांति देउ ऐसा
८ नहोवे कि ऐसे जन अत्यंत शोक से निंगलेजायं। इसकारण
मैं तुम्हों से यह बिनती करताहों कि तुमलोग उसपर अपने
९ प्रेम को स्थिर करो। क्योंकि मैंने इसकारण लिखाहै कि मैं
तुम्हारी परीक्षा पाओं कि तुमलोग सारी बातों में अधीन
१० हो कि नहीं। जिसको तुमलोग कुछ क्षमा करो मैं भी करता
हों और जो मैं किसी को कुछ क्षमा करों कोई नहो तो

तुम्हारे कारण से मसीह की संती होकर क्षमा करताहों।
११ नहोवे कि शयतान हमसे कुछ वारा पावे क्योंकि हम उसकी
१२ जुगुतों से अज्ञान नहींहैं। और जब मैं मसीह का
मंगलसमाचार देने को तरवास में आया और प्रभु के ओर
१३ से एक द्वार मेरे लिये खुलगया। मेरे मन में चैन नथा इस
कारण कि मैंने अपने भाई तीतस को वहां नपाया परंतु
१४ उन्हों से बिदा होकर वहां से मकदूनियः को गया। अब
धन्य ईश्वर को जो मसीह में हमको सर्वदा जय देताहै
और अपने ज्ञान के गंध को हमसे हरएक स्थान में प्रगट
१५ करताहै। क्योंकि हम ईश्वर के आगे उनके लिये जो
बचायेजातेहैं और उनके लिये जो नष्ट होतेहैं मसीह के
१६ सुगंध हैं। कितनों को मृत्यु के लिये मृत्यु के गंध हैं और
कितनों को जीवन के लिये जीवन के और कौन इन बातों
१७ के योग्य है। क्योंकि हम बहुतों के समान ईश्वर के बचन में
मिलौनी नहीं करते परंतु सचाई से परंतु जैसे ईश्वर की
दृष्टि में मसीह में बोलतेहैं।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ क्या हमने अपनी सराहना करवाना फेर आरंभ कियाहै
और क्या हम कईएक के समान आधीन हैं कि सराहने का
पत्र तुम्हारे पास लावें अथवा तुम्हारे सराहने का पत्र
२ लेजावें। तुमलोग हमारे पत्र हो जो हमारे अंतःकरणों में
लिखेगयेहो और समस्त मनुष्यन से जानेगये और पढ़ेगयेहो।
३ कि प्रगट कियेगये मसीह के पत्र हो जो हमारी सेवकाई से
है जो मसि से नहीं परंतु जीवते ईश्वर के आत्मा से पत्थर
की पटरियों पर नहीं परंतु अंतःकरण के मांस की पटरियों
४ पर लिखा है। और हम मसीह के ओर से ईश्वर पर
५ ऐसा भरोसा रहतेहैं। नकि हम आपसे सामर्थी हैं कि

आपसे किसी बस्तु का सोच करें परंतु हमारा सामर्थ्य ईश्वर
६ से है। उसने हमको नये नियम का सामर्थी सेवक भी बनाया
अक्षर का नहीं परंतु आत्मा का क्योंकि अक्षर बधन
७ करताहै आत्मा जिलावताहै। क्योंकि जो मृत्यु की सेवा
पत्थरों पर खोदेहुए अक्षरों में तेजमय थी इहांलों कि
इसराईल के संतान मूसा के स्वरूप पर उस बिभव के कारण
से जो उसके मुंह पर था और नाश्मान था ताक नसके।
८ तो आत्मा की सेवा कितना अधिक क्योंकर तेजमय नहोगी।
९ और जो दोष दायक सेवा तेजमय है तो धर्म की सेवा का तेज
१० कितना अधिक होगा। क्योंकि वुह जो तेजमय हुआ इस
लगाव से तेज नरखताथा उस तेज के कारण से जो अधिक
११ था। और जो लोप होनहारी बस्तु तेजमय थी तो वुह जो
१२ स्थिर है कितना अधिक तेजमय है। सो हम ऐसी आशा
१३ रखके बहुत खोलके बोलतेहैं। और मूसा के समान नहीं
जिसने अपने मुंह पर घूंघट डाला कि इसराईल के संतान
१४ उस लोप होनिहारी बात के अंत को नदेखें। परंतु उनकी
बुद्धि अंधी होगई क्योंकि अबलों वुह घूंघट पुराने नियम के
पढ़ने में अलग नकियागया वुह मसीह में अलगकियागया।
१५ पर आज के दिनलों जब मूसा पढ़ाजाताहै वुह घूंघट
१६ उनके मन पर पड़ारहताहै। परंतु जब वुह प्रभु के ओर
१७ फिरेगा तब वुह घूंघट अलगकियाजायगा। अब प्रभु वही
आत्मा है और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहीं मोक्ष है।
१८ और हमसब बिन घूंघट प्रभु के तेज को दर्पण में देख देखके
उसके रूप में तेज से तेज में बदलतेजातेहैं जैसा प्रभु के
आत्मा से।

४ चौथा पर्व्व

१ सो हम उस की दया से यह सेवकाई पाके उदास नहीं
२ होते। परंतु हमने लाजके गुप्त कार्य्यन को त्यागकिया और
छलके व्यवहार पर नहीं चलते और ईश्वर के बचन में कपट
नहीं करते परंतु सच्चाई को प्रगट करके हरएक मनुष्य के
३ मन में ईश्वर के सन्मुख अपने को सराहतेहैं। परंतु जो
हमारा मंगलसमाचार गुप्त होवे तो उन्हीं के लिये जो नष्ट
४ होतेहैं गुप्त है। कि इस जगत के ईश्वर ने उन को बुद्धि को
जो अबिश्वासी हैं अंधी करदियाहै नहोवे कि मसीह के जो
ईश्वर को मूर्त्ति है तेजमय मंगलसमाचार का प्रकाश उन्हों
५ पर चमके। क्योंकि हम अपना उपदेश नहीं करते परंतु
मसीह ईसा प्रभु का और हम आप ईसा के लिये तुम्हारे
६ सेवक हैं। क्योंकि ईश्वर जिसने प्रकाश को आज्ञा किई कि
अंधकार से चमके हमारे अंतःकरण में प्रकाश ज़आ कि
ईश्वर के उस तेज के जो ईसा मसीह के रूप में है ज्ञान का
७ उंजियाला देवे। क्योंकि हम यह धन मिट्टी के पात्रों में
रखतेहैं कि सामर्थ्य की उत्तमा ईश्वर से नकि हम से होवे।
८ हम समस्त प्रकार से कष्टित हैं तथापि जंजाल में नहीं
९ घबराहट में हैं परंतु निरास नहीं। संतायेजातेहैं पर
१० अकेले नहीं छोड़ेगये गिरायेगये पर नष्ट नहीं ज़ए। कि हम
प्रभु ईसा के मरण को अपने देह में नित लिये फिरतेहैं कि
११ ईसा का जीवन भी हमारे देह में प्रगट होय। क्योंकि हम
जो जीते हैं ईसा के लिये मृत्यु को नित सौंपेजातेहैं कि ईसा
१२ का जीवन भी हमारे नाशमान देह में प्रगट होवे। सो मृत्यु
१३ हमों में और जीवन तुम्हों में प्रवेश करताहै। हम वही
बिश्वास का आत्मा रखतेहैं जैसा लिखाहै कि मैं बिश्वास
लाया और इस लिये मैं बोला हम भी बिश्वास लातेहैं और
१४ इसी कारण बोलतेहैं। हम जानतेहैं कि जिसने प्रभु ईसा को

जिलाया सो हमको भी ईसा से जिलायेगा और तुम्हारे
१५ संग अपने सन्मुख करेगा। क्योंकि समस्त बस्तें तुम्हारे कारण
हैं कि अनुग्रह उभरताहुआ बहुतेरों के धन्य मान्ने से ईश्वर
१६ के माहात्म्य की अधिकाई के कारण होय। इसलिये हम
उदास नहीं होते परंतु यद्यपि हमारी बाहरी मनुष्यता
नाश होतीहै तथापि मानसिक मनुष्यता प्रतिदिन नवीन
१७ होतीहै। कि हमारा हलुक दुख जो क्षण भर के लिये है
हमारे लिये कितना अधिक अनंत महिमा के भारको उत्पन्न
१८ करता है। जबलों हम दृश्य बस्तु को नहीं देखते परंतु
उन्हों को जो अदृश्य हैं क्योंकि जो बस्तें दृश्य हैं थोड़े दिन को
हैं परंतु वे जो अदृश्य हैं अनंत हैं।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ हम जानतेहैं कि जो हमारे मिट्टी के घर का मंदिर उजड़
जावे तो हम ईश्वर का बनायाहुआ एक घर रखतेहैं जो
२ हाथों से नहीं बना सर्ब्बदा स्वर्गों में है। क्योंकि हम इसमें
रहिके आहें खींचतेहैं और अभिलाषी हैं कि अपने घर
३ को पहिनलेवें जो स्वर्ग से है। कि ऐसे पहिराए जाके
४ हम नंगे नपायेजायं। क्योंकि जबलों हम तंबू के मंदिर
में हैं बोझितहो के आहें खींचतेहैं तिसपर भी अपहिराये
जाने को नहीं चाहतेहैं परंतु चाहतेहैं कि पहिराएजायं
५ कि मृत्युता जीवन से निंगलीजाय। सो जिसने हमको
इस कार्य के लिये सिद्ध किया ईश्वर है जिसने हमसभों
६ को अपने आत्मा का बयाना भी दिया। इसलिये सर्ब्बदा
साहस रखतेहैं यह जानके कि जबलों हम देह में यात्रा
७ करतेहैं हम प्रभु से बियोगी हैं। क्योंकि हम बिश्वास
८ से नकि दृष्टि से चलतेहैं। हम साहस रखतेहैं और
अधिक चाहतेहैं कि देह से बियोगी होवें और प्रभु के संग

९ साक्षात होवें। इस कारण हम बड़ी धुनिसे करतेहैं कि
१० क्या साक्षात में क्या बियोग में हम उसे भायेजावें। क्योंकि
हमसब को अवश्य है कि मसीह के बिचार स्थान के आगे
खड़ेकियेजायं कि हरएक अपने देह में किये के समान पावे
११ क्या भला क्या बुरा। इसकारण प्रभु के भय को जानकर
हम मनुष्यन को समुझातेहैं परंतु हम ईश्वर पर प्रगट
कियेगयेहैं और मैं आशाभी रखताहों कि तुम्हारे मन
१२ पर भी प्रगट कियेगयेहैं। क्योंकि फेर अपनी सराहना
तुम्हों से नहीं करतेहैं पर तुम्हें कारण देतेहैं कि हमारे
कारण से बड़ाई करो कि तुमलोग उनको उत्तर देसको जो
१३ प्रगट में बड़ाई करतेहैं और अंतःकरण में नहीं। क्योंकि
जों हम अपने से परेहैं तो ईश्वर के लिये हैं अथवा जो
१४ सज्ञान हैं तो तुम्हारे कारण हैं। क्योंकि मसीह का प्रेम हम
को खोंचेजाताहै जबलों हम यों बिचार करतेहैं कि जों एक
१५ सबके कारण मूआ तो सबकेसब मरे थे। और वुह सबके
कारण मूआ कि जो जीतेहैं सो आगे को अपने लिये नहीं
जीवे परंतु उसके लिये जो उनके कारण मूआ और फेर
१६ उठा। सो अबसे हम किसी को शरीर की रीति पर नहीं
पहिचानतेहैं और यद्यपि हमने मसीह को शरीर की रीति
१७ पर पहिचानाहै तथापि आगे को यों नहीं जानतेहैं। सो
जों कोई मसीह में है तो वुह नई सृष्टि है पुरानी बस्तें
१८ बीतगईं और देखो सारी बस्तें नई हुईं। और समस्त बस्तें
ईश्वर से हैं जिसने ईसा मसीह के कारण से हमों को अपने
से मिलालिया और मिलाप की सेवकाई हमको दिई।
१९ अर्थात कि ईश्वर मसीह में होके जगत को अपने से मिलाप
करावताथा कि उसने उनके अपराधों को उनपर नठहराया
२० और हमों को मिलाप का बचन सौंपा। इसलिये हम
मसीह के ओर से दूत हैं जैसा कि ईश्वर हमारे ओर से

तुम्हों से बिनती करताहै सो हम तुम्हों से मसीह की संती
२१ बिनती करतेहैं कि तुमलोग ईश्वर से मिलाये जाओ। क्योंकि
उसने उसको जो पाप को नजानताथा हमारी संती पाप
ठहराया कि हम उसमें ईश्वर के धर्म बनें।

६ छठवां पर्ब्ब

१ हम संगी सेवक तुम्हारी बिनती करतेहैं कि तुम ईश्वर के
२ अनुग्रह को अकारथ नलेओ। क्योंकि वुह कहताहै कि मैं ने
ग्रहण किएऊए समय में तेरी सुनी और उद्धार के दिन में
तेरा सहाय किया देखो ग्रहण करने का समय अब है और
३ देखो उद्धार का दिन अब है। हम किसी बात में ठोकर
४ नहीं देते कि सेवा दूषी नजाय। परंतु आप को हरएक बात
में ऐसा सराहतेहैं जैसे ईश्वर के सेवक बऊत संतोष में दुखों
५ में सकेतियों में जंजालों में। कोड़ों में बंधन में ऊलर में
६ परिश्रमों में जागने में उपवास में। पवित्रता में ज्ञान में
७ संतोष में कोमलता में धर्मात्मा में निष्कपट प्रेम में। सचाई
की बाणी में ईश्वर के सामर्थ्य में दहिने बाएँ धर्म के झिलिम
८ से। मान और अपमान में होके और सुख्यात और कुख्यात
९ में होके छलियों के समान तथापि सच्चा। जैसा अनजाना
ऊआ तथापि आछी रीति से जानाऊआ जैसा मरतेऊए
तथापि देखो हम जीतेहैं जैसा ताड़ित होके तथापि
१० मारे नगये। जैसा उदासीन तथापि सदा आनंद करतेहैं
जैसा कंगाल तथापि बऊतेरों को धनी करते हैं जैसा बस्तु
११ हीन तथापि समस्त बस्तु रखतेहैं। हे करिंतियो हमारे
मुंह तुम्हारे लिये खुले हमारे अंतःकरण बढ़ायेगयेहैं।
१२ तुमलोग हमों में सकेती में नहीं हो परंतु अपनेही मन में
१३ सकेती में हो। इसकारण उसके प्रतिफल में मैं तुम्हों से
१४ जैसा बालकों से कहताहों तुम भी बढ़जाओ। अबिश्वासियों

के संग असमान रीति से एक जूये में मत जुतेजाओ क्योंकि धर्म और अधर्म से कौनसा मेल है और प्रकाश को अंधकार
१५ से कौनसा मेल है। और मसीह को बलीआल के संग कौनसा मेल है और बिश्वासी का अबिश्वासी के संग कौनसा
१६ भाग है। और ईश्वर के मंदिर को मूर्त्तिन से कौनसा संयोग है क्योंकि तुमलोग जीवते ईश्वर के मंदिर हो जैसा कि ईश्वर ने कहाहै कि मैं उनमें रहोंगा और उसमें फिरोंगा
१७ और मैं उनका ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे। इस कारण प्रभु यह कहताहै कि उनके बीच से निकलआओ और अलग होओ और अपवित्र बस्तु को मत छूओ और मैं तुम
१८ को ग्रहण करोंगा। और मैं तुम्हारा पिता होंगा और तुमलोग मेरे पुत्र और पुत्रियां होगे यह सर्बशक्तिमान प्रभु कहताहै।

७ सातवां पर्ब्ब

१ सो हे प्रिय ऐसी प्रतिज्ञाओं को पाके आओ अपने को समस्त प्रकार की शारीरिक और आत्मिक अशुद्धता से
२ पवित्र करके ईश्वर के भय से पवित्रता को संपूर्ण करें। हम को ग्रहण करलेउ हमने किसी पर अंधेर नकिया किसी को
३ नबिगाड़ा किसी को नछला। मैं दोष देने के कारण यह नहीं कहता मैं तो आगे कहिचुकाहों कि तुमलोग हमारे
४ अंतःकरण में हो कि तुम्हारेही संग जीयें और मरें। बड़े निर्भय की बोली से तुम्हीं से कहताहों और तुम्हारे बिषय में निपट बड़ाई करताहों शांति से भराऊआहों अपने समस्त
५ कष्टन में मैं अत्यंत आनंदित हों। क्योंकि जब हम मकदूनियः में आये हमारे शरीर को कुछ चैन नथा परंतु हम सर्बत्र
६ दुख पावतेथे बाहर लड़ाइयां भीतर भय। परंतु ईश्वर ने जो उदासीनों का शांतिदाताहै तीतस के आवने से हमें

७ शांति दिई। और केवल उसीके आजाने से नहीं परंतु उस सांत्वन से जिस्से उसने तुम्हों से शांति पाई जब उसने तुम्हारी बड़ी लालसा तुम्हारा बिलाप तुम्हारा ज्वलन जो मेरे कारण था हमारे आगे बर्णन किया इहांलों कि मैंने
८ अधिक आनंदकिया। क्योंकि यद्यपि मैं ने पत्री से तुम्हें शोकित किया मैं पछताता नहीं यद्यपि मैं पछताया क्योंकि मैं देखताहों कि उसी पत्री ने थोड़े समय लों तुम्हें शोकित
९ किया। सो अब मैं आनंदकरताहों नइसलिये कि तुमलोग शोकित ऊए परंतु इसलिये कि तुमलोग पश्चात्ताप के लिये शोकित ऊए क्योंकि ईश्वर के लिये शोकित ऊए सो तुम्हों ने
१० हमसे कुछ घटी नउठाई। क्योंकि ईश्वर के लिये शोककरना उद्धार के कारण पश्चात्ताप उत्पन्न करताहै कि पछताया नजावे परंतु जगत के लिये शोककरना मृत्यु को उत्पन्न
११ करताहै। क्योंकि देखो इसी बातने अर्थात ईश्वर के लिये तुम्हारा शोकित होना तुम्में क्याही चालाकी उत्पन्न किई क्याही बिनती क्याही जलजलाहट क्याही भय क्याही बड़ी बांछा क्याही तापित कियाहै क्याही दंडलेना उत्पन्न कियाहै समस्त रीति से तुम्हों ने अपने को इसी बात में निर्दोषी
१२ ठहराया। सो जो मैंने तुम्हें लिखा नउसके कारण जिसने अंधेर किया और नउसके कारण जिसपर अंधेर ऊआ परंतु इसलिये कि हमारी चिंता तुम्हारे लिये ईश्वर के
१३ सन्मुख तुम्हों पर प्रगट होवे। इसलिये हमने तुम्हारे सांत्वन से शांति पाई और तीतस के आनंद से अत्यंत आनंदकिया
१४ इस कारण कि उसके आत्मा तुमसभों से संतुष्ट ऊए। सो जो मैंने उसके आगे कुछ बड़ाई किईहो मैं लज्जित नहीं हों परंतु जैसा सारी बातें हमने तुम्हों से सच्चाई से कहीं वैसाही हमारा बड़ाईकरना जो तीतस के आगे था ठहरायागया।
१५ इहांलों कि उसके मन की दया तुम्हों पर अत्यंत है जब कभी

वुह तुमसभों का आज्ञा मान्ना स्मरण करताहै कि तुम्हों ने
१६ कैसे डरते और थरथराते उसे ग्रहण किया। इसलिये
मैं आनंद करताहों कि हरऐक बात में तुम्हों पर मेरा
भरोसा है।

८ आठवां पर्व्व

१ और हे भाइयो हम ईश्वर के उस अनुग्रह को जो मकदूनियः
२ की मंडलियों पर कियागयाहै तुम्हों को जनावतेहैं। क्योंकर
बड़ी परीक्षा के क्लेश में उनके आनंद की अधिकाई ने और
उनके अत्यंत कंगालपन ने उनके पुन्य की बक्रताई को अधिक
३ प्रगट किया। इहांलों कि मैं साक्षी देताहों कि सामर्थ भर
४ हां सामर्थ से अधिक आपही इच्छा रखतेथे। उन्हों ने
बक्रतसी बिनती करके चाहा कि हम उस दान को लेवें और
५ संतन की सेवा में संगी होवें। और यह उन्हों ने हमारी
आशा के समान नकिया परंतु पहिले अपने तईं प्रभु को
६ सौंपा और ईश्वर की इच्छा से हमों को। इहांलों कि हम
ने तीतस से चाहा कि जैसा उसने आरंभ कियथा वैसा
७ इस अनुग्रह को भी तुम्हों में पूरा करे। इसलिये जैसा
तुमलोग हरऐक में अर्थात बिश्वास में उच्चारण में और
ज्ञान में और समस्त यत्न में और हमारे प्रेम में भरपूर हो
८ वैसाही तुमलोग इस अनुग्रह में भी संपूर्ण होओ। मैं आज्ञा
से नहीं कहता परंतु औरों के यत्न के कारण से जिसतें
९ तुम्हारे प्रेम की सच्चाई प्रगट होजाय। क्योंकि तुमलोग
हमारे प्रभु ईसा मसीह के अनुग्रह को जानतेहो कि यद्यपि
वुह धनी था तथापि वुह तुम्हारे कारण कंगाल ज्रआ कि
१० तुमलोग उसके कंगालपन से धनी होजाओ। और मैं इस
बात में मंत्र देताहों क्योंकि यही तुम्हारे कारण योग्य है कि
तुम्हों ने केवल कुछ करना आरंभ नहीं किया परंतु ऐक

११ बरस आगे से यत्न किया। सो अब कार्य्य को भी संपूर्ण करो कि जैसा तुमलोग इच्छा करने को लैस थे वैसाही अपने
१२ बिसात के समान संपूर्ण भी करो। क्योंकि जो मनकी तियारी पहिले होय तो मनुष्य अपने बिसात के समान ग्रहण
१३ कियागया नउसके समान जो उसकी नहीं है। यह नहीं
१४ कि औरों पर सुख और तुम्हों पर दुख होवे। परंतु समता की रीति पर कि इस समय में तुम्हारी अधिकाई उनकी घटती को पूरा करे कि उनकी अधिकाई भी तुम्हारी घटती
१५ को पूरा करे जिसतें समता होवे। जैसा लिखा है कि जिसने बज्जत बटोरा उसका कुछ नबचा और जिसने थोड़ा बटोरा
१६ उसका कुछ नघटा। परंतु धन्य ईश्वर को जिसने तुम्हारे
१७ लिये इस बड़े यत्न को तीतस के मन में डाला। क्योंकि उसने उस बुलाहट को तो ग्रहण किया परंतु बज्जत चटक होकर
१८ आप अपने मन से तुम्हारे पास निकलगया। और हमने उसके संग उस भाई को भेजा जिसकी बड़ाई मंगलसमाचार
१९ में समस्त मंडलियों में है। और केवल इतनाही नहीं परंतु वुह मंडलियों से भी ठहरायागया कि बंच में इस अनुग्रह के साथ हमारे संग रहे जिसकी हमों से उसी प्रभु की महिमा के लिये और तुम्हारे तियार मन के लिये सेवा किई
२० गई है। इसे बचके कि कोई इस बज्जताई के लिये जिसकी
२१ सेवा हम से किईगई हम को दोष नदेवे। हम उन बस्तुन के लिये जो नकेवल प्रभु के आगे परंतु मनुष्यन के आगे भी भली
२२ हैं चिंता करतेहैं। और हम ने उसके संग अपने उस भाई को भेजा जिसे हम ने बज्जतसी बातों में बारंबार परीक्षा करके फुरतीला पाया पर अब उस बड़े बिश्वास के कारण से जो तुम्हों पर है कितना अधिक फुरतीला पाया।
२३ जो कोई तीतस की पूछे तो वुह मेरा साझी और तुम्हारे बिषय में संगी सेवक है अथवा हमारे और भाइयों के तो वे

२४ मंडलियों के दूत और मसीह के महिमा हैं। इसकारण तुमलोग अपने प्रेम और हमारी बड़ाई के प्रमाण को जो तुम्हारे कारण है उनको और मंडलियों को दिखाओ।

९ नवां पर्ब्ब

१ सो अब संतन की सेवा के बिषय में मुझे तुम्हें लिखना अवश्य
२ नहीं। क्योंकि मैं तुम्हारी तियारी को जानताहों जिसके बिषय में तुम्हारी बड़ाई मकदूनियों के आगे करताहों कि अखायः एक बरस आगे लैस था और तुम्हारे तेज ने बहुतेरों
३ को उसकाया। तथापि मैंने भाइयों को भेजा नहोवे कि हमारी बड़ाई तुम्हारे बिष में ब्यर्थ होवे कि जैसा मैंने कहाहै
४ तुम सिद्ध होरहो। कहीं ऐसा नहोवे कि जों मकदूनी लोग मेरे संग आवें और तुम्हें असिद्ध पावें तुम तो रहे हम इस
५ निश्चित बड़ाईकरने से लज्जित होजावें। इसकारण मैं ने भाइयों से बिनतीकरना अवश्य समुझा कि वे तुम्हारे पास आगे से जावें और तुम्हारे पुन्य को जो तुम्हें आगे जनायागया सिद्ध कर रक्खें जिसतें वुह पुन्य के समान नकि कंजूसी के
६ समान होवे। पर यह चेत रहे कि जो थोड़ा करके बोताहै सो थोड़ा काटेगा और जो बहुताई से बोताहै बहुताई से
७ काटेगा। हरएक अपने मन की इच्छा के समान करे पछताके अथवा आवश्यक से नहीं क्योंकि आनंद से देनहार
८ को ईश्वर प्यार करताहै। और ईश्वर तुम्हों पर समस्त प्रकार का अनुग्रह बढ़ासक्ताहै कि तुमलोग किसी बात में
९ कधी घटी नरखके हरएक भली करनी में बढ़जाओ। जैसा लिखाहै कि उसने बिथरायाहै उसने दरिद्रों को दियाहै
१० और उसका धर्म सर्बदा धराहै। सो जो बोवनहार को बीज और भोजन के लिये रोटी देताहै तुम्हारे बोने को देवे और
११ बढ़ावे और तुम्हारे धर्म का फल अधिक करे। कि हरएक

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ हाय कि तुमलोग मेरी मूर्खता को तनिक सहो और हां
२ मेरी सहो। क्योंकि मुझे तुम्हारे लिये ईश्वरीय झलसे झल है
क्योंकि मैं ने तुम्हें संवारा कि सती कन्या के समान एकही पति
३ अर्थात् मसीह के सन्मुख करों। परंतु मैं डरताहों कहीं ऐसा
नहोवे कि जैसा सांप ने अपने छलसे हव्वा को ठगा ऐसाही
४ तुम्हारे मन की सूधाई को जो मसीह में है बिगाड़े। क्योंकि
वुह जो आवताहै जो दूसरे ईसा का उपदेश करे जिसका
हमने नहीं किया अथवा जो तुमलोग कोई और आत्मा
पावते जिसे तुम्हों ने न पाया अथवा दूसरा मंगलसमाचार
५ जिसे तुम्हों ने नमाना तो तुम्हें सहना भला होता। क्योंकि मैं
बूझताहों कि मैं अत्यंत बड़े प्रेरितों से तनिक घाट नथा।
६ क्योंकि यद्यपि मैं बोलचाल में अनारी हों तथापि ज्ञान में नहीं
७ परंतु हम तो हरएक बातमें तुम्हों में प्रगट ऊएहैं। अपने को
दीन करने में कि तुमलोग बढ़जाओ क्या मैं ने अपराध किया
इस कारण कि मैं ने तुम्हें ईश्वर का मंगलसमाचार सेंतसे
८ सुनाया। मैंने और मंडलियों को लूटलिया कि मज्हिनवारी लेके
९ तुम्हारी सेवा करों। और साक्षात होके जब मुझे प्रयोजन
था मैं ने किसी पर बोझ नदिया क्योंकि जोकुछ मुझे घटती
थी उन भाइयों ने जो मकदूनियः से आयेथे भरदिया और
हरएक बात में मैं ने अपने को तुम्हों पर भार होने से अलग
१० रक्खा और रक्खोंगा। मसीह की उस सचाई की सों जो
मुझ में है अखायः के देशों में मुझे इस बड़ाई से कोई
११ नरोकेगा। किस कारण क्या इस कारण कि मैं तुम्हें प्यार
१२ नहीं करता ईश्वर जानताहै। परंतु मैं जो करताहों सोही
करतारहोंगा कि मैं गर्व ढूंढ़निहारों से गर्व उठा देउं कि
जिस बात में वे बड़ाई करतेहैं वे हमारे समान पायेजावें।
१३ क्योंकि ऐसे झूठे प्रेरित हैं छली कार्यकारी हैं वे अपने को

१४ मसीह के प्रेरितों के भेष में बदलतेहैं। और कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि शैतान आपही प्रकाश के दूत के भेष में
१५ बदलगया। इस कारण जो उसके सेवक भी धर्म के सेवकों के भेष में बदलजावें तो कुछ बड़ी बात नहीं उनका अंत
१६ उनके कार्यन के समान होगा। मैं फेर कहताहों कि कोई मुझे मूर्ख नसमुझे नहीं तो मुझे मुर्ख के समान ग्रहण करो कि
१७ मैंभी थोड़ीसी बड़ाई करों। जो कुछ कि मैं बड़ाई के भरोसा में कहताहों सो प्रभु की रीति पर नहीं परंतु मूर्ख के समान।
१८ बज्जतेरे देह की रीति पर बड़ाई करतेहैं मैंभी बड़ाई
१९ करोंगा। क्योंकि तुमलोग बुद्धिमान होके मूर्खों को आनंद से
२० सहतेहो। क्योंकि जो कोई तुम्हें बंधन में लावे जो कोई तुम्हें निंगले अथवा कोई तुम्हों से कुछ लेय अथवा कोई आपको बढ़ावे अथवा जो कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारे तब
२१ तुमलोग सहतेहो। मैं अनादर के बिषय में कहताहों ऐसा जैसा कि हम निर्बलहैं तिसपर भी जिस बात में कोई दृढ है
२२ तो मैं मूर्खता से कहताहों कि मैं भी दृढ हों। क्या वे इबरानी हैं मैं भी हों वे इसराईली हैं मैं भी हों वे
२३ इबराहीम के बंश से हैं मैं भी हों। क्या वे मसीह के सेवक हैं मैं मूर्खता से कहता हों कि मैं अधिक हों परिश्रमों में अधिक और कोड़ेखाने में परिमाण से बाहर बंदीगृहों में
२४ बज्जतबज्जत और मृत्युन में बारंबार। यहूदियों से मैंने
२५ पांच बार एककम चालीस कोड़े खाये। तीन बार मैं छड़ियों से मारागया एक बार मैं पथरवाह कियागया तीन बार
२६ नावतोड़ में पड़ा एक रातदिन गंभीर में काटा। यात्रा करने में बज्जत नदियों के भय में चोरों के भय में अपने देशीयों के भय में अन्यदेशीयों के भय में नगर के भय में बन के भय में
२७ समुद्र के भय में झूठे भाइयों के भय में। थकाहट और क्लेश में जागने में बारंबार भूख में और प्यास में उपवास में

बात में धनी होके समस्त दानशीलता के लिये हमारे कारण
१२ से ईश्वर का धन्यबाद होताहै। क्योंकि सेवा की क्रिया केवल
संतों के आवश्यक को पूरा नहीं करतीहै परंतु बहुतेरों के
१३ ओर से ईश्वर के लिये धन्यबादों में भी अधिकाई देतीहै। वे
इस सेवा की परिक्षा के प्रमाण से और इसलिये कि तुमलोग
मसीह के मंगलसमाचार के आधीन हो और तुम्हारी दातापन
के लिये जो उन्हों पर और सभों पर है ईश्वर की महिमा
१४ करतेहैं। और ईश्वर के उस अत्यंत अनुग्रह के लिये जो
तुम्हों पर है तुम्हारे लिये बड़ी चाह से प्रार्थना करतेहैं।
१५ ईश्वर के अकथ्य दानके लिये उसका धन्यबाद होय।

१० दशवां पर्ब्ब

१ अब मैं पूलुस आपही मसीह की कोमलता और नम्रता के
कारण से तुम्हारी बिनती करताहों जो साक्षात में तुम्हों में
२ दीन हों परंतु बियोग में तुम्हारे लिये निडर हों। परंतु मैं
तुम्हारी बिनती करताहों कि जब मैं साक्षात में होओं उस
भरोसे से निडर न होओं जैसा मैं उन्हों पर निडर होने को
समुझताहों जो हमारी चाल को शारीरिक समुझतेहैं।
३ क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलतेहैं तथापि हम शरीर की
४ रीति पर नहीं लड़तेहैं। क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार
शारीरिक नहीं परंतु ईश्वर के कारण से कोटन के ढाने पर
५ सामर्थी हैं। कि बिचारों को और हरएक ऊंची बस्तु को
जो अपने को ईश्वर की पहिचान के बिरोध से बढ़ातेहैं
ढादेतेहैं और हरएक सोच को बंधन में करके मसीह के
६ आज्ञा के बश में लावतेहैं। और जब तुम्हारा आज्ञा मान्ना
संपूर्ण होजाय हम समस्त आज्ञा भंग करने का पलटा
७ लेनेको सिद्धहैं। क्या तुमलोग बस्तुन की बाहरीबाहार
को देखतेहो जो किसी मनुष्य को निश्चय है कि वुह आप

मसीह का है तो वुह यह भी आपसे बिचारकरे कि जैसे वुह
८ मसीह का वैसे हम भी मसीह के हैं। क्योंकि जो मैं उस
पराक्रम के कारण जो प्रभु ने हमें सुधारने के लिये न तुम्हें
नष्टकरनेके लिये दियाहै कुछ बड़ाई करों मैं लज्जित न होंगा।
९ जिसतें मैं ऐसा नजानाजाऊं जैसा कि मैं तुम्हों को पत्रियों
१० से डराया चाहताहों। क्योंकि वे कहतेहैं कि उसकी पत्रियां
भारी और बलवंत हैं पर उसका देह साक्षात में निर्बल और
११ बोली निंदित। सो ऐसा जन जान रक्खे कि जैसे हम बचन
में पत्रियों से बियोग में हैं वैसाही साक्षात में हमारे कर्म भी
१२ होंगे। क्योंकि हमारा यह साहस नहीं कि अपने को उनमें
गिनें अथवा अपने को उनसे तुल्य करें जो अपने को सराहतेहैं
परंतु वे अपने को आपसे नापके और आपसे अपने को मिलाके
१३ बुद्धिमान् नहीं। परंतु हमलोग परिमाण से बाहर बड़ाई
न करेंगे पर उस परिमाण की रीति के समान जो ईश्वर ने
१४ हमें बांटदियाहै एक परिमाण जो तुम लों भी पऊंचे। क्योंकि
हम अपने को अधिकाई से नहीं बढ़ावतेहैं जैसा कि हम
तुम लों नहीं पऊंचेहैं क्योंकि हम तुम लों भी मसीह के मंगल
१५ समाचार को लेपऊंचेहैं। न बेपरिमाण से औरों के परिश्रमों
से बड़ाई करते परंतु आशा रखतेहैं कि जब तुम्हारा बिश्वास
अधिक होय कि हमलोग तुम्हों से अपनी रीति के समान
१६ बढ़जायंगे। कि तुम्हारे सिवाने से आगे बढ़के मंगलसमाचार
पऊंचावें कि औरों की सिद्धकिईऊई वस्तु पर बड़ाई न करें।
१७ परंतु वुह जो बड़ाई करताहै सो प्रभु में बड़ाई करे।
१८ क्योंकि वुह ग्राह्य नहीं है जो अपने को सराहताहै परंतु वुह
जिसे प्रभु सराहताहै।

१९ ऐकही डग में न चलतेथे। फेर क्या तुमलोग समुझतेहो कि हम तुम्हों से अपना बचाव करतेहैं हम ईश्वर के आगे मसीह में बोलतेहैं परंतु हे अतिप्रिय यह सारी बातें तुम्हारे
२० संवारने के लिये हैं। क्योंकि मैं डरताहों न होवे कि मैं आके जैसा तुम्हें चाहताहों वैसा न पाओं और मैं तुम्हों से ऐसा पायाजाउं जैसा तुमलोग नहीं चाहते न होवे कि बिवाद और डाह और क्रोध और झगड़े और गुप्तबाद
२१ और फुसफुसाहट अहंकार और ऊधम होवे। न होवे कि जब मैं आओं मेरा ईश्वर मुझे तुम्हों में आधीन करे और न होवे कि मैं उनमें से बहुतेरों के कारण जिन्हों ने पाप कियाहै और अपनी अपवित्रता और व्यभिचार और कामाभिलाष से जो उन्हों ने किया पश्चात्ताप न किया शोक करों।

१३ तेरहवां पर्व्व

१ यह तीसरे बार मैं तुम्हारे पास आवताहों दो अथवा तीन
२ साक्षियों के मुंह से हरऐक बात ठहराईजायगी। मैं ने तुम्हें आगे कहाहै और दूसरे बार आगेसे कहदेताहों ऐसा जैसा कि मैं साक्षात था और अब बियोगी होके मैं उन्हों को जिन्हों ने आगे पाप किये और और सभों को लिखताहों कि जो
३ मैं फेर आओं तो न छोड़ोंगा। जैसा कि तुमलोग मुझमें मसीह के कहने का प्रमाण ढूंढ़तेहो जो तुम्हारे लिये निर्बल नहींहै
४ परंतु तुम्हों में सामर्थी है। क्योंकि यद्यपि वुह निर्बलता से क्रूस पर मारागया तथापि वुह ईश्वर के पराक्रम से जीताहै और हम भी उसमें निर्बल हैं पर उसके संग ईश्वर के
५ पराक्रम से जो तुम्हारे बिषय में है जीवेंगे। अपने को जांचो कि तुमलोग बिश्वास में हो कि नहीं अपने को परखो क्या तुमलोग आप को नहीं जानते कि ईसा मसीह तुम्हों में है

६ नहीं तो तुमलोग अभारेहो। पर मैं आशा रखताहों कि
७ तुमलोग जानोगे कि हम अभारे नहीं हैं। परंतु मैं ईश्वर से
बिनती करताहों कि तुमलोग कुछ बुराई न करो इसकारण
नहीं कि हम भायेऊरे प्रगट होवें परंतु कि तुमलोग भला
८ करो यद्यपि हम अभारे के समान होवें। क्योंकि हम सत्य
९ का बिरुद्ध कुछ नहीं करसक्ते परंतु सत्य के कारण। क्योंकि
जब निर्बल हैं तब हमलोग प्रसन्न हैं और तुमलोग बलीहो
१० और हम तुम्हारी सिद्धता चाहतेहैं। इसलिये मैं बियोगी
होके ये बातें लिखताहों नहोवे कि मैं साक्षात होके तुम्हों
पर उस पराक्रम के समान जो प्रभु ने मुझे सुधारने के लिये
११ दिया और ढादेने के लिये नहीं कठोरता करों। अंत में हे
भाइयो कुशल रहो सिद्ध होओ धीरजधरो एक मता होके
मिले रहो प्रेम और मिलाप का ईश्वर तुम्हारे संग रहेगा।
१३ एक दूसरे का पवित्र चूमा लेकर नमस्कार करो। समस्त
१४ साधुलोग तुम्हें नमस्कार कहतेहैं। प्रभु ईसा मसीह का
अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और धर्मात्मा की मिलाप
तुमसभों के संग होवे आमीन।

२८ बारंबार शीत और नंगाई में भी रहाहों। बाहर की बस्तुन से अधिक समस्त मंडलियों का सोच मुझ को प्रति दिन २९ दबावताहै। कौन निर्बल है और मैं निर्बल नहींहों और ३० कौन ठोकर खाताहै कि मैं नहीं जलता। जो मुझे बड़ाई करना अवश्यहै तो मैं अपनी दुर्बलता की बस्तु में बड़ाई ३१ करोंगा। ईश्वर और हमारे प्रभु ईसा मसीह का पिता ३२ जो नित्यानंद है जानताहै कि मैं झूठ नहीं बोलता। दमिश्क में उस अध्यक्ष ने जो आरीतस राजा के ओर से था मुझे ३३ पकड़ने की इच्छा से नगर पर चौकी बैठलाई। और मैं खिड़की में से टोकरी में भीत पर से लटकायागया और उसके हाथों से बचनिकला।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ मैं निश्चय जानताहों कि उचित नहीं कि अपनी बड़ाई करों तथापि मैं प्रभु के दर्शनों और आकाश बाणियों का बर्णन २ करोंगा। चौदह बरस बीते होंगे कि मैं मसीह में एक मनुष्य को जानताथा तो शरीर में मैं नहीं जानता अथवा शरीर से बाहर मैं नहीं जानता ईश्वर जानताहै वही तीसरे स्वर्गलों ३ पऊंचायागया। हां ऐसे मनुष्य को मैं जानताथा तो शरीर में अथवा शरीर से बाहर मैं नहीं जानता ईश्वर जानताहै। ४ वुह बैकुंठ लों पऊंचायागया और ऐसी अकथ्य बातें सुनीं जो ५ मनुष्य के उच्चारण करने के योग्य नहीं। ऐसाही मनुष्य की मैं बड़ाई करोंगा परंतु अपने पर बड़ाई नकरोंगा परंतु ६ केवल अपनी निर्बलता पर। क्योंकि जो मैं बड़ाई कियाचाहों मैं मूर्ख न होंगा क्योंकि मैं सत्य बोलता परंतु थमताहों न होवे कि कोई मुझे उस्से जैसा मुझे देखताहै अथवा जैसा मेरे ७ बिषय में सुनताहै अधिक समुझे। और न होवे कि मैं दर्शनों की अधिकाई से बेपरिमाण फूलजाओं मेरे शरीर में एक

मंगलसमाचार की सच्चाई के समान खराई से नहीं चलते मैं ने सभों के आगे पतरस को कहा कि जो तू यहूदी होकर अन्यदेशियों के व्यवहार पर चलता है और यहूदियों के समान नहीं तू किस कारण अन्यदेशियों को बरबस यहूदियों
१५ के व्यवहार पर चलावता है। हमलोग जो स्वभाव से यहूदी
१६ हैं और अन्यदेशियों में के पापी नहीं। यह समुझकर कि मनुष्य व्यवस्था की क्रिया से नहीं परंतु ईसा मसीह पर बिश्वास लाने से निर्दोष ठहरता है हमलोग भी ईसा मसीह पर बिश्वास लाये हैं कि हमलोग ईसा मसीह पर बिश्वास लाने से न कि व्यवस्था की क्रिया से निर्दोष ठहरें क्योंकि कोई
१७ मनुष्य व्यवस्था की क्रिया से निर्दोष न ठहरेगा। परंतु जब हम खोज में हैं कि मसीह के कारण से निर्दोष ठहरें हम आप पापी पायेजावें तो क्या मसीह पाप का सेवक है ऐसा न होवे।
१८ क्योंकि जो मैं उन वस्तुन को जिन्हें मैं ने छोड़दिया फिरके
१९ बनाओं तो मैं अपने को अपराधी मानलेता हों। क्योंकि मैं व्यवस्था के कारण व्यवस्था के ओर से मरगया हों कि ईश्वर
२० के लिये जीओं। मैं मसीह के संग क्रूस पर टांगागया हों तिसपर भी मैं जीवता हों तथापि मैं नहीं परंतु मसीह मुझ में जीवता है और वुह जीवन जो अब मैं शरीर में जीवता हों मैं ईश्वर के पुत्र के बिश्वास से जीवता हों कि उसने मुझे प्यार
२१ किया और आपको मेरे लिये दिया। और मैं ईश्वर के अनुग्रह को वृथा नहीं करता क्योंकि जो धर्म व्यवस्था से मिले तो मसीह व्यर्थ मूआ।

३ तीसरा पर्व्व

१ हे अबिवेक गलतियो किसने तुम्हों पर टोना किया कि सत्य को न मानो जिनकी आंखों के आगे ईसा मसीह प्रत्यक्ष रीति से दिखायागया ऐसा जैसा कि तुम्हारे मध्य में क्रूस पर

पूलुस की पत्री गलतियों को

---

१ पहिला पर्व्व

१ पूलुस प्रेरित जो मनुष्य से नहीं न मनुष्य के द्वारा से परंतु ईसा
मसीह से और ईश्वर पिता से जिसने उसको मृतकन में से
२ उठाया। और सारे भाइयों से जो मेरे संग हैं गलतियः की
३ मंडलियों को। ईश्वर पिता से और हमारे प्रभु ईसा
मसीह के ओरसे अनुग्रह और कुशल तुम्हों पर होवे।
४ उसने हमारे पापों के कारण अपने को दिया कि वुह हमों
को हमारे पिता ईश्वर की इच्छा के समान इस बुरे वर्त्तमान
५ जगत से बचालेवे। अनंत माहात्म्य उसीके लिये होवे आमीन।
६ मैं अचंभित हों कि तुमलोग उस्से जिसने तुम्हें मसीह के
अनुग्रह में बुलाया ऐसा शीघ्र औरही मंगलसमाचार में
७ हटगये। जो दूसरा नहीं है परंतु कितने हैं जो तुम्हें व्याकुल
करतेहैं और चाहतेहैं कि मसीह के मंगलसमाचार को
८ बिगाड़ें। परंतु यदि हमलोग अथवा स्वर्ग से कोई दूत उस
मंगलसमाचार को छोड़ जो हमने तुम्हें दिया कोई दूसरा
९ उपदेश करे वुह स्रापित होवे। जैसा हमने आगे कहा वैसा
मैं फेर कहताहों कि जो कोई किसी दूसरे मंगलसमाचार
को तुम्हें सिखावे उसे छोड़ जिसे तुम्हों ने पाया वुह स्रापित
१० होवे। क्या मैं अब मनुष्यन का अथवा ईश्वर का मन
जोगावताहों अथवा क्या मैं मनुष्यन की रुचि ढूंढ़ताहों
क्योंकि जो मैं मनुष्यन को रुचावता तो मैं मसीह का दास
११ नहोता। पर हे भाइयो मैं तुम्हें चेतादेताहों कि वुह मंगल
समाचार जिसका उपदेश मुझ्से कियागया सो मनुष्य की रीति

१२ से नहीं है। क्योंकि मैं ने उसको नतो मनुष्य से पाया न सिखायागया परंतु ईसा मसीह के प्रकाशित से पाया।
१३ क्योंकि तुमलोग मेरी पिछली चाल को जब मैं यहूदियों के मत में था सुनेहो कि मैं ईश्वर की मंडली को बेपरिमाण
१४ सताताथा और उजाड़ताथा। और यहूदियों के मत में अपनेही देश के लोगों में अपने समान के बहुतेरे जन से अधिक चमत्कारी किई कि अपने पितरन के व्यवहारों पर अत्यंत
१५ ज्वलित था। परंतु जब ईश्वर प्रसन्न हुआ जिसने मुझे माता
१६ के गर्भ से अलग करके अपने अनुग्रह से बुलाया। कि अपने पुत्र को मुझ पर प्रगट करे कि मैं उसका उपदेश अन्यदेशियों के बीच में करों तुरंत मैं ने मांस और लहू के संग युक्ति
१७ नकिई। और यिरोशलीम में उनके पास जो मुझ से पहिले प्रेरित थे नगया परंतु मैं अरब को गया फेर दमिश्क को
१८ फिरा। फेर तीन बरस पीछे पतरस से भेंट करने को यिरोशलीम को गया और उसके संग पंदरह दिन रहा।
१९ परंतु प्रेरितों में से किसी दूसरे को नदेखा केवल प्रभु के भाई
२० याकूब को। अब जो बातें मैं तुम्हों को लिखताहों देखो ईश्वर
२१ के आगे मैं मिथ्या नहीं कहता। उसके पीछे मैं सिरिया और
२२ किलिकिया के देश में आया। और यहूदियों की मंडली जो
२३ मसीह में थीं मेरे स्वरूप से अपरिचित थीं। परंतु केवल उन्हों ने सुनाथा कि वुह जो हम को आगे सतावताथा अब उस बिश्वास का उपदेश करताहै जिसे उसने आगे नष्ट
२४ कियाथा। और उन्हों ने मेरे बिषय में ईश्वर की स्तुति किई।

२ दूसरा पर्व्व

१ तब चौदह बरस पीछे मैं बरनबास के संग तीतस को भी
२ संग लेके यिरोशलीम को फेर गया। परंतु मेरा जाना प्रकाशित से हुआ और वुह मंगलसमाचार उन्हें सुनाया

४ चौथा पर्व्व

१ अब मैं कहताहों कि अधिकारी जबलों बालक है उसमें
२ और दास में भेद नहीं यद्यपि वुह सबका स्वामी है। परंतु
उस समयलों जो पिता ने ठहरायाहै अध्यापकों और
३ अध्यक्षों के बश में रहताहै। ऐसाही हमलोग भी जब लड़के
४ थे जगत की रीति के बंधन में थे। परंतु जब संपूर्णता का
समय आया तब ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से
५ उत्पन्न होके व्यवस्था के बश में पड़ा। कि वुह उन्हों को जो
व्यवस्था के तले थे छुड़ावे कि हम लेपालक पुत्र होने का पद
६ पावें। और तुम जो पुत्र हो इसीके कारण से ईश्वर ने
अपने पुत्र के आत्मा को तुम्हारे अंतःकरण में पिता पिता
७ पुकारतेऊए भेजा। सो तू आगे दास नहीं परंतु पुत्र और
जो पुत्र है तो मसीह के कारण से ईश्वर का अधिकारीहै।
८ परंतु तुमलोग आगे जब ईश्वर को नहीं पहिचानतेथे उनके
९ बंधन में थे जो प्रकृत से ईश्वर नहीं। परंतु अब जब तुम्हों ने
ईश्वर को पहिचाना अथवा निजकरके ईश्वर ने तुम्हें पहिचाना
तुमलोग फेर क्यों इन दुर्बल और दरिद्र रीतिन के ओर
जातेहो और चाहतेहो कि फेर उनके बंधन में पड़ो।
१० तुमलोग दिनों और महीनों और समयों और बरसों को
११ मानतेहो। मैं तुम्हारे लिये डरताहों न होवे कि मैं ने जो
१२ तुम्हों पर परिश्रम कियाहै व्यर्थ होवे। हे भाइयो मैं तुम्हारी
बिनती करताहों कि मेरी नाईं होजाओ क्योंकि मैं तुम्हारी
१३ नाईं बनगया हों तुम्हों ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। तुमलोग
जानतेहो कि मैं ने पहिलेसे देह की दुर्बलता से तुम्हों को
१४ मंगलसमाचार का उपदेश दिया। और तुम्हों ने मेरी उस
परीक्षा को जो मेरे देह में थी निंदा न किई और न त्याग
किया परंतु मुझको ईश्वर के दूत के ऐसा हां मसीह ईसा की
१५ नाईं ग्रहण किया। सो तुम्हारा जानाऊआ आशीर्बाद कहां

क्योंकि मैं तुम्हों पर साक्षी देताहों कि जो होसक्ता तो
१५ तुमलोग अपनी आंखें निकाल के मुझे देते। सो इस कारण
१७ कि मैं तुम्हें सत्य कहताहों क्या मैं तुम्हारा बैरी ऊआ। वे
तुम्हारे मन को ज्वलित करतेहैं परंतु भलाई से नहीं हां वे
तुम्हें बाहर कियाचाहतेहैं कि तुमलोग उन्हें ज्वलित करो।
१८ परंतु अच्छी बात में सर्बदा ज्वलित होना अच्छाहै न केवल
१९ कि जब मैं तुम्हारे साक्षात में हों। हे मेरे बच्चो जिनके लिये
मैं जन्ने की पीड़ा में फेर हों जबलों मसीह तुम्हों में स्वरूप
२० पकड़े। मैं चाहताहों कि अब तुम्हारे पास आओं और
२१ अपना शब्द बदलों क्योंकि मुझे तुम्हारा संदेह है। मुझे
कहो तुमलोग जो ब्यवस्था के बंद में ऊआचाहतेहो क्या ब्यवस्था
२२ को नहीं सुनते। क्योंकि लिखाहै कि इबराहीम के दो पुत्र
२३ थे एक दासी से दूसरो निर्बंध से। परंतु जो दासी से था
सो शरीर की रीति पर उत्पन्न ऊआ परंतु निर्बंध से था
२४ सो प्रतिज्ञा से था। जो बातें एक दृष्टांत हें क्योंकि ये दो
बाचाहैं एक तो सीना पर्ब्बत से जो निरे बंधन के लिये जनतीहै
२५ यह हाजिरः है। क्योंकि यह हाजिरः अरब का सीनापर्ब्बत
है और यिरोशलीम से जो अब है मिलतीहै और अपने
२६ बालकों के संग बंधन में है। परंतु यिरोशलीम जो ऊपर है
२७ निर्बंध है सो हमसभों की माता है। क्योंकि यह लिखाहै
कि हे बांझ जो नहीं जनती मगन हो और तू जो पीर नहीं
जनती चिल्लाके रो क्योंकि रांड़ के लड़के अहिवाती के
२८ लड़कों से अधिक हैं। अब हे भाइयो हमलोग इसहाक़ की
२९ नाईं प्रतिज्ञा के पुत्र हैं। पर जैसा उस समय में वुह
जिसकी उत्पति शरीर की रीति से थी उसे जिसकी उत्पति
आत्मा की रीति पर थी सतावताथा वैसा अब भी होताहै।
३० परंतु ग्रंथ क्या कहताहै कि दासी को और उसके पुत्र
को दूरकर क्योंकि दासी का पुत्र छुटीऊई के पुत्र के संग

२ टांगागया। तुम्हों से मैं केवल इतना जान्ने चाहताहों कि तुम्हों ने व्यवस्था की क्रिया से आत्मा को पाया अथवा बिश्वास
३ के सुन्ने से। क्या तुमलोग ऐसे अबिवेक हो कि आत्मा में
४ आरंभ करके शरीर से अब सिद्ध ऊएहो। क्या तुम्हों ने
५ इतनी बातों को व्यर्थ सहा यदि अबभी व्यर्थ होय। सो वुह जो तुम्हें आत्मा देताहै और तुम्हों में आश्चर्य कर्म करताहै
६ सो व्यवस्था पर चलने से अथवा बिश्वास के सुन्ने से। जैसा कि इब्राहीम ईश्वर पर बिश्वास लाया और वुह उसके
७ लिये धर्म गिनागया। सो जानो कि वे जो बिश्वास के हैं
८ सोही इबराहीम के पुत्र हैं। और ग्रंथ ने आगे देखके कि ईश्वर अन्यदेशियों को भी बिश्वास की रीति से निर्दोष ठहरावेगा इबराहीम को आगेही मंगलसमाचार दिया कि
९ समस्त अन्यदेशी तुझ में आशीष पावेंगे। सो वे जो बिश्वास के
१० हैं बिश्वासी इबराहीम के संग आशीष पावतेहैं। इसलिये जितने व्यवस्था की क्रिया के हैं स्राप के तले हैं क्योंकि लिखाहै कि हरएक जो व्यवस्था के पुस्तक में लिखीऊई समस्त बातों
११ को नहीं मानता स्रापित है। परंतु कि कोई ईश्वर की दृष्टि में व्यवस्था से निर्दोष नहीं ठहरता सो प्रत्यक्ष है क्योंकि
१२ धर्मी बिश्वास से जीयेगा। अब व्यवस्था बिश्वास से नहीं परंतु
१३ वुह मनुष्य जो उन्हें माने उनसे जीयेगा। मसीह ने हमें व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया कि वुह हमारी संती स्रापित ऊआ क्योंकि लिखाहै कि हरएक जो वृक्ष पर टंगाहै स्रापित है।
१४ जिसतें इबराहीम का आशीष अन्यदेशियों पर ईसा मसीह के द्वारा से पऊंचे कि हमलोग बिश्वास के द्वारासे आत्मा की
१५ प्रतिज्ञा पावें। हे भाइयो मैं मनुष्यन की रीति पर बोलताहों यद्यपि केवल मनुष्य का बाचा होय तथापि जो वुह स्थिर कियाजाय कोई मिटावता नहीं और न उसमें कुछ मिलावताहै।
१६ अब इबराहीम और उसके बंश से प्रतिज्ञा किईगईहै

वुह नहीं कहता और तेरे बंशों को जैसा बहुतों के परंतु
१७ जैसा एक के कारण और तेरे बंश को जो मसीह है। अब
मैं यह कहताहों कि उस बाचा को जो ईश्वर ने मसीह के
बिषय में आगे ठहराया व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस के
पीछे ऊई मिटा नहीं सक्ती कि वुह प्रतिज्ञा निष्फल होजावे।
१८ क्योंकि जो अधिकार व्यवस्था से होव तो प्रतिज्ञाके कारण से
१९ नहीं परंतु ईश्वर ने इबराहीम को प्रतिज्ञा से दिया। सो
व्यवस्था किस काम की है वुह अपराधों के लिये मिलाईगई
जबलों कि वुह बंश जिसके लिये प्रतिज्ञा किईगई आवे दूतों
२० के श्रोरसे एक बिचवई के हाथ में सोंपीगई। अब बिचवई
२१ एक का नहीं होता परंतु ईश्वर एक है। सो व्यवस्था क्या
ईश्वर की प्रतिज्ञा से बिरुद्ध है ऐसा न होवे क्योंकि जो ऐसी
व्यवस्था दिईगई होती जो जीवन देसक्ती तो सचमुच धर्म
२२ व्यवस्था से मिलता। परंतु ग्रंथ ने सभों को पाप के तले
ठहराया कि वुह प्रतिज्ञा जो ईसा मसीह पर बिश्वास लाने
२३ से है बिश्वासियों को दिईजाय। परंतु जब बिश्वास नहीं
आया हम व्यवस्था के तले थे और उस बिश्वास के लिये जो
२४ पीछे प्रगट होनिहार था बंधे थे। सो व्यवस्था हमसभों की
गुरु ठहरी कि मसीह लों पऊंचावे कि हमलोग बिश्वास से
२५ निरपराध ठहरें। पर जब बिश्वास आचुका तो फेर हमलोग
२६ गुरु के बश में नहीं रहते। क्योंकि तुम सबकेसब ईसा मसीह
२७ के बिश्वास से ईश्वर के पुत्र हो। क्योंकि तुम्हों में से जितनों
२८ ने मसीह में स्नान पाया मसीह को पहिनलिया। वहां
न यहूदी न यूनानी है न बंधाऊआ न छूटाऊआ है और
न पुरुष न स्त्री है क्योंकि तुम सबकेसब मसीह ईसा में एक हो।
२९ और जो तुमलोग मसीह के हो तो इबराहीम के बंश हो
और प्रतिज्ञा के समान अधिकारी हो।

३१ अधिकारी न होगा। सो हे भाइयो हमलोग दासी के नहीं परंतु छुटोऊई के पुत्र हैं।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ सो जो मुक्ति मसीह ने हमें दिईहै उस पर स्थिर रहो और
२ बंधन के जूयेतले फेरके न फंसो। देखो मैं पुलूस तुम्हों से कहताहों जों तुमलोग खतनः करवाओ तो मसीह से तुम्हें
३ कुछ लाभ न होगा। और मैं हरएक मनुष्य को जिसने खतनः करवायाहै फेर कहि सुनावताहों कि वुह समस्त
४ ब्यवस्था पर चलने का ऋणी है। तुम्हों में से जो कोई ब्यवस्था के द्वारा से निर्दोष ऊएहैं उनके लिये मसीह निष्फलऊआहै
५ वे अनुग्रह से भ्रष्ट हैं। क्योंकि हमलोग आत्मा के द्वारा से
६ बिश्वास से धर्म के आशा की बाट जोहतेहैं। क्योंकि ईसा मसीह में न खतनः न अखतनः से कुछ प्राप्त होता परंतु
७ बिश्वास जो प्रेमसे कार्य करताहै। तुमलोग तो अच्छी रीति से दौड़तेथे किसने तुम्हें रोकदिया कि अब सत्य के अधीन न
८ होओ। यह मत तुम्हारे बुलावनिहार के ओर से नहीं।
१० थोड़ासा खमीर सारे पिंडको खमीर करडालताहै। तुम्हारे कारण प्रभु के ओरसे मुझे भरोसाहै कि तुम्हारा मन औरही न होगा परंतु वुह जो तुम्हें ब्याकुल करताहै कोई क्यों
११ नहो अपना दंड भोगेगा। और हे भाइयो जों अब मैं खतनः का उपदेश करों तो मैं अबलों क्यों सतायाजाताहों
१२ तो क्रूस का ठोकर उठगया। मैं चाहताहों कि वे जो तुम्हें
१३ ब्याकुल करतेहैं आप कटजायं। क्योंकि हे भाइयो तुमलोग तो मुक्ति में बुलायेगयेहो केवल मुक्ति को शरीर के ब्यवहार के कारण मत करो परंतु प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो।
१४ क्योंकि समस्त ब्यवस्था इसी एक बात में पूरी ऊईहै कि तू
१५ अपने परोसी को अपने समान प्यार कर। परंतु जों तुमलोग

एक दूसरे को दांत काटो और भक्षण करो तो सेचित रहो
१६ कि कहीं एक दूसरे से नाश नहोजाओ। सो मैं कहताहों
कि आत्मा में चलो तो तुमलोग शरीर की वांछा को पूरा न
१७ करोगे। क्योंकि देहकी कामना आत्मा से बिरुद्ध है और
आत्मा की देह से बिरुद्ध और ये एक दूसरे से बिपरीत हैं
यहांलों कि तुमलोग जोकुछ कियाचाहतेहो उसे नहीं
१८ करसक्ते। परंतु जों तुमलोग आत्मा से चलायेजाओ तो
१९ व्यवस्था के तले नहीं हो। अब देह के कार्य तो प्रगट हैं जो
येही हैं परस्त्रीगमन ब्यभिचार अपवित्रता कामुकता।
२० देवपूजा टोनाकरना दुष्टता झगड़े हिस्का क्रोध बिवाद
२१ दंगा उपद्रव। डाह हत्या मतवालपन धूमधाम और ऐसे
ऐसे जिनके बिषय में मैं तुम्हें आगे से कहताहों जैसा मैंने
आगे कहा कि ऐसे कार्य करनिहार ईश्वर के राज्य के
२२ अधिकारी न होंगे। परंतु आत्मा का फल प्रेम है और
आनंद और कुशल और सहना और कोमलता और
२३ भलाई और बिश्वास। नम्रता और मध्यम होना कोई व्यवस्था
२४ ऐसों की बिरोधी नहीं। और उन्हों ने जो मसीह के हैं
२५ देह के अभिलाष और कामना को क्रूस पर माराहै। जों
२६ हमलोग आत्मा में जीवें तो हम आत्मा में भी चलें। हम
अनर्थ बड़ाई के चाहनिहार न होवें और न एक दूसरे को
खिजायें और न एक दूसरे पर डाह करें।

६ छठवां पर्व्व

१ हे भाइयो जों कोई जन किसी दोष में पड़जाय तो तुमलोग
जो आत्मिक हो ऐसों को आत्मा की कोमलता से थामलेउ
२ और तू चौकस रह न होवे कि तूभी परीक्षा में पड़े। तुमलोग
एक दूसरे का भार उठालेउ और यों मसीह की व्यवस्था को
३ संपूर्ण करो। क्योंकि जों कोई कुछ न होके आप को कुछ

४ समुझे तो वुह अपने को छलदेताहै। परंतु हरएक अपनी अपनी करनी को जांचे और तब वुह अपने में आनंदकरना
५ पावेगा और दूसरे में नहीं। क्योंकि हरएक अपनाही
६ बोझ उठावेगा। जो कोई बचन में शिक्षा पावे सिखावनिहार
७ को समस्त अच्छी बस्तुन में साझी करे। भरमाये न जाओ ईश्वर चिढ़ाया न गया क्योंकि जो कुछ मनुष्य बोता है सोई
८ वुह लवेगा। क्योंकि जो कोई अपने देह के लिये बोताहै सो देह से सड़ाव लवेगा परंतु जो आत्मा के लिये बोताहै आत्मा
९ से अनंत जीवन लवेगा। और हमें चाहिये कि भला कार्य करने में थक न जावें क्योंकि जो हमलोग दुर्बल न होवें तो
१० ठीक समय में लवेंगे। सो हमलोग जब जब अवसर पावें आओ सबसे भलाई करें निजकरके उनसे जो बिश्वास के
११ घराने के हैं। तुमलोग देखतेहो कि मैं ने अपने हाथ से कैसी
१२ बड़ी पत्री तुम्हें लिखीहै। जितने कि देह की शोभा चाहतेहैं वे तुम्हें खींचतेहैं कि खतनः करवाओ सो केवल इतने लिये
१३ कि वे मसीह के क्रूस के कारण संताए न जावें। क्योंकि न वे आप जो खतनः कियेगयेहैं ब्यवस्था को मानतेहैं पर चाहतेहैं कि तुमलोल खतनः करवाओ कि वे तुम्हारे देह के बिषय में
१४ बड़ाई करें। परंतु ईश्वर न करे कि मैं बड़ाई करों केवल हमारे प्रभु ईसा मसीह के क्रूस के बिषय में जिस्से जगत् मेरे
१५ लिये क्रूस पर खींचागया और मैं जगत् के लिये। क्योंकि मसीह ईसा में न खतनः कुछ प्राप्त करताहै और न अखतनः परंतु
१६ नई सृष्टि। और जितने इस ब्यवहार पर चलतेहैं बिश्राम और दया उनके लिये और ईश्वर के इसराईल के लिये
१७ होवे। अबसे आगे कोई मुझे याकुल न करे क्योंकि मैं अपने
१८ देह पर प्रभु ईसा का चिह्न लिये फिरताहों। हे भाइयो हमारे प्रभु ईसा मसीह का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे आमीन।

पूलूस की पत्री अफसियों को

---

१ पहिला पर्ब्ब

१ पूलूस के ओरसे जो ईश्वर की इच्छा से ईसा मसीह का प्रेरित है उन साधुन को जो अफसस में मसीह ईसा में
२ बिश्वासी हैं। हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह से
३ अनुग्रह और कुशल तुम्हों पर होवे। हमारे प्रभु ईसा मसीह के पिता ईश्वर को धन्य जिसने हमों को स्वर्गीय बस्तुन में
४ अनेक प्रकार का आत्मिक बर दिया। जैसा कि उसने हमों को जगत् के आरंभ से पहिले उसमें चुना कि हमलोग उसके
५ आगे प्रेम में पवित्र और निर्दोष होवें। उसने हमको बदा था कि अपने सुमनमान की इच्छा के समान ईसा मसीह
६ से अपने लेपालक पुत्र करके। अपने अनुग्रह की महिमा को प्रगट करे जिसमें उसने हमों को उसी प्रिय में ग्राह्य
७ किया। जिस में हमलोग उसके अनुग्रह के धन के समान उसके लोहू के कारण से उद्धार अर्थात् पाप का मोचन
८ पावतेहैं। जिसमें उसने हमों को समस्त ज्ञान और बुद्धि
९ अधिकाई से दिया। कि उसने अपनी इच्छा के भेद को जो अपने सुमनमान के समान जिसे उसने अपने में ठहराया
१० हमों पर प्रगट किया। कि समयों की संपूर्णता में स्वर्ग और पृथिवी दोनों में जितनी बस्तु हैं सभों को मसीह में मिलाके
११ एक के बश में करे। उसके कारण से हमों ने भी एक अधिकार पाया कि बदेहुए होके उसके ठहरायेहुए के समान जो
१२ अपनीही इच्छा के मंत्र की रीति से सब कुछ करताहै। कि हमलोग जिन्हों ने मसीह पर पहिले भरोसा किया उसके

१३ ऐश्वर्य की स्तुति का कारण होवें। जिसमें तुम्हों ने भी जब सचाई के बचन को सुना जो तुम्हारे उद्धार का मंगलसमाचार है जिसमें बिश्वास भी लाके तुमलोग प्रतिज्ञा के धर्मात्मा से
१४ छापकियेगये। जो हमारे अधिकार का बयाना है जबलों मोल लिईऊई बस्तु का उद्धार कियाजाय और उसके ऐश्वर्य
१५ की बड़ाई होवे। इस लिये मैं भी तुम्हारे बिश्वास को प्रभु
१६ ईसा पर और प्रेम को समस्त साधुन पर सुनके। तुम्हारे कारण धन्य मान्ने में और अपनी प्रार्थना में तुम्हारा स्मरण
१७ करने में नहीं थमता। जिसतें हमारे प्रभु ईसा मसीह का ईश्वर जो ऐश्वर्य का पिता है तुम्हें प्रकाशित और ज्ञान का
१८ आत्मा देवे कि तुमलोग उसको पहिचानो। कि तुम्हारे समुझ की आंखें प्रकाशित होवें कि तुमलोग जानो कि उसके बुलावने की क्या आशाहै और साधुलोग जो उसके अधिकार
१९ बनेहैं उसमें क्या ऐश्वर्य का धन है। और उसके अत्यंत सामर्थ्य की बड़ाई हमों पर जो बिश्वास लातेहैं क्याहै जो
२० उसके पराक्रम के सामर्थ्य के कार्य के समानहै। जो उसने मसीह में किया जब उसने उसे मृत्यु से उठाया और अपनेही
२१ दहिने ओर स्वर्गीय स्थान पर बैठाके। समस्त प्रभुता और पराक्रम और सामर्थ्य और राज्य और हरएक नाम से जो न केवल इस जगत् में परंतु आवनिहार जगत् में भी
२२ लियाजाताहै श्रेष्ठ किया। और समस्त बस्तें उसके चरण के तले कियां और उसको मंडली के लिये सब का सिराबनाया।
२३ जो उसकी देह है उसकी भरपूरी जो सबको सब में भरताहै।

२ दूसरा पर्व्व

१ और उसने तुम्हों को जिलाया जो अपराधों और पापों में
२ मृतक थे। जिनमें तुमलोग पिछले दिनों में इस जगत् के

ब्यवहार के समान चलतेथे अर्थात् आकाश के पराक्रम के अध्यक्ष की रीति पर वुह आत्मा जो अब आज्ञा भंग
३ करनिहार पुत्रों में कार्य करताहै। जिन्हों में हमसब भी अपने शरीर की कामना में जीवन निबाहतेथे कि शरीर की और मन की इच्छा करतेथे और स्वभाव से औरोंही की
४ नाईं क्रोध के संतान थे। परंतु ईश्वर दया में धनमान् होके
५ अपने बड़े प्रेम से जिस्से उसने हमों को प्यार किया। अर्थात् जब हमलोग पापों में मृतक थे हमोंको मसीह के संग एकळे
६ जिलाया तुम्हों ने अनुग्रह से त्राण पायाहै। और हमों को एकळे उठाया और मसीह ईसा में स्वर्गीय स्थानों पर
७ एकळे बैठाया। जिसतें वुह अपने अनुग्रह से जो मसीह ईसा के कारण से हमों पर है आवनिहार समय में अपनी दया
८ के अत्यंत धन को दिखावे। क्योंकि तुम्हों ने अनुग्रह से बिश्वास के कारण त्राण पायाहै और वुह तुम्हारेही ओर से नहीं
९ वुह ईश्वर का दान है। क्रिया से नहीं नहो कि कोई बड़ाई
१० करे। क्योंकि हमलोग उसके बनाएहुए कार्य हैं मसीह ईसा में अच्छे कार्यन के लिये सिरजेगये जिन्हें ईश्वर ने आगे
११ ठहराया कि हमलोग उन्में चलें। इस कारण स्मरण करो कि तुमलोग आगे शरीर में परदेशी थे और उनसे जो स्वतनः कियेगये कहातेहैं अस्वतनः कहातेहो कि उनका स्वतनः
१२ देह में और हाथ से हुआथा। कि उस समय में तुमलोग मसीह हीन थे और इसराईल के राज्य से परदेशी और प्रतिज्ञा के नियमों से अनजान थे और आशा हीन होके जगत्
१३ में ईश्वर हीन थे। परंतु अब मसीह ईसा में तुमलोग जो आगे दूर थे मसीह के लोहू के कारण से निकट कियेगयेहो।
१४ क्योंकि वही हमारा मिलाप है जिसने दो को एक किया और
१५ मध्य की भीत के बिछोहा को ढादिया। अपने देह में शत्रुता को मिटादिया अर्थात् ब्यवस्था की आज्ञाओं को जो ब्यवहारों

में थीं कि वुह अपने में मिलाप करके दो से एक नया मनुष्य
१६ बनावे। और शत्रुता को बधन करके वुह क्रूस से दोनो को
१७ एक देह बनाके ईश्वर से मिलावे। और आके तुम्हें जो दूर
थे और उन्हें जो निकट थे मिलाप का उपदेश दिया।
१८ क्योंकि उसीके कारण से एकही आत्मा से हम दोनो पितालों
१९ पहुंचते हैं। सो अब तुमलोग अनजान और परदेशी नहींहो
परंतु सिद्धों के एकही नगर के बासी और ईश्वर के घराने
२० के हो। और प्रेरितों और आगमज्ञानियों पर जो नेउं हैं
२१ जोड़ेगये हो ईसा मसीह आप कोने का सिरा है। जिसमें
सारी जोड़ाई बिधिके साथ एकळे कियेजाके ईश्वर के लिये
२२ पवित्र मंदिर उठताजाताहै। उसमें तुमलोग भी ईश्वर के
निवास के लिये आत्मा से एकळे जोड़ायेगयेहो।

३ तीसरा पर्व्व

१ इस कारण मैं पूलुस तुम परदेशियों के लिये ईसा मसीह का
२ बंधुआ हों। जो तुम्होंने सुनाहै कि ईश्वर के अनुग्रह का
३ बंटवारा तुम्हारे लिये मुझे दियागया। कि उसने प्रकाशित
से भेद को मुझे जनाया जैसा मैं संक्षेप से आगे लिखचुका।
४ उसे पढ़के जानसको कि मैं ने मसीह के भेद को क्या समुझा।
५ जो अगिले समयों में मनुष्यन के संतानों को न जनायागया
जिस रीति से उसके पवित्र प्रेरितों और आगमज्ञानियों
६ पर आत्मा से प्रकाश कियागया। कि परदेशी मंगलसमाचार
के कारण से अधिकार में संगी और एकही देह के और
७ मसीह में उसकी प्रतिज्ञा के भागी होवें। जिसका मैं ईश्वर
के अनुग्रह के दान के समान जो उसके सामर्थ्य की गुणकारी
८ से मुझे मिला सेवक बना। मुझे जो समस्त अत्यंत छोटे सिद्धों
से छोटा हों यह अनुग्रह दियागया कि मैं परदेशियों के
मध्य में मसीह के धन का जो खोज से परे है उपदेश देउं।

९ और सभों को दिखाओ कि उस भेद में साझी होना क्याहै जो सनातन समयों से ईश्वर में गुप्तथा जिसने समस्त बस्तें
१० ईसा मसीह से उत्पन्न कियां। कि अब मंडली के द्वारा से ईश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान और प्रभुता और पराक्रम
११ जो स्वर्गीय स्थानों में हैं जानेजायें। जैसा उसने मसीह ईसा
१२ हमारे प्रभु में सनातन से यों ठहरायाथा। जिसमें हमलोग उसीके बिश्वास के संग साहससे और भरोसा से पऊंचतेहैं।
१३ सो मैं चाहताहों कि तुमलोग मेरे कष्ट के लिये जो तुम्हारे
१४ कारण है और तुम्हारी बड़ाई है निर्बल मत होओ। इसी कारण मैं अपने प्रभु ईसा मसीह के पिता के आगे घुठने
१५ टेकताहों। जिस्से स्वर्ग में और भूमि पर समस्त परिवार के
१६ नाम रक्खेगयेहैं। कि वुह अपनी महिमा के धन के समान तुम्हें देवे कि तुमलोग उसके आत्मा के कारण से अंतर के
१७ मनुष्य में बलसे बली कियेजाओ। कि मसीह तुम्हारे अंतःकरण में बिश्वास से बास करे कि तुमलोग प्रेम में जड़ पकड़के और
१८ नेउं डालके। समस्त सिद्धों समेत् समुझ सको कि उसको चौड़ाई और लंबाई और गहिराई और ऊंचाई कितनी है।
१९ और कि मसीह के प्रेम को जानो जो ज्ञान से परे है जिसतें
२० तुमलोग ईश्वर की सारी भरपूरी से भरजाओ। अब उसके लिये जो कुछ हम मांगसकें अथवा चिंता करसकें उस्से अत्यंत अधिक उस सामर्थ्य के समान जो हमों में कार्य करताहै
२१ देसक्ताहै। उसके लिये मंडली में मसीह ईसा के द्वारा से समस्त पीढ़ी से पीढ़ी अनंत्यलों माहात्म्य होवे आमीन।

४ चौथा पर्व्व

१ सो मैं प्रभु का बंधुआ तुम्हींसे बिनती करताहों कि जिस
२ बुलावासे तुमलोग बुलायेगयेहो उसके योग्य चलो। समस्त नम्रता और कोमलता के संग संतोष से एक दूसरे को प्रेममें

३ सहो। और यत्न करो कि आत्मा की एकता को मिलाप के
४ बंधन में रक्खो। एक देह और एक आत्मा है जैसा कि
तुमलोग अपने बुलावा की एक आशा में बुलायेगये हो।
६ एक प्रभु एक बिश्वास एक स्नान। एक परमेश्वर और सबका
पिता जो सबसे ऊपर और सब में व्याप्त और तुमसभों में।
७ परंतु हम्में से हरएक को मसीह के अनुग्रह के परिमाण के
८ समान दान दियागयाहै। इस कारण वुह कहताहै जब
वुह ऊपर उठगया तब उसने बंध को बंधुआ किया और
९ मनुष्यन को दान दिया। अब वुह जो ऊपर उठगया सो क्याहै
परंतु यह कि वुह पहिले पृथिवी के नीचे के स्थानों में उतरा
१० वुह जो उतरा सो वही है जो समस्त स्वर्गों से भी कहीं परे
११ उठगया जिसतें वुह समस्त बस्तुन को परिपूर्ण करे। और
उसने कितनों को प्रेरित किया और कितनों को आगमज्ञानी
और कितनों को मंगलसमाचारक और कितनों को रखवार
१२ और उपदेशक बनाया। कि सेवा के कार्य के लिये साधुन को
१३ सिद्ध करे और मसीह का देह सुधरता चलाजाय। जबलों
कि हमलोग बिश्वास में और ईश्वर के पुत्र की पहिचान में
एकता में संपूर्ण मनुष्य होवें अर्थात् मसीह की डौल की पूर्णता
१४ लों पहुंचे। जिसतें हमलोग आगे को लड़के न बनेरहें कि
उपदेश की हरएक बयारों से इधर उधर डोलते फिरें
जो मनुष्यन् के कपट छलसे जिस्से वे भुलावने के लिये घात में
१५ रहतेहैं। परंतु प्रेम में सत्य का पालन करके समस्त बस्तु में
१६ उसमें जो सिर है अर्थात् मसीह में बढ़तेजावें। जिस्से समस्त
देह ठीक रीति से मिलायाजाके और हरएक जोड़ की
भरती से जोड़ाजाके हरएक बंद के गुणकारी के समान देह
१७ को बढ़ावताहै कि अपने को प्रेम में सुधारे। इस लिये मैं
यह कहताहों और प्रभु में साक्षी देताहों कि तुमलोग आगे
को आन परदेशियों की चाल पर जो अपने मन की भूल में

१८ चलते हैं न चलो। कि उनकी बुद्धि अंधियारी होगई कि वे उस अज्ञानता के कारण से जो उनके अंतःकरण की अंधरौटी
१९ से उनमें है ईश्वर के जीवन से अलग होगये हैं। उन्हों ने सुन्न होके अपने को कामातुर की क्रिया में सौंपा कि नाना प्रकार
२० की अपवित्रता के कार्य लालच से करें। परंतु तुम्हों ने मसीह
२१ को यों नहीं सीखा। तुम्हों ने तो उसे सुना है और उस्से
२२ सिखायेगये हो जैसा कि सच्चाई ईसा में है। कि अगिली चलन के बिषय में पुरानी मनुष्यता को जो कपट मदन के
२३ समान सड़ी है उतारो। और अपने मन के आत्मा में नये
२४ बनजाओ। और कि तुमलोग नई मनुष्यता को पहिनलेउ जो ईश्वर के समान धर्म में और सत्य पवित्रता में सिरजीगई है।
२५ इसलिये हरएक झूट को अलग करके हरएक जन अपने परोसी से सत्य बोले क्योंकि हमलोग एक दूसरे के अंग हैं।
२६ क्रुद्ध होओ और पाप मत करो नहो कि तुम्हारे क्रोध पर
२७ सूर्य अस्त होजाय। और शैयतान को स्थान मत देउ। जिसने चोरी किई है चोरी न करे परंतु बिशेष करके परिश्रम करे हाथों से ऐसे कार्य करे जो अच्छे हों जिसतें वुह दरिद्रों को
२९ कुछ देसके। कोई सड़ी बातचीत तुम्हारे मुंह से न निकले परंतु वुह जो सुधारने के लिये अच्छी है जिसतें सुननिहारों
३० पर अनुग्रह का कारण होय। और ईश्वर के धर्मात्मा को जिस्से तुम्हों पर मोक्ष के दिनलों छाप कियागया है उदास
३१ नकरो। सारी कड़वाहट और क्रोध और कोप और कोलाहल और बुरी बात चीत समस्त डाह समेत तुम्हों से
३२ अलगकियाजाय। और एक दूसरे पर दयाल और कृपाल हो एक दूसरे पर क्षमा करो जैसा ईश्वर ने भी मसीह के लिये संतसे तुम्हों पर क्षमा किई है।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ सो तुमलोग प्रिय बालकों के समान ईश्वर का पीछा करो।
२ और प्रेम में चलो जैसा कि मसीह ने भी हमोंसे प्रेम किया
और हमारी संती अपने को सुगंध के लिये ईश्वर के आगे
३ भेंट और बलिदान किया। परंतु व्यभिचार और हरएक
प्रकार की अपवित्रता और लालच की चर्चालों तुम्हों में न
४ होवे जैसा कि साधुन को उचित है। और न मलीनता न
मूढ़ बात न ठट्ठे जो ठीक नहीं है परंतु बिशेष करके स्तुति
५ करना होवे। क्योंकि तुमलोग इसे जानतेहो कि न कोई
व्यभिचारी न अपवित्र जन न लालची पुरुष जो मूर्त्ति पूजक
है मसीह के और ईश्वर के राज्य में अधिकार रखताहै।
६ कोई तुम्हों को अनर्थ बातों से छल न देवे क्योंकि ऐसी बातों
के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा भंगकरनिहार बालकों
७ पर पड़ताहै। सो तुमलोग उन्हों के संग साझी न होओ।
८ क्योंकि तुमलोग आगे अंधकार थे परंतु अब प्रभु में प्रकाश
९ हो सो प्रकाश के बालकों के समान चलो। क्योंकि आत्मा
का फल समस्त भलाई में और धर्म और सत्य में है।
११ परखतेहुए कि प्रभु को क्या भावताहै। और अंधकार के
निष्फल कार्य्यन् में साझी मत होओ परंतु बिशेष करके
१२ उन्हें दोष देउ। क्योंकि उनके गुप्त कार्य्यन् की चर्चा भी
१३ करना लाज है। परंतु समस्त बस्तें जो दूषित हैं प्रकाश से
प्रगट किईगईहैं क्योंकि जो कुछ प्रगट करताहै सो प्रकाश
१४ है। इसी लिये वुह कहताहै कि तू जो सोताहै जाग और
१५ मृतकन् में से उठ और मसीह तुझे प्रकाश करेगा। सो
देखो कि तुमलोग चौकसाई से चलो मूर्खों के समान नहीं
१६ परंतु ज्ञानियों के। सो समय को लाभ जानो क्योंकि दिन
१७ बुरे हैं। इस कारण तुमलोग निर्बुद्धि न रहो परंतु समुझ
१८ रक्खो कि प्रभु की इच्छा क्याहै। और मदिरा से मतवाले

न होओ जिसमें अधिकाई है परंतु आत्मा से पूर्ण होओ।
१९ आपुस में भजन और कीर्त्तन और आत्मिक गान गायाकरो
२० और मनलगाके प्रभु के लिये गाते बजाते रहो। समस्त
बस्तुन के लिये हमारे प्रभु ईसा मसीह के नाम से ईश्वर का
२१ अर्थात् पिता का धन्य मानो। और ईश्वर के डर में एक
२२ दूसरे के बश में होओ। हे पत्नियो अपने पतियों के ऐसे
२३ बश में रहो जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसा
कि मसीह मंडली का सिर और वुह देह का निस्तारक है।
२४ सो जैसा मंडली मसीह के बश में हैं वैसही पत्नीयां हरऐक
२५ बात में अपने पति के। हे पतियो अपनी पत्नियों को प्यार
करो जैसा मसीह ने भी मंडली को प्यार किया और अपने
२६ को उसकी संती दिया। जिसतें वुह उसको जलसे स्नान देके
२७ अपने बचन से शुद्ध और पवित्र करे। कि वुह उसको अपने
सन्मुख ऐक तेजोमय मंडली करे जिसमें कोई कलंक अथवा
सिकोड़ अथवा कोई ऐसी बस्तु न होवें परंतु कि पवित्र और
२८ निर्दोष होवें। पतियों को चाहिये कि अपनी पत्नीयों को ऐसा
प्यार करें जैसा अपने देह को वुह जो अपनी पत्नी को प्यार
२९ करताहै सो अपने को प्यार करताहै। क्योंकि किसीने अबलों
अपने देह से बैर न किया परंतु उसको पालता और
३० पोसताहै जैसा कि प्रभु मंडली को। क्योंकि हमलोग उसके
३१ देह के उसके मांस के और उसकी हड्डियों के अंग हैं। इसी
कारण मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी
३२ पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनो ऐक देह होंगे। यह
निगूढ़ भेद है पर मैं मसीह के और मंडली के बिषय में
३३ बोलताहों तिस पर भी हरऐक तुम्हों मेंसे अपनी अपनी पत्नी
को ऐसा प्यार करे जैसा आपको करताहै और चाहिये कि
पत्नी अपने पति का आदर मान करे।

६ छठवां पर्व्व

१ हे बालको तुमलोग प्रभु के लिये अपने माता पिता की आज्ञा
२ में रहो क्योंकि यह ठीक है। तू अपने माता पिता को
३ प्रतिष्ठा दे जो पहिली आज्ञा प्रतिज्ञा सहित है। जिसतें
तेरा भला होवे और पृथिवी पर तेरा जीवन अधिक होवे।
४ और हे पितरो तुमलोग अपने बालकों को उदास करके
क्रुद्ध न करो परंतु ईश्वर की शिक्षा और उपदेश में उनका
५ प्रतिपाल करो। हे सेवको तुमलोग उनके जो जगत् में तुम्हारे
स्वामी हैं अपने मनकी सीधाई से डरते और थरथरातेऊए
६ ऐसे आज्ञा के बश में होओ जैसे मसीह केहो। न दृष्टि
सेवा से जैसा मनुष्य के प्रसन्न करनिहारों से परंतु जैसा
मसीह के सेवकों के समान मनसे ईश्वर की इच्छा पर चलो।
७ भला चाहके सेवा करो जैसा प्रभु की और न जैसा मनुष्यन्
८ की करतेहैं। कि जानतेहो जो कोई कुछ अच्छा काम करे
९ क्या दास क्या निर्बंध प्रभु से ऐसाही पावेगा। हे स्वामियो
तुमलोग भी उनसे ऐसेही करो और धमको देने में ठेकाने से
बाहर न जाओ क्योंकि तुमलोग जानतेहो कि तुम्हारा भी
स्वामी स्वर्ग पर है और वुह किसीको प्रगट दशा पर दृष्टि
१० नहीं करता। सो अंत्य में हे मेरे भाइयो प्रभु के सामर्थ्य के
११ पराक्रम से दृढ होओ। ईश्वर के सारे हथियार बांधो कि
१२ तुमलोग शैतान के छल के सन्मुख ठहरसको। क्योंकि हम
देह से और लोहू से बजनी नहीं करते परंतु प्रभुता और
पराक्रम से और जगत् के अंधकार के महाराजों से और
१३ आत्मिक दुष्टता से ऊंचेस्थान में। इस कारण तुमलोग
ईश्वर के सारे हथियार उठालेउ कि तुमलोग दुखके दिन
१४ साम्ना करसको और सब कार्य करके खड़े रहिसको। इस
लिये अपनी कमर को सत्यतासे कसके धर्म का झिलम
१५ पहिनके खड़ेरहो। और अपने पावों को कुशल के मंगल

१६ समाचार का जूता पहिनाओ। और सभों पर बिश्वास की ढाल बांधके जिसे तुमलोग उस दुष्ट के सारे अग्निके भालों
१७ को बुझासको। और उद्धार का टोप और आत्मा का खड्ग जो
१८ ईश्वर का बचन है लेलेउ। नित आत्मा में प्रार्थना और बिनती करतेऊए और उस पर सारी धुनिसे और गिड़गिड़ाने से
१९ समस्त धर्मी लोगों के कारण जागतेरहो। और मेरे कारण भी कि मुझे उच्चारण दियाजावे कि मेरा मुंह निर्भय से खुलजावे जिसतें मैं मंगलसमाचार के भेद को प्रकाश करों।
२० क्योंकि उसके लिये मैं एक दूत बंद में हों कि मैं उसको
२१ निर्भय से ऐसा कहों जैसा मुझे कहाचाहिये। और जिसतें तुमलोग भी मेरे समाचार को जानो कि मैं क्या करता हों तख़ीक़स जो प्यारा भाई और प्रभु का बिश्वासी सेवक है
२२ तुम्हों को सब बातें बतायेगा। कि मैंने उसे तुम्हारे पास इसी कारण भेजा कि तुमलोग हमारी दशा को जानो और वुह
२३ तुम्हारे अंतःकरणन् को शांति देवे। भाइयों को कुशल होवे और ईश्वर पिता के और प्रभु ईसा मसीह के ओर से
२४ बिश्वास के संग प्रेम मिले। उन सभों पर जो हमारे प्रभु ईसा मसीह से सच्चा प्रेम रखतेहैं अनुग्रह होवे आमीन।

पूलुस की पत्री फिलिप्पियों को

१ पहिला पर्व्व

१ पूलुस और तीमताऊस से जो ईसा मसीह के दास हैं फलिप्पी के समस्त सिद्धों को जो मसीह ईसा में हैं आचार्यों
२ और सेवकों समेत। अनुग्रह और कुशल हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह के ओर से तुम्हों पर होवे।
३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करताहों अपने ईश्वर का धन्य
४ मानताहों। अपनी हरएक प्रार्थना में सदा आनंद से
५ तुमसभों के लिये प्रार्थना करताहों। इसलिये कि तुमलोग मंगलसमाचार में पहिले दिन से आज लों भागी ऊऐहो।
६ इसी बातका निश्चय रखके कि जिसने तुम्होंमें उत्तम कार्य करना आरंभ किया सो ईसा मसीह के दिन लों करता चलाजायगा।
७ जैसा कि मुझे उचित है कि तुम्हारे बिषय में ऐसाही समुझों क्योंकि तुमलोग मेरे अंतःकरण में हो कि मेरे बंधनों में और मंगलसमाचार के पक्ष और ठहरावने में भी मेरे अनुग्रह में
८ साझी हो। क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि मैं ईसा मसीह
९ के हृदय में तुमसभों का कैसा अभिलाष करताहों। और मैं यह प्रार्थना करता हों कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान में और
१० बिवेक में बढ़ता चलाजाय। कि तुमलोग बेवरा की बातों को परखसको जिसतें तुमलोग निष्कपट होओ और मसीह के
११ दिन लों ठोकर न खाओ। और धर्म के फलों से जो ईसा मसीह से है भरजाओ कि ईश्वर का माहात्म्य और स्तुति
१२ किई जाय। परंतु हे भाइयो मैं चाहताहों कि तुमलोग जानो कि जो कुछ मुझ पर बीता है सो बिशेष करके मंगलसमाचार

१३ के अधिक फैलने के लिये ऊआ। यहांलों कि मसीह में मेरा बंधन समस्त राजभवन में और समस्त स्थानों में प्रगट ऊआ।
१४ और बऊतेरे भाई ने प्रभु में मेरे बंधनों से दृढ़ता पाके बचन को निर्भय से बोलने का अधिक साहस उत्पन्न किया।
१५ कितने तो हिंसका और बिरोध से और कितने प्रसन्नता से
१६ मसीह का उपदेश देतेहैं। पहिले के यह समझके कि मेरे बंधन पर पीड़ा अधिक करें बिरोध से न कि सच्चाई से मसीह
१७ का संदेश देतेहैं। परंतु और लोग प्रेम से यह जान के कि
१८ मैं मंगलसमाचार के पक्ष के कारण ठहरायाऊआ हों। सो क्या तिस पर भी समस्त रीति से मसीह का संदेश दियाजाताहै चाहे छल में चाहे सच्चाई में और इसमें मैं आनंद करताहों
१९ और आनंद करोंगा। क्योंकि मैं जानताहों कि तुम्हारी प्रार्थना से और ईसा मसीह के आत्मा की बढ़ती से यह मेरे उद्धार
२० का कारण होगा। जैसा कि मेरा बड़ा भरोसा और आशा है कि मैं किसी बात में लज्जित नहीं परंतु समस्त साहस से जैसासदा था वैसा अबभी मसीह मेरे देह में चाहे जीवन से
२१ चाहे मृत्यु से महिमा पावेगा। क्योंकि जीवन मेरे लिये मसीह
२२ है और मृत्यु लाभ है। परंतु जो मैं देह में जीओं तो यही मेरे परिश्रम का फल है तथापि मैं नहीं जानता कि मैं क्या
२३ चाहों। क्योंकि मैं दो के मध्य में सकेत में हों निर्बंध होने को अभिलाषी हों और मसीह के संग होओं जो अति अच्छा है।
२४ परंतु देह में रहना तुम्हारे कारण अधिक प्रयोजन है।
२५ और मैं यह निश्चय करके जानताहों कि मैं रहोंगा और तुमसभों के संग ठहरोंगा कि तुम्हारा बिश्वास और आनंदता
२६ बढ़तीजाय। जिसतें तुम्हों में मेरे फिरआवने के कारण से मुझ में तुम्हारा आनंदकरना मसीह ईसा में अधिक होवे।
२७ केवल तुम्हारी चलन मसीह के मंगलसमाचार के योग्य होवे कि जो मैं आओं और तुम्हें देखों अथवा न आओं

तुम्हारा यह समाचार सुनों कि तुमलोग एक आत्मा में स्थिर होरहेहो और मंगलसमाचार के बिश्वास के लिये
२८ एक मन होके एकट्ठे परिश्रम करतेहो। और अपने बिरोध करनिहारों से किसी बात में डराये न जाओ जो उनके लिये नाश का परंतु तुम्हारे लिये ईश्वर के ओर से उद्धार का
२९ चिन्ह है। क्योंकि मसीह के कारण से तुम्हें केवल यही नहीं दियागया कि तुमलोग उसपर बिश्वास लाओ परंतु यह भी
३० कि उसके कारण से दुख भी पाओ। वही परिश्रम रखके जो तुम्हों ने मुझ में देखा और अब सुनतेहो कि मुझ में है।

२ दूसरा पर्व्व

१ सो जों मसीह में कुछ सांत्वन जों कुछ प्रेम की प्रांति जों
२ आत्मा का कुछ मिलाप जों कुछ दया और स्नेह होय। तो मेरी आनंदता को पूरा करो कि एक स्वभाव रक्खो एकही
३ प्रेम रखके एक जीव और एक मन होओ। झगड़े और ब्यर्थ अभिमान से कुछ न करो परंतु मनकी नम्रता से एक दूसरे
४ को अपने से अच्छा समझो। कोई अपने लाभ का खोजी न
५ होवे परंतु हरएक औरों के। तुम्हों में वही मन होवे जो
६ मसीह ईसा में भी था। उसने ईश्वर का स्वरूप होके ईश्वर
७ के तुल्य होना चोरी न जाना। तिसपर भी अपने को हीन किया और दास का स्वरूप पकड़ा और मनुष्य का आकार
८ बना। और उसने मनुष्य के स्वरूप में प्रगट होके अपने को दीन किया और मरने लों अर्थात् क्रूस की मृत्यु लों आज्ञा के
९ बश में हुआ। इस कारण ईश्वर ने भी उसे अत्यंत महान् किया और उसको ऐसा नाम दिया जो समस्त नाम से श्रेष्ठ
१० है। कि ईसा के नाम पर हरएक घुठना जो स्वर्ग में और
११ पृथिवी में और जो पृथिवी के नीचे है टेकाजाय। और कि हरएक जिह्वा ईश्वर पिता की महिमा के लिये मानलेय कि

१२ ईसा मसीह प्रभु है। सो हे मेरे प्रिय जैसा तुम्हों ने सर्वदा आज्ञा मानीहै केवल मेरे साक्षात में नहीं परंतु अब मेरे वियोग में अधिक डरते और थरथराते अपने उद्धार के
१३ कार्य्य कियेजाओ। क्योंकि वुह ईश्वर है जो तुम्हों में कार्य्य करताहै कि तुमलोग उसकी अच्छी बांछा के समान इच्छा
१४ और कार्य्य करो। सब काम बिना कुड़कुड़ाते और बिना बिवाद
१५ करते करो। कि तुमलोग निर्दोष और सूधे होके ईश्वर के पुत्र दोष रहित टेढ़े तिरछे लोगों के बीच में बनेरहो जिनमें
१६ तुमलोग प्रकाश के समान जगत् में चमकतेहो। जीवन का बचन लियेऊए जिसतें मैं मसीह के दिन में आनंद करों कि
१७ मेरी दौड़ और परिश्रम व्यर्थ नऊआ। क्योंकि जो मैं तुम्हारे बिश्वास की सेवा और बलिदान पर ढालाजाऊं तो आनंद
१८ करताहों और तुमसभों को बधाई देताहों। और इसी कारण तुमलोग भी आनंद करो और मेरे संग बधाई करो।
१९ और मैं प्रभु ईसा में आशा रखताहों कि तीमताऊस को तुम्हारे पास शीघ्र से भेजों और तुम्हारा समाचार बूझके म
२० भी तृप्त होओं। क्योंकि ऐसे मनका मेरा कोई नहींहै जो
२१ स्वभाव से तुम्हारे लिये चिंता में होवे। क्योंकि सब अपनी अपनी वस्तु की खोज में हैं और उन वस्तुन की नहीं जो ईसा
२२ मसीह की हैं। परंतु तुमलोग उसको परखके जानतेहो कि उसने मेरे संग मंगलसमाचार में सेवा किई जैसा पिता के
२३ संग पुत्र करताहै। इस लिये आशा रखताहों कि अपने
२४ ऊपर जो होनिहार है देखके शीघ्र उसको भेजदेउं। परंतु मुझे प्रभु में भरोसा है कि मैं आप भी शीघ्र आओंगा।
२५ तिसपर भी अपाफरोदीतस को तुम्हारे समीप भेजना उचित जाना जो मेरा भाई और संगी सेवक और संगी सिपाही
२६ और तुम्हारा दूत और मेरे आवश्यक का सेवक। क्योंकि वुह तुमसभों का निपट अभिलाषी था और इस कारण कि

२७ तुम्हों ने सुना कि वुह रोगी था उदासीन था। और वुह तो रोगसे मरनेपर था परंतु ईश्वर ने उसपर दया किई और केवल उसी पर नहीं परंतु मुझ पर भी न होवे कि मुझ पर
२८ शोक पर शोक होवे। सो मैं ने उसे बड़े यत्नसे भेजा कि जब तुमलोग उसे फेर देखो तो आनंद करो और जिसतें मेरा
२९ भी शोक घटे। सो तुमलोग उसको प्रभु में बड़े आनंद से
३० ग्रहण करो और ऐसों को प्रतिष्ठित समझो। क्योंकि मसीही कार्य के लिये वुह मरने पर था कि मेरे लिये तुम्हारी सेवाकी घटती को पूरा करे अपने प्राण को कुछ न समझा।

३ तीसरा पर्व्व

१ अंत में हे मेरे भाइयो प्रभु में आनंद रहो कि एकही बात तुम्हें फिर फिर लिखना मेरे लिये क्लेश नहीं और तुम्हारे
२ लिये कुशल है। कुत्तों से बचेरहो कुकर्मियों से परे रहो
३ भिन्न करनिहारों से अलग रहो। क्योंकि हम वुह खतनः हैं जो आत्मा से ईश्वर की स्तुति करतेहैं और मसीह ईसा
४ में आनंद करतेहैं और देह का भरोसा नहीं करते। परंतु मैं देह का भरोसा रखसकाहों जो और कोई समझता है कि
५ मेरे देहके भरोसा के लिये कुछ है तो मैं अधिक। कि आठवें दिन में खतनः कियागया ईसराईल के कुलमें का बन्यमीन के परिवार में का इबरानियों का इबरानी ब्यवस्था के बिषय
६ में फरीसी। ज्वलन में पूछो तो मंडली का सतानेवाला
७ और ब्यवस्था के धर्म के बिषय में निर्दोष। परंतु जो वस्तें मेरे
८ लाभ की थीं मैं उन्हों को मसीह के लिये टूटी समझा। हां निःसंदेह अपने प्रभु मसीह ईसा के ज्ञान की उत्तमता के बिषय में मैं समस्त बस्तुन को टूटी समझताहों मैंने उसके लिये हरएक बस्तु की टूटी सहलिई और उन्हें कूड़ा की
९ नाईं जानताहों कि मसीह को लाभ में पाओं। और उसमें

पायाजाओं अपनेही धर्म में नहीं जो व्यवस्थासे है परंतु उसके जो मसीह के बिश्वाससे है वुह धर्म जो ईश्वर से
१० बिश्वास के द्वारा से है। कि मैं उसको और उसके जीउठने के पराक्रम को और उसके संग दुखों में साझी होने को
११ जानों और उसकी मृत्यु की नाईं कियागया। कि किसी
१२ रीति से मैं जीउठने के पद लों पहुंचों। यह नहीं कि जैसा मैं प्राप्त करचुका अथवा सिद्ध होचुका परंतु पीछा किये जाताहों कि उसको धारण करों जिसके लिये मसीह ईसा
१३ से मैं धारण कियागयाहों। हे भाइयो मैं यह नहीं समुझता कि मैं प्राप्त करचुकाहों पर इतना है कि मैं उन बस्तुन को जो पीछे हैं भूल भूलके उनके लिये जो आगे हैं बढ़ाहुआ
१४ जाताहों। मैं मसीह ईसा में ईश्वर के बड़े बुलावा के दांवके
१५ लिये झंडा के ओर खिंचाजाताहों। सो जितने हमों में पहुंचेहुए हैं ऐसा मन रक्खें और जो किसी बात में तुम्हारा मन औरही होय ईश्वर तुम्होंपर यह प्रकाश करेगा।
१६ तिसपर भी जहांलों हमों ने प्राप्त कियाहै उसी व्यवहार पर
१७ चलें और उन्हीं बातों को मानें। हे भाइयो मेरे पश्चात्गामी होओ और उन्हें जो ऐसे चलतेहैं जैसा हम तुम्हारे लिये
१८ बानगीहैं चीन्ह रक्खो। क्योंकि बहुतेरे चलतेहैं जिनकी चर्चा मैंने तुम्हों से बारंबार किई और अब रोरोके
१९ कहताहों कि वे मसीह के क्रूस के शत्रु हैं। उनका अंत नाश है पेट उनका ईश्वर उनकी लज्जा उनकी बड़ाई है उनका
२० स्वभाव लौकिक है। परंतु हमारा व्यवहार स्वर्ग में है जहां से हम निस्तार करनिहार प्रभु ईसा मसीह की बाट भी
२१ जोहतेहैं। वुह अपने पराक्रम के कार्य के समान जिस्से वुह सभों को अपने बश में करसक्ताहै हमारे निकम्मे देह को बदलडालेगा कि उसके तेजस्वी शरीर के समान होय।

४ चौथा पर्व्व

१ इस कारण हे मेरे अति प्रिय और लालसित भाइयो मेरे आनंद और मुकुट हे अति प्रिय प्रभु में दृढता से खड़ेरहो।
२ मैं अपूदियः से और संतकी से बिनती करताहों कि वे प्रभु में
३ एकही मन होरहें। और हे निष्कपट संगी मैं तेरी भी बिनती करताहों कि उन स्त्रियों का जिन्हों ने मेरे संग मंगलसमाचार की सेवा में परिश्रम किया क्लीमन और मेरे और और संगी सेवकों के संग जिनके नाम जीवन के पुस्तक
४ में हैं सहाय कर। प्रभु में सर्बदा आनंद करो फेर कहताहों कि आनंद करो तुम्हारी धीरता समस्त मनुष्यन को जानीजाय
५ प्रभु समीप है। किसी बात की चिंता न करो परंतु हरएक बात में तुम्हारी प्रार्थना और बिनती धन्यबाद के संग ईश्वर
७ से किईजाय। और ईश्वर की शांति जो सारी समुझ से बाहर है तुम्हारे अंतःकरण और मन की रखवारी मसीह
८ ईसा के कारण करेगी। सो अब हे भाइयो जितनी बस्तें सच हैं जितनी बस्तें योग्य हैं जितनी बस्तें न्याय की हैं जितनी बस्तें पवित्र हैं जितनी बस्तें प्रिय हैं जितनी बस्तें शुभमान हैं जो कुछ गुण और कुछ स्तुति होवे तो इन बातों का स्मरण
९ करो। और जिन बातों को तुम्हों ने मुझसे सीखा और अंगीकार किया और सुना और देखा उन पर चलो तब
१० शांति का ईश्वर तुम्हारे संग रहेगा। परंतु मैं प्रभु में बहुत आनंदित हुआ कि अब अंतमें तुम्हारी चिंता मेरे लिये फेर लहलहाती है तुमलोग तो आगे मेरे लिये चिंतामें थे परंतु
११ तुम्हें अवसर न मिला। परंतु मैं कुछ चाहके नहीं कहता क्योंकि मैं ने सीखाहै कि जिस दशामें हों उसीमें संतोष करों।
१२ मैं घटने जानताहों और बढ़ने जानताहों हर स्थानमें और सब बातों में मैं ने उपदेश पायाहै संतुष्ट होने में भूखा होने
१३ में बढ़ने में और सहने में। मसीह के सामर्थ्य से मैं सब कुछ

१४ करसक्ताहों। तिसपर भी तुम्हों ने भला किया कि दुख में मेरा
१५ सहाय किया। क्योंकि हे फिलिप्पियो तुमलोग तो जानते हो कि
मंगलसमाचार के आरंभ में जब मकदूनियः से मैं निकल आया
तब किसी मंडली ने केवल तुम्हारे देनेलेने में मेरा सहाय न
१६ किया। क्योंकि तसलूनीकी में भी तुम्हों ने मेरे प्रयोजन के
१७ लिये कुछ भेजा। यह नहीं कि मैं दान चाहताहों परंतु
१८ चाहताहों कि फल तुम्हारे लिये भरपूर होय। क्योंकि मेरे
सबकुछ है और अधिक है मैं संपूर्ण हों कि तुम्हारी भेजीऊई
वस्तु अपफ्रोदीतस के हाथ से पाई सुगंध और ग्राह्य
१९ बलिदान जीस्से ईश्वर प्रसन्न है। परंतु मेरा ईश्वर अपने
ऐश्वर्य के धन के समान तुम्हारे हरएक प्रयोजन को मसीह
२० ईसा में भरदेगा। अब हमारे पिता ईश्वर के लिये स्तुति
२१ नित्य नित्य होवे आमीन। मसीह ईसा में हरएक सिद्धों को
नमस्कार कहो भाइलोग जो मेरे संग हैं तुम्हें नमस्कार
२२ कहते हैं। समस्त सिद्ध विशेष करके वे जो कैसर के घराने
२३ के हतम्ह नमस्कार कहतेहैं। हमारे प्रभु ईसा मसीह का
अनुग्रह तुमसभों पर होवे आमीन।

पूलूस की पत्री क़लस्सियों के लिये

१ पहिला पर्व्व

१ ईश्वर की इच्छा से ईसा मसीह का प्रेरित पूलूस और भाई
२ तीमताऊस। उन सिद्धों और मसीह में बिश्वासी भाइयों के
लिये जो क़लस्सी में हैं हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा
३ मसीह से अनुग्रह और चैन तुम्हारे लिये होवे। हम ईश्वर
का धन्यबाद करतेहैं और हमारे प्रभु ईसा मसीह के पितासे
४ तुम्हारे लिये नित्य प्रार्थना करतेहैं। जबसे हमने मसीह ईसा
५ में तुम्हारा बिश्वास और समस्त सिद्धों पर प्रेम सुना। उस
आशा के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग पर धरीहै जिसका
बर्णन तुम्होंने आगे मंगलसमाचार के सत्य बचन में सुना।
६ जो तुम लों आया जैसा समस्त जगत में है जैसा कि तुम्हारे
मध्य में भी जिस दिन से तुम्होंने उसे सुना और ईश्वर के
७ अनुग्रह को सचाई से जाना फल लावताहै। जैसा तुम्हों
ने हमारे प्रिय संगी सेवक इपाफ्रस से भी जो तुम्हारे कारण
८ मसीह का बिश्वासी सेवक है ऐसाही सीखाहै। उसने
९ तुम्हारा आत्मिक प्रेम हम पर प्रगट किया। इस कारण
हमने भी जिस दिन से यह सुना तुम्हारे कारण प्रार्थना
करने से नहीं थमते और बिनती करतेहैं कि तुमलोग उसकी
इच्छाके ज्ञान से समस्त बुद्धि में और आत्मिक समुझ में
१० भरजाओ। और तुम्हारी चाल ऐसी हो जैसी प्रभु के योग्य
होवे सबको प्रसन्न करतेऊए और हरएक अच्छे काम में
११ फलित होओ और ईश्वर के ज्ञान में बढ़तेजाओ। उसके
पराक्रम के महात्म्य के समान समस्त धीरज और संतोष और

१२ आनंद से दृढ़ता पाके। पिता की स्तुति करतेरहो जिसने हमको इस योग्य किया कि प्रकाश में सिड्डों के संग अधिकार
१३ के भागी होवें। उसीने हमको अंधकार के पराक्रम से
१४ छुड़ाया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में लाया। हम उसी में उसके लोहू के कारण से उद्धार अर्थात् पाप मोचन
१५ पावतेहैं। वुह उस अदृश्य ईश्वर का स्वरूप है और वुह
१६ सारी सृष्टि से पहिलौंठा है। क्योंकि उस्से समस्त बस्तें जो स्वर्ग और पृथिवी पर हैं दृश्य और अदृश्य क्या सिंहासन क्या आज्ञा क्या प्रभुता क्या मुखिया सिरजीगईं हैं समस्त बस्तें
१७ उस्से और उसके लिये उत्पन्न ऊईं हैं। वुह सबसे आगे है
१८ और उसमें सभों की अस्ति है। और वुह देह का अर्थात् मंडली का सिर है वही आरंभ है और मृतकन से पहिलौंठा
१९ है कि समस्त बस्तुन में वुह प्रधानता पावे। क्योंकि उसे
२० अच्छालगा कि सारी संपूर्णता उसमें होवे। और उसके क्रूस के लोहू के कारण से मिलाप करके समस्त बस्तुन को मिलालेवे हां उसी से सब वस्तुन को क्या भूमि पर क्या स्वर्ग पर अपने
२२ में मिलालेवे। और तुम्हों को जो आगे परदेशी और कुकर्म के कारण से मनमें शत्रु थे उसने अब अपने शारीरिक देह में मृत्यु के कारण से मिलालिया कि तुम्हें अपनी दृष्टि में
२३ पवित्र और निर्दोष और निष्पाप ठहरावे। जो तुमलोग बिश्वास में स्थिर और दृढ़ रहो और मंगलसमाचार की आशा से जिसे तुम्होंने सुना टल न जाओ जिसका उपदेश समस्त सृष्टि के लिये जो स्वर्ग के नीचे है कियागया जिसका
२४ मैं पूलूस सेवक बनाहों। जो अब अपने उन दुखों में जो तुम्हारे कारण खींचताहों आनंद करताहों और मसीह के क्लेशों की घटती उसके देह के अर्थात् मंडली के कारण अपने
२५ देह में भरदेताहों। जिसका मैं सेवक ऊआ जैसा कि यह भंडारपन ईश्वर के ओर से मुझे तुम्हार लिये दियागया कि मैं

२६ ईश्वर के बचन का संपूर्ण उपदेश करों। अर्थात् उस भेद को
जो समयों से और पीढ़ियों से गुप्त रहा परंतु अब उसके
२७ सिद्धों पर प्रगट ज़आ जिन्हों पर ईश्वर ने उस भेद की
महिमा की बज़ताई को जो अन्यदेशियों में है प्रगट करने को
२८ ठहराया जो मसीह तुम्हों में महिमा की आशा है। हम
उसीका उपदेश देके हरएक मनुष्य को चेतावतेहैं और
हरएक मनुष्य को समस्त बुद्धि से शिक्षा देतेहैं कि हम हरएक
२९ मनुष्य को मसीह ईसा में सिद्ध करके साक्षात करें। उसीके
लिये मैं भी उसके कार्य करने के समान जो मुझ में पराक्रम
से करताहै परिश्रम से यत्न करताहों।

२ दूसरा पर्व

१ मैं चाहताहों कि तुमलोग जानो कि मैं तुम्हारे और उनके
कारण जो लाओदीकियः में हैं और उनसभों के कारण
जिन्हों ने शरीर में मेरे खरूप को नहीं देखा क्याही झंझट
२ उठावताहों। जिसतें उनका अंतःकरण शांति पावे कि प्रेम
में और परिपूर्णताके धन के समुझ में बुनेजायं कि ईश्वर
अर्थात् पिता के और मसीह के भेद को मानलेने के लिये।
४ उसमें बुद्धि और ज्ञान के समस्त भंडार गुप्त हैं। और म
यह कहताहों न होवे कि कोई फुसलावने की बात से तुम्हें
५ बहकावे। क्योंकि यद्यपि मैं देह में अलग हों परंतु आत्मा में
तुम्हारे संग हों और तुम्हारे बिधि और दृढ़ता को और
६ मसीह में तुम्हारे बिश्वास को देखके आनंद करताहों। सो
जैसा तुम्हों ने मसीह ईसा प्रभु को ग्रहण किया वैसी उसमें
७ चलन चलो। उसमें जड़ बांधके और बनायेजाके और जैसी
तुम्हों ने शिक्षा पाई है बिश्वास में स्थिर होजाओ और उसमें
८ धन्यबाद करतेज़ए बढ़तेजाओ। सावधान रहो न होवे कि
कोई तुम्हें बिद्याके कारण से और ब्यर्थ कपट से जो मनुष्य के

कहावत के समान और लौकिक रीति के ऐसा लूट न लेवे
९ और मसीह के समान नहीं। क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की
१० समस्त संपूर्णता देह सहित बासकर रहीहै। और तुमलोग
उसमें संपूर्णहो जो सारी प्रभुता और पराक्रम का मस्तकहै।
११ उसमें तुमलोगभी बिना हाथ के खतनः से खतनः कियेगयेहो
देह के पापों को मसीही खतनः के कारण से तुम्होंने उतार
१२ डाला। उसके संग स्नान में गाड़ेगये जिसमें तुमलोगभी उस
ईश्वर के सामर्थ्य पर बिश्वास लावने के कारणसे जिसने उसको
१३ मृतकन में से जिलाया उसके संग जिलायेगये। और उसने
तुम्हें जो अपराधों और अपने देह के अखतनः से मृतक थे
उसके संग एकल्ले जिलाया कि उसने तुम्हारे सारे अपराधों
१४ को क्षमा किया। और हमारे बिषय में हाथके लिखेहुए
बिधि को जो हमसे बिपरित था मिटाडाला और उसको
१५ अलग करके क्रूस पर कीलसे ठोंकदिया। और प्रभुता और
पराक्रम को बिगाड़के उसने उन्हों पर जय करतेहुए प्रगट
१६ में उनको सवांग बनया। इस कारण खाने पीने के अथवा
पर्ब्ब के अथवा अमावास्या के अथवा बिश्राम के बिषय में कोई
१७ तुम्हारा बिचार न करे। कि ये सब आवनेवाली बस्तुन की
१८ परछाहीं हैं परंतु देह मसीह का है। कोई तुम्हें अधिक
दीनता और दूतों की पूजा करनेसे तुम्हारे फलसे निष्फल
न करे कि उन बस्तुन में जिन्हें उसने नहीं देखा घुसताहै
१९ और अपने शारीरिक मन से ब्यर्थ फूलताहै। और मस्तक
को नहीं पकड़ता जिस्से सारा देह बंदबंद और गांठगांठ
प्रतिपाल पाके और एकल्ले जड़जाके ईश्वर की बढ़ती से
२० बढ़ताहै। सो जो तुमलोग संसारी रीति से मसीह के
संग मरेहो तो क्यों उनके समान जो जगत् में जीवतेहैं
२१ ठहराएहुए के बश में हो। छू मत चीख मत हाथ न लगा।
२२ वे समस्त बस्तें करतेहुये बिगड़तीजातीहैं और मनुष्यन की

२३ आज्ञाओं और उपदेशों के समान होतीहैं। ये बस्तें अपनी इच्छा की पूजा और दीनताई में ज्ञान के तुल्य देखी तो जातीहैं और देह का अनादर करना और शरीर की संतुष्टता के कुछ सन्मान के लिये नहीं।

३ तीसरा पर्व्व

१ सो जो तुमलोग मसीह के संग जीउठेहो तो ऊपर की बस्तुन
२ को खोजो जहां मसीह ईश्वर के दहिने ओर बैठाहै। ऊपर की बस्तुन पर चित्त लगाओ और उन बस्तुन पर नहीं जो
३ भूमि पर हैं। क्योंकि तुमलोग मरगयेहो और तुम्हारा
४ जीवन मसीह के संग ईश्वर में छिपाहै। जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा उसके संग तुमलोग भी ऐश्वर्य
५ में प्रगट होगे। इस कारण अपने इंद्रियों को जो भूमि पर हैं अर्थात् ब्यभिचार अपवित्रता अतिमोह बुरीलालसा की
६ इच्छा और लोभ को जो मूर्त्तिपजा है माराकरो। उन्हीं के कारण से ईश्वर का क्रोध आज्ञा भंगकरनेवाले पुत्रों पर
७ उतरताहै। और आगे जब तुमलोग उनमें जीतेथे उनमें
८ तुमलोग भी चलतेथे। पर अब तुम्हों ने उनसभों को अर्थात् रिस और क्रोध और डाह और पाषंड और फूहर बातचीत
९ को अपने मुंह से निकालफेंकाहै। एक दूसरे से झूठ न बोले कि तुम्हों ने पुरानी मनुष्यता को उसकी करनी समेत उतार
१० फेंका। और नवीन को जो ज्ञान में अपने सिरजनहार के
११ स्वरूप के समान नवीन ऊईहै पहिना। वहां न यूनानी है न यहूदी न खतनः न अखतनः न म्लेच्छ न स्कूति न बंध न
१२ निर्बंध पर मसीह सब और सब में है। सो ईश्वर के चुनेऊए पवित्र और प्रिय के समान अंतःकरण की अतिदया नम्रता का मन कोमलता और अतिसहाव को पहिन लेउ।
१३ जो कोई किसीसे झगड़ा रक्खे तो एक दूसरे पर धीरज करे

और एक दूसरे पर क्षमा करो जैसा मसीह ने भी तुम पर क्षमा
१४ किया वैसाही तुमलोग भी करो। और इन सभों से अधिक
१५ प्रेम को जो सिद्धताका बंधन है। ईश्वर का कुशल तुम्हारे
अंतःकरण में राज्य करे जिसमें तुमलोग एकदेह होकर
१६ बुलायेगयेहो धन्य मानाकरो। मसीह के बचन तुम्हों में समस्त
ज्ञान में अधिकाई से बसें कि तुमलोग एक दूसरे को सिखावते
और उपदेश करते गान और भजन और शुभगीत अपने
१७ अंतःकरण में अनुग्रह के संग प्रभु के लिये गातेजाओ। और
जो कुछ तुमलोग बाचा और क्रिया में करतेहो प्रभु ईसा
के नाम में करो और उसीके ओर से ईश्वर और पिता की
१८ स्तुति कियाकरो। हे पत्नियो अपने अपने पति के बश में रहो
१९ जैसा प्रभु में योग्य है। हे पतियो अपनी पत्नियों को प्यार
२० करो और उनसें कड़ुआ न होओ। हे बालको तुमलोग
अपने माता पिता की हरएक बात में आज्ञा मानो क्योंकि
२१ प्रभु को यही भावताहै। हे पितरो अपने बालकों को मत
२२ कलपाओ न होवे कि वे उदास होजायं। हे सेवको तुमलोग
उनकी जो शरीर के बिषय में तुम्हारे स्वामी हैं समस्त बातों
में आज्ञा मानो पर मनुष्यन के प्रसन्न करनिहारों की नाईं
दिखाने को नहीं परंतु मन की सीधाई से ईश्वर से डरतेऊए।
२३ और जो कुछ करो सो अंतःकरण से जैसा प्रभु के लिये करो
२४ और मनुष्यन के लिये नहीं। यह जानतेऊए कि तुमलोग
प्रभु से अधिकार का फल पाओगे क्योंकि तुमलोग प्रभु मसीह
२५ की सेवा करतेहो। पर वुह जो अपराध करताहै सो अपने
अपराध के समान पावेगा और मनुष्यत पर दृष्टि न होगी।

४ चौथा पर्व्व

१ हे स्वामियो सेवकों के बिषय में धर्म और न्याय करो यह
२ जानके कि तुम्हारा भी एक स्वामी स्वर्ग में है। प्रार्थना

३ कियेजाओ और उसमें धन्यबाद से चौकस रहो। और उसके संग हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि ईश्वर हमारे लिये उच्चारण का द्वार खोले कि मैं मसीह के भेद को जिसके ४ लिये मैं बंद में भी हों बर्णन करों। कि जैसा मुझे उचितहै ५ वैसा उसको प्रगट करों। समय को सफल जानके उनके संग ६ जो बाहर हैं बुद्धि से चलो। तुम्हारी बात सर्बदा अनुग्रह से मिलीरहे और लोन से स्वादित होय जिसतें तुमलोग ७ जानो कि हरएक को क्योंकर उत्तर दियाचाहिये। तखि़कस जो प्यारा भाई और बिश्वासी सेवक और प्रभु की सेवा में ८ साझी है मेरे समस्त समाचार को तुम्हें सुनावेगा। जिसको मैंने इसलिये तुम्हारे पास भेजाहै कि वुह तुम्हारी दशा ९ देखलेवे और तुम्हारे मनको शांति देवे। उसके संग अनीसमस को जो बिश्वासी और प्रिय भाई है जो तुम्होंमें का है १० भेजदिया वे तुम्हें यहां के समस्त संदेश पहुंचायेंगे। अरस्तरखु़स मेरा संगी बंधुआ तुम्हें नमस्कार कहताहै और बरनबास का भांजा मरक़ुस जिसके बिषय में तुम्होंने आज्ञा पाई जो ११ वुह तुम्हारे पास आवे तो उसको ग्रहण करो। और ईसा जो यूस्तस कहावताहै जो खतनः कियेगयों में से हैं केवल ये ईश्वर के राज्य के कारण मेरे संगी सेवक हैं और मेरे लिये १२ शांति के कारण हुएहैं। अपाफरास जो तुम्होंमें से मसीह का दास है तुम्हों को नमस्कार कहताहै और वुह तुम्हारे कारण सदा बड़े परिश्रम से प्रार्थना करताहै कि तुमलोग ईश्वर की समस्त इच्छा में सिद्ध और संपूर्ण होके स्थिर १३ रहो। क्योंकि मैं उसका साक्षी हों कि वुह तुम्हारे और उनके कारण जो लाऊदीक़िया में और जो हीरूपलस में हैं १४ बहुत ज्वलित है। लूक़ा प्रिय वैद्य और दामास तुम्हें नमस्कार १५ कहतेहैं। तुमलोग उन भाइयों को जो लाऊदीक़िया में हैं और नमफास को और मंडली को जो उसके घरमें है

१६ नमस्कार कहो। और जब यह पत्री तुम्हों में पढ़ीजाय तो ऐसा करो कि लाऊदोकियों की मंडली में भी पढ़ीजाय और
१७ लाऊदोकिया की पत्री तुमलोग भी पढ़ो। और अरकिप्पस से कहो कि तू उस सेवकाई को जो तूने प्रभु से पाई है
१८ चौकसी से रख कि तू उसे संपूर्ण करे। मुझ पूलूस के हाथ से नमस्कार और मेरे बंधनों को स्मरण करो अनुग्रह तुम्हों पर होवे आमीन।

पूलूस की पहिली पत्री तसलूनियों को

---

१ पहिला पर्व्व

१ पूलूस और सलावानिस और तीमताऊस तसलूनियों की मंडली को जो पिता ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह में है अनुग्रह और कुशल हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा
२ मसीह की ओर से तुम्हारे लिये होवे। हम तुम्हारे कारण ईश्वर की स्तुति सर्बदा करतेहैं और अपनी प्रार्थना में तुम्हें
३ स्मरण करतेहैं। अपने पिता ईश्वर के आगे तुम्हारे बिश्वास के कार्य और प्रेम के परिश्रम और संतोष की आशा को जो
४ हमारे प्रभु ईसा मसीह में है नित्य स्मरण करतेहैं। हे प्रिय भाइयो हम जानतेहैं कि तुमलोग ईश्वर के चुनेऊरहो।
५ क्योंकि हमारा मंगलसमाचार केवल बचन में नहीं परंतु सामर्थ्य में और धर्मात्मा में और बड़े निश्चय में तुम्हों में आया

जैसा कि तुमलोग जानतेहो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हों में
६ कैसे थे। और तुमलोग उस बचन को बड़े क्लेश के संग धर्मात्मा
के आनंद से पाकर हमारे और प्रभु के पीछे होलिये।
७ यहांलों कि तुमलोग मकदूनियः और अखाइयः के समस्त
८ बिश्वासियों के लिये बानगी बने। क्योंकि तुम्हों से प्रभु के बचन
का शब्द केवल मकदूनियः और अखाइयः में नहीं पक्कंचा
परंतु हरएक स्थान में तुम्हारा बिश्वास जो ईश्वर पर है
फैलगया यहांलों कि हमारे कहने का प्रयोजन नहीं।
९ क्योंकि वे आप हमारे बिषय में बतावतेहैं कि हमारा प्रवेश
करना तुम्हों में कैसा क्रआ और तुमलोग क्योंकर मूर्त्तिन से
ईश्वर के ओर फिरे कि जीवते और सच्चे ईश्वर की सेवा
१० करो। और उसके पुत्र अर्थात् ईसा की जिसे उसने मृतकन
में से जिलाया बाट जोहो कि स्वर्ग पर से आवे जो हमों को
आवनिहार क्रोध से बचावताहै।

२ दूसरा पर्व्व

१ हे भाइयो तुमलोग तो आप जानतेहो कि हमारा प्रवेश करना
२ तुम्हों में व्यर्थ न था। परंतु जैसा तुमलोग जानतेहो कि हम
आगे फिलिप्पी में दुख और दुर्गति उठाके अपने ईश्वर में
निर्भय थे कि ईश्वर का मंगलसमाचार बड़े बिवाद के संग
३ तुम्हों से कहतेथे। क्योंकि हमारा उपदेश करना भरमाने
४ और अपवित्रता और छल से न था। परंतु जैसा ईश्वर ने
हमें मंगलसमाचार सौंपने को योग्य जाना वैसाही हम
बोलतेहैं न जैसा कि मनुष्यन को प्रसन्न करतेहैं परंतु जैसा
५ ईश्वर को जो हमारे अंतःकरणों को परखताहै। जैसा
तुमलोग जानतेहो कि हम फुसलाने की बात से कधी न
६ बोलतेथे न लोभ के आड़ में ईश्वर साक्षी है। न मनुष्य से
न तुम्हों से न और किसी से बड़ाई ढूंढ़तेथे यद्यपि हम मसीह

७ के प्रेरितों के समान तुम्हों पर बोझ डालसक्तेथे। पर हम तुम्हारे मध्य में ऐसे कोमल थे जैसे दाई जो अपने बालकों
८ की सेवा करतीहै। सो हम तुम्हारे ओर अति दयावान होके चाहतेथे कि केवल ईश्वर के मंगलसमाचार को नहीं परंतु अपने प्राण को भी तुम्हें देवें इस कारण कि तुमलोग
९ हमारे प्रिय थे। क्योंकि हे भाइयो तुमलोग हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण करतेहो क्योंकि हम इसलिये कि तुम्हों में किसी पर बोझ न होवें रात दिन हाथ से परिश्रम करके
१० तुम्हों में ईश्वर के मंगलसमाचार का उपदेश करतेथे। ईश्वर और तुमलोग साक्षी हो कि क्याही पवित्रताईसे और सच्चाई से और निर्दोषता से हमलोग तुम बिश्वासियों में निर्बाह
११ करतेथे। जैसा कि तुमलोग जानतेहो कि हम तुम्हों में हरएक को क्योंकर धीरज और शांति देते और उपदेश करतेथे
१२ ऐसे जैसे पिता बालकों को। कि तुम्हारी चाल ईश्वर के बुलाएऊए के योग्य होवे जिसने तुम्हें अपने राज्य और ऐश्वर्य
१३ में बुलाया। इस कारण हम निरंतर ईश्वर का धन्य मानतेहैं कि जब तुम्हों ने ईश्वर के बचन को जिसे तुम्होंने हमसे सुना ग्रहण किया उसे मनुष्यन के बचन के समान नहीं परंतु ईश्वर के बचन के समान कि वुह सचमुच है ग्रहण किया वुह तुम
१४ बिश्वासियों में कार्य करताहै। क्योंकि भाइयो तुमलोग ईश्वर की मंडलियों के जो यहूदियः में ईसा मसीह में हैं मार्ग पर चले क्योंकि तुम्हों ने भी अपने देशियों से वैसे दुख
१५ पाये जैसे उन्हों ने यहूदियों से। जिन्हों ने प्रभु ईसा को और अपने आगमज्ञानियों को मारडाला और हमों को सतायाहै और वे ईश्वर को प्रसन्न नहीं करते और समस्त मनुष्यन के
१६ बिरोधी हैं। कि अपने पाप को नित भरपूर करें हमें अन्यदेशियों को बचन कहने से कि वे उद्धार पावें बरजतेहैं
१७ क्योंकि ईश्वर का क्रोध उनपर अत्यंत लों पऊंचा। परंतु हे

भाइयो हमने तुम्हों से थोड़ी बेरलों साक्षात में अलग
कियाजाके और अंतःकरण में नहीं बहुत अभिलाष से अत्यंत
१८ यत्न किया कि तुम्हारा मुंह देखें। इस कारण हमने अर्थात् मैं
पूलूसने एक अथवा दो बार चाहा कि तुम्हारे पास आओं
१९ पर प्रयतान ने हमें रोका। क्योंकि हमारी आशा अथवा
आनंद अथवा आनंद करनेका मुकुट क्या है क्या तुमलोग
हमारे प्रभु ईसा मसीह के आतेऊए उसके सन्मुख नहींहो।
२० क्योंकि तुम्हीं हमारी बड़ाई और आनंद हो।

३ तीसरा पर्व्व

१ इस कारण जब हम आगे सहि न सके तो हम मानगये कि
२ आसोनः में अकेले छोड़ेजायं। और हमने अपने भाई और
ईश्वर के सेवक और मसीह के मंगलसमाचार में हमारे
संगी परिश्रमी तीमताऊस को भेजा कि तुम्हों को दृढ़ करे
३ और तुम्हारे बिश्वास के बिषय में शांति देवे। कि कोई इन
क्लेशों के कारण से न डगमगावे क्योंकि तुमलोग आप जानतेहो
४ कि हमलोग इन्हीं के लिये ठहरायेगये हैं। क्योंकि जब हम
तुम्हारे पासभी थे तब हमने तुम्हें आगे कहा कि हम दुख पावेंगे
५ जैसा कि वही ऊआ और तुमलोग जानतेहो। क्योंकि इसी
कारण जब मैं आगे सहि न सका तो तुम्हारा बिश्वास बूझनेको
भेजा न होवे कि तुम्हें परीक्षकने किसी रीति से भरमायाहो
६ और हमारा परिश्रम ब्यर्थ होजाय। पर अब जब तीमताऊस
तुम्हों से हमारे पास फिर आया और तुम्हारे बिश्वास और
प्रेम का अच्छा संदेश लाया और कि तुमलोग सदा हमारा
अच्छा स्मरण करतेहो और हमारे देखने के अति अभिलाषी
७ हो जैसे हम भी तुम्हारे। इस लिये हे भाइयो हमने अपने
समस्त दुख और शोक में तुम्हारे बिश्वास के कारण से शांति
८ पाई। क्योंकि अब हम जीतेहैं जों तुमलोग प्रभु में स्थिर रहो।

९ क्योंकि उन समस्त आनंद के लिये जिस्से हम तुम्हारे लिये ईश्वर के आगे आनंद करतेहैं तुम्हारे बिषय में क्योंकर धन्य
१० मानसकें। हम रात दिन अत्यंत ध्यान से प्रार्थना करतेहैं कि तुम्हारा मुंह देखें और तुम्हारे बिश्वास की घटती को भरदेवें।
११ और ईश्वर और हमारा पिता आप और प्रभु ईसा मसीह
१२ ऐसा करे कि हमारा आना तुम्हारे ओर होवे। और प्रभु तुम्हें को आपुस की प्रीति में और सभों में जैसी हमको तुम्हों
१३ सेहै बढ़ावे और अधिक करे। यहांलों कि तुम्हारे अंतःकरण दृढ़ता पावें कि जब हमारा प्रभु ईसा मसीह अपने समस्त साधुन के संग आवे तब तुमलोग ईश्वर के अर्थात् हमारे पिता के आगे पवित्रता में निर्दोष निकलो।

४ चौथा पर्ब्ब

१ सो जो रहिगयाहै हे भाइयो हम तुम्हों से प्रभु ईसा के कारण बिनती करतेहैं और उपदेश देतेहैं कि जैसा तुम्होंने हमसे पाया कि क्योंकर चलाचाहिये और ईश्वर को प्रसन्न
२ कियाचाहिये सो उसमें अधिक बढ़तेजाओ। क्योंकि तुमलोग जानतेहो कि हमने तुम्हों को प्रभु ईसा के ओर से क्या क्या
३ आज्ञा दिईं। क्योंकि ईश्वर की इच्छा तुम्हारी पवित्रताई है
४ कि तुमलोग ब्यभिचार से बचेरहो। कि हरएक तुम्होंमेंसे जाने कि अपने अपने पात्र को पवित्रता से और प्रतिष्ठा से रक्खे।
५ और कामाभिलाष में अन्यदेशीयों की नाईं नहीं जो ईश्वर
६ को नहीं पहिचानतेहैं। कि कोई अपने भाई से धूर्त्तता और छल न करे क्योंकि प्रभु समस्त ऐसों का पलटालेगा जैसा कि
७ हमने आगे भी तुम्हों से कहा और साक्षी दिई। क्योंकि ईश्वर ने हमको अपवित्रता में नहीं परंतु पवित्रता में बुलाया है।
८ इसकारण जो कोई अवज्ञा करताहै सो मनुष्य की नहीं परंतु ईश्वर की जिसने अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया अवज्ञा

९ करताहै। परंतु भाई कोसी प्रीति के बिषय में तुमलोग आधीन
नहीं कि कोई तुम्हें लिखे क्योंकि तुम्होंने आप आपुस की प्रीति
१० में ईश्वर से शिक्षा पाई। और निश्चय तुमलोग उन सारे
भाइयों से जो समस्त मकदूनियः में हैं ऐसाही करतेहो परंतु
हे भाइयो हम तुम्हारी बिनती करतेहैं कि तुमलोग अधिक
११ बढ़तेजाओ। और जिस प्रकार से हमने तुम्हें आज्ञा किई कि
तुमलोग चैन से रहो और कि अपने अपने कामकाज करने
में और अपनेही हाथों से कार्य करने में धुनि से रहो।
१२ जिसतें तुमलोग उन्हों के आगे जो बाहर हैं प्रतिष्ठा से चलो
१३ और किसीके आधीन नहोओ। परंतु हे भाइयो मैं नहीं
चाहता कि तुमलोग उनके बिषय में जो सोगएहैं अनजान
रहो कि तुमलोग औरों के समान जो निराश हैं शोक न
१४ करो। क्योंकि जो हम बिश्वास करें कि ईसा मूआ और
उठा ऐसाही वे भी जो मसीह में सोएहैं उसके संग ईश्वर
१५ लेआवेगा। इस कारण हम तुम्हें प्रभु के बचन से यह
कहतेहैं कि हम जो प्रभु के आवने के समय में जीवते होंगे
१६ उन्हों को जो सोगयेहैं न रोकेंगे। क्योंकि प्रभु आप धूम से
प्रधान दूत के शब्द के संग अर्थात् ईश्वर के नरसिंगे के साथ
स्वर्ग पर से उतरेगा और जो मसीह में मूएहैं पहिले
१७ उठेंगे। उसके पीछे हमोंमें से वे जो जीवते होंगे उन सब
समेत मेघों पर झट उठायेजायंगे कि आकाश में प्रभु से भेंट
१८ करें सो हम प्रभु के संग सर्बदा होंगे। इसलिये तुमलोग
इन्हीं बातों से एक दूसरे को शांति देउ।

५ पांचवां पर्व्व

१ परंतु हे भाइयो तुमलोग उसके आधीन नहीं कि समयों
२ और कालों का समाचार मैं तुम्हें लिखों। क्योंकि तुमलोग
निश्चय से जानतेहो कि प्रभु का दिन ऐसा आवेगा जैसा

३ रात को चोर आताहै। क्योंकि जब लोग कहेंगे कि कुशल
और बचाव तब जिस रीति से गर्भिणी पर पीर आजाती है
४ उन पर अकस्मात् नाश आवेगा और वे न बचेंगे। परंतु
तुमलोग हे भाइयो अंधकार में नहीं हो कि वुह दिन चोर
५ की नाईं तुम्हें आघेरे। तुम सबकेसब प्रकाश के पुत्र और
दिन के संतान हो हम रात के नहीं और न अंधकार के हैं।
६ इस कारण औरों की नाईं न सोवें परंतु जागें और चौकस
७ रहें। क्योंकि जो सोतेहैं सो रातही को सोतेहैं और जो
८ मतवाले होतेहैं सो रातही को मतवाले होतेहैं। परंतु हमें
जो दिन के हैं चाहिये कि चौकस रहें और बिश्वास और
प्रेम का भिलम और उद्धार की आशा का टोप पहिनें।
९ क्योंकि ईश्वर ने हमको क्रोध के लिये नहीं परंतु इस लिये
ठहराया कि हम अपने प्रभु ईसा मसीह से उद्धार प्राप्त
१० करें। वुह हमारे कारण मूआ कि हमलोग क्या जागते क्या
११ सोते एकट्ठे उसके संग जीयें। इस लिये तुमलोग एक दूसरे
को शांति देउ और एक दूसरे को सुधारो जैसा तुमलोग
१२ करते भी हो। और हे भाइयो हम तुम्हों से बिनती करतेहैं
कि तुमलोग उनको जो तुम्हों में परिश्रम करतेहैं और प्रभु
के कार्य में तुम्हारे प्रधान हैं और तुम्हों को चेतावतेहैं
१३ जानजाउ। और उनके कार्य के लिये प्रेम से उनका बहुत
१४ आदरभाव करो और आपुस में मिलेरहो। और हे
भाइयो हम तुम्हें उपदेश करतेहैं कि तुम नगरे लोगों को
चेतादेउ निर्बल मनों को शांति देउ दुर्बलों को संभालो और
१५ सभों से संतोषी हो। देखो कोई किसी से बुराई की संती
बुराई न करे परंतु तुमलोग आपुस में और सभों से भला
१७ व्यवहार करो। सर्वदा आनंद करतेरहो। निरंतर प्रार्थना
१८ करो। हरएक बात में धन्य मानाकरो क्योंकि तुम्हारे
१९ बिषय में मसीह ईसा में ईश्वर की यही इच्छा है। आत्मा

२० को मत बुझाओ। आगमकहने का अपमान न करो।
२२ सब बातों को परखो अच्छे से अच्छे को थांमलेउ। समस्त
२३ बुराई के स्वरूपसे परे रहो। कुशलही का ईश्वर आपही
तुम्हों को बालबाल पवित्र करे और तुम्हारा समस्त आत्मा
और जीव और देह हमारे प्रभु ईसा मसीह के आनेलों
२४ निर्दोषता से रहे। जिसने तुम्हें बुलाया वुह बिश्वास के
२५ योग्य है वुह ऐसाही करेगा। भाइयो हमारे कारण
२६ प्रार्थना करो। और सारे भाइयों को पवित्र चूमा लेके
२७ नमस्कार कहो। मैं तुम्हें प्रभु की किरिया देताहों कि यह
२८ पत्री सारे पवित्र भाइयों में पढ़ीजाय। अब हमारे प्रभु
ईसा मसीह का अनुग्रह तुम्हों पर होवे आमीन।

पूलुस की दूसरी पत्री तसलूनियों को

१ पहिला पर्व्व

१ पूलुस और सलवानिस और तीमताऊस तसलूनियों की
मंडली को जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह में
२ हैं। हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह के ओर से
३ अनुग्रह और कुशल तुम्हारे लिये होवे। हे भाइयो उचित
है कि हम तुम्हारे लिये सर्व्वदा ईश्वर का धन्यबाद करें इस
लिये कि तुम्हारा बिश्वास अत्यंत बढ़ताजाताहै और तुम्हों
४ में हरएक का प्रेम आपुस में अधिक होताहै। यहांलों कि

हम आप तुम्हारे संतोष और बिश्वास के लिये तुम्हारे समस्त दुखों और क्लेशों में जो तुमलोग सहतेहो ईश्वर की मंडलियों
५ में तुम्हारी बड़ाई करतेहैं। जो ईश्वर के धर्मन्याय का प्रगट लक्षण होगा कि तुमलोग ईश्वर के राज्य के योग्य गिनेजाओ
६ जिसके लिये तुमलोग दुख भी पावतेहो। क्योंकि ईश्वर के समीप यह याथार्थ है कि उन्हों को जो तुम्हें क्लेश देतेहैं क्लेश का
७ प्रतिफल देवे। और तुम्हों को जो क्लेश पावतेहो हमारे संग चैन देवे कि जब प्रभु ईसा मसीह स्वर्गसे अपने पराक्रमी दूतों
८ के संग। धधकती आग में प्रगट होवे और उन्होंसे जो ईश्वर को नहीं पहिचानते और जो हमारे प्रभु ईसा मसीह के
९ मंगलसमाचार को नहीं मानते पलटा लेवे। कि वे प्रभु के सन्मुख से और उसके पराक्रम के तेज से अनंत बिनाश से
१० ताड़ना पावेंगे। जब वुह अपने साधुन में ऐश्वर्यमान होनेका आवेगा और समस्त बिश्वासियों में आश्चर्य का कारण होगा।
११ सो हम तुम्हारे लिये सदा प्रार्थना करतेहैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें बुलावने के योग्य जाने और अपनी भलाई की मनमान इच्छा को और बिश्वास के कार्य को सामर्थ से पूरा
१२ करे। कि हमारे ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह के अनुग्रह के समान हमारे प्रभु ईसा मसीह का नाम तुम्हों में ऐश्वर्यमान् होवे और तुमलोग उसमें।

२ दूसरा पर्व्व

१ अब हे भाइयो हमारे प्रभु ईसा मसीह के आवने के और उसके समीप हमारे एकठ्ठे होने के कारण से हम तुम्हारी
२ बिनती करतेहैं। कि तुम्हारा मन शीघ्र टल न जाय अथवा व्याकुल न होवे न तो आत्मा से न बचन से न पत्री से जैसा कि हमारे ओर से है ऐसा कि मसीह का दिन समीप है।
३ कोई तुम्हें किसी रीति से छल न देवे क्योंकि वुह दिन न

आवेगा परंतु जब कि पहिले भष्ट होना आरंभ होवे और
४ वुह पाप का जन अर्थात् नाश का पुत्र प्रगट होवे। जो
रोकताहै और अपने को समस्त से जो ईश्वर कहावताहै
अथवा प्रार्थना किईजातीहैं बढ़ावताहै यहांलों कि वुह
ईश्वर के समान ईश्वर के मंदिर में बैठताहै और अपने को
५ दिखाताहै कि मैं ईश्वर हों। क्या तुम्हें चेत नहीं कि तुम्हारे
६ संग होतेऊए मैं ने तुम्हें ये बातें कहीं। अब तुमलोग जानतेहो
कि अपनेही समय पर प्रगट होने में क्या उसे रोकताहै।
७ क्योंकि बुराई का भेद तो अबसे कार्य करताहै परंतु एक
है जो रोकताहै जबलों वुह पंथ से अलग कियाजाय।
८ और तब वुह दुष्ट प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंह के
सांस से भस्म करेगा और अपने आवने के तेज से बिनाश
९ करेगा। जिसका आवना शयतान के किये के समान समस्त
१० सामर्थ्य और लक्षण और झूठे आश्चर्यों से है। और समस्त
रीति के अधर्म के छल के संग उन्हों में जो नाश होंगे इस
कारण कि उन्हों ने सचाई के प्रेम को जिस्से वे बचायेजाते
११ ग्रहण न किया। और इसी कारणसे ईश्वर उनके पास
छल की शक्ति को भेजेगा जिसतें वे झूठ पर बिश्वास लावें।
१२ कि वे सब जो सत्य पर बिश्वास न लाये परंतु अधर्मता से
१३ प्रसन्न थे दंड पावें। परंतु हे भाइयो प्रभु के प्रिय उचित
है कि हम तुम्हारे कारण सर्बदा ईश्वर का धन्य मानाकरें
इस कारण कि ईश्वर ने आरंभ से आत्मा की पवित्रता से
और सचाई पर बिश्वास लानेसे तुम्हें उद्धार के लिये चुना।
१४ जिसके लिये उसने तुम्हें हमारे मंगलसमाचार के द्वारा से
बुलाया कि हमारे प्रभु ईसा मसीह का ऐश्वर्य प्राप्तकरो।
१५ सो इस कारण हे भाइयो स्थिर रहो और उन बातों को
जो तुम्हें सौंपीगईं जो तुम्हों ने बचन से अथवा हमारे ग्रंथ
१६ से सीखीं थामें रहो। अब हमारा प्रभु ईसा मसीह आप

और हमारा पिता ईश्वर जिसने हमें प्यार किया और हमें अनुग्रह के द्वारा से अनंत सांत्वन और अच्छी आशा
१७ दिई। तुम्हारे मन को शांति देवे और तुम्हों को हरएक अच्छे बचन और कर्म में दृढ़करे।

३ तीसरा पर्व्व

१ सो अंत्य में हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो कि ईश्वर का बचन फैले और ऐसी महिमा पावे जैसो तुम्हों में है।
२ और कि हम अबिचारी और दुष्ट मनुष्यन से बचजावें
३ क्योंकि सब बिश्वास नहीं रखते। परंतु प्रभु बिश्वास के योग्य
४ है वुह तुम्हों को दृढ़ करेगा और दुष्ट से बचायेगा। और तुम्हारे कारण प्रभु पर हमारा भरोसा है कि तुमलोग उन आज्ञाओं पर जो हम तुम्हें देतेहैं चलतेहो और चलोगे।
५ और प्रभु तुम्हारे अंतःकरणों को ईश्वर के प्रेममें और संतोष से मसीह की बाट जोहने में तुम्हों को सिखावे।
६ परंतु हे भाइयो हम अपने प्रभु ईसा मसीह के नाम से तुम्हें आज्ञा करतेहैं कि हरएक भाई से जो अनरीति से चलताहै और उस सौंपीऊई शिक्षा का जो उसने हमसे
७ पाई नहीं मानता अलग रहो। क्योंकि तुमलोग आप जानतेहो कि हमारी नाईं क्योंकर चलाचाहिये क्योंकि
८ हम तो तुम्हों में अनरीति से न रहतेथे। और किसी की रोटी सेंत न खातेथे परंतु परिश्रम से रात दिन कार्य करके
९ कि हम किसी पर तुम्हों में से भार न होवें। इस कारण नहीं कि हम को सामर्थ्य नहीं परंतु कि हम आप को तुम्हारे लिये
१० बानगी ठहरावें कि तुम हमारी नाईं चलो। क्योंकि जब हम तुम्हारे संग भी थे तब हमने तुम्हें यह आज्ञा किई थी
११ कि जो कोई काम न करे सो भोजन न पावे। हम सुनतेहैं कि कई एक तुम्हों में से अनरीति से चलतेहैं कोई कामकाज नहीं

१२ करते परंतु औरों के कार्य में उलझतेहैं। हम प्रभु ईसा मसीह से ऐसों को आज्ञा देतेहैं और चेतावतेहैं कि वे
१३ चुपचाप से कार्य करके अपनीही रोटी खावें। और हे
१४ भाइयो तुम भले कार्य करने में ढील न करो। पर यदि कोई हमारी बात को जो इस पत्री में हैं न माने तो उसे चीह्न रखियो और उसकी संगति न करियो जिसतें वुह
१५ लज्जित होवे। तथापि उसको बैरी की नाईं मत समुझियो
१६ परंतु भाई के तुल्य चितादीजियो। अब कल्याण का प्रभु तुम्हों को समस्त रीति से सर्बदा कल्याण देवे प्रभु तुमसभों के
१७ संग होवे। मेरेही हाथ के लिखे से मुझ पूलूस का नमस्कार
१८ जो हरएक पत्री में चिह्न है वैसा मैं लिखताहों। हमारे प्रभु ईसा मसीह का अनुग्रह तुमसभों पर होवे आमीन।

पूलूस की पहिली पत्री तीमताऊस को

---

१ पहिला पर्ब्ब

१ हमारे मोक्षदाता ईश्वर और हमारी आशा प्रभु ईसा मसीह के ठहराएऊए के समान पूलूस ईसा मसीह का
२ प्रेरित। बिश्वास में सच्चे पुत्र तीमताऊस को अनुग्रह दया और कुशल हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु ईसा
३ मसीह से होवे। जैसा मैंने मकदूनियः में जातेऊए तुझे बिनती किई थी कि अफसस में ठहरियो कि तू कितनों को

४ आज्ञा करे कि नया उपदेश न सिखावें। और कहानियों
और अनंत बंसाउरियों पर मन न लगावें जो बिवाद का
बिषय होताहै और बिश्वास में ईश्वर की भक्ति बढ़ाने में
५ नहीं। परंतु आज्ञा का अभिप्राय प्रेम पवित्र अंतःकरण से
६ और अच्छे बिवेक और निष्कपट बिश्वास से है। जिसे कितने
७ भटकके अनर्थ कथनी के ओर फिरेहैं। कि ब्यवस्था के
उपदेशक होनेकी इच्छा रखके नहीं बूझते कि हम क्या
८ कहतेहैं और किसके बिषयमें बचन देतेहैं। परंतु हम
जानतेहैं कि ब्यवस्था अच्छी है यदि मनुष्य उसे उचित रीति से
९ करे। यह जानके कि ब्यवस्था धर्मी पुरुष के लिये नहीं परंतु
ब्यवस्थाहीन और आज्ञा भंगकरनिहार अधर्मी और पापियों
के लिये अपवित्र और ढीठ के लिये और पितृघातकों और
१० मातृघातकों और मनुष्यघातकों के लिये। ब्यभिचारियों
और पुरुषगामियों और पुरुषनकेचोट्टे और मिथ्याबादियों
और झूठी किरियाखानेवालों के कारण और जो उनसे
और कोई बस्तु जो खरे उपदेश से उलटी होवे उनके
११ कारण है। धन्यमान ईश्वर के तेजोमय मंगलसमाचार के
१२ समान जो मुझे सौंपागया। और मैं अपने प्रभु मसीह
ईसा का जिसने मुझे सामर्थ्य दिया धन्यमानताहों इस कारण
कि उसने मुझे बिश्वास के योग्य समुझा और सेवकाई में
१३ रक्खा। मैं तो आगे निंदक और उपद्रवी और संतानेवाला
था परंतु मैंने दया पाई इस कारण कि मैंने अबिश्वासता
१४ में मूर्खता से किया। और हमारे प्रभु का अनुग्रह
बिश्वास और प्रेम समेत जो मसीह ईसा में है बहुत
१५ उभरा। यह बिश्वास के योग्य का बचन और सबके
ग्रहण करनेके योग्य है कि मसीह ईसा जगत् में आया कि
१६ पापियों को बचावे जिन्हों में मैं प्रधान हों। परंतु मुझ पर
इस लिये दया किईगई कि मुझ में जैसा प्रधान पर ईसा

मसीह अपने बड़े धीरज को प्रगट करे कि उनके कारण जो उसपर अनंत जीवन के लिये बिश्वास लावें दृष्टांत बनों।
१७ अब राजा को जो सनातन अमर अदृश्य जो अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर है प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य सर्बदा अनंत है आमीन।
१८ हे पुत्र तीमताऊस मैं तुझे उन आगमज्ञानों के समान जो आगे तेरी अवस्था में कियेगये यह आज्ञा देताहों कि उन्हों
१९ के कारणसे तू अच्छी लड़ाई लड़। और बिश्वास और अच्छे बिवेक को धरेरह जिसे कितनोंने छोड़के बिश्वास के बिषय
२० में नाव को तोड़ा। उन्होंमें से हमीयूस और सिकंदरहैं जिन्हें मैं ने शैयतान को सौंपा कि वे सीखें कि निंदा न करें।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ अब मैं उपदेश करताहों कि सबसे पहिले बिनती और प्रार्थना और बिनय और धन्यबाद समस्त मनुष्यन के लिये
२ कियाजाय। राजाओं के और उनसभों के लिये जो पराक्रमी हैं कि हम चैन और कुशल से समस्त भक्ताई
३ और सच्चाई में जीवें। क्योंकि हमारे निस्तारक ईश्वरके आगे
४ यही भला और ग्राह्य है। जो चाहताहै कि समस्त मनुष्य
५ बचायेजावें और सत्य के ज्ञानलों पहुंचें। क्योंकि ईश्वर एक और ईश्वर और मनुष्य के बीच में एक मनुष्य अर्थात् मसीह
६ ईसा बिचवई है। जिसने अपने को सभों के मोक्ष के लिये
७ दिया कि समय पर साक्षी दिईजाय। मैं मसीह में सच बोलताहों झूठ नहीं कहता कि मैं उसके लिये उपदेशक और प्रेरित ठहरायागया कि बिश्वास और सच्चाई में अन्यदेसियों
८ को सिखाओं। सो मेरी इच्छा यह है कि हरएक स्थान में लोग प्रार्थना करें पवित्र हाथों को निष्क्रोध और निःसंदेह
९ उठावें। इसी रीतिसे स्त्री भी अपने को लाज और संकोच से और संयमसे सवांरे बाल गूथने अथवा सोने अथवा मोतियों

१० अथवा बज्ञमोल के बस्त्र से नहीं। परंतु उत्तम कार्य्य से सवांरे जैसा स्त्रियों को जो ईश्वर की सेवाती कहावती हैं योग्य है।
१२ स्त्री समस्त बश में होके चुपके से सीखे। परंतु मैं आज्ञा नहीं देता कि स्त्री सिखलावे अथवा पुरुष पर प्रभुता करे परंतु
१३ चुपचाप रहे। क्योंकि पहिले आदम बनायागया पीछे हव्वा।
१४ और आदम ने छल न खाया परंतु स्त्री छल खाके पाप में पड़ी।
१५ तथापि वुह बालक जन्ने में बचाईजायगी जो वे बिश्वास में और प्रेम और पवित्रता में संयम के संग स्थिर रहें।

३ तीसरा पर्व्व

१ यह बचन प्रतीति के योग्य है कि यदि कोई मंडलाध्यक्ष का
२ पद बज्ञत चाहे वुह अच्छे कार्य्य को चाहता है। सो अवश्य है कि मंडलाध्यक्ष निर्दोष और एक पत्नि का पति चौकस सज्ञान उत्तम स्वभाव अतिथिपालक और उपदेश करने में
३ निपुण होवे। और मद्यप अथवा मरकहा अथवा लालची न
४ होवे परंतु मध्यम और झगड़ालू अथवा लोभी न होवे। एक जो अपने बालकों को गंभीरता से बश में रखता और अपने
५ घर की प्रधानता अच्छी रीति से करता है। क्योंकि यदि कोई अपनेही घर की प्रधानता करने न जाने तो वुह ईश्वर की
६ मंडली की चौकसी क्योंकर करेगा। और नया शिष्य न होवे कहीं वुह गर्व से फूलके शयतान के दंड की आज्ञा में न पड़े।
७ इसलिये यह भी उचित है कि उन्हों से जो बाहर हैं शुभनाम पावे कि वुह निंदा में और शयतान के फंदे में न
८ पड़े। इसी रीति से चाहिये कि सेवक गंभीर होवें और दो
९ जीभी अथवा मद्यप अथवा मलीनलाभ के लोभी नहीं। और
१० बिश्वास के भेद को पवित्र मन से धरे रहें। और ये भी पहिले परखेजावें तब यदि वे निर्दोष निकलें तो सेवक के पद में कार्य्य
११ करें। इसी रीति से उनकी पत्नी भी गंभीर होवें और झूठे

दोषदायक न होवें सज्ञान और सारी बातों में बिश्वास के
१२ योग्य होवें। सेवक एक एक पत्नी का पति होवे अपने बालकों
१३ और अपने घरों को अच्छी रीति से बश में रखतेहों। क्योंकि
जिन्हों ने सेवकाई के कार्य को अच्छी रीति से किया से अपने
लिये अच्छे पद और बिश्वास में बड़ाढ़स को जो मसीह
१४ ईसा पर हैं कमातेहैं। ये बातें मैं लिखताहों और आशा
१५ रखताहों कि तुझपास शीघ्र आओं। परंतु जो मैं अबेर
करों जिसतें तू जानरक्खे कि ईश्वर के घर में जो जीवते ईश्वर
की मंडली और सच्चाई का खंभा और नेउं है क्योंकर निबाह
१६ कियाचाहिये। और निःसंदेह ईश्वर की सेवा का भेद महान्
है ईश्वर शरीर में प्रगट हुआ आत्मा में निर्दोष ठहरायागया
दूतों से देखागया अन्यदेशियों में उसका उपदेश कियागया
जगत् में बिश्वास कियागया ऐश्वर्य में ऊपर उठायागया।

४ चौथा पर्ब्ब

१ परंतु आत्मा तो खोलके कहताहै कि पिछले समयों में कितने
बिश्वास से फिरजायंगे कि वे भरमानेवाले आत्माओं और
२ पिशाचों की शिक्षा में चित्त लगावेंगे। यह झूठों की कपटाई से
३ होगा जिनका मन तप्त लोहे से दागागयाहै। बिवाह करने से
बरजेंगे और मांस खाने से निषेध करेंगे जिन्हें ईश्वर ने उत्पन्न
किया कि वे लोग जो बिश्वासी और सत्य के ज्ञानी हैं धन्यबाद
४ करके खावें। क्योंकि ईश्वर की उत्पन्न किईहुई हरएक बस्तु
अच्छी है और त्याग करने के योग्य नहीं यदि वुह धन्यबाद
५ के साथ खाईजावे। क्योंकि वुह ईश्वर के बचन और प्रार्थना से
६ पवित्र किईगईहै। सो जो तू भाइयों को ये बातें चेतावे तो तू
ईसा मसीह का अच्छा सेवक बनारहेगा अर्थात् बिश्वास की
बातों में और सुशिक्षा में जिसे तूने प्राप्तकियाहै प्रतिपाल
७ पावेगा। परंतु धर्महीनों और बुढ़ियों की कहानियों को

८ त्यागकर और ईश्वर की सेवा का साधन कर। क्योंकि शरीर की साधना थोड़ा लाभ है परंतु ईश्वर की सेवा सब बातों के लाभ के लिये है कि बर्त्तमान और भविष्य जीवन की
९ प्रतिज्ञा रखती है। यह बचन बिश्वास के योग्य है और सबके
१० ग्रहण करने के योग्य है। क्योंकि इसी कारण हम परिश्रम करते हैं और निंदा सहते हैं इस लिये कि हमने जीवते ईश्वर पर आशा रक्खी है जो समस्त मनुष्यन का त्राणकर्त्ता है
११ बिशेष करके बिश्वासियों का। इन बातों की आज्ञा कर
१२ और सिखा। कोई तेरी तरुणाई की निंदा न करे परंतु तू बिश्वासियों के लिये बचन में और बातचीत में और प्रेम में और आत्मा में और बिश्वास में और पवित्रता में दृष्टांत
१३ बनो। जबलों मैं आओं तू पढ़ता और शिक्षा करता और
१४ उपदेश देता रह। तू उस दान से जो तुझ में है जो तुझे आगमज्ञान से मंडलाध्यक्षों के हाथ रखने के आशीष से
१५ दियागया अचेत नहो। इन्हीं बातों को ध्यान कर और उन्हीं में लवलीन रह कि तेरा बढ़ताजाना सभों पर प्रगट होवे।
१६ अपने पर और अपनी शिक्षा पर चौकस रह और उन पर स्थिर रह क्योंकि ऐसा करने से तू अपने को और अपने सुननिहारों को बचायेगा।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ किसी प्राचीन को मत दपट परंतु पिता के समान और
२ तरुणों को भाइयों के समान। और प्राचीन स्त्रियों को जैसे माता को और तरुणियों को जैसे बहिनों को समस्त पवित्रता
३ से बुझाओ। बिधवन को जो सचमुच बिधवा हैं प्रतिष्ठा दे।
४ परंतु यदि कोई बिधवा का पुत्र अथवा पोता होवे तो वे पहिले सीखें कि अपने घर की सेवा करें और माता पिता का भाग भर देवें क्योंकि यह ईश्वर के आगे शोभित और

५ ग्राह्य है। अब सच्ची बिधवा और अनाथ वुह है जो ईश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन बिनती में और प्रार्थना ६ में लवलीन रहती है। पर जो सुखभोगिनी है सो जीतेजी ७ मृतक है। और यह आज्ञा कर कि वे निर्दोष होवें। ८ परंतु यदि कोई अपनेही के और बिशेष करके अपने घर के लिये नहीं सहेजता तो वुह बिश्वास से मुकरगया और ९ अबिश्वासियों से भी बुरा है। कोई बिधवा साठ बरस के नीचे गिनती में न आवे जो एकही पति की पत्नी ऊई होय। १० और शुभ कर्म के लिये यशपती होय जो उसने लड़कों को सिखाया हो अथवा परदेशियों को अपने यहां टिकाया हो अथवा सिद्धों के पावं धोये हो अथवा दुखियों का सहाय ११ किया हो जो हरएक भले कार्य का पीछा किया हो। पर तरुणी बिधवन् को छांटडाल क्योंकि जब वे मसीह से बिरुद्ध १२ खेलाड़ होती हैं तो बिबाह करेंगी। और अपने को दोष की आज्ञा के योग्य करती हैं क्योंकि उन्हों ने अपने अगिले बिश्वास १३ को मिटाडाला। और आलसी भी होके घर घर डोलती फिरती हैं और केवल आलसी नहीं परंतु बड़बड़ी भी अरु औरों के कार्य में उलझनेवाली और अनुचित बातें करती हैं। १४ इस कारण मेरी इच्छा है कि तरुणी स्त्री बिवाह करें और बालक जनें और गृहस्थी करें और शत्रु को निंदा करने का १५ कारण न देवें। क्योंकि कईएक अभी से शयतान के पीछे १६ फिरी हैं। परंतु जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनी की बिधवा हों तो वे उनका उपकार करें जिसतें मंडली पर बोझ न होवें कि वुह उनको जो सचमुच बिधवा हैं उपकार १७ करे। प्राचिनों को जो अच्छी रीति से प्रधानता करते हैं बिशेष करके उनको जो बचन और शिक्षा में परिश्रमी हैं दूना १८ प्रतिष्ठा के योग्य जानो। क्योंकि ग्रंथ कहता है कि बैल को जो दवंरी करता है मुंह मत बांध और कि बनिहार अपनी

१९ बनी के योग्य है। बिना दो अथवा तीन साक्षीयों के प्राचीनों
२० पर अपवाद मत मान। उन्हों को जो पाप करतेहैं सब के
२१ सन्मुख दपट जिसतें औरों के लिये भी भय होवे। मैं ईश्वर
और प्रभु ईसा मसीह और चुनेऊए दूतों के आगे आज्ञा
करताहों कि तू पक्ष छोड़के इन बातों को धारण कर और
२२ किसी को खैंच मत कर। यकायक किसी पर हाथ न रख
और न औरों के पापों में भागी हो अपने को पवित्र रख।
२३ और अबसे तू जल न पीयाकर परंतु अपने झोझ और
२४ बारंबार निर्बलता के लिये थोड़ा दाखरस पी। कितने
मनुष्यन के पाप प्रगट हैं और आगे आगे बिचार लों
२५ पऊंचतेहैं और कितनों के पीछे पीछे जातेहैं। सो उत्तम
कार्य भी प्रगट हैं और वे जो और ढब के हैं छिपाये जा
नहीं सक्ते।

६ छठवां पर्व्व

१ जितने सेवक जूये के नीचे हैं अपने स्वामियों को समस्त सन्मान
के योग्य जानें कि ईश्वर के नाम की और शिक्षा की निंदा न
२ किई जावे। और जिन्हों के बिश्वासी स्वामी हैं वे उनकी इस
कारण कि भाई हैं अवज्ञा न करें परंतु बिशेष करके सेवा
करें इस लिये कि वे बिश्वासी और प्रिय और पदारथ में
३ साझी हैं ये बातें सिखा और बुझा। यदि कोई और ढबकी
शिक्षा करे और सजीवन बचन को अर्थात् हमारे प्रभु ईसा
मसीह के बचन को और सिक्षा को जो ईश्वर की सेवा के योग्य
४ है ग्रहण नहीं करता। वुह घमंडी है और कुछ नहीं जानता
परंतु उसको बचन का बिवाद और झगड़ों का रोग है जिनसे
डाह और झगड़ा और गालीगलौझ और बुरीचिंता
५ होतीहैं। और उन लोगों के समान बिवाद करतेहैं जिनके
चित्त बिगड़गयेहैं और जिसमें सचाई नहीं हैं और समुझतेहैं

६ कि लाभ ईश्वर की सेवा है तू ऐसों से परे रह। परंतु
७ ईश्वर की सेवा संतोषता के संग बड़ा लाभ हैं। क्योंकि हम
जगत में कुछ न लाये और प्रगट है कि हम उसे कुछ लेजा
८ नहीं सक्ते। सो भोजन और बस्त्र पाके हम इन्हीं से
९ संतोष करें। परंतु वे जो अपने को धनमान अवश्य किया
चाहतेहैं सो परीक्षा और फंदे में औंधे मुंह गिरतेहैं
और बहुतसी मूर्खता और बुरी लालसा में पड़तेहैं जो
मनुष्यन को सत्यानाश और बिनाश में देमारतीहैं।
१० क्योंकि धन की प्रीति समस्त बुराइयों की जड़ है कितने
उसको लालच करने से बिश्वास के मार्ग से भटकगये और
११ नाना प्रकार के शोक से छिदगये। पर तू हे ईश्वर के जन
इन बस्तुन से भाग और धर्म और ईश्वर की सेवा और
बिश्वास और दया और संतोष और कोमलता का पीछा
१२ कर। बिश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ अनंत जीवन को पकड़ले
जिसके लिये तू बुलायागया और तू ने बहुत से साक्षियों के
१३ आगे भला मान्ना मानलियाहै। मैं ईश्वर के जो समस्त
बस्तुन को जिलावताहै और मसीह ईसा के साक्षात जिसने
पनतयूस पिलातूस के आगे भले मान्ने पर साक्षी दिई तुझे
१४ आज्ञा करताहों। कि तू आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष
हमारे प्रभु ईसा मसीह के प्रगट होने लों धारण कर।
१५ जिसे वुह अपने समयों में प्रगट करेगा जो धन्य और अद्वैत
सामर्थी राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।
१६ अमरता केवल उसीकी है वुह अगम्य ज्योति में बास करताहै
जिसको किसी मनुष्य ने न देखा न देखसक्ताहै उसीकी प्रतिष्ठा
१७ और सामर्थ्य सर्बदाहै आमीन। इस संसार के धनमानों को
आज्ञा कर कि मन में गर्ब न करें और बेजड़ धन पर आशा
न करें परंतु जीवते ईश्वर पर जो हमारे भोगके लिये सब
१८ कुछ बहुताई से देताहै। कि वे भला करें और सुकार्य्यन में

धनी और दान करने में सिद्ध और बांटने में अभिलाषी।
१९ और भविष्य के लिये एक भली नेंउ धररक्खें कि वे अनंत
२० जीवन को पकड़ रक्खें। हे तीमताऊस वुह जो तुझे सौंपागया
जतन से रख और उन अधर्म और व्यर्थ बकबक से और उस
२१ बस्तु के बिवाद से जो झूठाई से बिद्या कहावतीहैं मुंह फेरले।
२२ जिसे कितने अंगीकार करके बिश्वास से भटकगयेहैं अनुग्रह
तुझपर होवे आमीन।

पूलूस की दूसरी पत्री तीमताऊस को

---

१ पहिला पर्ब्ब

१ पूलूस के ओर से जो जीवन की प्रतिज्ञा के समान जो मसीह
ईसा में है ईश्वर की इच्छा से ईसा मसीह का प्रेरित है।
२ मेरे प्रिय पुत्र तीमताऊस को अनुग्रह दया कुशल पिता
३ ईश्वर और हमारे प्रभु मसीह ईसा के ओरसे। मैं ईश्वर
का धन्य मानताहों जिसकी सेवा मैं पितरों के समान निर्मल
बिवेक से करताहों कि मैं रातदिन अपनी प्रार्थना में निरंतर
४ तुझे स्मरण करताहों। तेरे आंसुओं को स्मरण करके मैं
बहुत अभिलाषी हों कि तुझे देखों कि आनंद से भरजाऊं।
५ तुम्हारे निष्कपट बिश्वास को स्मरण करताहों जो पहिले
तेरी नानी लूईस में और तेरी माता यूनीसी में बास
६ करताथा और मुझे निश्चयहै कि तुझ में भी है। इस कारण

से मैं तुझे चेत करावताहों कि तू ईश्वर के उस दान को जो
७ मेरे हाथ रखने से तुझ में है उसकावे। क्योंकि ईश्वर ने हम
को डेठापन का आत्मा नहीं दिया परंतु योधापन और
८ प्रेम और बुद्धि का। तू इस कारण न तो हमारे प्रभ की
साची से न मुझ्से जो उसका बंधुआहों लज्जित हो परंतु
ईश्वर के सामर्थ से मंगलसमाचार के दुखों में भागी हो।
९ उसने हमें बचाया और पवित्रता के बुलावा से हमें बुलाया
हमारे कार्यन् के समान नहीं परंतु अपने ही ठहरायेऊये के
और अनुग्रह के समान जो मसीह ईसा में सनातन समयों
१० से हमें दियागया। परंतु अब हमारे मोचदाता ईसा
मसीह के प्रगट होने से प्रगट ऊआ जिसने मृत्यु को नष्ट
किया और जीवन और अमरता को मंगलसमाचार के द्वारा
११ से प्रकाश किया। जिसके लिये मैं उपदेशक और प्रेरित
और परदेशियों का सिखावनिहार ठहरायागयाहों।
१२ क्योंकि उसी लिये मैं यह दुख भी पावताहों परंतु मैं लज्जित
नहीं क्योंकि मैं जानताहों जिस पर मैं बिश्वास लायाहों
और निश्चय जानताहों कि वुह मेरी थाती को उस दिनलों
१३ जतन से रखसक्ताहै। तू उन चोखी बातों के डौल को जो
तू ने मुझ्से सुनी ईसा मसीह के बिश्वास और प्रेम में दृढ़ता
१४ से धररख। उस सौंपीऊई भली बस्तु को धर्मात्मा से जो
१५ हमों में बसताहै जतन से रख। तू यह जानताहै कि सब जो
आसिया में हैं जिन में से फुजलस और हरमोगनस हैं मुझ्से
१६ फिरगयेहैं। प्रभु उनीसफूरस के परिवार पर दया करे
क्योंकि उसने बारंबार मुझे बहलाया और मेरे सीकर से
१७ लज्जित न ऊआ। परंतु रूम में होके उसने मुझे बड़े जतन
१८ से ढूंढ़ा और पाया। ईश्वर उस पर अनुग्रह करे कि वुह
प्रभु से उस दिन दया पावे और जो सेवकाई उसने अफसस
के नगर में किई तूही उन्हें अच्छी रीति से जानताहै।

२ दूसरा पर्व्व

१ हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रह में जो मसीह ईसा में है दृढ़ हो।
२ और जो बातें तू ने बज्जत से साक्षियों के आगे मुझ से सुनी हैं
उसे बिश्वास के योग्य पुरुषों को सौंप जो औरों को भी
३ सिखासकें। सो तू ईसा मसीह के अच्छे सिपाही के समान
४ कष्टों को सहले। कोई मनुष्य जो युद्ध को निकलताहै अपने को
जगत् के व्यवहार में नहीं उलझावताहै कि वुह उसे जिसने
५ उसे सिपाही कियाहै प्रसन्न करे। और जो कोई बजनी
करताहै सो मुकुट नहीं पावता जबलों वुह ठहरायेज्जये के
६ समान बजनी न करे। अवश्य है कि किसान पहिले परिश्रम
७ करे और तब फल का भाग लेवे। जो मैं कहताहों उसे सोचरख
८ और प्रभु तुझे समस्त बातों की समुझ देवे। स्मरण कर कि
ईसा मसीह दाऊद के बंश में का जो मेरे मंगलसमाचार के
९ समान मृतकन में से उठायागया। जिसमें मैं कुकर्मी के समान
यहांलों दुख पावताहों कि बंधन में हूं परंतु ईश्वर का बचन
१० नहीं बंधा है। इसीलिये मैं चुनेज्जए लोगों के लिये सब
कुछ सहताहों कि निस्तार जो ईसा मसीह में है अनंत
११ ऐश्वर्य के संग मिले। यह बचन बिश्वास के योग्य है कि जो
१२ हम उसके संग मरे तो हम उसके संग जीयेंगे। जो हम कष्ट
पावें तो हम उसके संग राज्य करेंगे जो हम उसे मुकरजांय
१३ तो वुह भी हम से मुकरेगा। जो हम अबिश्वासी होवें वुह
१४ बिश्वास के योग्य है वुह अपने को मुकर नहीं सक्ता। इन
बातों का स्मरण कराउ और प्रभु के सन्मुख साक्षी दे कि
लोग बातों के विषय में झगड़ा न करें जो सर्वथा निष्फल
१५ है परंतु यह कि श्रोता बिगड़जायें। अपने को ईश्वर
का भायाज्जआ ऐक कार्यकारी जिसे लज्जित होने का
कारण नहो सच्चाई के बचन को ठीक रीति से भाग करने
१६ में यत्न कर। परंतु अधर्म और व्यर्थ बकवादों से परे रह

१७ क्योंकि वे अधिक अधर्मता में बढ़तेजायेंगे। और उनकी बातें मुरचे की नाईं खायेंगी जिनमें से अमोनियूस और फलीतस
१८ हैं। जो यह कहिके कि पुनरुत्थान होचुका सच्चाई के विषय से फिरगये और कितनों को बिश्वास से भ्रष्ट करतेहैं।
१९ तथापि ईश्वर की नेउं दृढ़ बनीहै और यह छाप रखतीहै कि प्रभु उन्हों को जो अपनेही हैं पहिचानताहै और चाहिये कि हरएक जो मसीह का नाम लेताहै कुकर्म से
२० दूर रहे। क्योंकि बड़े घर में केवल सोने रूपे के पात्र नहीं हैं परंतु काठ के और मिट्टी के भी और कितने आदर के
२१ और कितने अनादर के कार्य के लिये हैं। इस लिये यदि कोई अपने को इन्हों से पवित्र करे तो वुह आदर का पात्र शुद्ध कियाहुआ और स्वामी के कार्य के योग्य और हरएक
२२ अच्छे कार्य के लिये सिद्ध होगा। तरुणाई के रस से भागो और जो पवित्र मन से प्रभु का नाम लेतेहैं उनके संग धर्म
२३ और बिश्वास और प्रेम और कुशल का पीछा कर। परंतु मूढ़ और अपढ़ प्रश्नों से परे रह यह जानतेहुए कि वे झगड़ा
२४ उत्पन्न करतेहैं। परंतु उचित नहीं कि प्रभु का सेवक झगड़ा करे परंतु सबसे कोमल रहे सिखाने पर सिद्ध और दुख
२५ सहनिहार। नम्रता से बिरोध करनिहारों को शिक्षा देवे जो किसी रीति से सत्य को मानलेने के लिये ईश्वर उन्हें
२६ पश्चात्ताप देवे। और जिसतें वे शैतान के फंदे से जिसने अपनी इच्छा पर उन्हें बंधुआ किया जागउठें।

३ तीसरा पर्व्व

१ और यह जानरख कि अंत्य के दिनों में सकेती का समय
२ आवेगा। क्योंकि मनुष्य अपनेही प्रेमी और लालची बड़ाई करनिहार अहंकारी ईश्वर के निंदक माता पिता की
३ आज्ञाभंग करनिहार अधन्यमानी और अपवित्र। मायारहित

रहीत अवधि के भंग करनिहार और मिथ्यापबादी और
४ अजितेंद्रिय और कठोर और भले लोगों के निंदक। छली
और मगरा और अभिमानी और ईश्वर से सुख बिलास के
५ अधिक प्रेमी। ईश्वर की सेवा का रूप रखतेहैं परंतु उसके
६ सामर्थ्य से मुकरतेहैं ऐसों से परेरह। उन्हों से वे हैं जो घर
घर घुसके उन ओछी स्त्रियों को बश्में लावतेहैं जो पापों से
लदीहैं और नाना प्रकार के कामाभिलाष से खींचीगई
७ हैं। नित्यशिक्षा पावतीहैं परंतु सचाई के मानलेने लों कधी
८ नहीं पऊंच सकी। और जिस रीति से यन्नस और यंबरस
ने मूसा का साम्ना किया वैसा ये भी सचाई का साम्ना करतेहैं
९ नष्ठ बुद्धि लोग जो बिश्वास के बिषय में अभायेहैं। पर वे
आगे न बढ़ेंगे क्योंकि उनकी मूर्खता सभों पर प्रगट होजायेगी
१० जिस रीति से उनकी भी थी। परंतु तू मेरा उपदेश और
बोलचाल और अभिप्राय और बिश्वास और अतिसहना
११ और प्रेम और धीरज। और संतायाजाना और दुखों को
जो अंताकियः और यकूनियों में और लस्तरा में मुझपर
पड़ें अच्छि रीति से जानताहै कि मैं ने कैसे दुख उठाये परंतु
१२ प्रभु ने मुझे उन सभों से बचाया। हां और सब जो ईसा
१३ मसीह में धर्म से चलेंगे संतायेजायेंगें। परंतु दुष्ट और छली
लोग छल देके और छल पाके बुराई में अधिक बढ़तेजायेंगे।
१४ पर तू उन बातों पर स्थिर रह जिसे तू ने सीखाहै और
१५ बिश्वास लायाहै यह जानके कि तू ने किस्से सीखाहै। और
कि बालकपन से धर्म पुस्तक तेरे जानेऊएहैं जो सामर्थी हैं
कि बिश्वास के दारा से जो मसीह ईसा में है उद्धार के लिये
१६ तुझे बुद्धिमान करे। समस्त ग्रंथ ईश्वर के प्रगट किएऊएहैं
और शिक्षा और दोष के और दपटने के और धर्म में
१७ उपदेश करने के लिये लाभ हैं। जिसतें ईश्वर का जन
परिपूर्ण होवे और हरएक उत्तम कार्य में सिद्ध रहे।

४ चैाथा पर्व्व

१ सो मैं ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह के आगे जो प्रगट होके अपने राज्य में जीवतन और मृतकन का न्याय करेगा आज्ञा
२ करताहों। समय में और असमय में बचन का उपदेशकर बक्त सहिसहि के समझा के दोष बुझा और डांट दे और
३ शिक्षाकर। क्योंकि समय आवेगा जब वे सजीवन शिक्षा को न सहेंगे पर खुजलातेऊए कान रखके अपनी लालसा के
४ समान उपदेशकों को बटोरेंगे। और अपने ध्यान को सच्चाई के ओर से फेरेंगे और कहानियों के ओर फिरायेजायेंगे।
५ परंतु समस्त बातों में चैाकस रह दुख को सह मंगल
६ समाचारक का कार्य कर अपनी सेवा को पूरा कर। क्योंकि अब मैं बलिहोने को सिद्ध हों और चलने का समय निकट
७ है। मैं ने अच्छा युद्ध कियाहै मैं ने अपने दैाड़ को समाप्त
८ कियाहै मैं ने बिश्वास को रखलियाहै। सो अब धर्म का मुकुट मेरे लिये धराहै जिसे प्रभु जो धर्मी न्यायी है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझी को नहीं परंतु उन सभों को भी जो
९ उसके प्रगट होने के प्रेमी हैं। तू शीघ्र से मेरे पास आवने
१० को यत्न कर। क्योंकि दीमस ने इस बर्त्तमान जगत को प्यार करके मुझे छोड़दियाहै और तसलूनी को चलागया क्रसकंस
११ गलतियः को और तीतस दलमतियः को गया। केवल लूक़ा मेरे संग है तू मरक़स को अपने संग लेआ क्योंकि सेवा में
१२ वुह मेरे काम का है। मैं ने टकिकस को अफसस को भेजा।
१३ तू वुह लबादा जिसे मैं ने तरवास में करपस के घर में छोड़ा और पुस्तकों को बिशेष करके चर्मोपत्रों को लेता आ।
१४ सिकंदर ठठेरेने मुझ पर बक्त बुराई लाई उसके कार्यन के
१५ समान प्रभु उसको फल देवे। उस्से तू भी चैाकस रह क्योंकि
१६ उसने हमारी बातों की बक्त शत्रुता किई। मेरे पहिले बचाव की बात में कोई मेरे संग न देखाईदिया परंतु सभों

१७ ने मुझे छोड़दिया उसका लेखा उन्हें देना न पड़े। पर प्रभु मेरे समीप खड़ाथा मुझे बल दिया कि मुझ से मंगलसमाचार का उपदेश भरोसा के साथ कियाजावे और समस्त परदेशी
१८ लोग सुनें और मैं सिंह के मुंह से बचायागया। और प्रभु मुझे हरएक बुरे कार्य से बचावेगा और अपने स्वर्ग के राज्य के लिये यत्न से रक्खेगा उसकी महिमा सर्वदा है आमीन।
१९ परसकला और अकला और अनीसफरस के घराने को
२० नमस्कार कह। इरास्तस करंतस में रहा और तरफिमस
२१ को मैं ने मीलीतस में रोगी छोड़ा। यत्न कर कि तू जाड़े से आगे पहुंचे यूबुलस और पूदींस और लीनस और क्लादिया
२२ और समस्त भाई तुझे नमस्कार कहतेहैं। प्रभु ईसा मसीह तेरे आत्मा के संग होवे अनुग्रह तुम्हों पर रहे आमीन।

पूलुस की पत्री तीतस को

१ पहिला पर्व्व

१ ईश्वर का सेवक पूलुस और ईसा मसीह का प्रेरित ईश्वर के चुनेहुए के बिश्वास के लिये और सचाई को मान लेने के
२ लिये जो ईश्वर की सेवा के समान है। कि अनंत जीवन की आशा में जिसे ईश्वर ने जो झूठ नहीं कहिसक्ता जगत के
३ आरंभ से पहिले अवधि किया। परंतु उपदेश के द्वारा से अपने बचन को समय पर प्रगट किया जो हमारे उद्धार

करनिहार ईश्वर की आज्ञा के समान मुझे सौंपागया।
४ तीतस को जो सामान्य बिश्वास की रीति से मेराही पुत्र
है अनुग्रह दया और कुशल पिता ईश्वर से और हमारे
५ उद्धार करनिहार प्रभु ईसा मसीह के ओर से होवे। मैंने
तुझे इस कारण क्रीत में छोड़ा कि तू उन बस्तुन को जो
अधूड़ी थी सवांरे और प्राचीनों को हरएक नगर में जैसा
६ मैं ने तुझे आज्ञा किई है ठहरावे। यदि कोई निर्दोष और
एक पत्नी का पति हो जिन के लड़के बिश्वासी हैं और ऊस्तर
७ अथवा मगराई से दोष रहित हों। क्योंकि अवश्य है कि
मंडलाध्यक्ष ईश्वर के भंडारी के समान निर्दोष होवे और
अपना स्वार्थी नहीं तुरंत रिसिआ न जाय न मद्यप न
८ मरकहा न लालची। परंतु अथितिपालक साधुन का प्रेमी
९ संयमी धर्मी पवित्र मध्यम हो। जैसा उसने शिक्षा पाई है
बिश्वास के बचन को दृढ़ता से धरेरहे जिसतें बुह चोखी
शिक्षा से उपदेश करसके और बिपरीतों का बोध करसके।
१० क्योंकि बहुत से मगरे और ब्यर्थ बकवाधी हैं और छली
११ बिशेषकरके खतनः कियेगयों में से। जिनका मुंह बंद
कियाचाहिये वे अनुचित बातें सिखा सिखा के घर के घर को
१२ उलटावतेहैं। उन्हों में से एक ने जो उनका आगमज्ञानी था
कहाहै कि क्रीती सर्बदा झूठे हैं बनैले पशु और पेटके
१३ भारी हैं। यह साक्षी सत्य है इस कारण तू उन्हें दृढ़ता से
१४ डांट कि वे बिश्वास में निर्दोष होवें। यहूदियों की कहानियों
पर और मनुष्यन की आज्ञा पर जो सचाई को मड़ोड़ते हैं
१५ ध्यान न देवें। पवित्रों के लिये सब कुछ पवित्र हैं परंतु
अशुद्धों के और अबिश्वासियों के लिये कुछ शुद्ध नहीं परंतु
१६ उनके मन और बिवेक भी अशुद्ध हैं। ईश्वर के ज्ञानी कहाके
करणी से मुकरतेहैं घिनित और आज्ञा भंग करनिहार
होके और हरएक सुकर्म में सत्यानाश।

२ दूसरा पर्ब्ब

२ पर तू वे बातें कह जो सजीवन शिक्षा के योग्य हों। कि वृद्ध पुरुष सोचेत और गंभीर और मध्यम और बिश्वास और
३ प्रेम और संतोष में ठीक हों। और उसी रीति से वृद्ध स्त्रियां भी साधुन के योग्य की नाईं ब्यवहार रक्खें और मिथ्या दोष दायक नहीं और अति मद्य के ब्यवहार नहीं अच्छी
४ बात की सिखावनिहार हों। कि वे तरुणी स्त्रियों को संयम सिखावें कि वे अपने स्वामियों और बालकों को प्यार करें।
५ आप चतुरी और सति और घर में रहनेवाली और सुखभाव अपनेही पतियों को मानें कि ईश्वर के बचन की निंदा न किई
६ जावे। इसी रीति से तरुण पुरुषों को भी शिक्षाकर कि वे
७ संयमी होवें। सारी बातोंमें अपने को उत्तम कार्य्यन की बानगी करदिखा शिक्षा में निर्लोभता से गंभीरता से सूधाई से।
८ सजीवन बचन जो खंडित न कियाजाय वुह जो बिपरीत के ओर है तुम्हों पर कुछ बुरी बात का कारण न पाके लज्जित
९ होजाय। सेवक अपनेही स्वामियों के बश में हों और सारी बातों में उनको प्रसन्न करें और फिरके उत्तर न देवें।
१० और चुरावने में नहीं परंतु समस्त अच्छी सचौटी दिखावें कि वे हमारे मोक्षदाता ईश्वर की शिक्षा को सारी बातों में
११ शोभा देवें। क्योंकि ईश्वर के उद्धार करने का अनुग्रह
१२ समस्त मनुष्यन् पर प्रगट हुआ। जो हमें सिखावताहै कि अधर्मता और संसारी लालसा से मुकरके हमलोग इस बर्त्तमान जगत में संयम से और धर्म से और भक्ताई से जीवें।
१३ और इस आशीर्बाद की आशा के और महान् ईश्वर और अपने मोक्षदाता ईसा मसीह की महिमा के प्रगट होने की
१४ बाट जो हैं। कि उसने आपको हमारी संती दिया कि वुह सारे कुकर्म्मों से हमों को छुड़ावे और अपने लिये एक निज
१५ लोग को जो भले कार्य्य में ज्वलित है पवित्र करे। ये बातें

कह उपदेश कर और समस्त पराक्रम से दपट दे कोई तेरी निंदा न करे।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ उन्हें चेतादे कि राजाओं और सामर्थ्यों के बश में होवें कि अध्यक्षों को मानें और हर प्रकार की भलाई करने पर
२ सिद्ध रहें। किसीको कलंक न लगावें और झगड़ालू न होवें परंतु धीमा और समस्त मनुष्यन को कोमलता दिखावें।
३ क्योंकि हमलोग आप भी आगे मूर्खमगरा भटकेऊए थे और नाना प्रकार की बुरी लालसा और सुखाभिलाष के दास थे और डाह और हिंसा से निबाह करतेथे बिरुद्ध के योग्य
४ और आपुस में बिरोध करतेथे। परंतु जब हमारे मुक्तिदाता
५ ईश्वर की दया और प्रेम मनुष्य पर प्रगट ऊआ। उसने हमको बचाया न कि धर्म की करनी से जो हमने किई परंतु अपनी दया के कारण से नये जन्म के स्नान से और धर्मात्मा
६ को नवीनता से। जिसे उसने हमारे मुक्तिदाता ईसा मसीह
७ के ओर से बऊताई से वहाया। कि उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरके अनंत जीवन की आशा के समान हम अधिकारी
८ होवें। यह बचन बिश्वास के योग्य है और मैं चाहता हों कि तू नित्य दृढ़ता से इन बातों के बिषयमें कह कि वे जो ईश्वर पर बिश्वास लायेहैं उत्तम कार्य करनेमें यत्न करें ये बातें
९ अच्छी और मनुष्यन के लिये सफल हैं। परंतु अज्ञान प्रश्नों और बंशाउरियों और ब्यवस्था के बिषय में झगड़े और टंटे
१० से परे रहो क्योंकि वे निष्फल और ब्यर्थ हैं। उस मनुष्य को जो बिगाड़ू है पहिले और दूसरे बेर डांटने से पीछे त्याग
११ कर। तू जानताहै कि ऐसा जन फिरगयाहै और अपनेही
१२ से दोषी होके पाप करताहै। जब मैं अरतमस अथवा टकिकस को तेरे पास भेजों यत्न कर कि त मेरे पास

नीकोपूलिस में आवे क्योंकि मैं ने ठहराया है कि जाड़ा वहीं
१३ काटों। शास्त्री जीना और अपलूस को यत्न से भेज कि वे
१४ किसी बस्तु की चाह न रक्खें। और हमारे लोग भी सीखें
कि प्रयोजन के लिये अच्छे कार्य ग्रहण करें कि वे निष्फल न
१५ रहें। सब जो मेरे संग हैं तुझे नमस्कार कहते हैं उनको जो
हमसे बिश्वास में प्रेम रखते हैं नमस्कार कह तुमसभों पर
अनुग्रह होवे आमीन।

पूलुस की पत्री फलिमान को

---

१ पूलूस के जो मसीह ईसा का बंधुआ और भाई तीमताउस
के ओर से फलीमान को जो हमारा अतिप्रिय और संगी
२ परिश्रमी है। और प्यारी अप्फिया और अरक्पस हमारा
संगी सिपाही और उस मंडली को जो तेरे घर में है।
३ अनुग्रह और कुशल हमारे पिता ईश्वर और प्रभु ईसा
४ मसीह के ओर से होवे। मैं तेरे प्रेम को जो सारे धर्मियों से
है और बिश्वास को जो प्रभु ईसा पर है सुनके नित्य अपनी
प्रार्थना में तेरी चर्चा करके ईश्वर का धन्यवाद करता हों।
६ कि तेरे बिश्वास में भागी होना गुणकारी होवे कि सारी
भलाइयां जो मसीह ईसा में तुझ में हैं मानलिईजावें।
७ क्योंकि हम तेरे प्रेम से बहुत आनंद और शांति पावते हैं कि
८ हे भाई तुझ से साधुन के जीव बिश्राम पावते हैं। सो यद्यपि मैं
उचित बातों में मसीह में साहस से तुझे आज्ञा करसकों।
९ तथापि प्रेम के कारण से मैं विशेष करके बिनती करता हों

क्योंकि मैं पूलुस वृद्ध और अब ईसा मसीह का बंधुआ भी
१० हों। सो मैं अपने पुत्र उनीसमस के लिये जो मेरे बंधन में
११ मुझ से उत्पन्न हुआ बिनती करताहों। वुह आगे तेरे लिये
१२ निष्फल था पर अब तेरे और मेरे लिये सफल है। मैं ने उसे
भेजाहै अब तू उसको अर्थात् मेरेही अंतड़ियों को ग्रहण कर।
१३ मैं ने चाहाथा कि उसे अपनेही पास रक्खों कि वुह तेरी
१४ संती मंगलसमाचार के बंधन में मेरी सेवा करे। परंतु मैं ने न
चाहा कि तेरी इच्छा बिना कुछ करों कि तेरी दया आवश्यक
१५ रीति से नहीं परंतु मन की इच्छा से होवे। क्योंकि क्याजाने
वुह तुझ से इसलिये थोड़ी बेरलों अलग हुआ कि तू उसे
१६ सर्बदा के लिये पावे। अब सेवक के समान नहीं परंतु सेवक
से श्रेष्ठ अर्थात् प्रिय भाई के समान बिशेषकरके मेरे लिये
१७ परंतु तेरे लिये शरीर में और प्रभु में कितना अधिक। सो
जो तू मुझे संगी जानताहै तो उसको मेरे समान ग्रहण कर।
१८ जो उसने तेरा कुछ बिगाड़ा है अथवा तेरा कुछ धरावताहै
१९ तू उसे मेरे नाम पर लिख रख। मुझ पूलुस ने अपनेही हाथ से
लिखाहै मैं आप भर देउंगा तुझे नहीं कहता कि तू अपनेही
२० को मुझे धारताहै। हां भाई मैं तुझ से प्रभु में लाभ पाओं
२१ मेरे अंतड़ी को प्रभु में सुख दे। मैं ने तेरी अधीनता का
भरोसा रखके तुझे लिखा यह जानके कि तू मेरे कहने से
२२ अधिक करेगा। और भी मेरे लिये टिकाव सिद्ध कर कि
मुझे आशा है कि मैं तुम्हारी प्रार्थना के कारण से तुम्हें
२३ दियाजाऊंगा। मसीह ईसा में मेरा संगी बंधुआ अपाफरास।
२४ और मरक़ुस और अरस्तरख़ुस और दीमा और लूक़ा जो
२५ मेरे संगी परिश्रमी हैं तुझे नमस्कार कहतेहैं। हमारे प्रभु
ईसा मसीह का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे आमीन।

पूलस की पत्नी इबरानियों को

---

१ पहिला पर्व्व

१ ईश्वर जिसने आगम ज्ञानियों के ओर से पितरों से बारंबार
२ और नाना प्रकार से बार्त्ता किई। इन्हीं पिछले दिनों में
हमों से पुत्र के ओर से कहा जिसे उसने समस्त बस्तुन का
अधिकारी किया और जिस्से उसने जगतों को भी बनाया।
३ वुह उसके तेज का प्रकाश और उसकी मूर्त्ति का ठीक स्वरूप
है और अपने पराक्रम के बचन से समस्त बस्तुन को
संभालताहै आपही से हमारे पापों को शुद्ध करते महिमा
४ के दहिने ओर ऊपर जाबैठा। वुह दूतों से ऐसा बड़ा है
५ जैसा उसने अधिकार में उनसे श्रेष्ठ नाम पाया। क्योंकि उसने
दूतों में से किस के बिषय में यह कभी कहा कि तू मेरा पुत्र है
आज मुझ्से उत्पन्न ऊआ और फेर कि मैं उसका पिता होंगा
६ और वुह मेरा पुत्र होगा। और फेर जब वुह पहिलौंठे को
जगत में लाताहै तब कहताहै कि ईश्वर के समस्त दूत उसकी
७ पूजा करें। और वुह दूतों के बिषय में कहताहै कि वुह अपने
दूतों को आत्मा और अपने सेवकों को आग की लवर
८ करताहै। परंतु पुत्र से कहताहै कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन
९ सनातन है तेरे राज्य का दंड धर्म का दंड है। तू ने तो धर्म
से प्रेम किया और अधर्म से बिरोध किया इस कारण ईश्वर
ने हां तेरे ईश्वर ने आनंद के सुगंधतेल से तुझ को तेरे संगियों
१० से अधिक अभिषेक किया। और यह कि हे प्रभु तू ने आरंभ
में भूमि की नेउं डाली और समस्त स्वर्ग तेरे हाथों के
११ बनेऊएहैं। उनका नाश होजायगा परंतु तू नित्य रहताहै

१२ हां वे सब वस्त्र के समान पुराने होंगे। और तू उन्हें ओढ़ने के समान लपेटेगा और वे बदलजायंगे परंतु तू जैसाकातैसा
१३ है और तेरे बरस न घटेंगे। परंतु उसने दूतों में से कौनसे को कभी कहा कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ जबलों कि मैं तेरे
१४ शत्रुन को तेरे पाओं तले का पीढ़ा करों। क्या वे सब सेवा करनिहार आत्मा नहीं हैं जो उद्धार के अधिकारियों की सेवा के लिये भेजेगयेहैं।

२ दूसरा पर्व्व

१ इस कारण चाहिये कि हम उन बातों पर जो हमने सुनीं
२ अत्यंत ध्यान करें न होवे कि हम उन्हें खोदेवें। क्योंकि जो दूतों के और से कहाऊआ बचन दृढ था और हरएक अपराध और आज्ञाभंगकरना उचित पलटा का फल
३ पाया। तो हम क्योंकर बचेंगे जो इतने बड़े उद्धार से अचेत रहें जो आरंभ में प्रभु से कहागया और जिन्हों ने उसे
४ सुना हमारे समीप ठहराया। और ईश्वर ने भी आश्चर्य और लक्षण और नाना प्रकार के अद्भुत और धर्मात्मा के दान से आपनीही इच्छा के समान उन पर साक्षी
५ दिई। क्योंकि उसने आवनिहार जगत को जिसके बिषय में
६ हम बोलतेहैं दूतों के बश में नहीं किया। परंतु किसी ने कहीं साक्षी देके कहा कि मनुष्य क्या है जो तू उसकी चिंता करताहै अथवा मनुष्य का पुत्र क्याहै कि तू उसके लिये
७ सोच करताहै। तूने उसको दूतों से तनिक छोटा किया तूने उसको ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा से मुकुट दिया और
८ उसको अपने हाथों के कार्य्यन पर प्रधान किया। तूने समस्त बस्तें उसके पावं तलें कियां क्योंकि जब उसने समस्त बस्तें उसके पावं तले कियां उसने कोई बस्तु न छोड़ी जो उसके बश में न किई परंतु अबलों हम नहीं देखते कि

९ सारी बस्तें उसके नीचे रक्खीगई। तथापि हम देखतेहैं कि ईसा मृत्यु की पीड़ा के कारण से दूतों से तनिक छोटा कियागया ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा से मुकुट पाया जिसतें वुह ईश्वर के अनुग्रह से हरएक मनुष्य के कारण मृत्यु को चीखे।
१० क्योंकि उसको उचित हुआ जिसके कारण समस्त बस्तें हैं और जिस्से समस्त बस्तें कि बहुतसे पुत्रों को ऐश्वर्य में लावे उनके उद्धार देनिहार अगुआ को दुखों से सिद्ध करे।
११ क्योंकि वुह जो पवित्र करताहै और जो पवित्र कियेगयेहैं सब एकही के हैं क्योंकि उस कारण से वुह उन्हें भाई कहने
१२ से लज्जित नहीं है। कि यह कहताहै कि मैं अपने भाइयों को तेरे नाम का संदेश देऊंगा और मंडली के मध्य में तेरी
१३ स्तुति गाओंगा। और फेर यह कि मैं उस पर आशा रक्खोंगा फेर यह कि देख मैं और लड़के जो ईश्वर ने मुझे दियेहैं।
१४ सो जैसा कि लड़के देह और लोहू में साझी हैं उसने भी आप उनके संग तुल्य भाग लिया जिसतें वुह मृत्यु के द्वारा से उसको जिसपास मृत्यु का बल है अर्थात शैतान को नाश
१५ करे। और उन्हें जो मृत्यु के भय से जीवन भर बंधन में पड़ेथे
१६ छुड़ावे। क्योंकि उसने तो दूतों को नहीं पकड़ा परंतु
१७ इबराहीम के बंश को पकड़ा। इस कारण उसे अवश्य हुआ कि वुह सारी बातों में अपने भाइयों के समान होजाय कि वुह ईश्वर के बिषय में दयाल और धर्मी प्रधान याजक होके
१८ लोगों के पापों के कारण प्रायश्चित्त करे। क्योंकि जब उसने आपही परीक्षा में पड़के दुख पाया तो वुह उनका जो परीक्षा में पड़तेहैं उपकार करसक्ताहै।

३ तीसरा पर्व्व

१ सो हे पवित्र भाइयो जो स्वर्ग की बुलाहट में भागी हो तुमलोग हमारे मत के प्रेरित और प्रधान याजक अर्थात

२ मसीह ईसा को सोचो। वुह अपने ठहरानेवाले के बिश्वास
के योग्य था जिस रीति से मूसा भी उसके सारे घर में था।
३ क्योंकि जैसा घर से घर के बनानेवाले की प्रतिष्ठा अधिक है
वैसा वुह मूसा से अधिक प्रतिष्ठा के योग्य गिनागया।
४ क्योंकि हरएक घर का कोई बनानेवाला है पर जिसने
५ समस्त बस्तें बनाईं सो ईश्वर है। और उन बस्तुन की साक्षी
के लिये जिसका बर्णन अगिले समय में होनेवाला था मूसा
६ उसके सारे घर में बिश्वास के योग्य था। परंतु मसीह
अपनेही घर में पुत्र के समान था जिसका घर हमलोग हैं
जों हम उस भरोसा और आनंद करने की आशा को अंत्य
७ लों दृढ़ता से थांमे रहें। इस कारण जैसा धर्मात्मा कहताहै
८ जों तुम आजके दिन उसका शब्द सुनो। अपने अंतःकरण
को कठोर न करो जैसा रिसियाने में परीक्षा के दिन बन में
९ करतेथे। जब तुम्हारे पितरों ने चालीस बरस लों मुझे परखा
१० और परीक्षा किई और मेरे कार्य्यन् को देखा। इस कारण
मैं उस पीढ़ी से क्रुद्ध ऊआ और कहा कि ये लोग मन में
सर्बदा भरमतेहैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं
११ पहिचाना। सो मैंने अपने क्रोध में किरिया खाई कि ये
१२ लोग मेरे बिश्राम में कधी प्रवेश न करेंगे। हे भाइयो चौकस
रहो न होवे कि तुम्हों में से किसी में दुष्ट और अबिश्वासी
मन होवे जो तुम्हों को जीवते ईश्वर के समीप से फिरावे।
१३ पर जबलों कि आज के दिन कहाजाताहै एक दूसरे को
प्रतिदिन उपदेश करो न होवे कि तुम्हों में से कोई पाप के
१४ छल के कारण से कठोर होजाय। क्योंकि हम मसीह के
भागी ऊएहैं जों हम अपने आरंभ के भरोसा को अंत्यलों
१५ दृढ़ता से थांमे रहें। जबलों कहा जाताहै कि आज के दिन
जों तुम उसका शब्द सुनो तो अपने मन को कठोर न करो
१६ जैसा रिसियाने में करतेथे। क्योंकि कितनों ने सुनके उसे

रिस दिलाया तथापि सभों ने नहीं जो मूसा के ओर से
१७ मिसर से निकले। और वुह किनसे चालीस बरस लों रिस
दिलायागया क्या उन्हों से नहीं जिन्हों ने पाप किया जिनकी
१८ लोथें बन में गिरपड़ीं। और उसने किन से किरिया खाके
कहा कि वे मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे परंतु उन्हों से जो
१९ बिश्वास न लाये। सो हम देखतेहैं कि वे अबिश्वास के कारण
से प्रवेश न करसके।

४ चौथा पर्ब्ब

१ इस लिये हमें डरा चहिये न होवे कि उसके बिश्राम में
प्रवेश करने की प्रतिज्ञा किईजाय कि हम्में से कोई पऊंचने
२ न पावे। क्योंकि जैसा उनके वैसा हमारे लिये भी मंगल
समाचार का उपदेश कियागया परंतु बचन जो उन्हों ने
सुना उनको लाभ न ऊआ कि सुननेवालों ने बिश्वास सहित
३ न सुना। इस लिये हम बिश्वास लाके बिश्राम में पऊंचतेहैं
जैसा उसने कहा कि अपने क्रोध में मैं ने किरिया खाई कि
वे मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे यद्यपि कार्य जगत के आरंभ
४ से सिद्ध ऊए। क्योंकि उसने सातवें के विषय में कहीं यों
कहा कि ईश्वर ने अपने समस्त कार्य करके सातवें दिन में
५ बिश्राम किया। परंतु इसमें फिर कहताहै कि वे मेरे
६ बिश्राम में प्रवेश न करेंगे। सो जैसा कि अवश्य है कि कितने
उसमें प्रवेश करें और वे जिनके कारण मंगलसमाचार का
उपदेश आगे कियागया अबिश्वास के कारण से प्रवेश न किये।
७ फिर वुह एक दिन का ठिकाना करके दाऊद में कहताहै कि
आज इतना समय बीतने के पीछे जैसा कहागयाहै जो तुम
आज उसका शब्द सुनो तो अपने अंतःकरण को कठोर न
८ करो। क्योंकि जो यशु ने उन्हें बिश्राम में पऊंचाया होता
९ तो वुह उसके पीछे दूसरे दिन के बिषय में न कहता। सो

१० एक बिश्राम ईश्वर के लोगों के कारण धराहै। क्योंकि जिसने उसके बिश्राम में प्रवेश किया वुह भी अपनेही कार्य्य
११ से रहिगया जैसा कि ईश्वर ने अपने से। इस कारण आओ परिश्रम करें कि हम उस बिश्राम में प्रवेश करें ऐसा न होवे कि कोई अबिश्वास के कारण से उनके समान भ्रष्ट होजांय।
१२ क्योंकि ईश्वर का बचन जीवता और सामर्थी और समस्त दोधारा खड्ग से अति चोखा है और प्राण और आत्मा और गांठ गांठ और गूदे को अलग अलग करके चलाजाताहै और
१३ चिंतों को और मन के अभिलाषों को जांचताहै। और कोई सृष्टि उसकी दृष्टि से छिपी नहीं परंतु समस्त बस्तें उसके नेत्र
१४ के आगे जिस्से हम को काम है नंगी और खुलीहुईहैं। सो जैसा कि हमारे लिये एक बड़ा प्रधानयाजक जो स्वर्ग से पार चलागया अर्थात् ईश्वर का पुत्र ईसा है आओ अपने मत
१५ को दृढता से थांभे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा प्रधानयाजक नहीं है जो हमारी दुर्बलता से न छूआजासके परंतु सारी
१६ बातों में पापों को छोड़ हमारे समान परखागयाहै। इस लिये हम अनुग्रह के सिंहासन के पास ढाढस से आवें कि हम दया पावें कि हरएक आवश्यक के समय में सहाय के लिये अनुग्रह पावें।

५ पांचवां पर्व्व

१ क्योंकि हरएक प्रधानयाजक मनुष्यन के कारण ईश्वर के बिषय की बस्तुन पर मनुष्यन मेंसे लियाजाके ठहरायाजाताहै
२ कि वुह पाप के लिये भेंट और बलिदान चढ़ावे। जो अज्ञानों और भटकेहुएन पर दया करसक्ताहै क्योंकि वुह
३ आप भी दुर्बलता से घेराहुआहै। और इसी कारण से अवश्य है कि जिस रीति से वुह औरों के लिये उसी रीति
४ से अपने लिये पाप के कारण चढ़ावे। और इस पद को

कोई मनुष्य अपने ऊपर नहीं लेताहै परंतु वुह जो हारून
५ के समान ईश्वर से बुलायागयाहै। ऐसा मसीह ने भी प्रधान
याजक होने के लिये अपनी महिमा न किई परंतु उसने जिसने
उसे कहा कि तू मेरा पुत्र है आज मैंने तुझे उत्पन्न किया।
६ जैसा कि वुह आन स्थल में कहताहै कि तू मल्कीसिदक़ की
७ पांती में सर्वदा का याजक है। वुह अपने शरीर के दिनों में
अति बिलाप करके और आंसू बहा बहा के उसके आगे जो
उसको मृत्यु से बचाने पर सामर्थी था प्रार्थना और बिनती
किई और जिस बात से अपनी भलाई में वुह डरताथा
८ सुनागया। यद्यपि वुह पुत्र था तथापि उन दुखों से जो
९ उसने पाये आधीनता सीखी। और सिद्ध होके वुह उनके
लिये जो उसकी आज्ञा मानतेहैं सर्वदा के उद्धार का कर्त्ता
१० ऊआ। ईश्वर से मल्कीसिदक़ की पांती में प्रधानयाजक
११ कहाया। जिसके विषय में हमारे पास कहने को बऊत है
जिनका समुझना कठिन है क्योंकि तुमलोग ऊंचा सुनतेहो।
१२ क्योंकि तुम्हें जब चाहियेथा कि तुमलोग इस समय के उपदेशक
होओ तुमलोग आधीन हो कि कोई तुम्हें फेर सिखावे कि
ईश्वर की वाणी के पहिले सूत्र क्या हैं और ऐसे बनेहो कि
१३ तुम्हें दूध पिलावे न कि कड़ा भोजन खिलावे। क्योंकि हरएक
जो दूध पीताहै धर्म के बचन में अप्रवीण है क्योंकि वुह
१४ बालक है। परंतु कड़ा भोजन तरुणों के लिये है जिनको
अभ्यास के कारण से भले और बुरे को पहिचान्ने की बान
पड़गईहै।

६ छठवां पर्ब्ब

१ इस कारण हम मसीह की शिक्षा के सूत्रों को छोड़ के सिद्धता
को चलेजावें और मृतक कार्य्यन के पश्चात्ताप की और ईश्वर
२ पर बिश्वास लावने की। और स्नान के शिक्षा की और हाथ

रखने की और मृतकन के जी उठने की और अनंत न्याय की
३ नेउं फेर के न डालें। और जो ईश्वर चाहे तो हम यह
४ करेंगे। क्योंकि जो एक बार प्रकाशित हुए और स्वर्ग के
५ दान का स्वाद पाया और धर्मात्मा में साझी हुए। और
ईश्वर का सुबचन और आवनेवाले जगत् के सामर्थ्य का
६ स्वाद पाया। जो वे भ्रष्ट होजायं तो उनके बिषय में अनहोना
है उन्हें फेर के नये सिरसे पश्चात्ताप करावे इस लिये कि वे
ईश्वर के पुत्र को दुहरा के अपने लिये क्रूस पर खींचतेहैं
७ और प्रगट में लाज दिलावतेहैं। क्योंकि भूमि जो उस मेह
को जो उस पर बारंबार बरसताहै पीतीहै और खेती
के करनेवालों के योग्य हरियाली उपजावतीहै ईश्वर के
८ आशीष की भागी होतीहै। पर जो कांटे और ऊंटकटारे
उपजावती है त्यक्त है और स्रापित होने के निकट है जिसका
९ अंत जलायाजानाहै। परंतु हे प्रिय यद्यपि हम यों बोलतेहैं
तथापि तुम्हारे लिये हमारा उस्से अच्छा प्रबोध है अर्थात
१० ऐसी बस्तु जो उद्धार की संगी है। क्योंकि तुम्हारे कार्य और
प्रेम के परिश्रम को जो तुम्होंने उसके नाम पर साधुन की
सेवा करके और सेवा करते प्रगट कियाहै ईश्वर अन्यायी
११ नहीं है कि भूलजाय। और हम चाहतेहैं कि हरएक तुम्हों
में से ऐसा यत्न करे कि भरोसा की संपूर्णता की आशा
१२ अंत्यलों रहे। जिसमें तुमलोग आलसी न होओ परंतु उनके
पीछे चलनेवाले होओ जो अति सहने और बिश्वास के
१३ द्वारा से प्रतिज्ञा के अधिकारी होतेहैं। क्योंकि जब ईश्वर
ने इबराहीम को बाचा दिया वुह अपने से बड़ा जिसकी
किरिया खाता न पाके उसने अपनीही किरिया खाके कहा।
१४ निश्चय मैं तुझ पर आशीष पर आशीष देउंगा और तुझे
१५ बढ़ती पर बढ़ती करोंगा। और यों धीरजसे ठहरके उसने
१६ बाचाको प्राप्त किया। क्योंकि मनुष्य तो निश्चय बड़े की

किरिया खातेहैं और उनके कारण ठहरावने के लिये
१७ किरिया खातेहैं कि सारे झगड़े को समाप्त करे। इसी लिये
ईश्वर अत्यंत इच्छा करके कि प्रतिज्ञा के अधिकारियों को
अपने मंत्र की अचलता को दिखावे किरिया को मध्य में
१८ लाया। जिसतें दो अचल वस्तुन से जिनमें ईश्वर का झूठ
बोलना अनहोना था हमलोग जो शरण लेने के लिये भागे
कि आशा को जो हमारे आगे धरीहै धररक्खें कि दृढ़ता
१९ से सांत्वन पावें। सोई हमारे प्राण के लंगर के समान है
जो बचाई ऊई और स्थिरहै और घूंघट के भीतर के स्थानमें
२० पऊंचतीहै। जिधर हमारे अगुआ ईसा ने जो मल्कीसिदक़
की पांती के समान सर्बदा के लिये प्रधानयाजक ऊआ
हमारे कारण प्रवेशकिया।

७ सातवां पर्व्व

१ क्योंकि यह मल्कीसिदक़ सलीम का राजा और अतिमहान्
ईश्वर का याजक था जो इबराहीम से जामिला और
आशीष दिया जब वुह राजाओं को मारके फेर आवताथा।
२ उसको इबराहीम ने समस्त वस्तुन का दसवां भाग दिया
जिसका पहिला अर्थ धर्म का राजा है और फेर सलीम का
३ राजा अर्थात् कुशल का राजा। पितारहित मातारहित
बंशरहित जिसके नतो दिनों का आरंभ नतो जीवन का अंत्य
परंतु ईश्वर के पुत्र के समान बनाथा नित्य का याजक धराहै।
४ अब बिचार करो यह कैसा महापुरुष था जिसको प्रधान
५ पिता इबराहीम ने लूट का दसवां भाग दिया। सो लूई के
पुत्रों को जो याजकता का कार्य पावतेहैं ब्यवस्था के समान
निश्चय आज्ञा है कि लोगों से अर्थात् अपने भाइयों से दसवां
६ भाग लेवें यद्यपि वे इबराहीम की कटि से निकले। परंतु
उसने जिसका बंश उनसे न गिनागया इबराहीम से दसवां

भाग लिया और उसको जिसे प्रतिज्ञा किईगई आशीष
७ दिया। और निःसंदेह छोटा बड़े से आसीष पावताहै।
८ और यहां मनुष्य जो मरतेहैं दसवां भाग लेतेहैं परंतु वहां
वही जिसके बिषय में साची दिईगई कि वुह जीवताहै।
९ और लूई ने भी जिसने दसवां भाग लिया इबराहीम
१० के द्वारा से दसवां भाग दिया। क्योंकि जब मल्कीसिदक़
११ उसे जामिला वुह अपने पिता की कटि में था। सो जों
सिद्धता लूई की याजकता से ऊईहोती कि उसके नीचे लोगों
ने व्यवस्था पाई तो अधिक क्या प्रयोजन कि दूसरा याजक
मल्कीसिदक़ की पांती के समान निकले और हारून की पांती
१२ के समान गिना न जावे। क्योंकि याजकता के पलट जाने से
१३ अवश्य है कि व्यवस्था भी पलट जाय। क्योंकि वुह जिसके
बिषय में ये बातें कहीजातीहैं दूसरे कुल में से है जिसमें से
१४ किसी ने यज्ञ बेदी की सेवा नहीं किई। क्योंकि प्रगट है कि
हमारा प्रभु यहूदा से उपजा जिसके कुल की याजकता के
१५ बिषय में मूसा ने कुछ न कहा। और भी अधिक प्रगट है कि
दूसरा याजक मल्कीसिदक़ की समता के समान उदय
१६ होताहै। जो शरीर की आज्ञा की व्यवस्था के समान नहीं
१७ परंतु अनंतजीवन के पराक्रम के समान बनाहै। क्योंकि वुह
साची देताहै कि तू मल्कीसिदक़ की पांती में सर्वदा के लिये
१८ याजक है। क्योंकि निर्बलता और निष्फलता के कारण से
१९ अगिली आज्ञा लोप किई जातीहै। क्योंकि व्यवस्था ने तो
कुछ सिद्ध न किया परंतु उसे अच्छी आशा के लावने में
२० किया जिस्से हम ईश्वर के निकट बढ़तेहैं। और जैसा कि
२१ बिना किरिया से न ऊआ। वे तो बिना किरिया खाये याजक
बनेहैं परंतु यह किरिया से उसे जिसने उसको कहा कि
प्रभु ने किरिया खाई और न पछतावेगा तू मल्कीसिदक़ की
२२ पांती के समान नित्य के लिये याजक है। इतना अधिक

२३ ईसा एक अति अच्छे नियम का बिचवई ऊआ। और बऊत याजक थे क्योंकि वे म्हत्यु के कारण से जगत् में रहि नसके।
२४ पर यह इस कारण कि सर्वदा रहताहै ऐसी याजकता
२५ रखताहै जो अचल है। इसि लिये वुह उन्हें जो उसके द्वारा से ईश्वर के पास आवतेहैं अत्यंत लों बचासक्ताहै क्योंकि वुह उनके लिये बिनती करनेको सर्वदा जीवताहै।
२६ क्योंकि ऐसा प्रधानयाजक हमारे लिये चहिये था जो पवित्र निर्दोष निर्मल पापियों से अलग और स्वर्गों सेभी महान्
२७ है। जो उन प्रधानयाजकों के समान प्रतिदिन आधीन नथा कि पहिले अपनेही और फेर लोगों के पापों के कारण बलिदान लावे क्योंकि उसने आपको एकबार भेंट देके यह
२८ किया। क्योंकि ब्यवस्था मनुष्यन को जो निर्बल है प्रधानयाजक ठहरावतीहै परंतु किरिया का बचन जो ब्यवस्था के पीछे था सर्वदा अभिषेक कियेगये पुत्र को ठहरावताहै।

८ आठवां पर्ब्ब

१ अब जो कुछ कि हमने कहीहैं उसका यह तात्पर्य्यहै कि हमारा ऐसा प्रधानयाजक है जो महिमा के सिंहासन के
२ दहिने ओर स्वर्ग में बैठाहै। जो पवित्र बस्तुन का और सच्चे तंबू का सेवक है जिसे मनुष्य ने नहीं परंतु ईश्वर ने खड़ा
३ कियाहै। क्योंकि हरएक प्रधानयाजक भेंट और बलिदान चढ़ावने के लिये ठहरायाजाताहै इस लिये अवश्य ऊआ कि
४ यह मनुष्य भी भेंट के लिये कुछ रक्खे। परंतु जो वुह एथिवी पर ऊआ होता तो याजक न होता क्योंकि याजक तो हैं जो
५ ब्यवस्था के समान भेंट चढ़ावतेहैं। जो स्वर्ग की बस्तुन के दृष्टांत और परछाहीं के लिये सेवा करतेहैं जैसा मूसा को जब वुह तंबू बनाने पर था दर्शन में आज्ञा दिईगई क्योंकि वुह कहताहै कि तू समस्त बस्तें उस डौलके समान बना

६ जैसा तुझे पहाड़ पर दिखायागया। परंतु अब उसको उस्से श्रेष्ठ सेवा मिली कि वुह अति अच्छे नियम का बिचवई
७ ऊआ जो उस्से अच्छी प्रतिज्ञा के संग ठहरायागया। क्योंकि जो वुह पहिला नियम निर्दोष ऊआहोता तो दूसरे के स्थान
८ की खोज न होती। क्योंकि वुह उनको दोषी ठहराके कहताहै कि देख वे दिन आवतेहैं प्रभु कहताहै कि मैं इसराईल के घराने और यहूदा के घराने के लिये एक नया
९ नियम ठहराओंगा। प्रभु कहताहै कि यह उस नियम के समान नहोगा जो मैं ने उनके पितरन के संग उस दिन जब मैं ने उनका हाथ पकड़ा कि उन्हें मिसर के देश से निकाल लाओं इस कारण कि वे मेरे नियम पर स्थिर न रहे और
१० मैं ने उनसे आनाकानी किई। क्योंकि यह नियम है इन दिनों के पीछे मैं इसराईल के घराने से करोंगा प्रभु कहताहै कि मैं अपनी आज्ञा को उनके मन में डालोंगा और उन्हें उनके अंतःकरण में लिखोंगा और मैं उनका ईश्वर होंगा और वे
११ मेरे लोग होंगे। और कोई अपने परोसी को और फेर कोई अपने भाइयों को न कहेगा कि तू ईश्वर को पहिचान
१२ क्योंकि छोटे से बड़े लों सब मुझे पहिचानेंगे। क्योंकि मैं उनकी अधर्मता पर दया करोंगा और उनके पापों और
१३ उनकी बुराइयों को कभी स्मरण न करोंगा। जब वुह कहताहै कि एक नया उसने पहिले को पुराना किया अब वुह जो पुराना ऊआ और गलगया सो नाश के निकट है।

९ नवां पर्व्व

१ इस लिये पहिला तंबू ईश्वर की सेवा का बिधि रखताथा
२ और एक संसारी पवित्र स्थान। क्योंकि पहिला तंबू सिद्ध ऊआ जिसमें दीअट और मंच और भेंट की रोटियां थीं
३ यह पवित्र स्थान कहावताहै। और दूसरे घूंघट के परे

४ वुह तंबू था जो पवित्रों से पवित्र कहावताहै। उसमें सोने को धूपाउरी थी और नियम की संदूक जो चारों ओर सोने से मढ़ीथी उसमें एक सोने का पात्र मन्ना से भराऊआ और हारून की छड़ी जिसमें कनखी फूटीथी और नियम की पटियां
५ थीं। और उसके ऊपर तेजखी करोबोम थे जो दया के आसन पर छाया कियेथे जिनके विषय में हम अब कहि नहीं
६ सक्ते। सो जब ये बस्तें इस रीति से ठीक होचुकीं पहिले तंबू
७ में याजक नित्य प्रवेश करके सेवा करतेथे। पर दूसरे में केवल प्रधानयाजक बरस में एकबार लोहू सहित जिसे वुह अपने लिये और लोगों के भूलचूक के लिये चढ़ावताथा।
८ धर्मात्मा इस्से बुझावताथा कि जबलों पहिला तंबू खड़ा था
९ तबलों अत्यंत पवित्र में मार्ग प्रगट न ऊआथा। जो बर्त्तमान समय की उपमा है जिसमें भेंट और बलिदान चढ़ायेजातेहैं जो सेवा करनिहारों को अंतःकरण के विषय में शुद्ध न
१० करसके। कि वे केवल खाना और पीना और नाना प्रकार के स्नान और शारीरिक व्यवहारों से प्रयोजन रखतेथे जबलों
११ कि सुधारने का समय न आवे। पर जब मसीह आनेवाली उत्तम बस्तुन का प्रधानयाजक होआया उस्से बड़ा और अति सिद्ध तंबू के कारण से जो हाथों से नहीं बना अर्थात्
१२ इस सृष्टि से नहीं। और बकरियों और बछियों के लोहू से नहीं परंतु अपनेही लोहू से पवित्र स्थान में एक बार प्रवेश किया कि उसने हमारे कारण सर्वदा का मोक्ष प्राप्त
१३ किया। क्योंकि जो बैलों और बकरियों का लोहू और बछिया की राख जो अपवित्रों पर छिड़की जाय शरीर को
१४ पवित्र करने को पवित्र करतीहै। तो कितना अधिक मसीह का लोहू जिसने अपने को निष्कलंक से सर्वदा के आत्मा से ईश्वर के आगे चढ़ाया तुम्हारे अंतःकरण को मृतक के कार्यन
१५ से पवित्र करेगा कि तुम जीते ईश्वर की सेवा करो। और

वुह इसी लिये नये नियम का निचवई है कि मृत्यु के कारण से उन अपराधों के मोक्ष के लिये जो पहिले नियम के विषय में था कि वे जो बुलायेगयेहैं सर्व्वदा के अधिकार की प्रतिज्ञा
१६ को प्राप्त करें। क्योंकि जहां नियमपत्र है तहां नियम
१७ करनेवाले की मृत्यु अवश्य है। क्योंकि नियमपत्र मृत्यु से दृढ़ होताहै नहीं तो वुह किसी काम का नहीं जबलों उसका
१८ स्थिरकरनिहार जीताहै। इस कारण पहिला भी बिना
१९ लोहू से नहीं कियागया। क्योंकि जब मूसा ने समस्त लोगों को व्यवस्था की रीति पर हरएक आज्ञा कहिसुनाई उसने बछड़ों और बकरियों का लोहू जल और लालऊन और जूफा के संग लेकर ग्रंथ पर और समस्त लोगों पर
२० छिड़कके कहा। कि यह उस नियम का लोहू है जो ईश्वर
२१ ने तुम्हारे लिये ठहराया। और उसने तंबू पर और सेवा
२२ के पात्रों पर भी लोहू छिड़का। और बहुधा समस्त वस्तें व्यवस्था में लोहू से पवित्र किईजातीथी और बिना लोहू
२३ बहाये मोक्ष नहीं होता। इस लिये अवश्य था कि स्वर्ग की वस्तुन की बानगी ऐसी वस्तुन से पवित्र किईजायं परंतु स्वर्ग
२४ की वस्तें आप इन्हों से अच्छे बलिदानों से। क्योंकि मसीह ने उस पवित्र स्थान में जो हाथों से बनायागया और सत्य वस्तुन का चिह्न है प्रवेश नहीं किया परंतु स्वर्ग ही में कि अब
२५ हमारे कारण ईश्वर के आगे जाधऊंचे। पर अवश्य नथा कि वुह आप को बारंबार चढ़ावे जैसा प्रधानयाजक पवित्र
२६ स्थान में हर बरस औरों के लोहू से प्रवेश करताहै। इस लिये जो उसको ऐसा अवश्य होता तो वुह जगत के आरंभ से बारंबार कष्ट पायाकरता परंतु अब वुह अंत्य के समय में पाप को नाश करने के लिये अपने को बलिदान देके एकही
२७ बार प्रगट हुआहै। और जैसा कि ठहरायागया कि
२८ मनुष्य एक बार मरे और उसके पीछे बिचार। वैसाही

मसीह एक बार बज़तेरों के पापों को उठावने के लिये चढ़ायागया और उन्हों के उद्धार के लिये जो उसके दूसरे बार आवने की बाट जोहतेहैं निष्पाप प्रगट होगा।

१० दसवां पर्व

१ क्योंकि व्यवस्था उन बस्तुन का ठीक स्वरूप नहीं पर आनेवाली अच्छी बस्तुन की परछाहीं मात्र रखके उन बलिदानों के चढ़ावने से जो वे हर बरस नित्य लावतेहैं जो २ उनके आवतेहैं सिद्ध नहीं करसक्ती। नहीं तो उनका चढ़ावना बंद होजाता इस कारण कि पुजेरी एक बार पवित्र ३ होके पाप का खटका नहीं रखते। परंतु उनमें बरस बरस ४ पाप का चेत होताहै। क्यौंकि अनहोना है कि बैलों और ५ बकरियों का लोहू पापों को मिटावे। इस लिये वुह जगत में आवतेज़ए कहताहै कि बलिदान और अर्पण को तू ने ६ नहीं चाहा परंतु मेरे लिये एक देह सहेजा। होम से और ७ अर्पण से जो पापों के कारण था प्रसन्न नथा। तब मैं ने कहा कि देख मैं आवताहों पुस्तक के कांड में मेरे विषय में लिखाहै ८ कि तेरी इच्छापर चलों हे ईश्वर। ऊपर कहिके कि बलिदान और अर्पण और होम और पाप के लिये बलिदान तू ने न चाहा और उनसे प्रसन्न नज़आ और यह व्यवस्था ९ की रीति पर चढ़ाईजातीहैं। तब उसने कहा कि हे ईश्वर देख मैं तेरी इच्छा पर चलने को आवताहों वुह पहिले को १० अलग करताहै कि दूसरे को स्थिर करे। उसी इच्छा के कारण से हम ईसा मसीह के देह के एकी बार बलिदान ११ होने से पवित्र कियेजातेहैं। और हरएक याजक प्रतिदिन खड़ा होके ईश्वर की सेवा करताहै और एकही प्रकार के बलिदान जो पाप को दूर नहीं करसक्ते बारंबार भेंट १२ दियाकरताहै। परंतु वुह एकही बलिदान पापों के कारण

ऐकही बलिदान चढ़ाके ईश्वर के दहिने ओर सर्बदा के लिये
१३ बैठाहै। ओर अबसे बाट जोहताहै जबलों उसके बैरी
१४ उसके पांव के पीढ़ा होवें। क्योंकि ऐकही अर्पण से उसने
उन्हें जो पवित्र कियेगयेहैं सर्बदा के लिये सिद्ध कियाहै।
१५ धर्मात्मा भी पहिले कहिके हमारे लिये साक्षी देताहै।
१६ कि प्रभु कहताहै कि यह वुह नियम है जो उन दिनों के
पीछे उनसे करोंगा मैं अपनी व्यवस्था को उनके अंतःकरण में
१७ डालोंगा ओर उन्हें उनके मन में लिखोंगा। उनके पापों
१८ ओर अपराधों को मैं कभी स्मरण न करोंगा। अब जहां
इन्हों का मोचन है तहां पाप के कारण बलिदान नहीं है।
२० इस लिये हे भाइयो हमने ईसा के रुधिर से ऐक नये ओर
जीवते मार्ग से जिसे उसने आड़में से अर्थात अपने शरीर में
से हमारे लिये ठहराया पवित्र स्थल में प्रवेश करने की
२१ छुट्टी पाई। ओर महायाजक ईश्वर के घर पर रखके।
२२ आओ हम सचे अंतःकरण ओर संपूर्ण बिश्वास से बुरे बिवेक
से अपने मन को छिड़कवाके ओर अपने देह को शुद्ध जलसे
२३ धोलवा के निकट आवें। अपने मन की आशा को बिना
डगमगाने से दृढता से थामें रहें क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किईहै
२४ सो बिश्वास के योग्य है। ओर हम ऐक दूसरे को सोचें कि
२५ हम प्यार ओर सुधर्म करने को उस्कावें। हम ऐकठे होनेसे
अलग न रहें जैसा कि कितनों की रीति है परंतु उपदेश
करें ओर यह इतना अधिक जेंउ जेंउ तुम देखतेहो कि दिन
२६ समीप आवताहै। क्योंकि जो हम सचाई के ज्ञान को प्राप्त
करके जान बूझके पाप करें तो फिर कोई बलिदान पापके
२७ कारण नहीं धराहै। परंतु न्याय का निश्चय भयंकर बाट
जोहना ओर अग्नि का जलजलाहट जो शत्रुन को खालेगा
२८ धराहै। जिस किसीने मूसा के शास्त्र की निंदा किई वुह दो
अथवा तीन साक्षियों के प्रमाण से बिना दया से माराजाता

२९ था। सो तुमलोग बूझो कि वुह कितने अति कठिन दंड के योग्य गिनाजायगा जिसने ईश्वर के पुत्र को पांव तले लताड़ा और नियम के रुधिर को जिस्से वुह पवित्र कियागया सामान्य गिना और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया।
३० क्योंकि हम उसे जानतेहैं जो यह बोला कि बैर लेना मेरा काम है प्रभु कहताहै कि मैंहीं पलटा देउंगा और फेर यह
३१ कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते ईश्वर के पल्ले
३२ में पड़ना भयंकर है। परंतु अगिले दिनों को स्मरण करो जिनमें तुम्हों ने प्रकाशित होतेहुए युद्ध के कष्ट को सहा।
३३ कुछ तो जब कि तुमलोग निंदा और दुखों के सवांग बने और कुछ जब कि उनके जिनकी यह दशा होतीथी साझी थे।
३४ क्योंकि मेरे बंधन में तुमलोग मेरे संग दुखी थे और अपनी संपत्ति के लूटेजाने को आनंद से ग्रहण किया अपनेही में जानके कि हमारे लिये एक संपत्ति जो अच्छी और स्थिर है
३५ स्वर्ग में धरीहै। सो तुमलोग अपने भरोसे को त्याग न करो
३६ जिसका बड़ा फल है। क्योंकि तुम्हें संतोष अवश्य है कि
३७ ईश्वर की इच्छा पर चलके प्रतिज्ञा को प्राप्त करो। क्योंकि और थोड़ी बेर और वुह जो आवताहै आवेगा और अबेर
३८ न करेगा। परंतु धर्मी बिश्वास से जीयेगा तथापि जो वुह
३९ हटजावे तो मेरा प्राण उस्से प्रसन्न न होगा। परंतु हम उनमें से नहीं हैं जो नाश लों हटजातेहैं परंतु उन्होंमें से हैं जो प्राण बचावने के लिये बिश्वास लातेहैं।

११ ग्यारहवां पर्व्व

१ अब बिश्वास उन बस्तुन का निश्चित बाट जोहना है जिनपर
२ आशा किईजातीहै। क्योंकि उसही से प्राचीनों ने साक्षी प्राप्त
३ किई। बिश्वास से हम जानतेहैं कि जगत् ईश्वर के बचन से सुधरगये जैसा कि जो बस्तें देखीजातीहैं उन बस्तुन से जो

४ देखने में आतीहैं नहीं बनीं। बिश्वास से हाबील ने क़ीन से
अच्छा बलिदान ईश्वर को चढ़ाया उसीके कारण उसने
धर्मी होने की साक्षी प्राप्त किई कि ईश्वर उसके दान पर
५ साक्षी देताहै कि वुह मृतक होके अबलों बोलताहै। बिश्वास
से ईनख स्थानांतर कियागया जिसतें वुह मृत्यु को न देखे
और न पायागया क्योंकि वुह ईश्वर से स्थानांतर कियागयाथा
क्योंकि अपने स्थानांतर किये जाने से पहिले उसने साक्षी
६ प्राप्त किई कि उसने ईश्वर को प्रसन्न किया। परंतु बिना
बिश्वास से प्रसन्न करना अनहोनाहै क्योंकि जो ईश्वर कने
आवताहै उसके लिये अवश्य है कि निश्चय करे कि वुह है
और कि जो उसको यत्न से खोजतेहैं उनका फल देनेवाला
७ है। बिश्वास से नूहने उन बस्तुन के बिषय में जो अबलों
देखने में नहीं आईं थीं ईश्वर से चेतायाजाके और भयखाके
जाहाज़ बनाई कि अपने परिवार को बचावे और उसीसे
उसने जगत् को दोषी किया और उस धर्म का जो बिश्वास से
८ मिलताहै अधिकार हुआ। बिश्वास से इबराहीम जब
बुलायागया कि एक स्थान में बाहर जाय जिसे वुह अधिकार
में पावनेको था मानलिया और निकलगया यद्यपि वुह न
९ जानताथा कि किधर जाताहै। बिश्वास से उसने प्रतिज्ञा
की भूमि में यों बास किया जैसे परदेश में कि वुह इसहाक़
और यअ़क़ूब के संग जो उसी अवधि के उसके संग अधिकारी
१० थे तंबुओं में रहाकिया। क्योंकि वुह एक नगर की बाट
जोहताथा जिसकी नेवेंहैं जिसका बनानेवाला और डौल
११ करनेवाला ईश्वर है। बिश्वास से सारा ने आपी गर्भ धारण
करने की शक्ति पाई और समय बीते पर पुत्र जनी इस
कारण कि उसने अवधि करनेवाले को बिश्वास के योग्य
१२ जाना। इस लिये एकही से और वुह जो इस बिषय में
मृतकसा था आकाश के तारों के समान मंडली में और समुद्र

१३ के तीर पर के अनगिनित बालू के समान उपजे। ये सब प्रतिज्ञा को न पाके बिश्वास में मरगये परंतु दूर से उन्हें देख के और प्रबुद्ध होके ग्रहण किया और अंगीकार किया कि
१४ हम पृथिवी पर परदेशी और यात्री हैं। क्योंकि वे जो ऐसी
१५ बातें कहतेहैं खोलके कहतेहैं कि हम एक देश ढूंढ़तेहैं। और जो उनके मन वहां होते जहां से वे निकलेथे तो उनके बश
१६ में था कि फिरजाते। सो इस लिये वे एक अति अच्छे अर्थात् स्वर्ग के अभिलाषी थे इस कारण ईश्वर लज्जित नहीं है कि उनका ईश्वर कहावे क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर सिद्ध
१७ कियाहै। बिश्वास से इबराहीम ने जब परीक्षा में पड़ा इसहाक़ को बलि में दिया हां जिसने कि प्रतिज्ञा पाईथी
१८ अपने एक लौते को चढ़ाया। जिसके बिषय में कहागया कि
१९ इसहाक़ में तेरा बंश कहाजायगा। यह समुझ के कि ईश्वर मृतकन से जिलावने को सामर्थी है जहां से उसने उसे एक
२० दृष्टांत में पाया। बिश्वास से इसहाक़ ने आवनेवाली बस्तुन
२१ के बिषय में याक़ूब और अ़सू को आशीष दिया। बिश्वास से याक़ूब ने मरते मरते यूसुफ के दोनों पुत्र को आशीष दिया
२२ और अपने दंड पर स्तुति किई। बिश्वास से यूसुफ ने मरते मरते इसराईल के बंश की यात्रा की बात कही और अपने हड्डियों
२३ के बिषय में आज्ञा किई। बिश्वास से मूसा उत्पन्न होके तीन महीने लों अपने माता पिता से छिपायागया क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुंदर है और राजा की आज्ञा से न डरे।
२४ बिश्वास से मूसा ने तरुण होके न चाहा कि फरऊन की कन्या
२५ का पुत्र कहावे। कि ईश्वर के लोगों के संग दुख में भागी
२६ होना अधिक चाहा कि पाप का भोग थोड़े लों करे। उसने मिसर के भंडारों से मसीह की निंदा को अधिक धन समुझा
२७ क्योंकि उसकी दृष्टि प्रतिफल पावने पर थी। बिश्वास से उसने राजा के क्रोध से भय न खाके मिसर को छोड़ा क्योंकि

२८ उसने उसको जो अदृश्य है देखके बल पाया। बिश्वास से उसने पारजानेके पर्ब्ब को और रुधिर छिड़काने को धारण किया न होवे कि पहिलौंठे पुत्रों का नाशकरनेवाला उनको
२९ छूवे। बिश्वास से वे लाल समुद्र से पारगये जैसे सूखे से जिसे
३० मिसरी करतेहुए डूबगये। बिश्वास से आरीहा की भीतें
३१ सात दिन से घेरीजाके गिरगईं। बिश्वास से राहाब वेश्या भेदियों को कुशल से ग्रहण करके अबिश्वासियों के संग नाश
३२ न हुई। अब मैं और क्या कहों समय घटजाता जो मैं जदिऊन और बरक़ और समसून और यफ़तह और दाऊद और समुईल और आगमज्ञानियों को कथा कहता।
३३ जिन्हों ने बिश्वास से राज्य को बशमें किया और धर्म का कार्य किया और प्रतिज्ञा को प्राप्तकिया और सिंहों के मुंह
३४ को बंद किया। और अग्नि के तेज को बुझा दिया खड्ग के धार से बचगये दुर्बलता में बलवान हुए युद्ध में बीर हुए
३५ और अन्यदेशियों की सेनन को हटादिया। स्त्रियों ने अपने मृतकन को फेरके जीवता पाया और कितने अति कष्ट में डालेगये और मोक्ष को ग्रहण न किया जिसतें वे अति अच्छे
३६ पुनरुत्थान को प्राप्तकरें। कितने ठट्ठों को और कोड़ों की
३७ परीक्षा में पड़ेहां सीकरों और बंधनोंमें भी पड़े। पथरवाह कियेगये आरे से चीरेगये परखेगये खड्ग से मारेगये भेड़ों और बकरियों के खाल ओढ़ेहुए भरमते फिरे सकेती में दुखमें पीड़ा
३८ में रहे। जगत उनके योग्य न था वे उजाड़ों और पहाड़ों और
३९ मांदों और भूमि के गड़हों में भरमतेफिरे। और इन सभों
४० ने बिश्वास से शुभनाम पाके प्रतिज्ञा को प्राप्त न किया। ईश्वर ने हमारे लिये अति अच्छी बस्तु ठहराई कि वे हमें छोड़के सिद्ध न होवें।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ सो साक्षियों के इतने बड़े मेघ से घेरेहुएहोके हम हरएक बोझ और पाप को जो सहज से हमें छेंकताहै त्यागकरके उस दौड़ारी में जो हमारे आगे धरीगईहै संतोष से दौड़ें।
२ और ईसा को जो हमारा अगुआ और बिश्वास का संपूर्ण करनिहार है ताकरखें उसने उस आनंद के लिये जो उसके आगे धरागया लज्जा को तुच्छ समझके क्रूस को सहा और
३ वुह ईश्वर के सिंहासन के दहिने ओर बैठाहै। क्योंकि जिसने अपने बिरोध में पापियों से ऐसी बिपरीतता को सहा उसको सोचो न होवे कि तुमलोग थकजाओ और मन
४ में निर्बल होजाओ। तुम्हों ने अबलों रुधिर लों पाप का
५ साम्ना न किया। और उस शिक्षा को भूलगयेहो जो तुम्हें पुत्रों के समान कहतीहै कि मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना की
६ निंदा न कर और जब वुह तुझे दपटे निर्बल मत हो। क्योंकि जिसे प्रभु प्यारकरताहै उसे ताड़नाकरताहै और हरएक
७ पुत्र को जिसे वुह ग्रहणकरताहै पीटताहै। जो तुमलोग ताड़ना सहो तो ईश्वर तुम्हों से ऐसा ब्यवहार करताहै जैसा पुत्रों से क्योंकि वुह कौनसा पुत्र है जिसे पिता ताड़ना नहीं
८ करता। परंतु जो तुमलोग ताड़नारहित होओ जिसमें सब
९ साझी हैं तो तुमलोग बर्णसंकर हो और पुत्र नहीं। और जब हम अपने शरीर के पिता को जिन्हों ने हमें ताड़ना किई आदर किया क्या हम कितना अधिक आत्मा के पिता के बश
१० में न होंगे और जीयेंगे। क्योंकि उन्हों ने थोड़े दिनके कारण अपनी इच्छा से ताड़ना किई पर वुह हमारे लाभ के लिये
११ जिसतें हम उसकी पवित्रता के साझी होवें। सो समस्त ताड़ना अब आनंद का कारण नहीं सूझपड़ती परंतु दुख का तथापि पीछे को वुह उन्हें जो उसे साधन कियेगयेहैं धर्म के
१२ शांतिमय फल को देतीहै सो इस कारण ढीले हाथों और

१३ निर्बल घुठनों को उठाओ। और अपने पावों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि जो लंगड़ा है भटक न जाय परंतु पहिले
१४ चंगा होजाय। समस्त मनुष्यन के संग कुशल का पीछा करो और पवित्रता का कि उसके बिना कोई प्रभु को न देखेगा।
१५ ध्यान से देखतेऊए न होवे कि कोई ईश्वर के अनुग्रह से गिरजाय न होवे कि कोई कड़ुआहट की जड़ ऊगके दुख देवे
१६ और उस्से बऊतेरे अशुद्ध होजायें। न होवे कि कोई व्यभिचारी अथवा अधर्मी यशु के समान होजाय जिसने एक
१७ भोजन के कारण अपने जन्मभाग को बेचडाला। क्योंकि तुमलोग जानतेहो कि पीछे से जब उसने आशीष के अधिकार को चाहा तब वुह त्यागकियागया क्योंकि उसने पश्चात्ताप करने का स्थान न पाया यद्यपि उसने आंसू बहाबहा के उसे
१८ यत्न से ढूंढ़ा। क्योंकि तुमलोग उस पाहाड़ लों नहीं आयेहो जो छूआजासका और जलताऊआ अग्नि और गाढ़ा मेघ
१९ और अंधकार और आंधी। और तुरही का शब्द और बातों का शब्द जिसे जिन्हों ने सुनाचाहा कि बचन उन्हें
२० फेर न कहाजाय। क्योंकि जो कहागया वे उसे न सहिसक्तेथे और यदि पशु मात्र पहाड़ को छूवे तो उसपर पथरवाह
२१ कियाजायगा अथवा भाले से छेदाजायगा। और वुह दर्शन ऐसा भयंकर था कि मूसा बोला कि मैं अत्यंत डरताहों और
२२ कांपताहों। परंतु तुमलोग सेहून के पहाड़ के और जीवते ईश्वर के नगर के जो स्वर्गका यिरोशलीम है और असंख्य
२३ दूतों के पास। और पहिलौंठे की महा सभा के और मंडली के जो स्वर्ग पर लिखेहैं और ईश्वरके पास जो सबका न्यायी
२४ है और सिद्धकियेगये धर्मियों के आत्माओं के पास। और ईसा के जो नये नियम का बिचवई है और छिड़कने के लोहू के
२५ पास जो हाबील से अच्छी बातें बोलताहै आयेहो। चौकस रहो कि तुमलोग बोलनेवाले को त्याग न करो क्योंकि जो वे

जिन्हों ने उसको जिसने भूमि पर कहाथा त्याग किया न बचे तो हमलोग क्योंकर बचेंगे जों उसे जो स्वर्ग से कहताहै
२६ फिरजायं। जिसके शब्द ने तब भूमि को हिलादिया परंतु अब उसने यह कहिके अवधि किया कि फिर एकबार मैं केवल पृथिवी को नहीं परंतु स्वर्ग को भी हिलादेऊंगा।
२७ और यह कि और एकबार उसका यह अर्थ है कि जो बस्तें हिलाईजाती हैं टलजायें जैसा बनोऊई बस्तुन का जिसतें
२८ वे बस्तें जो हिलाई नहीं जातीं बनीरहें। सो जैसा कि हमों ने अचलराज्य पाया आओ अनुग्रह लेवें जिसतें हमलोग ग्राह्य की रीति से और आदर से और धर्म के भयसे ईश्वर
२९ की सेवा करें। क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनिहार अग्नि है।

१३ तेरहवां पर्व्व

१ सो भाई कीसी प्रीति बनीरहे। अतिथि की सेवा को मत
२ भूलो क्योंकि उसीसे कितनों ने बिनाजाने दूतों की सेवा
३ किईहै। जो बंधन में हैं उन्हें ऐसा स्मरण करो जैसा कि उनके संग बंधनमें हो उन्हें जो दुख सहतेहैं ऐसा जैसा कि
४ तुमलोग भी शरीर में हो। बिवाह सब में प्रतिष्ठित है और बिछौना शुद्ध है परंतु ईश्वर वेश्यागामियों और ब्यभिचारियों
५ को दंड देगा। चलन लोभरहित होवे और जो जो बस्तु तुम्हारी हैं उनसे संतोष करो क्योंकि उसने कहाहै कि मैं तुझे न छोड़ोंगा और तुझे कधी किसी भांतिसे त्याग न
६ करोंगा। सो हम हियावसे कहें कि प्रभु मेरा सहायक
७ और मैं न डरोंगा मनुष्य मुझ पर क्या करेगा। अपने अगुओं को जिन्हों ने तुम्हों से ईश्वर की बात कही स्मरण करो उनकी चलन के अंत को बिचार करके उनके बिश्वास का पीछा
८ करो। ईसा मसीह कल और आज और सर्बदा एकसां है।

९ बिदेशी और नाना प्रकार की शिक्षा से फिराये न जाओ क्योंकि भला है कि मन अनुग्रह में दृढ़ होय भोजन में नहीं १० जिनसे उन्हों ने जो उनमें रहतेथे लाभ न पाया। हमारी तो एक यज्ञबेदी है जिसे तंबू के सेवकों को खाने को उचित ११ नहीं। क्योंकि जिन पशुन का लोहू पाप के लिये प्रधानयाजक पवित्र स्थान में लेजाताहै उनके देह छावनी के बाहर १२ जलायेजातेहैं। इस कारण ईसा भी जिसतें वुह लोगों को अपने लोहू से पवित्र करे फाटक के बाहर मारागया। १३ इस लिये हम उसकी निंदा को सहके छावनी के बाहर उस १४ पास निकलचलें। क्योंकि यहां हमारे ठहरने का नगर नहीं १५ परंतु एक को जो आवनिहार है ढूंढ़तेहैं। इस कारण हम उसीके सहाय से स्तुति का बलिदान ईश्वर को नित्य नित्य चढ़ावें अर्थात होठों का फल उसके नाम का धन्यबाद १६ करतेजायं। परंतु भलाई और पुन्य करने में मत भूलियो १७ क्योंकि ऐसे बलिदानों से ईश्वर प्रसन्न होताहै। अपने अगुओं की आज्ञा मानो और उनके बश में होओ क्योंकि वे उनके समान जो लेखा देंगे तुम्हारे प्राण की चौकसी करतेहैं कि वे आनंद से देवें और शोक से नहीं क्योंकि वुह तुम्हारे १८ लिये निर्लाभहै। हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हमें निश्चय है कि हम अच्छा बिबेक रखतेहैं कि हम सारी बातों १९ में अच्छी रीति से निर्बाह किया चाहतेहैं। और बिशेष करके मैं तुम्हारी बिनती करताहों यह करो कि मैं शीघ्रसे २० तुम्हें फेरके दियाजाऊं। अब कुशल का ईश्वर जो सर्व्वदा के नियम के लोहू से हमारे प्रभु ईसा को जो महा गड़रिया है २१ मृतकन मेंसे फेरलाया। तुम्हों को हरएक भले कार्य्य में सिद्ध करे कि उसकी इच्छा पर चलो और जो कुछ कि उसकी दृष्टि में प्रसन्न है ईसा मसीह के लिये तुम्हों में करे जिसको २२ ऐश्वर्य सर्बदा और सर्बदा होवे आमीन। परंतु हे भाइयो

मैं तुम्हों से बिनती करताहों कि शिक्षा के बचन को मानलेउ
२२ कि मैं ने थोड़ी बातों में तुम्हों को पत्री लिखी। जानो कि
भाई तीमताऊस छूटगया जो वुह शीघ्र आवे तो उसके संग
२४ होके मैं तुम्हें देखोंगा। अपने सारे अगुओं और साधुन को
नमस्कार कहो जो ऐतलियः के हैं तुम्हें नमस्कार कहतेहैं।
२५ अनुग्रह तुमसभों पर होवे आमीन।

याकूब की पत्री सब के लिये

---

१ पहिला पर्ब्ब

१ याक़ूब का जो ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह का सेवक है
२ बारह गोष्ठीयों को जो बिथरीऊई हैं नमस्कार। हे मेरे
भाइयो तुम अपनी नानाप्रकार की परीक्षा में पड़ना पूरा
३ आनंद समुझो। यह जानके कि तुम्हारे बिश्वास के परखे
४ जानेसे संतोष उत्पन्न होताहै। परंतु संतोष अपना पूरा
कार्य करने पावे कि तुम सिद्ध और परिपूर्ण होओ और
५ किसी बात में घाट न होओ। परंतु यदि कोई तुम्में से
बुद्धिहीन होवे तो वुह ईश्वर से मांगे जो समस्त मनुष्यन को
दातापन से देताहै और ओलाना नहीं देता और वुह
६ उसे दियाजायगा। परंतु डोलायमान न होके बिश्वास से
मांगे क्योंकि जो डोलताहै सो समुद्र की लहर की नाईं है
७ जो पवन से बहती उछलतीहै। सो वुह पुरुष न समुझे कि

८ मैं प्रभु से कुछ पाओंगा। दोचिता मनुष्य अपनी सारी चाल
९ में अस्थिर है। भाई जिसका अल्प पद है अपनी बढ़ती पर
१० आनंद करे। परंतु धनमान अपनी छोटाई पर इस कारण
११ कि वुह घास के फूल के समान जातारहेगा। क्योंकि ज्योंहीं
सूर्य बड़े घाम से उदय हुआ घास मुरझाजाताहै और
उसका फूल भड़जाताहै और उसके स्वरूप की शोभा नष्ट
होतीहै धनमान भी ऐसाही अपनी सारी चाल में मुरझा
१२ जायगा। धन्य वुह मनुष्य जो परीक्षा सहताहै क्योंकि वुह
जांचाजाके जीवन का मुकुट पावेगा जिसका बाचा प्रभु ने
१३ अपने प्रेमियों से किया। जब कोई परीक्षा में पड़े सो न कहे
कि मैं ईश्वर से परखाजाताहों क्योंकि ईश्वर बुराइयों से
परखाया नहीं जासक्ता और न वुह किसी को परखताहै।
१४ परंतु हर कोई अपनीही लालसा से खींचाजाके और
१५ फुसलायाजाके परीक्षा में पड़ताहै। और जब लालसा गर्भिणी
हुई तो पाप जनतीहै और पाप पूरा होके मृत्यु को उत्पन्न
१७ करताहै। हे मेरे प्यारे भाइयो चूक न करो। हरएक अच्छा
दान और हरएक संपूर्ण पुन्य ऊपरही से है और प्रकाश के
पिता से उतरताहै जिसमें कुछ अदलबदल और बिकार की
१८ छाया नहीं। उसने अपनी इच्छा से हमें सच्चाई के बचन से
उत्पन्न किया कि हम उसकी सृष्टि में पहिले फल के समान
१९ होवें। सो हे मेरे प्यारे भाइयो हरएक मनुष्य सुनलेने में
चटक और बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा होवे।
२० क्योंकि मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म का कार्य नहीं करता।
२१ इस कारण समस्त अशुद्धता और अफरीहुई बुराई को
फेंकके उस जोड़ेहुए बचन को संतोष से लेओ वुह तुम्हारे
२२ प्राण को बचासक्ताहै। परंतु अपने को छलदेतेहुए केवल
२३ बचन के सुन्नेवाले मत होओ परंतु पालनेवाले। क्योंकि
यदि कोई बचन का सुननिहार होय और पालनिहार

नहीं तो वुह उस मनुष्य के समान है जो अपने स्वभाविक
२४ मुंह को दर्पण में देखता है। क्योंकि वुह अपने को देखता है
और चलाजाता है और तुरंत भूलजाता है कि वुह किस
२५ प्रकार का जन था। पर जो कोई मोक्ष के सिद्ध शास्त्र को
सोचता है और स्थिर है वुह भूल का सुनवैया नहीं है परंतु
कार्य का करनेवाला है वही मनुष्य अपने कार्य में भाग्यमान
२६ होगा। यदि कोई तुम्हारे मध्य में भक्तिमान दिखाईदेवे और
अपनी जीभ को न रोके परंतु अपनेही मन को छल देवे इसी
२७ मनुष्य की भक्ति व्यर्थ है। पवित्र और निर्मल भक्ति ईश्वर
और पिता के आगे यह है कि अनाथ और बिधवों को उनके
क्लेशों में देखना और अपने को जगत से निष्कलंक रखना।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ हे मेरे भाइयो हमारा प्रभु ईसा मसीह जो तेज का प्रभु है
उसके बिश्वास को मनुष्यत्व पर दृष्टि करके ग्रहण न करो।
२ क्योंकि यदि एक मनुष्य सोने की अंगूठी और भड़कीला वस्त्र
से और एक कंगाल भी मलीन वस्त्र से तुम्हारी मंडली में
३ आवे। और तुमलोग उस भड़कीले वस्त्र के पहिन्नेवाले का
आदरभाव करो और उसे कहो कि यहां इस प्रतिष्ठित
स्थान में बैठ और उस कंगाल को कहो कि तू वहां खड़ारह
४ अथवा यहां मेरे पावं तले के पीढ़े के नीचे बैठ। तो क्या
तुमलोग अपने मन में पक्ष नहीं करते और कुबिचारी नहीं
५ हो। हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या ईश्वर ने इस जगत के
कंगालों को नहीं चुना कि बिश्वास में धनी होवें और उस
राज्य के जिसका बाचा उसने अपने प्रेमियों से किया है
६ अधिकारी होवें। परंतु तुम्हों ने कंगाल का अपमान किया
क्या धनमान तुम्हों पर अंधेर नहीं करते और तुम्हें धर्मसभा
७ में नहीं खैंचते। और क्या वे उस उत्तम नाम की जिसके तुम

८ कहावतेहो अपनिंदा नहीं करते। सो जो तुम राजनीति
को संपूर्ण करोगे जैसा ग्रंथ में है तू अपने परोसी को अपने
९ समान प्यार कर तो भला करतेहो। परंतु जो मनुष्यत्व
पर दृष्टि करतेहो तो पाप करतेहो और शास्त्र तुमको
१० अपराधियों के समान दोषी ठहरावताहै। इस लिये कि
जो कोई समस्त शास्त्र को माने और एक बात में चूक करे तो
११ वुह समस्त का दोषीहै। क्योंकि जिसने कहा कि व्यभिचार
मत कर उसने यह भी कहा कि घात न कर सो जो तू
व्यभिचार न करे परंतु घात करे तो तू शास्त्र का अपराधी
१२ ऊआ। तुम उनके समान जिनपर मोक्ष के शास्त्र से आज्ञा
१३ किईजायगी कहो और करो। क्योंकि जिसने दया न किई
उसका न्याय निर्दया से होगा और दया न्याय पर बड़ाई
१४ करतीहै। हे मेरे भाइयो जो कोई कहे कि मैं बिश्वासी हों
और करनी न रक्खे तो क्या लाभ है क्या बिश्वास उसको
१५ बचासक्ताहै। यदि कोई भाई अथवा बहिन नंगा होय और
१६ प्रति दिन का भोजन न रखतीहो। और तुम्में से एक उन्हें
कहे कि कुशल से जा संतुष्ट हो और ताप रह तथापि तुम
१७ उन्हें देहके प्रयोजनको बस्तें न देउ तो क्या लाभ है। ऐसही
बिश्वास जो वुह करनी न रखताहो तो अकेला होके मृतकहै।
१८ क्याजाने कोई कहे कि तुझमें बिश्वासहै और तुझमें करनी सो
तू अपने बिश्वासको करनी से मुझे दिखा और मैं अपनी करनी
१९ से अपना बिश्वास तुझे दिखाऊं। तू बिश्वास करताहै कि
ईश्वर एक है भला करताहै शैतानों भी तो बिश्वास करतेहैं
२० और थरथरातेहैं। परंतु हे व्यर्थ मनुष्य क्या कभी तुझे समुझ
२१ पड़ेगा कि बिश्वास करनी बिना मृतक है। क्या हमारा पिता
इबराहीम अपने पुत्र इसहाक़ को यज्ञबेदी पर लाके करनी
२२ से धर्मी नहीं ठहरा। सो तू देखताहै कि बिश्वास ने उसकी
करनी के संग कार्य किया और करनी से बिश्वास पूरा ऊआ।

२३ और ग्रंथ जो कहताहै कि इब्राहीम ईश्वर पर बिश्वास लाया और वुह उसके लिये धर्म ठहरा और वुह ईश्वर का
२४ मित्र कहलाया पूरा हुआ। सो तुमलोग देखतेहो कि मनुष्य करनी से धर्मी ठहरायाजाताहै और केवल बिश्वास से
२५ नहीं। इसी रीति से राहाब वेश्या जब उसने भेदीयों को ग्रहण किया और उन्हें दूसरे मार्ग से बाहार करदिया
२६ करनी से धर्मी नहीं ठहरी। क्योंकि जैसा देह प्राण बिना मृतक है वैसाही बिश्वास भी करनी बिना मृतक है।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ हे मेरे भाइयो बहुत से उपदेशक न बनो यह जानके कि हम
२ अधिक दंड पावेंगे। क्योंकि बहुतसी बातों में हम सबकेसब चूक करतेहैं यदि कोई बचन में चूक न करे वही सिद्ध पुरुष
३ है और समस्त देह को बश्में भी रखसक्ताहै। देखो हम घोड़ों के मुंह में बाग देतेहैं कि हमारे बश में होवें और
४ उनके सारे देह को फेरतेहैं। देखो नावें भी यद्यपि कैसी कैसी बड़ी हैं और प्रचंड बयारों से उड़ीजाती हैं तथापि बहुत छोटी पतवार से जिधर जिधर मांझी चाहताहै उन्हें
५ फेरताहै। वैसाही जीभ एक छोटासा अंग है पर बड़ाही गप्पीहै देखो थोड़ीसी आग बस्तुन की बड़ी बड़ी ढेरों को
६ जलादेतीहै। सो जीभ एक आग अरु पाप का एक जगत सो जीभ हमारे अंगों में ऐसे स्थापित है कि समस्त देह को अशुद्ध करतीहै और संसार के चक्र को जलावतीहै और
७ नरक से जलाईगई। क्योंकि हरएक प्रकारके बनैले पशु और पक्षी और कीड़े और जलजंतु मनुष्य से बश्कियेजातेहैं
८ और बश्कियेगयेहैं। परंतु जीभ को कोई मनुष्य बश्में नहीं करसक्ता वुह एक अजीत दुष्ट है मारु बिष से भरीहुई है।
९ उसीसे हम ईश्वर अर्थात् पिता का धन्यमानतेहैं और उसीसे

मनुष्यन को जो ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न ऊए हैं स्त्रापदेतेहैं।
१० एकही मुंह से आशीष और स्राप निकलतेहैं हे मेरे भाइयो
११ यों होना उचित नहीं। क्या सोता एकही मुंह से मीठा
१२ और खारा उग्रालताहै। हे मेरे भाइयो क्या गूलर में
जलपाई और दाख में गूलर फलसक्ताहै ऐसा कोई सोता
१३ से खारा और मीठा पानी नहीं निकलता। तुम्में से बुद्धिमान
और ज्ञानी कौन है सोई सुचाल से और ज्ञान की कोमलता
१४ से अपनी करनी दिखावे। पर जो तुमलोग कड़वी ज्वलन
और झगड़ा अपने मन में रखो तो बड़ाई न करो और सत्य
१५ के बिरुद्ध में झूठ न बोलो। यह वुह बुद्धि नहीं जो ऊपर से
१६ उतरतीहै परंतु पार्थिव इंद्रियिक शयतानी है। क्योंकि जहां
आड़ाआड़ी और झगड़ा है तहां घबराहट और हरएक
१७ कुकर्म है। परंतु ऊपर की बुद्धि जो है सो पहिले पवित्र है
फिर मिलनसार कोमल सहज से समुझाईजाय दया और
१८ सुफल संपूर्ण निष्पक्ष और निष्कपट। और धर्म का फल
मिलनसारों के लिये मिलाप में बोयाजाताहै।

४ चौथा पर्व्व

१ तुम्हारे मध्य में युद्ध और संग्राम कहां से हैं क्या तुम्हारी
कामना से जो तुम्हारे अंगों में युद्ध करतीहैं नहीं है।
२ तुमलोग ललचातेहो और नहीं पावते हत्या करतेहो और
अति लालसा करतेहो और प्राप्त नहीं करते युद्ध और
संग्राम करतेहो तथापि तुम्हारे हाथ नहीं लगता क्योंकि
३ मांगते नहीं। तुमलोग मांगतेहो और नहीं पावते क्योंकि
४ अनरीति से मांगतेहो कि अपनी कामना में उठानकरो। हे
ब्यभिचारियो और हे ब्यभिचारिणीयो क्या तुम नहीं जानते
कि जगत की मित्रता ईश्वर की शत्रुता है इसलिये जो कोई
जगत का मित्र ऊआचाहै सो ईश्वर का शत्रु ठहरायागयाहै।

५ तुमलोग क्या समुझतेहो कि ग्रंथ बृथा कहताहै क्या आत्मा जो
६ हम्में बसताहै डाह की लालसा करताहै। परंतु वुह अधिक अनुग्रह देताहै जैसा कि कहाहै कि ईश्वर अभिमानियों का
७ साम्ना करताहै परंतु दीनों पर अनुग्रह करताहै। इस कारण अपने को ईश्वर के बश में करो शैतान का सामना
८ करो और वुह तुम्हों से भागनिकलेगा। ईश्वर के पास बढ़ो और वुह तुम्हारे पास बढ़ेगा हे पापियो हाथों को पवित्र करो और हे दोचितो अपने अपने अंतःकरण को शुद्ध करो।
९ उदासीन होओ बिलाप करो रोओ तुम्हारा हंसना कुढ़ने
१० से और तुम्हारा आनंद शोक से बदलजाय। प्रभु के आगे
११ अपने को नम्र करो और वुह तुम्हों को उठावेगा। हे भाइयो एक दूसरे की बुरी चर्चा न करो जो कोई अपने भाई की बुरी चर्चा करताहै और अपने भाई को दोषी ठहरावताहै सो ब्यवस्था की बुरी चर्चा करताहै और ब्यवस्था को दोषी ठहरावताहै परंतु यदि तू ब्यवस्था को दोषी ठहरावताहै तो तू ब्यवस्था पर चलनेवाला नहीं परंतु उसका न्यायी है।
१२ ब्यवस्थाकर्त्ता एक है जो बचावने का और नष्ट करने का सामर्थ्य रखताहै तू कौनहै जो दूसरे को दोषी करताहै।
१३ सो आओ तुमसब जो कहतेहो कि हम आज अथवा कल ऐसे नगर में जायंगे और वहां एक बरस रहेंगे और
१४ ब्यापार करेंगे और कुछ प्राप्त करेंगे। परंतु नहीं जानते कि कल क्या होगा क्योंकि तुम्हारा जीवन क्याहै वुह एक धूआं है जो थोड़े समय लों देखाईदेताहै फेर बिनसजाताहै।
१५ परंतु चाहिये कि उसका उलटा कहो जो प्रभु की इच्छा होय
१६ और हम जीवें तो हम ऐसा अथवा वैसा करेंगे। परंतु अब तुम अपनी गालफटाकी पर बड़ाई करतेहो ऐसी
१७ समस्त बड़ाई करना बुराहै। सो जो कोई भला करने जानताहै और नहीं करता उसके लिये पाप है।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ अब आओ हे धनमानो उन बिपत्तिन के शोक से जो तुम्हों
२ पर आवतिहैं चिल्ला चिल्ला के रोओ। कि तुम्हारे धन नष्ट
३ ऊए और तुम्हारे बस्त्रों में कोड़े लगे। तुम्हारे सोने रूपे में
काई लगी और उनकी काई तुम्हों पर साक्षी देगी और
आग के समान तुम्हारा मांस खायगी तुम्हों ने पिछले दिनों के
४ लिये धन बटोराहै। देखो उन बनिहारों की बनी जिन्हों ने
तुम्हारे खेत काटे जिनसे तुम्हों ने छल किया पुकारतीहै
और काटनेवालों के शब्द सेना के प्रभु के कानलों पऊंचे।
५ तुम्हों ने भूमि पर सुख से और क्रीड़ा से भोग किया तुम्हों ने
अपने अपने अंतःकरण को मोटा किया जैसा बध के दिन
६ के लिये करतेहैं। तुम्हों ने उस धर्मी को दोषी ठहराके
७ घात किया और उसने तुम्हारा साम्ना न किया। सो अब
हे भाइयो प्रभु के आवने लों संतोष करो देखो किसान भूमि
के अच्छे फल के लिये ठहरताहै और उसके बिषय में
संतोष करताहै जब लों कि पहिला और पिछला मेह न
८ बरसजाय। सो तुम भी संतोष करो और अपने अपने मन
९ को स्थिर करो क्योंकि प्रभु का आवना निकट है। हे
भाइयो एक दूसरे पर डाह न करो जिसमें तुम दोषी न
१० बनो देखो न्यायी द्वार पर है। हे मेरे भाइयो जो आगम
ज्ञानी प्रभु का नाम लेके बोलतेथे उन्हें दुख उठावने का और
संतोष करने का दृष्टांत समुझो देखो हम सहनेवालों को
धन्य जानतेहैं तुम्हों ने अयूब का संतोष सुनाहै और प्रभु का
अभिप्राय देखाहै कि प्रभु मया से पूर्ण और अति दयालहै।
१२ पर सबसे पहिले हे मेरे भाइयो किरिया न खाओ न तो स्वर्ग
की न पृथिवी की न तो और किसी की किरिया परंतु तुम्हारा
हां हां हो और तुम्हारा ना ना न्हो कि तुम दोष में पड़ो।
१३ तुम्हों में कोई पीड़ित है तो प्रार्थना करे हर्षित है तो भजन

१४ गावे। कोई तुम्हों में रोगी है तो मंडली के प्राचीनों को बुलावे और वे प्रभु का नाम लेके उसके देह पर तेल मलें और उन
१५ पर प्रार्थना करें। और बिश्वास की प्रार्थना रोगी को बचायेगी और प्रभु उसे उठावेगा और जो उसने पाप किये हों तो वे
१६ क्षमा किये जायेंगे। आपुस में पाप को मान लिया करो और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिसतें तुम चंगा हो जाओ कि धर्मी पुरुष की प्रार्थना जो आत्मा के बल से कीई गई है
१७ अति गुणकारी है। इलियास हमारी नाईं दुर्बलता से युक्त मनुष्य था और उसने प्रार्थना करके चाहा कि मेंह न बरसे और तीन बरस छः महीने लों भूमि पर बर्षा न ऊई।
१८ उसने फेर प्रार्थना किई और स्वर्ग ने मेंह दिया और भूमि
१९ ने अपने फल उगाया। हे भाइयो यदि कोई तुम्हों में से
२० सच्चाई से भटके और दूसरा उसे फिरावे। तो वुह जाने कि जो एक पापी को भ्रम के मार्ग से फिरावे सो एक प्राण को मृत्यु से बचायेगा और पापों के समुदाय को छांपेगा।

पतरस की पहिली पत्री सबके लिये

१ पहिला पर्व्व

१ पतरस के ओर से जो ईसा मसीह का प्रेरित ह उन परदेशियों को जो पनतस और गलतियः और कपादोकियः
२ और आसिया और बितीनियः में छिन्न भिन्न हैं। जो ईश्वर पिता के पूर्बज्ञान के समान आत्मा की पवित्रता से आज्ञा

पर चलनेको और ईसा मसीह के लोहूके छिड़कनेसे
पुनेऊरे अनुग्रह और कुशल तुम्हारे लिये अधिक होताजाय।
३ धन्य ईश्वर और हमारे प्रभु ईसा मसीह के पिता को जिसने
हमको अपनी दया की अधिकाई के समान ईसा मसीह के
जीउठने के कारण से जीवती आशा के लिये फेरके उत्पन्न
४ किया। और कि अबिनाश निर्मल अजर अधिकार के लिये
५ जो तुम्हारे कारण स्वर्ग में धराहै। जो बिश्वास के कारण
ईश्वर के सामर्थ्य से उस उद्धार के लिये जो पिछले समय में
६ प्रगट होने को धराहै रक्षा कियेगये। उसमें बऊतसा
आनंद करतेहो यद्यपि तुम अब थोड़े दिन लों जो अवश्य
७ होय नाना प्रकार की परीक्षा से शोकित हो। जिसतें तुम्हारे
बिश्वास की परिक्षा नाशमान सोने से अति महंगमोली होके
यद्यपि वुह आग में तायाजाय ईसा मसीह के प्रगट होने
के समय स्तुति और प्रतिष्ठा और महिमा में पाई जाय।
८ जिसे बिनदेखे तुम प्यार करतेहो और जिस पर यद्यपि तुम
अब नहीं देखते तथापि बिश्वास लाके ऐसी अकथ्य आनंदता
९ से आनंद करतेहो और महिमासे भरीहै। अपने बिश्वास
के अभिप्राय को अर्थात अपने प्राणों का उद्धार प्राप्त
१० करतेहो। उसी उद्धार के बिषयमें आगमज्ञानियों ने जिन्हों
ने उस अनुग्रह की जो तुम्हारे लिये थी आगेसे कही खोज
११ किया और यत्नसे ढूंढ़ा। खोजकरतेथे कि मसीह के आत्मा
ने जो उनमें था किस समय को अथवा किस किस रीति के
समय का बुझाया जब उसने मसीह के दुखों की और महिमा
१२ की जो उसके पीछे होने पर थी आगेसे साक्षी दिई। जिन
पर यह प्रगट ऊआ कि उन्हों ने अपने लिये नहीं परंतु
हमारे लिये इन बातों की सेवा किई जो अब तुम्हों को उनके
ओर से दियागया जिन्हों ने धर्मात्मा के सहाय से जो स्वर्ग
से उतरा तुम्हें मंगलसमाचार का संदेश दिया जिन बातों के

१३ ध्यान करने को दूतगण अभिलाषी हैं। इस कारण अपने
मन की कमरें बांध के और संयमी होके अंत्यलों उस
अनुग्रह की आशा रक्खो जो ईसा मसीह के प्रगट होने के
१४ समय में तुम्हों पर पऊंचायाजायगा आधीन पुत्रों की नाईं
अपने को अगिली लालसा के समान जो तुम्हारी अज्ञानता के
१५ समयमें थी मत बनाओ। परंतु जैसा कि तुम्हारा बुलावनिहार
पवित्र है तुमभी अपने समस्त बोलचाल में पवित्र बनो।
१७ क्योंकि लिखाहै कि पवित्र होओ कि मैं पवित्र हों। और
जों तुम पिता को पुकारतेहो जो प्रगट दशा पर दृष्टि न
करके हरएक के कार्य के समान न्याय करताहै तो अपने
१८ बिदेश के समय को डरतेऊए काटो। यह जानके कि तुम्हों ने
बिनाशमान बस्तुन से अर्थात रूपे सोने से अपने ब्यर्थ सभाव
से जो तुम्हें पितरन के कहावत से मिला उद्धार नहीं पाया।
१९ परंतु मसीह के बऊमोल लोऊसे जैसा निष्कलंक और
२० निर्दोष मेम्ना का। जो जगत की उत्पति से आगे ठहरायागया
२१ परंतु इन्हीं अंत्य समयन में तुम्हारे लिये प्रगट ऊआ। जो
उसीके द्वारा से ईश्वर पर बिश्वास रखते हो कि उसने उसको
मृतकन में से उठाया और ऐश्वर्य दिया कि तुम्हारा बिश्वास
१२ और आशा ईश्वर पर होवे। सत्य के आधीन बनके आत्मा
के द्वारा से अपने मनको शुद्ध किया यहां लों कि तुम्हों में
भाइयों कासा निष्कपट प्रेम ऊआ सो एक दूसरे को शुद्ध
२३ अंतःकरण से बऊतसा प्यार करो। तुम नाशमान बीजों से
नहीं परंतु अबिनाशी से अर्थात ईश्वर के बचन से जो जीवताहै
२४ और सर्बदा रहताहै फिरके उत्पन्न ऊएहो। क्योंकि समस्त
मांस घास के तुल्य हैं और मनुष्य की समस्त महिमा घास के फूल
के समान घास मुरझाजातीहै और उसका फूल झड़जाताहै।
२५ परंतु ईश्वर का बचन सर्बदा रहताहै सो यह वही बात है
जिसका उपदेश मंगलसमाचार में तुम्हें दियागया है।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ इस कारण समस्त बैर और समस्त छल और कपट और
२ डाह और बुरी बातचीत को अलग करके। नये जन्मे
बच्चों के समान बचन के निराले दूध के अभिलाषी होओ कि
३ तुम उस्से बढ़तेजाओ। क्योंकि तुम्हों ने स्वाद पायाहै कि
४ प्रभु दयालहै। जिसकने जैसा जीते पत्थर के पास आयेहो
मनुष्यन से तो निकम्मा जानागया परंतु ईश्वर का चुनाऊआ
५ और प्रिय। तुमलोगभी जीते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर
बनेहो एक पवित्र याजकता कि आत्मिक बलिदानों को
चढ़ाओ जो ईसा मसीह के कारण से ईश्वर को भावतेहैं।
६ इस कारण ग्रंथमें भी है कि देखमैं एक श्रेष्ठ कोने का पत्थर
चुनाऊआ और बऊमूल्य सैहून में धरताहों और जो कोई
७ उस पर आशा रखताहै लज्जित न होगा। सो तुम्हारे लिये
जो बिश्वास लायेहो बऊमूल्य है परंतु उनके लिये जो आज्ञा
नहीं मानते वही पत्थर जिसे थवइयों ने निकम्मा जाना
८ कोने का सिरा ऊआ। और ठेस दिलानेवाला पत्थर
और ठोकर खिलानेवाली चटान जो आज्ञा नहीं मानके
बचन से ठोकर खातेहैं जिसके लिये ठहराये भी गयेथे।
९ परंतु तुमलोग चुनेऊए बंश और राजीय याजकता एक
पवित्र बर्ण और निज लोग हो जिसतें तुम उसके गुणानुबादों
को प्रगट करो जिसने तुम्हें अंधकार से अपने आश्चर्य के
१० उजियाले में बुलाया। जो आगे लोग नथे परंतु अब ईश्वर
के लोग हो और जो दया न पायेथे परंतु अब दया पायेहो।
११ हे प्रिय मैं तुम्हों से जैसे बिदेशियों और अतिथियों से बिनती
करताहों कि तुम शारीरिक कामना से जो आत्मा से युद्ध
१२ करतेहैं परे रहो। और तुम्हारी बोलचाल अन्यदेशियों के
मध्य में सचाई से होवे कि जैसा तुम्हें कुकर्मी जानके तुमपर
बुरा कहतेहैं तुम्हारे भले कार्य्यन पर दृष्टि करके कृपा के दिन

१३ में ईश्वर की स्तुति करें। प्रभु के लिये मनुष्यन के हरएक ठहराएऊए के आधीन होओ चाहे राजा के जो सबसे बड़ा
१४ है। अथवा अध्यक्षों के जैसा उसके भेजेऊए के समान कि
१५ कुकर्मियों को दंड देवे परंतु सुकर्मी की स्तुति के लिये। क्योंकि ईश्वर की इच्छा यों है कि तुमलोग सुकर्म करके मूढ़ मनुष्यन
१६ की मूर्खता के मुंह को बंद करो। निर्बंध के समान परंतु अपनी निर्बंधता को दुष्टता का आड़ मत करो परंतु ईश्वर
१७ के सेवकों के समान। समस्त मनुष्यन का आदर करो भाईचारा को प्यार करो ईश्वर से डरो राजा को प्रतिष्ठा
१८ देउ। हे सेवको संकोच से अपने स्वामियों के बशीभूत होओ
१९ केवल अच्छे और कोमल के नहीं परंतु क्रूरों के भी। क्योंकि यदि कोई ईश्वर के लिये बिवेक से अंधेर में पड़के दुख सहे
२० तो यह शोभायुक्त है। क्योंकि यदि पाप करके तुमलोग पीटेगये और सहिलिया तो कौनसी बड़ाई है परंतु यदि भलाई करके दुख पाओ और उसे सहो तो यह शोभायुक्त
२१ है। क्योंकि इसी लिये तुम बुलायेगयेहो मसीह भी तुम्हारे लिये दुख पाके एक दृष्टांत तुम्हारे लिये छोड़गयाहै कि उसके
२२ डग पर चलेजाओ। उसने पाप न किया और न उसके
२३ मुंह में छल पायागया। उसने गालियां खाके गाली न दिई और दुख पाके धमकाया नहीं परंतु अपने को उसको
२४ सौंपदिया जो धर्म से न्याय करताहै। वुह आप हमारे पापों को अपनेही देह में क्रूस पर उठालिया जिसतें हम पापों से मोक्ष पाके धर्म के लिये जीवें उसीके कोड़ों के
२५ कारण से तुम चंगेऊएहो। क्योंकि तुम भटकीऊई भेड़ों के समान थे पर अब अपने प्राणों के गड़रिये और रखवार के पास फिर आयेहो।

३ तीसरा पर्व

१ इसी रीति से हे पत्नीयो अपने अपने पतियों के बशीभूत होओ कि यदि कोई बचन को न माने तो वे बिना बचन के
२ अपनी पत्नियों की चलन से खींचाजायं। कि वे तुम्हारी पवित्र
३ चलन को भय में देखें। तुम्हारा सिंगार बाहरी नहो जैसे सिर गूंथना सोने का पहिन्ना अथवा बस्त्र से बिभूषित होना।
४ परंतु अंतःकरण का गुप्त मनुष्यत्व जो अबिनाशी है और शांति और कोमल आत्मा जो ईश्वर के आगे अति बहुमोल
५ का है। क्योंकि पवित्र स्त्रियां भी जिनका भरोसा ईश्वर पर था अगिले समय में इसी रीति से अपना सिंगार करतीथीं
६ और अपने अपने पतियों के बश में रहतीथीं। जैसा सारः इबराहीम को मान के उसको प्रभु कहतीथी सो जबलों तुमलोग बिस्मित न होके भले कार्य करो तबलों उसकी
७ पुत्रीयां हो। वैसेही हे पतियो ज्ञान की रीति पर उनके संग निवाह करो और स्त्री को कोमल पात्र समुझकर आदर देउ जैसा जीवन के अनुग्रह के अधिकार में साझी हो जिसतें
८ तुम्हारी प्रार्थना रोकी नजाय। सो अंत में सबकेसब एकमन हो आपुसमें दया रक्खो भाईकीसी प्रीतिमें पूर्ण होओ
९ कृपाल और दयाल होओ। बुराई की संती बुराई न करो गाली की संती गाली मत देउ परंतु उसके उलटे आशीष कहो यह जानके कि तुम आशीष के अधिकारी होने को
१० बुलायेगयेहो। क्योंकि जो जीवन को प्यार कियाचाहे और भले दिनों को देखाचाहे सो अपनी जीभ को बुराई से और
११ अपने होठों को छल की बात बोलने से परे रक्खे। बुराई से फिरे और भला करे मिलाप की खोज और पीछा करे।
१२ क्योंकि प्रभु की दृष्टि धर्मियों पर और उसके कान उनकी प्रार्थना पर हैं परंतु ईश्वर का मुंह कुकर्मियों से बिरुद्ध है।
१३ और जो तुमलोग भलाई का पीछा करनेवाले होओ तो

१४ कौन तुम्हें दुख देगा। परंतु जो धर्म के लिये दुख पाओ तो धन्य हो इस कारण उनके डराने से मत डरो और घबरा
१५ मत जाओ। परंतु प्रभु ईश्वर को अपने मन में पवित्र जानो और सदा चौकस रहो कि हरएक को जो तुमसे उस आशा के बिषय में जो तुम्हों में है पूछे कोमलता और भय से
१६ उत्तर देउ। अच्छे बिवेक को रखके कि जिनमें वे कुकर्मी जानके तुम्हारे बिषय में बुरा कहते हैं जो तुम्हारी अच्छी
१७ मसीही चलन को निंदा करते हैं सो लज्जित होवें। क्योंकि यदि ईश्वर की इच्छा होय तो भला करके दुख पावना अति
१८ उत्तम है कि बुरा करके। क्योंकि मसीह ने भी एकबार पापों के कारण कष्ट पाया धर्मी ने अधर्मियों के कारण जिसतें वुह हम को ईश्वर के पास पहुंचावे कि शरीर में तो मारागया
१९ परंतु आत्मा से जिलायागया। जिस्से उसने उन आत्माओं
२० को जो बंधन में थे जाके उपदेश किया। जो बहुत दिन से जब ईश्वर के संतोष ने नूह के समय में धीरज किया जब नाव बन रहीथी जिसमें थोड़े से अर्थात आठ प्राणी जल से
२१ बचगए। वैसाही चिह्न अर्थात स्नान पावना हम को अब बचावता है देह की मैल का छुड़ना नहीं परंतु उत्तम बिवेक से ईश्वर को उत्तर देना हम को ईसा मसीह के पुनरुत्थान से
२२ बचावता है। वुह स्वर्ग पर जाके ईश्वर के दहिने ओर है और दूतगण और पराक्रम और प्रभुता उसके बश में किईगई हैं।

४ चौथा पर्ब्व

१ सो जैसा कि मसीह ने हमारे कारण शरीर में कष्ट पाया इसी रीति से अपने को वैसही मन से चौकस रखो क्योंकि
२ जिसने देह में कष्ट पाया सो पाप से थमगया। कि वुह आगे को मनुष्यन के कामाभिलाषों के समान नहीं परंतु

ईश्वर की इच्छा के समान शरीर में अपना समय काटे।
३ क्योंकि हमारे जीवन से जो चाल कि अन्यदेशियों की इच्छा पर बीतगईहै सो बसहै जब कि हमलोग लंपटता और बुरी लालसा और अति मद्यपान और उत्सव करनेमें और मतवालपनमें और मूर्त्तिन की घिनित पूजामें समय काटतेथे।
४ इनके बिषय में वे अचंभा मानते हैं कि तुम उनके संग अधिक
५ धूमधाम में नहीं बढ़ते तुम्हारी बुराई करतेहैं। वे उसको लेखा देंगे जो जीवतन और मृतकन का न्याय करने पर
६ सिद्ध है। क्योंकि मृतकन को मंगलसमाचार का उपदेश इस लिये दियागया कि मनुष्यन के समान शरीर में उनका बिचार कियाजाय पर ईश्वर की रीति पर आत्मा में जीवें।
७ परंतु समस्त बस्तुन का अंत्य निकट है इस लिये सज्ञान होओ
८ प्रार्थना में चौकस रहो। बिशेष करके घनेरा प्रेम रक्खो
९ क्योंकि प्रेम पापों की बहुताई को ढांपदेताहै। और आपुस
१० में बिना कुड़कुड़ाहट से अतिथि की सेवा करो। जैसा हरएक को दान मिलाहै वैसा ईश्वर के अधिक अनुग्रह के उत्तम
११ भंडारी के समान आपुस में बांटे। यदि कोई बोले तो वुह ईश्वर की बाणी के समान बोले यदि कोई सेवा करे तो ईश्वर के दियेहुए सामर्थ्य के समान करे जिसतें ईश्वर समस्त बातों में ईसा मसीह के द्वारा से महिमा पावे जिनके लिये स्तुति
१२ और प्रभुता नित्य नित्य होवे। हे प्रिय तुम उस अग्नि की परीक्षा से जो तुम्हारे परखने के लिये है यह समुझ के आश्चर्य न करो कि हम पर कोई अनोखी बात बीतगईहै।
१३ परंतु जैसा कि तुमलोग मसीह के दुःखों में साझी हो आनंद करो कि जब उसका महिमा प्रगट होवे तुमभी बड़ी
१४ आनंदता से मगन होओ। जो तुमलोग मसीह के नाम के कारण से निंदित हो तो धन्य हो क्योंकि महिमा का और ईश्वर का आत्मा तुम पर रहताहै वुह उनके ओर से बुरा

१५ कहागयाहै परंतु तुम्हारे ओर से महिमा पाईहै। परंतु तुम्में से कोई हत्यारे अथवा चोर अथवा कुकर्मी अथवा औरों के बिषय में अयोग्य चर्चक के समान संताया न जाय।
१६ पर यदि ख्रीष्टिआन होने के कारण कोई दुख पावे तो लज्जित
१७ न होवे परंतु इस बिषय में ईश्वर की महिमा करे। क्योंकि समय है कि ईश्वर के घराने पर दंड का आरंभ है और यदि हम से आरंभ है तो उनका अंत क्या होगा जो ईश्वर
१८ के मंगलसमाचार को नहीं मानते। और जो धर्मी कठिन से बचायाजावे तो अधर्मी और पापी का ठिकाना कहां।
१९ इस लिये वे भी जो ईश्वर की इच्छा के समान दुख पावतेहैं उसको विश्वस्त कर्त्ता जानके भले कार्य में अपने प्राणों को उसे सौंपें।

५ पांचवां पर्व्व

१ उन प्राचीनों को जो तुम्हों में हैं मैं भी जो प्राचीन हों और मसीह के दुखों का साक्षी और उस महिमा का जो प्रगट
२ होगी साझीहों जतावताहों। कि ईश्वर के उस झुंड की जो तुम्हों में है रखवाली करके चरावें पर दबाव से नहीं परंतु बांछा से और मलीन लाभ के लिये नहीं परंतु सिद्ध मन से।
३ और प्रभु के अधिकार पर प्रभुता न करो परंतु झुंडके लिये
४ दृष्टांत बनो। और जब प्रधान चरवाहा प्रगट होगा तब
५ तुम महिमा का अबिनाशी मुकुट पाओगे। ऐसा हे तरुणों तुमसब प्राचीनों के बशमें होओ हां सबकेसब एक दूसरे के आधीन होवे और दीनताई से पहिनायेजाओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियों का साम्ना करताहै परंतु दीनों पर अनुग्रह
६ करताहै। सो ईश्वर के पराक्रमी हाथ के नीचे दीन होओ
७ कि वुह तुम्हें समय पर उभारे। अपनी सारी चिंता उसपर
८ डालदेउ क्योंकि वुह तुम्हारे लिये चिंता करताहै। चौकस

होओ जागतेरहो क्योंकि तुम्हारा प्रभु शयतान गर्जतेहुए
सिंह के समान ढूंढताफिरताहै कि किसको भक्ष करडाले।
९ जिसका सामना बिश्वास में दृढ़होके करो यह जानके कि
वही क्लेश तुम्हारे भाइयों पर जो जगत में हैं पड़तेजातेहैं।
१० परंतु समस्त अनुग्रह का ईश्वर जिसने हमको अपनी अनंत
महिमा के लिये मसीह ईसा में बुलायाहै कि तुम्हारे थोड़ेलों
दुख सहने के पीछे तुम्हें सिद्ध और स्थिर और दृढ़ करे और
११ ठहरावे। महिमा और राज्य सर्बदा और सर्बदा उसीका
१२ है आमीन। मैं ने तुम्हें सलवानस के ओर से जो मेरी समुझ
में बुद्धिमान भाई है संक्षेप से लिखके शिक्षा और साक्षी
दिई कि ईश्वर का सच्चा अनुग्रह वही है जिसमें तुम दृढ़
१३ हो। बाबुल की मंडली जो तुम्हारे संग चुनीगई और मेरा
१४ पुत्र मरक़स तुम्हें नमस्कार कहतेहैं। प्रेमका चूमा लेके आपुस
में नमस्कार करो तुम सभों पर जो मसीह ईसा में हो कुशल
होवे आमीन।

पतरस की दूसरी पत्री सबके लिये

१ पहिला पर्ब्ब

१ शमऊन पतरस के ओर से जो ईसा मसीह का दास और
प्रेरित है उनको जिन्हों ने हमारे ईश्वर और मोक्षदाता
ईसा मसीह के धर्म से हमारे संग एकोनाईं के बहुमूल्य

२ बिश्वास पाया। ईश्वर के और हमारे प्रभु ईसा मसीह के पहिचान का अनुग्रह और शांति तुम्हारे लिये बढ़ता जाय।
३ जैसा कि उसके ईश्वरीय पराक्रम ने हमें समस्त बस्तें दिईं जो जीवन और भक्तता के बिषय में है उसीके ज्ञान के कारण
४ से जिसने हमें ऐश्वर्य और धर्म के लिये बुलाया। जिस्से हमें अत्यंत बड़े और अति मोल के बाचा दियेगये कि इनके कारण तुमलाग उस सड़ाव से जो जगत में बुरी इच्छा के कारण से
५ है बचकर ईश्वरीय स्वभाव में भागी होजाओ। और इसके कारण समस्त यत्न करके अपने बिश्वास पर धर्म और धर्म
६ पर ज्ञान। और ज्ञान पर बराव और बराव पर संतोष
७ और संतोष पर भक्तता। और भक्तता पर भाईकासा स्नेह
८ और भाई केसे स्नेह पर प्रेम बढ़ाओ। क्योंकि यदि ये बातें तुम्में हों और भरपूर हों तो तुमको हमारे प्रभु ईसा मसीह
९ के ज्ञान में निकम्मा और निष्फल होने न देंगी। परंतु जिस किसी में ये बातें घटी हैं वुह अंधा है और आखें मूंदता है और भूलगया है कि वुह अगिले पापों से पवित्र कियागयाथा।
१० इस लिये हे भाइयो अधिक यत्न करो कि तुम्हारा बुलावा और चुनाजाना दृढ़ होय क्योंकि जो तुम ऐसे कार्य करो तो
११ कभी भ्रष्ट न होओगे। क्योंकि यों तुम्हें हमारे प्रभु और मुक्तिदाता ईसा मसीह के अनंत राज्य में बढ़ताई से प्रवेश
१२ मिलेगा। इस लिये तुम्हें इन बातों को सदा स्मरण करावने में मैं न चूकोंगा यद्यपि तुम उन्हें जानते हो और इस सत्य
१३ पर स्थिर हो। परंतु उचित जानता हों कि जबलों मैं इस
१४ तंबू में हूं तुम्हें उस्का उस्के स्मरण कराओं। यह जानके कि मैं शीघ्र इस तंबू को छोड़ोंगा जैसा कि हमारे प्रभु ईसा
१५ मसीह ने मुझे बतलाया। परंतु मैं यत्न करोंगा कि तुमलोग मेरे मरने के पीछे इन बातों को नित चेत कियाकरो।
१६ क्योंकि जब हमने अपने प्रभु ईसा मसीह के सामर्थ्य को और

उसके आवने को तुम्हों को जनाया तब हमने चतुराई की बनाईहुई कहानीयों का पीछा नहीं किया परंतु उसकी
१७ महिमा के प्रत्यक्ष साक्षी थे। क्योंकि जब अत्यंत तेजसे उसके लिये ऐसा शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं प्रसन्न हों तब उसने ईश्वर पिता से सन्मान और महिमा पाई।
१८ और जब हम उसके संग पवित्र पहाड़ पर थे यह शब्द स्वर्ग
१९ से आवते सुना। और हम एक अधिक दृढ़ आगम की बात रखते हैं जिसको चौकसी करनेसे तुमलोग अच्छा करते हो जैसा कि दीपक से जो अंधियारे स्थान में बरता है जबलों दिन को पौ न फूटे और प्रातःकाल की तारा तुम्हारे अंतःकरणों
२० में उदय न होवे। यह पहिले जान के कि आगम की लिखीहुई
२१ कोई बात किसीकी अपनोही कहीहुई नहीं है। क्योंकि आगम की बात प्राचीन समय में मनुष्यन की इच्छा से नहीं आई परंतु ईश्वर के पवित्र लोग धर्मात्मा के बुलवाये हुए बोलतेथे।

२ दूसरा पर्व्व

१ परंतु झूठे आगमज्ञानी भी लोगों में थे जैसा कि झूठे उपदेशक तुम्में भी होंगे जो छिपके नष्ट करनेवाले उपद्रव लावेंगे अर्थात उस प्रभु से जिसने उन्हें मोल लिया मुकरेंगे
२ और अपने पर शीघ्र नष्टता लावेंगे। और बहुतसे उनकी बुराइयों का पीछा करेंगे जिनके कारण से सच्चाई के मार्ग
३ की निंदा किईजायगी। और लोभता से वे छल की बातों से तुमको व्यापार करेंगे जिन पर दंड की आज्ञा बहुत दिनसे आवने में बिलंब नहीं करती और उनकी नष्टता नहीं
४ ऊंघती। क्योंकि जब ईश्वर ने पापी दूतों को न छोड़ा परंतु नरक में डाला कि अंधकार के सीकरों में बिचार लों
५ पड़े रहें। और प्राचीन जगत को न छोड़ा तथापि जलमय

को अधर्मी जगत पर लाके आठवें जन को बचाया अर्थात
६ नूह को जो धर्म का उपदेशक था। और उसने सदूम और
गमर्रः के नगरों पर नष्टता और भस्म करने के दंड की
आज्ञा देके उन्हें आवनेवाले अधर्मियों के लिये चिह्न बनाया।
७ और धर्मी लूत को बचाया जो बुरे लोगों की अपवित्र चलन
८ से उदास था। क्योंकि वुह धर्मी पुरुष उनमें रहिके उनकी
अनुचित चलन को देख देख और सुन सुन प्रतिदिन अपने
९ निष्कपट मन से पीड़ित था। प्रभु भक्तों को परीक्षा से
छुड़ाने और अधर्मीयों को न्याय के दिन लों दंड पावने के
१० लिये रख छोड़ने जानता है। परंतु निशेष करके उनको जो
अपवित्र अभिलाषों से शरीर का पीछा करते हैं और
प्रभुता की निंदा करते हैं वे ढगरे और स्वेच्छक और महतपद
११ के बिषय में बुरा कहने को नहीं डरते। तथापि दूतगण जो
पराक्रम और सामर्थ में उनसे बड़े हैं प्रभु के आगे बुरा
१२ कहिके उन पर दोष नहीं देते। परंतु ये लोग अचेत पशुन
के समान हैं जो नष्ट होने के लिये बुलायेगये उन बस्तुन की
निंदा करते हैं जिन्हें वे नहीं समझते और अपने सड़ाव में
१३ नष्ट होंगे। वे अधर्मता का फल प्राप्त करतेहुए दिन में नाच
रंग को सुख मानते हैं कलंक और खोट और तुम्हारे संग
१४ जेवनार करतेहुए अपने छल से क्रीड़ा करते हैं। छिनाला से
भरीहुई आंखें रखते हैं और पाप से थम नहीं सक्ते वे अस्थिर
प्राणों को फंदावते हैं उनके मन लोभ के कार्य से साधेहुए हैं
१५ स्राप के संतान हैं। वे सीधे मार्ग को छोड़के भटकगये हैं
और बोसर के पुत्र बलम के मार्ग का पीछा किये हैं जिसने
१६ अधर्मता की मजिनवारी को चाहा। परंतु अपने अपराध
का दपट पाया कि गूंगे गदहे ने मनुष्य के शब्द से बोलके
१७ उस आगमज्ञानी की बौड़ाहापन को रोक रक्खा। वे
जलहीन सोते हैं और मेघ जिन्हें बवंडर उड़ाजाता है उनके

१८ लिये सर्व्वदा के अंधकार की कालिख धरीऊई है। और वे घमंड की व्यर्थ कहि कहिके उन्हें जो भटकेऊयों में से बच निकलेहैं शारीरिक कामाभिलाष में और लुचपने में
१९ फंदावतेहैं। मोक्ष का बाचा उनसे करके आप विनाश के दास हैं क्योंकि जिस किसी से कोई जीतागया सो उसीके बंद
२० में भी पड़ा। क्योंकि यदि प्रभु और मोक्षदाता ईसा मसीह की पहिचान के कारण जगत की मलीनता से बचकर उनमें फिरके फसें और उनके बशमें होयं तो उनकी पिछली दशा
२१ पहिली से अधिक बुरी है। क्योंकि धर्मता का मार्ग न जानना उनके लिये उससे अधिक भला था कि जानके उस पवित्र आज्ञा
२२ से जो उन्हें सोंपीगईथी फिरजावें। परंतु उन पर सच्ची कहावत के समान बीतगईहै कि कुत्ता अपने छांड़ के ओर और सूअरनी जो धोईगईथी चहले में लोटने को फिरगईहै।

३ तीसरा पर्व्व

१ हे प्रिय मैं तुम्हें अब दूसरी पत्री लिखताहों जिसमें तुम्हारे
२ पवित्र मन को स्मरण कराके उस्कावताहों। जिसतें उन बातों से जो पवित्र आगमज्ञानियों से आगे कहीगईथीं और हमारी आज्ञा से जो प्रभु और मोक्षदाता के प्रेरित
३ हैं चेतन्य होजाओ। यह पहिले जानके कि पिछले दिनों में निंदक आवेंगे जो अपने कामाभिलाष की रीति पर
४ चलेंगे। और कहेंगे कि उसके आवने का बाचा कहां है क्योंकि जबसे पितरगण सोगये सृष्टि के आरंभ से अबलों
५ सबकुछ वैसाहीहै। परंतु इसे जानबूझके अज्ञान हैं कि ईश्वर की बाणी से स्वर्ग आदिमें ऊए और भूमि जलसे और
६ जल में ठहरीहै। जिसे जगत जो तब था जलमें डूबके
७ नष्ट ऊआ। परंतु स्वर्ग और पृथिवी जो अब हैं उसी बचन से अग्नि के लिये न्याय के दिन और अधर्मी मनुष्यन के नाश

८ लों धरीहैं। परंतु हे प्रिय यह बात तुम पर छिपी न रहे
कि प्रभु पास एक दिन सहस्र बरस के तुल्य है और सहस्र
९ बरस एक दिन के। प्रभु अपने बाचा के बिषय में विलंब
नहीं करता जैसा कि कईएक बिलंबता समुझतेहैं परंतु हम
पर संतोष करताहै और नहीं चाहता कि कोई नष्ट होवे
१० परंतु कि सब पश्चात्ताप करें। सो प्रभु का दिन ऐसा
आवेगा जैसा चोर रात को आवताहै उसी में स्वर्ग बड़े शब्द
से जातेरहेंगे और समस्त तत्व अति तपन से गलजायेंगे
११ और पृथिवी उन क्रिया समेत जो उसमें हैं जलजायगी। सो
जैसा कि ये सब बस्तें गलजायेंगी तो तुमको पवित्र चलन
१२ और भक्ति में कैसा होना उचितहै। ईश्वर के दिन की बाट
जोहते और फुरतीला होते जिसमें समस्त स्वर्ग प्रज्वलित
होके गलजायेंगे और तत्व अति तपन से पिघलजायेंगे।
१३ परंतु उसके बाचा के समान हम नए स्वर्ग और नई पृथिवी
१४ की जिनमें धर्म बसताहै बाट जोहतेहैं। इस कारण हे
प्रिय ऐसी बस्तुन की आशा रखकेकरके यत्न करो कि तुम
१५ निष्कलंक और निर्दोष उसमें कुशल से पाएजाओ। और
हमारे प्रभु के संतोष को अपना उद्धार जानो जैसा कि
हमारे प्रिय भाई पूलुस ने भी उस बुद्धि के समान जो उसे
१६ दिईगई तुम्हारे लिये लिखाहै। जैसा कि समस्त पत्रियों में
भी उन बातों के बिषय में कहताहै और उनमें कई बात हैं
जिनका समुझना कठिन है जिन्हें मूर्ख और अस्थिर लोग
अपनी नष्टता के लिये फेरतेहैं जैसा और और ग्रंथों को भी
१७ करतेहैं। इस कारण हे प्रिय आगे जानके चौकसरहो न
होवे कि तुम भी दुराचारियों की चूक में पड़के अपनी स्थिरता
से भ्रष्ट होजाओ। परंतु अनुग्रह में और हमारे प्रभु और
मोक्षदाता ईसा मसीह के ज्ञानमें बढ़तेजाओ उसीको ऐश्वर्य
अब और नित्य होवे आमीन।

यूहन्ना की पहिली पत्री सब के लिये

१ पहिला पर्ब्ब

१ जीवन के बचन के बिषय में जो आरंभ से था जिसे हमने सुनाहै और अपनी आखों से देखाहै और ताकरक्खाहै
२ और हमारे हाथों ने छूआहै। अर्थात जीवन प्रगट हुआ और हमने देखा और साक्षी देतेहैं और उस अनंत जीवन को जो पिता के संग था और हम पर प्रगट हुआ तुम्हें
३ जनावतेहैं। जो कि हमने देखाहै और सुनाहै उसका संदेश तुम्हें देतेहैं कि तुमभी हमारे संग मेल रक्खो और निश्चय हमारा मेल पिता से और उसके पुत्र ईसा मसीह से है।
४ और ये बातें हम तुम्हें इस कारण लिखतेहैं कि तुम्हारा
५ आनंद संपूर्ण होजाय। और यह वुह संदेश है जो हमने उसे सुनाहै और तुम्हें देतेहैं कि ईश्वर ज्योति है और
६ उसमें अंधकार कुछ भी नहीं। यदि हम कहें कि हम उस्से मेल रखतेहैं और अंधकार में चलें तो झूठेहैं और सचाई
७ पर नहीं चलते। पर यदि हम ज्योति में चलें जैसा कि वुह आप ज्योति में है तो हम आपुस में मेल रखतेहैं और उसके पुत्र ईसा मसीह का लोहू हमको समस्त पापों से पवित्र
८ करताहै। यदि हम कहें कि हम्में पाप नहींहै तो हम
९ अपने को छलदेतेहैं और सचाई हम्में नहीं। यदि हम अपने पापों को मानलेवें तो वुह हमारे पापों को क्षमा करनेको और समस्त अधर्मता से पवित्र करनेको सच्चा और
१० न्यायी है। यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया तो हम उसे झूठावतेहैं और उसका बचन हम्में नहींहै।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ हे मेरे बच्चो ये बातें मैं तुम्हें लिखताहों कि तुम पाप नकरो परंतु यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक
२ पक्षवादी धर्मी ईसा मसीह है। और सोई हमारे पापों के लिये प्रायश्चित है और केवल हमारे नहीं परंतु समस्त
३ संसार केभी। यदि हम उसकी आज्ञा को पालन करें तो
४ हम इसे जानतेहैं कि हम उसे परिचय रखतेहैं। वुह जो कहताहै कि मैं उसे जानताहों और उसकी आज्ञा को पालन नहीं करता सो झूठा है और सच्चाई उसमें नहीं।
५ परंतु वुह जो उसका बचन पालन करताहै उसमें निःसंदेह ईश्वर का प्रेम सिद्ध ऊआहै हम इसे जानतेहैं कि हम उसमें
६ हैं। वुह जो कहताहै कि मैं उसमें रहताहों चाहिये कि
७ आप ऐसा चले जैसा वुह चलताथा। हे भाइयो मैं तुम्हारे कारण कोई नई आज्ञा नहीं लिखता परंतु पुरानी आज्ञा जो तुम आगेसे रखतेथे पुरानी आज्ञा वुह बचन है जो
८ तुमने आरंभ से सुनाथा। फेर एक नयी आज्ञा मैं तुम्हें लिखताहों जो उसमें और तुम्में सत्य है क्योंकि अंधकार
९ बीतगया और अब सच्चा उंजियाला चमकताहै। वुह जो कहताहै कि मैं उंजियालेमें हों और अपने भाईसे बैर
१० करताहै अबलों अंधकार में है। वुह जो अपने भाईको प्यार करताहै उंजियाले में रहताहै और उसमें ठोकर का
११ कारण नहींहै। परंतु जो कि अपने भाईसे बैर रखताहै सो अंधकार में है और अंधकार में चलताहै और नहीं जानता कि किधर को जाताहै क्योंकि अंधकार ने उसकी आंखें
१२ अंधी कियांहै। हे बच्चो मैं तुम्हें लिखताहों इस कारण कि
१३ उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा कियेगयेहैं। हे पितरो मैं तुम्हें लिखताहों इस कारण कि जो आरंभसे है तुमने उसे जानाहै हे तरुणों मैं तुम्हें लिखताहों इस कारण कि तुमने

उस दुष्ट को जीताहै हे लड़को मैं तुम्हें लिखताहों इस कारण
१४ कि तुमने पिताको जानाहै। हे पितरो मैंने तुम्हें लिखाहै
इस कारण कि जो आरंभसेहै तुमने उसे जानाहै तरुणो मैंने
तुम्हें लिखाहै इस कारण कि तुम बलवान हो और ईश्वर का
१५ बचन तुम्में रहताहै और उस दुष्ट को तुमने जीताहै। जगत
को और जगत की बस्तुन को प्यार मत करो यदि कोई जगत
१६ को प्यार करे तो पिताका प्यार उसमें नहींहै। क्योंकि
सबकुछ जो जगत में है अर्थात शरीर का अभिलाष और
आंख का अभिलाष और जीवन का अभिमान पिता से नहीं
१७ परंतु जगत से है। और जगत और उसकी कामना
बहीजातीहै परंतु जो ईश्वर की इच्छा पर चलताहै वहो
१८ सर्बदा रहताहै। हे बच्चो यह पिछला समय है और जैसा
तुमने सुनाहै कि मसीह बिरुद्ध आवताहै सो अभी बहुतसे
मसीह बिरुद्ध हैं जिस्से हम जानतेहैं कि यह पिछला
१९ समय है। वे हम्में से निकले पर हम्में के न थे क्योंकि यदि
वे हम्में के होते तो निःसंदेह हमारे संग ठहरते परंतु यह
इस लिये है जिसतें प्रगट होवे कि वे सब हम्में के न थे।
२० और तुमने उस पवित्रमय के ओर से अभिषेक पाया और सब
२१ कुछ जानतेहो। मैंने तुम्हें इस कारण नहीं लिखाहै कि तुम
सत्य को नहीं जानते परंतु इस लिये कि तुम उसे जानतेहो
२२ क्योंकि हरएक झूठ सत्य में से नहींहै। कौन झूठा है परंतु
वुह जो ईसा के मसीह होनेको मुकरताहै जो पिता और
२३ पुत्र को मुकरताहै सो मसीह बिरुद्ध है। जो कोई पुत्र को
मुकरताहै सो पिता को नहीं रखता और जो कोई पुत्र को
२४ मानताहै पिता को भी रखताहै। इस लिये जो कि तुम्हों ने
आरंभ से सुनाहै सोई तुम्में रहे यदि वुह जो तुमने आरंभ
से सुनाहै तुम्में रहे तो तुमभी पुत्र और पिता में रहोगे।
२५ और वुह वाचा अनंत जीवन है जो उसने हमसे कियाहै।

२६ मैंने ये बातें तुमको उनके विषय में जो तुम्हें छल देतेहैं
२७ लिखीहैं। और अभिषेक जो तुमने उस्से पायाहै तुम्में रहताहै
और आधीन नहीं हो कि कोई तुम्हें सिखावे परंतु जैसा
यही अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखावताहै और
सत्य है और असत्य नहींहै अर्थात जैसा उसने तुम्हें सिखायाहै
२८ वैसा तुम उसमें रहो। हां अब हे बच्चो तुम उसमें रहो कि
जब वुह प्रगट होवे तो हम साहसी होवें और उसके आवने
२९ पर उस्के आगे लज्जित न होवें। सो जैसा कि तुम जानतेहो
कि वुह धर्मी है तो जानतेहो कि हरएक जो धर्म पर
चलताहै सो उसीसे उत्पन्न हुआहै।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ देखो पिता ने हमपर किस रीति का प्रेम कियाहै कि हम
ईश्वर के पुत्र कहावें इस कारण जगत हमको नहीं जानते
२ क्योंकि उसको नहीं जाना। हे प्रिय अब हम ईश्वर के पुत्र
हैं और अब नहीं दिखाई देता कि हम क्या होंगे परंतु हम
जानतेहैं कि जब वुह प्रगट होगा हम उसके समान होंगे क्योंकि
३ जैसा वुह है वैसा उसे देखेंगे। और हरएक जो यह आशा
उसपर रखताहै अपने को उसके समान पवित्र करताहै।
४ हरएक जो पाप करताहै व्यवस्था को भी भंग करताहै क्योंकि
५ पाप व्यवस्था को भंगता है। और तुम यह जानतेहो कि वुह
हमारे पाप दूर करनेके लिये प्रगट हुआ और उसमें कोई
६ पाप नहींहै। हरएक जो उसमें रहताहै पाप नहीं करता
और हरएकने जो पाप करताहै उसे न देखाहै न जानाहै।
७ हे बच्चो तुम्हें कोई छल न देवे जो कोई धर्म करताहै सो धर्मी
८ है जैसा वुह आप धर्मी है। जो पाप करताहै सो शैतान
से है क्योंकि शैतान आरंभ से पाप करताहै और ईश्वर
का पुत्र प्रगट हुआ कि शैतान के कार्य को बिनाश करे।

९ जो कि ईश्वर से उत्पन्न हुआहै सो पाप नहीं करता क्योंकि उसका बीज उसमें धराहै और वुह पाप नहीं करसक्ता
१० क्योंकि वुह ईश्वर से उत्पन्न हुआहै। इस्से ईश्वर के पुत्र और शैतान के पुत्र प्रगट हैं जो कोई धर्म नहीं करता और जो अपने भाईको प्यार नहीं करता सो ईश्वर से
११ नहींहै। क्योंकि यह वुह संदेश है जो तुमने आरंभ से
१२ सुनाहै कि हम एक दूसरे को प्यार करें। और कौन के समान नहीं जो उस दुष्ट का था और अपने भाई को घात किया और उसने उसे किस लिये घात किया इस कारण कि उसके अपनेही कर्म बुरे थे और उसके भाई के धर्मके थे।
१३ हे मेरे भाइयो यदि जगत तुमसे बिरोध करे आश्चर्य न
१४ करो। हम तो जानतेहैं कि हम मृत्यु से पार होके जीवनमें आये क्योंकि हम भाइयों को प्यार करतेहैं जो भाई को
१५ नहीं प्यार करता सो मृत्युमें रहताहै। जो कोई अपने भाईसे बैर रखताहै हत्यारा है और तुम जानतेहो कि
१६ किसी हत्यारेमें अनंत जीवन नहीं बसता। इस्से हम उसके प्रेम को पहिचानतेहैं कि उसने हमारे कारण अपना प्राण धरदिया और हमें चहिये कि भाइयों के कारण प्राण
१७ धरदेवें। इस कारण जिस किसीके पास जगत की बस्तु होय और अपने भाईको दरिद्री देखके अपने हृदयको उस्से
१८ अलग रक्खे तो ईश्वर का प्रेम उसमें क्योंकर बसताहै। मेरे बालको हम बचन से और जीभसे प्रेम न करें परंतु करनी
१९ और सचाई से। और हम इस्से जानतेहैं कि हम सत्यके हैं और अपने अंतःकरणों को उसके आगे स्थिर कर रक्खेंगे।
२० क्योंकि यदि हमारा अंतःकरण हमपर दोष देवे तो ईश्वर
२१ हमारे अंतःकरण से बड़ाहै और सबकुछ जानताहै। हे प्रिय जो हमारा अंतःकरण हमें दोष न देवे तो हम ईश्वर
२२ के आगे भरोसा रखतेहैं। और जो कुछ हम मांगतेहैं उस्से

पावतेहैं क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को पालन करतेहैं
२२ और जो कुछ उसको भावताहै सो करतेहैं। और उसकी
आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र ईसा मसीह के नाम पर
विश्वास लावें और जैसा उसने आज्ञा किईहै एक दूसरे को
२४ प्यार करें। और जो उसकी आज्ञा को पालन करताहै सो
उसमें रहताहै और वुह उस जनमें रहताहै और इसी
हम जानतेहैं कि वुह हम्में रहताहै अर्थात उस आत्मासे
जिसको उसने हमें दियाहै।

४ चौथा पर्व्व

१ हे प्रिय हरएक आत्मा को प्रतीति न करो परंतु आत्मा को
परखो कि वे ईश्वर के ओरसे हैं कि नहीं क्योंकि बड़तसे
२ मिथ्या आगमज्ञानी जगत में निकलगयेहैं। तुम इसी ईश्वर
के आत्मा को जानतेहो जो आत्मा मानलेताहै कि ईसा मसीह
३ देह में प्रगट ऊआ सो ईश्वर से है। और जो आत्मा नहीं
मानलेता कि ईसा मसीह देह में आया ईश्वर के ओर से
नहींहै और यह वही मसीह बिरुद्ध है जिसका समाचार
४ तुमने सुना कि आवताहै और अब जगत में आचुकाहै। हे
प्रिय बच्चो तुम तो ईश्वर के हो और उन पर प्रबल ऊएहो
५ क्योंकि वुह जो तुम्में है उसी बड़ा है जो जगत में है। वे
जगत के हैं इस कारण जगत की बोलतेहैं और जगत उनकी
६ सुनताहै। हम ईश्वर के हैं वुह जो ईश्वर को पहिचानताहै
हमारी सुनताहै जो ईश्वरसे नहींहै सो हमारी नहीं
सुनता इसी हम सच्चाई के आत्मा और भ्रमके आत्मा को
७ जानलेतेहैं। हे प्रिय हम एक दूसरे को प्यार करें क्योंकि
प्यार ईश्वर से है और हरएक जो प्यार करताहै ईश्वर से
८ उत्पन्न ऊआहै और ईश्वर को जानताहै। जो कि प्यार नहीं
करता उसने ईश्वर को नहीं जानाहै क्योंकि ईश्वर प्यार है।

९ ईश्वर का प्यार जो हमसे है इस्से प्रगट ऊआ कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा कि हम उसके कारण
१० से जीवें। इसमें प्यार है यह नहीं कि हमने ईश्वर को प्यार किया परंतु कि उसने हमें प्यार किया और अपने पुत्र को
११ भेजा कि हमारे पापों का प्रायश्चित्त होवे। हे प्रिय यदि ईश्वर ने हमसे ऐसा प्यार किया तो हमें कैसा एक दूसरे को
१२ प्यार कियाचाहिये। किसीने ईश्वर को कधी नहीं देखा यदि हम एक दूसरे को प्यार करें तो ईश्वर हम्में रहताहै और
१३ उसका प्यार हम्में सिद्ध ऊआहै। हम इसीसे जानतेहैं कि हम उसमें रहतेहैं और वुह हम्में कि उसने अपने आत्मा
१४ मेंसे हमें दिया। और हमने देखाहै और साक्षी देतेहैं कि
१५ पिताने पुत्र को भेजा कि संसार का मुक्तिदाता होवे। जो कोई मानलेवे कि ईसा ईश्वर का पुत्र है सो ईश्वर में और
१६ ईश्वर उसमें रहताहै। और ईश्वर के प्यार को जो हमसे है हमने जाना और उस पर बिश्वास किया ईश्वर प्यार है और जो कोई प्यारमें रहताहै सो ईश्वरमें और ईश्वर उसमें
१७ रहताहै। इस्से हम्में प्रेम संपूर्ण होताहै कि हम न्याय के दिन साहस रक्खें क्योंकि जैसा वुह है वैसा हमभी जगत में
१८ हैं। प्रेममें भय नहीं है परंतु संपूर्ण प्रेम भयको दूर करताहै क्योंकि भय में दुख है जो डरताहै सो प्रेममें संपूर्ण नहीं
१९ ऊआ। हम उसे प्यार करतेहैं क्योंकि पहिले उसने हमको
२० प्यार किया। यदि कोई कहे कि मैं ईश्वर को प्यार करताहों और अपने भाईसे बैर रखताहै तो झूठा है क्योंकि जो कोई अपने भाईको जिसे उसने देखाहै प्यार नहीं करता सो ईश्वर को जिसे उसने नहीं देखा क्योंकर प्यार करसक्ताहै।
२१ और हमने उस्से यह आज्ञा पाईहै कि जो कोई ईश्वर को प्यार करताहै सो अपने भाईको भी प्यार करे।

५ पांचवां पर्व्व

१ जो कोई बिश्वास लावताहै कि ईसा वही मसीह है सो ईश्वर से उत्पन्न हुआहै और जो कोई उत्पादक को प्यार करताहै सो उसको भी प्यार करताहै जो उसे उत्पन्न २ हुआहै। इसे हम जानतेहैं कि ईश्वर के बालकों को प्यार करतेहैं जब कि हम ईश्वर को प्यार करके उसकी आज्ञा को ३ पालन करतेहैं। क्योंकि ईश्वर का प्यार वह है कि हम उसकी आज्ञा को पालन करें और उसकी आज्ञा तो कठिन ४ नहींहै। क्योंकि जो ईश्वर से उत्पन्न हुआहै सो जगत पर प्रबल होताहै और यही वुह जय है जो जगत पर प्रबल ५ होताहै अर्थात हमारा बिश्वास। वुह कौन है जो जगत पर प्रबल होताहै केवल वही जो बिश्वास रखताहै कि ईसा ६ ईश्वर का पुत्र है। यह वही है जो पानी से और लोहू से आया अर्थात ईसा वुह मसीह केवल पानी से नहीं परंतु पानी और लोहू से और आत्मा है जो साक्षी देताहै और ७ आत्मा सत्य है। क्योंकि तीन हैं जो स्वर्ग में साक्षी देते हैं पिता ८ और बचन और धर्मात्मा और ये तीनों एक हैं। और तीन हैं जो भूमि पर साक्षी देते हैं आत्मा और पानी और लोहू ९ और ये तीनों एक में मिलते हैं। यदि हम मनुष्यन की साक्षी मानें तो ईश्वर की साक्षी अधिक बड़ी है क्योंकि ईश्वर की १० साक्षी जो उसने अपने पुत्र के कारण दिईहै वह है। जो कि ईश्वर के पुत्र पर बिश्वास लावताहै सो साक्षी अपनेही में रखताहै जो कि ईश्वर पर बिश्वास नहीं लावता सो उसको झूठा करताहै क्योंकि उसने उस साक्षी पर जो ईश्वर ने ११ अपने पुत्र के विषय में दिईहै बिश्वास नहीं किया। और साक्षी यह है कि ईश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया और यह १२ जीवन उसके पुत्र में है। जो कि पुत्र को रखताहै सो जीवन को रखताहै जो कि ईश्वर के पुत्र को नहीं रखता सो जीवन

१३ नहीं रखताहै। मैं तुम्हों को जो ईश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास लायेहो यह बातें लिखताहों जिसतें तुम जानो कि अनंत जीवन रखतेहो और जिसतें तुम ईश्वर के पुत्र के नाम १४ पर बिश्वास लाओ। और यह वुह भरोसाहै जो हम उस पर रखतेहैं कि यदि हम उस्की इच्छा के समान कुछ मांगे १५ तो वुह हमारी सुनताहै। और यदि हम जानें कि जो कुछ हम उस्से मांगतेहैं वुह हमारी सुनताहै तो हम जानतेहैं कि १६ जो कुछ हमने उस्से मांगाहै सो हम पावेंगे। यदि कोई अपने भाई को देखे कि मृत्यु के अयोग्य पाप करताहै तो वुह मांगे और उसे जीवन दियाजायगा यह उसके लिये है जो मृत्यु के अयोग्य पाप करताहै एक पाप मृत्यु के योग्य है मैं नहीं १७ कहता कि वुह उसके बिषय में प्रार्थना करे। समस्त अधर्म १८ पाप है परंतु कोई पाप मृत्यु के अयोग्यहै। हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वर से उत्पन्न ऊआहै पाप नहीं करता परंतु वुह जो ईश्वर से उत्पन्न ऊआहै अपनी चौकसी करताहै १९ और वुह दुष्ट उसे नहीं छूता। हम जानतेहैं कि हम ईश्वर २० से हैं और समस्त संसार दुष्टता में पड़ाहै। परंतु हम जानतेहैं कि ईश्वर का पुत्र आयाहै और हमें समुझ दियाहै कि हम उसको जो सत्य है जानें और हम उसमें हैं जो सत्य है अर्थात उसके पुत्र ईसा मसीह में वुह सत्य ईश्वर २१ और अनंत जीवन है। हे नन्हें बच्चो अपने को मूर्तिन से बचारक्खो आमीन।

यूहन्ना की दूसरी पत्री

१ प्राचीन के ओर से चुनीऊई स्त्री को और उसके पुत्रों को जिन्हें मैं सत्य में प्यार करताहों और केवल मैं नहीं परंतु वे
२ सब भी जो सत्य को जानतेहैं। उस सत्य के कारण जो हममें
३ बसताहै और हममें नित्य रहेगा। अनुग्रह और दया और शांति पिता ईश्वर के ओर से और प्रभु ईसा मसीह पिता
४ के पुत्र के ओर से तुम्हारे संग सत्य में और प्रेम में रहें। जब मैं ने तेरे पुत्रों में से कईएक को उस आज्ञा के समान जो हमने पिता से लिई सच्चाई पर चलते पाया मैं ने बऊत
५ आनंद किया। और अब हे स्त्री मैं तेरी बिनती करताहों यह नहीं कि तुझको कोई नई आज्ञा लिखताहों परंतु वही जो हमने आरंभ से पाईथी कि हम एक दूसरे को प्यार
६ करें। और प्यार यही है कि हम उसकी आज्ञा की रीति पर चलें यह वही आज्ञा है जैसा तुम ने आरंभ से सुनाहै
७ कि तुम उस पर चलो। क्योंकि बऊतेरे छली जगत में निकलेहैं जो नहीं मानलेतेहैं कि ईसा मसीह देह में आया यही छली
८ और मसीह विरुद्ध है। अपनेही को चौकस रक्खो कि जो कार्य हमने कियाहै उसे न खोवें परंतु पूरा फल प्राप्त करें।
९ जो कोई अपराध करताहै और मसीह की शिक्षा में नहीं रहता सो ईश्वर को नहीं रखता जो मसीह की शिक्षा में
१० रहताहै सो पिता और पुत्र को भी रखताहै। यदि कोई तुम्हारे पास आवे और यह शिक्षा न लावे तो उसे घर में न
११ लेउ और न उसके कार्य पर आशीष चाहो। क्योंकि जो कोई उसके कार्य पर आशीष चाहताहै सो उसके बुरे कार्यन

१२ में भागी होताहै। तुन्हें बहुतसी बातें लिखने को रखके मैं नहीं चाहता कि पत्र और मसि से लिखों परंतु आशा रखताहों कि तुम्हारे पास आओं और सन्मुख कहों जिसतें
१३ हमारा आनंद संपूर्ण होजाय। तेरी चुनीहुई बहिन के लड़के तुझे नमस्कार कहतेहैं आमीन।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

१ प्राचीन के ओरसे प्रिय गायस को जिसको मैं सत्यमें प्यार
२ करताहों। हे प्रिय मैं समस्त रीति से चाहताहों कि जैसा तेरा प्राण भाग्यमान है तू भाग्यमान होवे और कुशल में
३ रहे। क्योंकि जब भाइयों ने आके तेरी सचाई पर जैसा तू सचाईसे चलताहै साक्षी दिई मैंने निपट आनंद किया।
४ इस्से मेरा कोई बड़ा आनंद नहीं कि मैं सुनों कि मेरे पुत्र
५ सचाई पर चलतेहैं। हे प्रिय तू जो कुछ भाइयों से और
६ परदेशीयों से करताहै सो बिश्वास के साथ करताहै। उन्हों ने मंडली के आगे तेरे प्रेम के बिषय में साक्षी दिईहै उन्हें तू
७ जो ईश्वर के योग्य यात्रा में बढ़ाताहै अच्छा करताहै। क्योंकि वे अन्यदेशीयों से कुछ नहीं लेतेहुए उसके नाम के कारण
८ बाहर निकले। इस कारण उचित है कि हम ऐसों को
९ यहण करें कि हम सचाई में संगी सेवक होवें। मैं ने मंडली को लिखाहै परंतु दियातरफीसने जो उन में प्रधान

१० ऊआचाहताहै हमें ग्रहण न किया। सो जब मैं आओंगा तो उसके किएऊए कार्यन को स्मरण करेंगा कि दुसका की बातों से हमारे बिरोध में बुरा बकताचलाजाताहै और इसे संतोष नहीं करके भाइयों को आप ग्रहण नहीं करता अरु औरों को जो उन्हें ग्रहण किया चाहतेहैं रोकताहै
११ और मंडली से बाहर निकलताहै। हे प्रिय बुराई का पीछा न करो परंतु भलाई का जो कि भला करताहै सो ईश्वर से है परंतु जो कि बुरा करताहै उसने ईश्वर को नहीं देखा।
१२ दीमीतरयूस समस्त मनुष्यन से और सचाई से भी अच्छी साक्षी रखताहै और हम भी साक्षी देतेहैं और तुम तो
१३ जानतेहो कि हमारी यह साक्षी सत्य है। लिखने को बऊत कुछ मेरे पासहै परंतु मैं मसि और लेखनी से तुझे न
१४ लिखोंगा। परंतु तुझे शीघ्र देखने की आशा रखताहों तब
१५ हम सन्मुख कहि लेंगे। तुझ पर शांति होवे मित्रगण तुझे नमस्कार कहतेहैं तू भी मित्रों के नाम लेके नमस्कार कह।

यहूदा की पत्री सबके लिये

१ ईसा मसीह का दास और याक़ूब का भाई यहूदा के ओर से उनको जो पिता ईश्वर में पवित्र कियेगये और ईसा
२ मसीह में बुलायेगये और रक्षा कियेगयेहैं। दया और
३ शांति और प्रेम तुम्हारे कारण बढ़ताजाय। हे प्रिय तुमको

सामान्य उद्धार के बिषय में लिखने को समस्त यत्न करतेऊरे
मैं ने उचित जाना कि उपदेश करके तुम को लिखों कि उस
बिश्वास के लिये जो आगे साधुन को सोंपागया अत्यंत
४ परिश्रम करो। क्योंकि कितने घुसगयेहैं जो इस दंड की
आज्ञा के लिये बक्त दिनसे ठहरायेगयेहैं अधर्मी लाग जो
हमारे ईश्वर के अनुग्रह को लुचपने से पलटतेहैं और ईश्वर
से जो केवल स्वामी है और हमारे प्रभु ईसा मसीह से
५ मुकरतेहैं। परंतु मैं तुम्हें चितावताहों यद्यपि तुम उसे आगे
जानतेथे कि प्रभु ने लोगों को मिसर की भूमि से बचाके फेर
६ उन्हें जो बिश्वास न लाये नष्ट किया। और उन दूतों को भी
जो अपनी पहिली दशा में न ठहरे परंतु अपने ठीक निवास
को छोड़दिया उसने सर्बदा के सीकरों में अंधकार के तले
७ महान्याय के दिन लों रक्खा। उसी रीति से सदूम और
गमरः और उनके आसपास के नगर जिन्हों ने उनके समान
छिनाला किया और पराये शरीर का पीछा किया चितावने
के लिये धरेहैं और सर्बदा के अग्नि की पीड़ा का पलटा
८ पावतेहैं। सो ये स्वप्न दर्शी भी शरीर को अशुद्ध करतेहैं
और प्रभुता को हलुक समुझतेहैं और महत पदों की निंदा
९ करतेहैं। परंतु मीकाईल प्रधान दूत ने जब शयतान के संग
मूसा की लोथ के बिषय में बिवाद किया तो साहस न किया
कि उस पर झिड़कने का अपवाद देवे परंतु कहा कि प्रभु
१० तुझको दपटे। परंतु जिन बातों को ये नहीं जानते निंदा
करतेहैं और जिन्हें सभाव से पशु के समान जानतेहैं इनमें
११ वे अपने को सत्यानाश करतेहैं। धिक उन पर क्योंकि वे क़ोन
के मार्ग पर चलेगयेहैं और बिलअम केसे चूक में लोभ के
लिये अपने को बहादिया और कुरह के बिपरीत में नष्ट
१२ ऊए। तुम्हारे प्रेम के जेवनार में वे कलंक हैं जब वे तुम्हारे
उत्सव में निडर से अपने को खिलावतेहैं वे निर्जल मेघ हैं जो

पवन से उड़ाये जातेहैं वृक्ष हैं जिनकी कोंपलें मुरझागईंहैं
१२ निष्फल हैं दोबार मृतक हैं जड़ से उखाड़ेगये। समुद्रकी
प्रचंड लहरें हैं अपनी लज्जा का फेन भर लावतेहैं भ्रमतेहुए
तारे हैं जिनके लिये सर्वदा के अंधकार की कालिख धरीहै।
१४ अखनूख ने जो आदम से सातवां था उनके विषय में आगम
कहा था कि देख प्रभु अपने करोड़ों साधुन के संग आताहै।
१५ कि सभों पर दंड बिचार करे और उन्हें जो उनमें से अधर्मी
हैं उन्हों के समस्त अधर्म कार्यन पर जो उन्हों ने अधर्मता से
कियेहैं और सारी कठोर बातों पर जो अधर्म पापियों ने
१६ उसके बिरुद्ध में कहीहैं दोषदेय। ये कुड़कुड़ानेवाले ह निंदक
हैं और अपने कामाभिलाष पर चलतेहैं और मुंह से बड़ी
बोली बोलतेहैं मनुष्य की प्रगट को अपने लाभ के लिये
१७ बढ़ावतेहैं। परंतु हे प्रिय तुम उन बातों को जो हमारे प्रभु
ईसा मसीह के प्रेरितों के ओरसे आगे कहीगई स्मरण
१८ करो। क्योंकि उन्हों ने तुम्हें कहिदियाहै कि अंत्य समय में
चिढ़ानेवाले आवेंगे जो अपने अधर्म कामाभिलाष पर चलेंगे।
१९ ये वे हैं जो अपने को अलग करतेहैं रसियाहैं और आत्मा
२० उनमें नहींहै। परंतु हे प्रिय आप को अपने पवित्र विश्वास
२१ पर सुधारतेहुए और धर्मात्मा से प्रार्थना करतेहुए। अपने
को ईश्वर के प्रेम में रक्खो और अनंत जीवन के लिये हमारे
२२ प्रभु ईसा मसीह की दया की बाट जोहो। और भिन्न करके
२३ कितनों पर दया करो। और डरके साथ कितनों को आग
में से खींच के बचाओ और बस्त्र से भी जिसमें देह का
२४ छींटालगा बिरोध करो। अब उसके लिये जो तुम्हें भ्रष्ट
होने से बचासक्ताहै और अपने ऐश्वर्य के सन्मुख अत्यंत
२५ आनंद से निर्दोष खड़ा करसक्ताहै। हमारे मुक्तिदाता
निर्केवल बुद्धिमान ईश्वर को महिमा और प्रताप और प्रभुता
और पराक्रम अब और सर्वदा होवे आमीन।

यूहन्ना देव का प्रकाशित

१ पहिला पर्व्व

१ ईसा मसीह का प्रकाशित जो ईश्वर ने उसे दिया कि उन बातों को जो शीघ्र होनेवाली हैं अपने सेवकों को दिखावे और उन्हें अपने दूत के ओर से भेजके अपने दास यूहन्ना को
२ जनाया। जिसने ईश्वर के बचन की और ईसा मसीह की
३ साक्षी पर जो कुछ उसने देखा साक्षी दिई। धन्य वुह जो पढ़ताहै और वे जो इस भविष्य वाणी को सुनतेहैं और उन बातों को जो इसमें लिखीहैं पालन करतेहैं क्योंकि समय
४ निकट है। यूहन्ना उन सात मंडलियों को जो आसिया में हैं उसके ओरसे जो है और था और आनेवालाहै और सात आत्मासे जो उसके सिंहासन के आगे हैं अनुग्रह और
५ शांति तुम्हारे लिये होवे। और ईसा मसीह से जो विश्वासी साक्षी है और मृतकन में से पहिलौंठा और पृथिवी के राजाओं का महाराज है वुह जिसने हमसभों को प्यार
६ किया और हमें हमारे पापों से अपने लोहू में धोडाला। और हमको राजा और अपने पिता ईश्वर का याजक
७ बनाया महिमा और प्रभाव सर्व्वदा उसीको आमीन। देखो वुह मेघों पर आताहै और हरएक की दृष्टि उस पर पड़ेगी हां जिन्हों ने उसे छेदा उसको देखेंगे और भूमि पर के समस्त
८ वर्ण उसके लिये छाती पीटेंगे ऐसा होवे आमीन। प्रभु यों कहताहै कि मैं अलफा और उमगा हों आदि और अंत जो
९ है और था और जो आनेवालाहै सर्व्व सामर्थी। मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई भी और ईसा मसीह के दुखमें और राज्य

में और संतोष में तुम्हारा साझी हों उस टापू में जो पतमस
कहावताहै ईश्वर के वचन के और ईसा मसीह की साक्षी के
१० कारण था। मैं प्रभु के दिन आत्मा में ऊआ और अपने
११ पीछे तुरही कासा महाशब्द सुना। जो कहताथा कि मैं
अलफा और उमगा हों आदि और अंत और जो कुछ तू
देखताहै ग्रंथमें लिख और आसिया की सात मंडलियों को
भेज अर्थात अफसस को और स्मरनः को और परगमस को
और थयाटरः को और सारदीस को और फलादलफियः
१२ को और लाऊदीकियः को। मैं उस शब्द को जो मुझ से
कहताथा देखनेको फिरा और फिरकर सोने की सात
१३ दीअट देखीं। उन सात दीअटों के मध्य में एक जन मनुष्य
के पुत्र सा देखा कि एक लंबा पहिरावा पहिनेऊए और
१४ सोने का पटूका छाती पर बंधाऊआ। उसका सिर अर्थात
बाल ऊंनके समान उजला और पालासा श्वेत था और
१५ उसकी आखें जैसे आग की लवर। और उसके पांव चोखे
पीतल केसे जो भट्ठी में निराला कियागयाहो और उसका
१६ शब्द बऊतसे पानीयों कासा शब्द था। और उसके दहिने
हाथ में सात तारे थे और उसके मुंह से चोखा दोधारा खड्ग
निकलताथा और उसका स्वरूप सूर्य के समान जब वुह बड़े
१७ पराक्रम से चमकताहै। और जब मैं ने उसे देखा तब उसके
चरण पर मृतकसा गिरपड़ा तब उसने अपना दहिना
हाथ मुझ पर रखके कहा कि मत डर मैं पहिला और
१८ पिछलाहों। वही हों जो जीता हों और मूआथा और
देखो मैं सर्वदा लों जीवताहों आमीन और मुझ पास परलोक
१९ और मृत्यु की कुंजियां हैं। जो बस्तें तू देखताहै और वे जो
२० हैं और जो पीछे होनेवाली हैं उन्हें लिख रख। उन सात
तारों का जिन्हें तू मेरे दहिने हाथ में देखताहै और उन
सोने के सात दीअटों का भेद यह है कि सात तारे सात

मंडलियों के दूत हैं और सात दीअट जो तू देखताहै सात मंडली हैं।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ वुह कहताहै जिसके दहिने हाथ में सात तारे हैं और सोने के सात दीअटों के मध्य में फिरताहै कि अफसस की
२ मंडली के दूत को ये बातें लिख। कि तेरे काम और तेरा परिश्रम और तेरा संतोष और कि तू बुरों को नहीं सहि सक्ता मैं जानताहों और तूने उनको जो अपने को प्रेरित
३ कहतेहैं और नहीं हैं ताड़ा और झूठा पाया। और तूने सहलियाहै और संतोष कियाहै और मेरे नाम के कारण
४ परिश्रम कियाहै और उदास न ऊआ। तिसपर भी तुझे यह अपवाद रखताहों कि तूने अपना पहिला प्रेम खोदिया।
५ सो जिसे तू गिरा चेत कर और पश्चात्ताप कर और अपने अगिले कार्य कर नहीं तो मैं तुझ पास शीघ्र आओंगा और यदि तू पश्चात्ताप न करे तो तेरी दीअट को स्थान से अलग
६ करोंगा। तिसपर भी तुझ में यह है कि तू नीकलाइयों के
७ कार्यन से बैर रखताहै जिनसे मैंभी बैर रखताहों। जो कान रखताहै सो सुने कि आत्मा मंडलियों को क्या कहताहै कि मैं उसको जो जय पावताहै जीवन के वृक्ष से जो ईश्वर के
८ बैकुंठ के बीचोंबीच है फल खाने को देउंगा। जो पहिला और पिछलाहै और मूआ था और जीवताहै सो कहताहै
९ कि स्मरना की मंडली के दूत को ये बातें लिख। कि मैं तेरे कार्य और दुख और दरिद्रता को जानताहों परंतु तू तो धनवान है और उनका जो अपने को यहूदी कहतेहैं और नहीं हैं परंतु शयतान की मंडली हैं पाषंड बकना जानताहों।
१० जो जो बात तुझे भोग करने पड़ेगा उनमें किसीसे मत डर देख शयतान तुम्में से कईएक को बंधन में डालेगा कि तुम

परखेजाओ और दस दिन लों पीड़ा पाओगे तू मृत्यु लों
११ बिश्वासी रह और मैं जीवन का मुकुट तुझे देऊंगा। जो
कान रखताहै सो सुने कि आत्मा मंडलियों को क्या कहताहै
१२ कि जो जयमान है दूसरी मृत्यु से संताया न जायगा। वुह
जो चोखा दोधारा खड्ग रखताहै कहताहै कि परगमस की
१३ मंडली के दूत को ये बातें लिख। कि मैं तेरे कार्य और तेरे
निवास को जहां शयतान का सिंहासन है जानताहों और
तू मेरे नाम को दृढ़ता से धरताहै और उन दिनों में भी जब
मेरा बिश्वासी साक्षी अंतिपास तुम्हों में मारागया जहां
१४ शयतान रहताहै मेरे बिश्वास से नमुकरा। तिस पर भी मैं
तुझे कुछ अपवाद रखताहों कि तेरे यहां वे हैं जो बिलआम
की सी शिक्षा को धारण करते हैं जिसने बिलअक को सिखाया
कि इसराईल के संतान के आगे ठोकर खिलानेवाला पत्थर
डाल रक्खे कि उन बस्तुन को खावें जो मूर्तिन को बलिदान
१५ किई गईं और छिनाला करें। और इसी रीति से उन्हें भी
रखतेहो जो नीक़लायओं की शिक्षा को ग्रहण करतेहैं
१६ जिसका मैं बिरोधी हों। पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं तुझ
पास शीघ्र आओंगा और मैं उनके संग अपने मुंह का खड्ग
१७ लेके लड़ोंगा। जो कान राखताहै सो सुने कि आत्मा
मंडलियों को क्या कहताहै कि जयमान को मैं गुप्त मन्ना खाने
देउंगा और मैं उसे एक श्वेत पत्थर देउंगा और उसी पत्थर
पर एक नया नाम लिखाहुआ कि उसको छोड़ जिसने उसे
१८ पाया कोई और उसे नहीं जानता। ईश्वर का पुत्र जिसकी
आंखें अग्नि की लवर के समान हैं और पांव जैसे चोखे पीतल
के हैं कहताहै कि थवातीरः की मंडली के दूत को ये बातें
१९ लिख। कि मैं तेरे कार्यन को और प्रेम को और सेवा को
और बिश्वास को और संतोष को जानताहों और तेरे
२० पिछले कार्य अगिले से अति अधिक हैं। तथापि मैं तुझे कुछ

कुछ अपवाद रखताहों कि तू उस स्त्री यज़ाबील को जो अपने को आगमज्ञानिनी कहती है सिखावने और मेरे सेवकों को फुसलाने देताहै कि वे छिनाला करें और मुर्त्तिन को
२१ बलिदान किईहुई बस्तुन को खावें। और मैं ने उसको अवकाश दिया कि अपने छिनाला से पश्चात्ताप करे और
२२ उसने पश्चात्ताप न किया। देख मैं उसको बिछौना पर डालोंगा और उन्हें जो उसके संग छिनाला करते हैं यदि वे अपने कार्य्यन से पश्चात्ताप न करें बड़ी बिपत्ति में डालोंगा।
२३ और उसके पुत्रों को प्राण से मारोंगा और समस्त मंडली जानेंगी कि मैं वही हों जो हृदयों और लंकों का पारखी हों और मैं तुम्में से हरएक को तुम्हारे कार्य्यन के समान देउंगा।
२४ परंतु तुम्हें अर्थात सवातीरः के बचेहुए लोगों को जिनमें यह शिक्षा नहीं और जो शयतान की गहिराई को जिसकी चर्चा करते हैं नहीं जानते यह कहताहों कि मैं तुम पर और बोझ
२५ न धरोंगा। तथापि जो रखतेहो उसको मेरे आवने लों
२६ दृढ़ता से धरे रहो। और उसके लिये जो जयमान होताहै और मेरे कार्य्यन को अंत्य लों रखताहै मैं जातों पर पराक्रम
२७ देउंगा। और वुह लोहे के दंड से उन पर प्रभुता करेगा और वे कुम्हार के पात्रों के समान चकनाचूर होंगे जैसा
२८ कि मैं ने अपने पिता से भी पायाहै। और मैं उसे प्रातःकाल
२९ का तारा देउंगा। जो कान राखता है सो सुने कि आत्मा मंडलियों को क्या कहताहै।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ वुह जिस पास ईश्वर के सात आत्मा और सात तारे हैं यह कहताहै कि सारदीस की मंडली के दूत को ये बातें लिख कि मैं तेरे कार्य्यन को और उस बात को जानताहूं कि तू
२ जीवता कहावताहै परंतु मृतक है। चौकस हो और जो

बचें कि रहिगई हैं और जो मरने पर हैं उन्हें नीमन कर
क्योंकि मैं ने तेरे कार्यन को ईश्वर के आगे संपूर्ण नहीं पाया।
३ इस कारण चेतकर कि तू ने किस रीति से लिया और सुना
और दृढ़ता से थाम और पश्चात्ताप कर सो यदि तू चौकस
न हो तो मैं तुझ पर चोर के तुल्य आओंगा और तू न जानेगा
४ कि मैं किस घड़ी तुझ पर आओंगा। सारदीस में भी तू
थोड़ासा नाम रखता है जिन्हों ने अपने पहिरावा को अशुद्ध
न किया और वे मेरे संग श्वेत में फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं।
५ और जयमान जो है सो श्वेत वस्त्र से पहिनायाजायगा और
मैं उसका नाम जीवन के पुस्तक से न मिटाओंगा परंतु अपने
पिता के और उसके दूतों के आगे उसके नाम को मानलेउंगा।
६ जो कान रखता है सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या
७ कहता है। वुह जो पवित्रमय और सत्यमय है जो दाऊद की
कुंजी रखता है वुह जो खोलता है और कोई बंद नहीं करता
और बंद करता है और कोई नहीं खोलता यह कहता है
८ कि फलादल्फियः की मंडली के दूत को ये बातें लिख। कि मैं
तेरे कार्यन को जानता हों देख मैं ने तेरे आगे एक खुलाऊआ
द्वार रक्खा है और कोई उसे बंद नहीं करसक्ता क्योंकि तू
थोड़ा बल रखता है और मेरे बचन को धारण किया है और
९ मेरे नाम से मुकर नहीं गया। देख मैं शैतान की मंडली के
लोगों को देउंगा कि वे अपने को यहूदी कहते हैं और नहीं
हैं परंतु झूठ कहते हैं देख मैं ऐसा करोंगा कि वे आवें और
तेरे चरण के आगे डंडवत करें और वे जानेंगे कि मैं ने तुझे
१० प्यार किया है। इस कारण कि तू ने मेरे संतोष की बात को
धारण किया है मैं भी उस परीक्षा की घड़ी से जो समस्त
संसार पर आवेगी कि पृथिवी के बासियों को परखे तेरी
११ रक्षा करोंगा। देख मैं शीघ्र आवता हों जो तुझ पास है
१२ उसकी रक्षा कर कि कोई तेरा मुकुट न लेले। जयमान जो है

मैं उसे अपने ईश्वर के मंदिर का खंभा करोंगा और वुह फेर बाहर न जायगा और मैं अपने ईश्वर का नाम और अपने ईश्वर के नगर का अर्थात नये यिरोशलीम का नाम जो मेरे ईश्वर से स्वर्ग से नीचे उतराहै और अपना नया
१३ नाम उस पर लिखोंगा। जो कान रखताहै सो सुने कि
१४ आत्मा मंडलियों से क्या कहताहै। वुह जो आमीन और बिश्वास के योग्य और सच्चा साक्षी है और ईश्वर के सृष्टि का आरंभ है यों कहताहै कि लाऊदीकियः की मंडली के
१५ दूत को ये बातें लिख। कि मैं तेरे कार्य्यन को जानताहों कि तू न तो ठंढा न तप्त है मैं चाहता कि तू ठंढा अथवा तप्त
१६ होता। सो इस कारण कि तू सुसुम है और न ठंढा न तप्त
१७ मैं तुझे अपने मुंह से उगिल देउंगा। क्योंकि तू कहताहै मैं धनी हों और अपने को धनमान कियेहों और किसी बस्तु के अधीन नहीं हों और नहीं जानता कि तू दुर्गत और दुखित
१८ और कंगाल और अंधा और नंगा है। मैं तुझे मंत्र देताहों कि सोना जो आग में तायागया मुझ से मोल ले कि तू धनमान होवे और श्वेत बस्त्र ले जिसतें तू बिभूषित होवे और तेरे नंगापन की लाज दिखाई न देय और अपनी आंखों में अंजन
१९ लगा कि तू देखे। जिनको मैं प्यार करताहों उन्हें दपटताहों और ताड़नाकरताहों इस कारण ज्वलित हो और
२० पश्चात्ताप कर। देख मैं द्वार पर खड़ाहोके खटखटाताहों यदि कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोले मैं उसके घर के भीतर आओंगा और उसके संग भोजन करोंगा और वुह मेरे संग।
२१ जयमान जो है मैं उसे अपने सिंहासन पर अपने संग बैठने देउंगा जैसा कि मैं भी जय पाके अपने पिताके संग उसके
२२ सिंहासन पर बैठाहों। जिस किसीके कान है सो सुने कि आत्मा मंडलियों को क्या कहताहै।

४ चौथा पर्व्व

१ इन बस्तुन के पीछे मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि स्वर्ग में एक द्वार खुलाऊआ और पहिला शब्द जो मैं ने सुना तुरही कासा था जो मुझे कहतेऊए बोला कि इधर ऊपर
२ आ और मैं तुझे देखाओंगा कि आगे को क्या होगा। और तुरंत मैं आत्मा में ऊआ तो क्या देखताहों कि स्वर्ग में एक
३ सिंहासन धराऊआ और उस पर कोई बैठाथा। और वुह जो बैठाथा दृष्टि में सूर्यकांत और माणिक्यमणि के ऐसा था और एक बार्षिक धनुष जो मारकत की नाईं दिखाई देताथा
४ उस सिंहासन के चारों ओर था। और उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे और उन सिंहासनों पर मैं ने चौबीस प्राचीनों को श्वेत बस्त्र पहिनेऊए बैठे देखा और
५ उनके मस्तकों पर सोने के मुकुट थे। और उस सिंहासन से बिजली और गर्जन और शब्द निकलतेथे और अग्नि के सात दीपक उस सिंहासन के आगे सदा बरतेथे जो ईश्वर के
६ सात आत्मा हैं। और उस सिंहासन के आगे कांच का समुद्र स्फटिक के समान था और सिंहासन के मध्य में और सिंहासन के आसपास चार जीवते जंतु थे जो आगे पीछे आंखों से
७ भरेथे। और पहिला जंतु सिंहसा था और दूसरा बछड़ासा और तीसरा मनुष्य कासा मुंह रखताथा और चौथा जंतु
८ उड़ते गिद्धसा था। और चारों जीवते जंतुन के छः छः पर चारों ओर थे और उनके भीतर आंखें भरी थीं और वे रात दिन इस कहने से चैन न करतेथे कि पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु ईश्वर समस्त पराक्रमी जो था और है और
९ आवने को है। और जब वे जीवते जंतु उसको जो सिंहासन पर बैठाहै और सर्वदा जीवताहै माहात्म्य और प्रतिष्ठा
१० और धन्यबाद करतेहैं। वे चौबीस प्राचीन उसके सन्मुख जो सिंहासन पर बैठाहै गिरपड़तेहैं और उसको जो सर्वदा

जीवताहै पूजा करतेहैं और अपने मुकुट यह कहतेहुए
११ उसके सिंहासन के आगे डालदेतेहैं। कि हे प्रभु तू योग्य है
कि महिमा और प्रतिष्ठा और पराक्रम पावे क्योंकि तूने
समस्त वस्तें उत्पन्न कियां और वे तेरीही इच्छाके लीये
उत्पन्न किईगईहैं।

५ पांचवां पर्व्व

१ और मैंने उसके दहिने हाथमें जो सिंहासन पर बैठाथा
एक पोथी देखी जिसमें भीतर बाहर लिखाहुआ था और
२ सात छाप से छपीथी। और मैंने एक पराक्रमी दूत को
देखा कि बड़े शब्द से यह पुकारताथा कि कौन योग्य है कि
३ इस पोथी को खोले और उसके छापों को तोड़े। और न तो
स्वर्ग में न पृथिवी पर न पृथिवी के तले किसी को सामर्थ्य
४ हुआ कि उस पोथी को खोले अथवा उसमें देखे। तब मैं
बहुतसा रोया इस कारण कि कोई योग्य न ठहरा कि पोथी
५ को खोले और पढ़े अथवा उसमें देखे। तब उन प्राचीनों
मेंसे एकने मुझे कहा कि मत रो देख उस सिंह ने जयपायाहै
जो यहूदा के घराने का और दाऊद का मूलहै कि उस
६ पोथी को लेवे और उसके सात छापों को तोड़े। तब मैंने
दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि उस सिंहासन के मध्यमें
और चार जीवते जंतुन के और उन प्राचीनों के बीच में एक
मेम्ना खाड़ाथा जो बधन कियागयाथा जिसके सात सींगें
और सात आंखें थीं ये ईश्वर के सात आत्मा हैं जो सारी
७ पृथिवी पर भेजेगयेहैं। और उसने आके उसके दहिने हाथ
८ से जो सिंहासन पर बैठाथा उस पोथी को लिया। और
जब उसने पोथी लिई तब वे चारों जीवते जंतु और चौबीस
प्राचीन उस मेम्ना के आगे गिरपड़े और हरएक के पास
बीणा और सोनेके पात्र सुगंध से भरेहुए थे जो साधुन की

९ प्रार्थना हैं। और वे एक नया राग गानेलगे कि तूही योग्य है कि उस पोथी को लेवे और उसके छापों को तोड़े क्योंकि तू मारागया और हमें हरएक कुल और भाषा और लोग और जाति से ईश्वर के लिये अपने रुधिर से मोल लिया।
१० और हमको हमारे ईश्वर के लिये राजा और याजक बनाया
११ और हम पृथिवी पर राज्य करेंगे। और मैं ने दृष्टि किई और सिंहासन के चारों ओर से बजतसे दूतों का और जीवते जंतुन का और उन प्राचीनों का शब्द सुना जो अटकल
१२ में कोटिन पर कोटिन और सहस्रों पर सहस्र थे। बड़े शब्द से कहतेथे कि मेम्ना जो मारागया योग्य है कि पराक्रम और धन और बुद्धि और बल और प्रतिष्ठा और महिमा
१३ और आशीष पावे। और मैं ने हरएक जंतु को जो स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के तले हैं और उनको जो समुद्र में हैं अर्थात समस्त बस्तुन को जो उनमें हैं यह कहते सुना कि उसके लिये जो सिंहासन पर बैठाहै और मेम्ना के लिये धन्य और प्रतिष्ठा और महिमा और पराक्रम
१४ सर्वदा है। और चारों जीवते जंतु बोले आमीन और चौबीसों प्राचीन ने गिरके उसकी जो सर्वदा जीवताहै पूजा किई।

६ छठवां पर्व्व

१ और जब मेम्ना ने उन छापों में से एक को तोड़ा तब मैं ने उन चारों जीवते जंतुन में से एक को सुना जिसने गर्जन कैसे
२ शब्द से कहा आ और देख। और मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि एक श्वेत घोड़ा और उसका चढ़नेवाला धनुष रखताथा और एक मुकुट उसे दियागया और वुह जय
३ पातेऊए और जय करनेको निकला। और जब उसने दूसरा छाप तोड़ा तब मैं ने दूसरे जीवते जंतु को यह कहते

४ सुना कि आ और देख। तब एक दूसरा घोड़ा लाल निकला और उसके चढ़नेवालेको यह दियागया कि कुशल को पृथिवी पर से उठाडाले और कि वे एकएकको मारडालें
५ और एक महाखड्ग उसे दियागया। और जब उसने तीसरा छाप तोड़ा तब मैंने तीसरे जीवते जंतु को यह कहते सुना कि आ और देख फेर मैंने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि एक काला घोड़ा और उसका चढ़नेवाला अपने हाथमें
६ तुला लियेथा। और मैंने उन चारों जीवते जंतुन के मध्य मेंसे यह कहते एक शब्द सुना कि गोंहू सूकी सेर और जव सूकी का तीनसेर तिसपरभी तू तेल और मदिरा मत
७ घटाना। और जब उसने चौथा छाप तोड़ा तब मैंने चौथे जीवते जंतु के शब्दको यह कहते सुना कि आ और देख।
८ और मैंने ताका तो क्या देखताहों कि पीला घोड़ा और उसके चढ़नेवालेका नाम मृत्यु था और नरक उसके पीछे पीछे जाताथा और उसे चौथाई पृथिवी पर पराक्रम दियागया कि वे खड्ग और अकाल और मृत्यु से और पृथिवी
९ के बनैला पशुन से संसार को बधन करें। और जब उसने पांचवां छाप तोड़ा तब मैंने उनके आत्मा को जो ईश्वर के बचन के लिये और उस साक्षी के लिये जो उन्हों ने दिईथी
१० मारेगये यज्ञबेदी के नीचे देखा। और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकारके कहा कि हे प्रभु पवित्र और सत्य तू कबलों न्याय न करेगा और हमारे रुधिर का पलटा पृथिवी के बासियों
११ से न लेगा। तब उनमेंसे हरएक को श्वेत बस्त्र दियागया और उन्हें कहागया कि तुम और थोड़े लों बिश्राम करो जब लों तुम्हारे संगी सेवक और भाई जो चाहिये कि तुम्हारे
१२ समान मारेजावें संपूर्ण होवें। और जब उसने छठवां छाप तोड़ा तब मैंने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि बड़ा भूचाल हुआ और सूर्य बाल के टाट की नाईं काला और चंद्रमा

१३ रुधिर के तुल्य होगया। और आकाश के तारे ऐसे पृथिवी पर गिरपड़े जैसे गूलर का वृक्ष अपने असमय के गूलरों को
१४ जो प्रचंड आंधी से हिलायागयाहै गिरावताहै। और आकाश पत्र के समान ऐकळे लपेटेगये और हरऐक पहाड़
१५ और हरऐक टापू अपने अपने स्थान से टलगया। और पृथिवी के राजाओं ने और महत लोगों ने और धनमानों ने और सेनापतियों ने और सामर्थी लोगों ने और हरऐक बंधायमान ने और हरऐक निर्बंध पुरुष ने अपने को मांदों
१६ में और पहाड़ के पत्थरों की ओट में छिपाया। और पहाड़ों से और पत्थरों से कहनेलगे कि हम पर गिरो और हमको उसके स्वरूपसे जो सिंहासन पर बैठाहै और मेम्रा
१७ के क्रोधसे छिपालेउ। क्योंकि उसके महा क्रोध का दिन आपऊंचाहै और कौन ठहर सक्ताहै।

७ सातवां पर्व्व

१ और इन वस्तुन के पीछे मैंने पृथिवी के चारों कोनों पर चार दूतों को खड़े देखा कि पृथिवी के चारों पवन को थामतेथे ऐसा नहो कि पवन पृथिवी पर अथवा समुद्र पर
२ अथवा वृक्षों पर बहे। फेर मैंने ऐक और दूत को सूर्य के उदय से उठते देखा जिसके पास जीवते ईश्वर का छाप था उसने बड़े शब्द से उन चार दूतों को जिन्हें यह दियागया था
३ कि पृथिवी और समुद्र को सतावें चिल्लाके कहा। जबलों हम अपने ईश्वर के दासों के ललाटों पर छाप न करलें तुम
४ पृथिवी को और समुद्र को और वृक्षों को न सताना। और जिन पर छाप कियेगयेथे मैंने उनकी गिनती सुनी कि इसराईल के संतानों में से ऐक सौ चवालीस सहस्र छापेगये।
५ यहूदा के कुलमेंसे बारह सहस्र छापेगये रोबीन के कुलमें से बारह सहस्र छापेगये जद के कुलमें से बारह सहस्र

६ छापेगये। अशेर के कुलमें से बारह सहस छापेगये नफतूली के कुलमें से बारह सहस छापेगये मनस्से के कुलमें से बारह ७ सहस छापेगये। शमउन के कुलमें से बारह सहस छापेगये लूई के कुलमें से बारह सहस छापेगये यसाकर के कुलमें से ८ बारह सहस छापेगये। जबलून के कुलमें से बारह सहस छापेगये यूसफ के कुलमें से बारह सहस छापेगये बन्यमीन ९ के कुलमें से बारह सहस। इसके पीछे मैं ने ताका तो क्या देखताहों कि बड़ी मंडली जिसे कोई गिन न सका हरएक जातिमें से और कुल और लोग और भाषामें से थे श्वेत बस्त्र पहिने ऊए और खजूर की डारें हाथोंमें लिये ऊए उस १० सिंहासन और मेम्रा के आगे खड़ीथी। और बड़े शब्द से पुकारके कहतीथी कि निस्तार हमारे ईश्वर से जो सिंहासन ११ पर बैठाहै और मेम्रा से। और समस्त दूत जो उस सिंहासन के चारों ओर खड़ेथे और वे प्राचीन और वे चारों जीवते जंतु उस सिंहासन के आगे औंधे गिरपड़े और १२ ईश्वर की स्तुति करके। कहनेलगे कि आमीन धन्यबाद और महिमा और बुद्धि और स्तुति और प्रतिष्ठा और पराक्रम १३ और सामर्थ्य सर्व्वदा हमारे ईश्वर के लिये आमीन। और उन प्राचीनों मेंसे एक उत्तर देके मुझको कहनेलगा कि वे जो १४ श्वेत बस्त्र पहिनेऊएहैं कौनहैं और कहांसे आयेहैं। तब मैं ने कहा कि हे महाशय तू जानताहै तब उसने मुझे कहा कि ये वे हैं जो बऊत कष्ट से निकलआयेहैं और अपने बस्त्रों १५ को धोयाहै और उन्हें मेम्रा के लोहू से श्वेत किया। इसी लिये वे ईश्वर के सिंहासन के आगेहैं और उसके मंदिर में रात दिन उसकी सेवा करतेहैं और वुह जो सिंहासन पर १६ बैठाहै उन्हों के मध्य में रहताहै। वे अब कभी भूखे न होंगे और न प्यासे होंगे और सूर्य्य और किसी रीति का घाम उन १७ पर न पड़ेगा। क्योंकि मेम्रा जो सिंहासन के मध्य में है उन्हें

चराबेगा और उन्हें जल के जीते सोता लों लेजायगा और ईश्वर उनकी आंखों से समस्त आंसुओं को पोंछेगा।

८ आठवां पर्ब्ब

१ और जब उसने सातवां छाप तोड़ा तब स्वर्ग पर एक आधी २ घड़ी मौनता ऊई। और मैं ने उन सात दूतों को जो ईश्वर ३ के आगे खड़ेथे देखा कि उन्हें सात तुरही दिईगईं। फेर एक और दूत आया और सोने की धूपाउरी लियेऊऐ यज्ञबेदी के पास जाखड़ाऊआ और बऊतसा सुगंध उसे दियागया कि वुह उसे सारे साधुन की प्रार्थना के संग उस सोने की यज्ञबेदी पर जो सिंहासन के आगे थी चढ़ावे। ४ और उस सुगंध का धूआं साधुन की प्रार्थना के संग दूत के ५ हाथ से ईश्वर के आगे ऊपर उठा। और उस दूत ने धूपाउरी को लिया और उसको यज्ञबेदी की आग से भरदिया और पृथिवी पर उंडेला तब शब्द और गर्जन और बिजली ६ और भुंईडोल ऊए। और सात दूत जिन पास सात तुरही ७ थी शब्द करने पर सिद्ध ऊए। और पहिले दूत ने शब्द किया तो लोहू से मिलीऊई ओला और आग ऊई और पृथिवी पर उंडेलीगई और वृक्षों की तिहाई जलगई और समस्त ८ हरी घास जलगई। फेर दूसरे दूत ने शब्द किया और ऐसा ऊआ जैसा महा पर्वत अग्नि से जलताऊआ समुद्र में फेंकागया ९ और समुद्र की तिहाई लोहू होगई। और तिहाई जीवधारी जो समुद्र में थे मरगये और तिहाई नावें नष्ट १० ऊईं। फेर तीसरे दूत ने शब्द किया तो स्वर्ग से एक बड़ा तारा दीपक सा जलताऊआ गिरा और नदियों की तिहाई ११ पर और जल के सोतों पर गिरा। और उस तारा का नाम नागदौना है और तिहाई पानी नागदौना होगये और बऊत से मनुष्य उन पानीयों से मरगये क्योंकि वे कड़वे

१२ होगयेथे। और फेर चौथे दूत ने शब्द किया और तिहाई सूर्य और तिहाई चंद्रमा और तिहाई तारे मारेपड़े यहां लों कि उनकी तिहाई अंधेरी होगई और दिन की तिहाई
१३ और रात्रो की भी प्रगट नऊई। और मैंने देखा और स्वर्ग के मध्य में एक दूत को उड़ते और बड़े शब्द से यह कहते सुना कि तीन दूत जो तुरही का शब्द करने को रहिगयेहैं उनके शब्द के लिये पृथिवी के निवासियों पर संताप संताप संताप है।

९ नवां पर्व्व

१ फेर पांचवें दूत ने शब्द किया और मैंने देखा कि स्वर्ग सें एक तारा पृथिवी पर गिरा और उस अथाह गड़हे की कुंजी
२ उसे दिईगई। और उसने उस अथाह गड़हे को खोला और उस गड़हे से बड़े भट्ठे के धूआंसा धूआं उठा और उस
३ गड़हे के धूएं से सूर्य और आकाश अंधेरे होगये। और उस धूएंमेंसे पृथिवी पर टिड्डीयां निकलीं और उन्हें वैसही सामर्थ्य
४ दियागया जैसा पृथिवी के बिच्छू सामर्थ्य रखतेहैं। और उन्हें यह कहागया कि पृथिवी को घास अथवा कोई हरियाली अथवा किसी वृक्ष को न सतावें परंतु केवल उन मनुष्यन को जिनके ललाटों पर ईश्वर का छाप नहींहै।
५ और उन्हें दियागया कि वे उनको प्राण से न मारें परंतु कि वे पांच महीने लों कष्ट पावें और उनका कष्ट ऐसा था जैसे
६ बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को कष्ट होताहै। और उन दिनों में मनुष्य मृत्यु ढूंढेंगे और न पावेंगे और मृत्यु के
७ अभिलाषी होंगे और मृत्यु उनसे भागेगी। और उन टिड्डियों का स्वरूप उन घोडों की नाईं था जो युद्ध के लिये लैस होवें और उनके मस्तकों पर सोनेके मुकुट थे और उनके मुंह
८ मनुष्य के मुंह कैसे थे। और उनके बाल स्त्रियों के बाल कैसे

९ और उनके दांत सिंह केसे थे। और वे लोहे की झिलिमसी झिलिम रखतेथे और उनके पंखों का शब्द गाड़ियों कासा
१० और बज़तसे घोड़े लड़ाई में झपटेजातेहैं। और उनकी पोछ बिच्छू कीसी थीं और उनकी पोछों में डंक थे और उन्हें
११ सामर्थ्य था कि पांच महीने लों मनुष्यन को सतावें। और उनका एक राजा था वुह उस अथाह गड़हे का दूत था जिसका नाम हिबरी भाषा में अबदून और यूनानी में
१२ अपल्लून है। एक संताप बीतगया और देखो और दो
१३ संताप आतेहैं। फेर छठवें दूतने शब्द किया और मैंने सोने की बेदी के जो ईश्वर के आगे थी चारों कोनों मेंसे एक शब्द
१४ सुना। जो छठवें दूत को जिसके पास तुरही थी यह कहताथा कि उन चार दूतों को जो फुरात की बड़ी नदी में बंद हैं
१५ खोलदे। फेर वे चारों दूत छुड़ायेगये जो एक घड़ी और एक दिन और एक महीने और एक बरसमें लैस थे कि
१६ तिहाई मनुष्यन को मारडालें। और घोड़चढ़े गिनती में बीस
१७ करोड़ थे और मैंने उनकी गिनती यों सुनी। और मैंने उन घोड़ों को और उनके चढ़नेवालों को यों देखा कि अग्नि और नीलमणि और गंधक के झिलिम रखतेथे और घोड़ों के सिर सिंह केसे थे और उनके मुंह से आग और धूएं और गंधक
१८ निकलतेथे। आग और धूएं और गंधक इन्हीं तीनों से जो
१९ उनके मुंह से निकलतेथे तिहाई मनुष्य मारेगये। और उनके सामर्थ्य उनके मुह में और उनकी पोछों में थे और उनकी पोछ नाग की नाईं हैं और सिर रखतेहैं और उनसे
२० वे सतावतेहैं। और रहेजए मनुष्यन ने जो इन मरीयों से मारे न गये अपने हाथों के कार्य्यन से पश्चात्ताप न किया वे पिशाचों की और सोने रूपे और पीतल और पत्थर और लकड़ी की मूर्त्तिन की जो न देखसक्तीं न सुनसक्तीं न
२१ चलसक्तीहैं पूजा करतेहैं। और उन्हों ने अपनी हत्या

और टोना और छिनाला और चोरियों से पश्चात्ताप न किया।

१० दसवां पर्ब्ब

१ फेर मैं ने एक और बलवान दूत मेघ को पहिनेऊए स्वर्ग से उतरते देखा उसके सिर पर बार्षिक धनुख था और उसका मुंह सूर्य की नाईं और उनके पांव आग के खंभे के तुल्य थे। २ और उसके हाथ में एक छोटी पोथी खुलीऊई थी और उसने अपना दहिना पांव समुद्र पर और बायां पृथिवी ३ पर धरा। और उसने महा शब्द से जैसे सिंह गरजता है पुकारा और जब उसने पुकारा तब सात गर्जन ने अपना ४ अपना शब्द किया। और जब वे सात गर्जन अपना अपना शब्द करचुके मैं लिखने पर था और स्वर्ग से मुझे कहवेऊए मैं ने एक शब्द सुना जो कि सात गर्जन ने कहा है उन पर छाप ५ कर और मत लिख। तब उस दूत ने जिसे मैं ने समुद्र और पृथिवी पर खड़ा देखा अपने हाथ को स्वर्ग के ओर उठाया। ६ और उसकी जो सर्वदा लों जीवता है जिसने स्वर्ग को और सबको जो उसमें हैं और पृथिवी को और सब कुछ जो उसमें हैं बनाया किरिया खाके कहा कि फेर समय न होगा। परंतु ७ सातवें दूत के शब्द करने के दिनों में जो तुरंत शब्द करने पर था ईश्वर का भेद जैसा उसने अपने दास आगमज्ञानियों ८ पर मंगलसमाचार को प्रगट किया पूरा होगा। और उस शब्द ने जिसे मैं ने स्वर्ग से सुना फेर मुझे कहिके बोला कि उस दूत के हाथ से जो समुद्र और पृथिवी पर खड़ा है ९ खुलिऊई छोटी पोथी लेले। तब मैं ने उस दूत के पास जाके उसे कहा कि छोटी पोथी मुझे दीजिये तब उसने मुझे कहा कि ले और इसे खाजा और वुह तेरे ओझ को कड़वा करदेगी १० परंतु तेरे मुंह में मधु के ऐसी मिठी होगी। तब मैं ने वुह

छोटी पोथी उस दूत के हाथ से लिई और उसे खागया और वुह मेरे मुंह में मधु के ऐसी मीठी थी परंतु जब मैं ने उसे
११ खालिया मेरा ओझ कड़वा होगया। और उसने मुझे कहा अवश्य है कि तू लोगों के और जाति के और भाषाओं के और राजाओं के आगे आगम फेर कहे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ फेर छड़ी के समान एक नल मुझे दियागया और वुह दूत खड़ा होके कहताथा कि उठ और ईश्वर के मंदिर को और यज्ञबेदी को और उनको जो उसमें प्रार्थना करतेहैं नाप।
२ परंतु उस आंगन को जो मंदिर से बाहर है छोड़दे और उसे मत नाप क्योंकि वुह अन्यदेशियों को दियागयाहै और
३ वे उस पवित्र नगर को बयालीस महीने लों लताड़ेंगे। और मैं अपने दो साक्षियों को शक्ति देउंगा और वे टाट पहिनके
४ एक सहस्र दो सौ साठ दिन लों आगम कहेंगे। ये वे दो जलपाई के वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथिवी के ईश्वर के
५ आगे खड़ेहैं। और यदि कोई उन्हें संतावे तो उनके मुंह से आग निकलेगी और उनके शत्रुन को भक्षण करलेगी और यदि कोई उन्हें संतावे अवश्य है कि वुह उसी रीति से
६ माराजावे। ये सामर्थ्य रखतेहैं कि स्वर्ग को बंद करें यहां लों कि उनके आगम कहने के दिनों में पानी न बरसेगा और पानियों पर सामर्थ्य रखतेहैं कि उन्हें लोहू बनाडालें और जब जब चाहें तब तब पृथिवी को हर प्रकार की मरी
७ से मारें। और जब वे अपनी साक्षी पूरी करचुकेंगे वुह बनैला पशु जो उस अथाह गड़हे से निकलताहै उनसे युद्ध
८ करेगा और उन्हें जीतेगा और उन्हें मारडालेगा। और उनकी लोथें बड़े नगर की हाट में पड़ीरहेंगी जो आत्मिक से सदूम और मिसर कहावताहै जिसमें हमारा प्रभु भी

९ क्रूस पर खींचागया। और लोग लोग और कुल कुल और भाषा भाषा और जाति जाति उनकी लोथों को साढ़े तीन दिन लों देखेंगे और उनकी लोथों को समाधिन में रखने न
१० देंगे। और पृथिवी के बासी उन पर मगन होंगे और आनंद करेंगे और एक एक को बैना भेजेंगे क्योंकि ये दो
११ आगमज्ञानियों ने पृथिवी के बासियों को सताया। और साढ़े तीन दिन के पीछे जीवन का आत्मा ईश्वर के घोर से फेर उनमें प्रवेश किया और वे अपने पांओं पर खड़े होगये
१२ तब जिन्हों ने उन्हें देखा उन पर बड़ा भय पड़ा। और उन्हों ने स्वर्ग से एक महा शब्द उन्हें कहते सुना कि इधर ऊपर आओ तब वे मेघ पर स्वर्ग को उठगये और उनके शत्रुन ने
१३ उन्हें देखा। फेर उसी घड़ी बड़ा भुईंडोल ऊआ और उस नगर का दसवां भाग गिरगया और उस भुईंडोल से सात सहस मनुष्य मारेपड़े और बचेऊए डरगये और स्वर्ग के
१४ ईश्वर की महिमा किई। दूसरा संताप बीतगया देखो कि
१५ तीसरा संताप तुरंत आवताहै। तब सातवें दूत ने शब्द किया और स्वर्ग में बड़े बड़े शब्द कहनेलगे कि इस जगत के समस्त राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का ऊआ और वुह
१६ सर्बदा और सर्बदा राज्य करेगा। और चौबीस प्राचीन जो अपने सिंहासन पर ईश्वर के आगे बैठेथे औंधे मुंह गिरे
१७ और यह कहिके ईश्वर की पूजा किई। हे प्रभु ईश्वर सर्ब सामर्थी जो है और था और आवने पर है हम तेरी स्तुति करतेहैं कि तूने अपना बड़ा सामर्थ्य लेलिया और राज्य
१८ कियाहै। और समस्त जाति क्रोधी थीं और अब तेरा कोप आया और समय पऊंचा कि मृतकन का न्याय कियाजाय और तू अपने दास आगमज्ञानियों और सिद्धों को और उनको जो तेरे नाम से डरतेहैं क्या छोटे क्या बड़े फलदेवे
१९ और उनको जो पृथिवी को नाश करतेहैं नाश करे। और

ईश्वर का मंदिर स्वर्ग में खुलगया और उसके मंदिर में उसके नियम की संदूक दिखाई दिई और बिजलियां और शब्द और गर्जन और भुईंडोल और बड़े ओले ऊए।

१२ बारहवां पर्व्व

१ और स्वर्ग में एक बड़ा आश्चर्य दिखाई दिया कि एक स्त्री सूर्य से बिभूषित और चंद्रमा उसके पाओं तले और उसके २ सिर पर बारह तारों का मुकुट। और वुह गर्भिणी होके जन्ने के कष्ट में पड़के चिल्लाई और उस पर जन्ने की पीड़ा ३ ऊई। और देखो कि एक और बड़ा आश्चर्य कि एक बड़ा अग्नी अजगर जिसके सात सिर और दस सींग और सात ४ मुकुट उसके सिरों पर थे स्वर्ग में दिखाई दिया। और उसकी पोछ ने स्वर्ग के तिहाई तारों को खींचलिया और उन्हें पृथिवी पर डालदिया और वुह अजगर उस स्त्री के आगे जो जन्ने पर थी जाखड़ाऊआ कि जब वुह जने तो ५ उसके बच्चे को भक्षण करे। और वुह पुरुष बालक जनी जो समस्त जातों पर लोहे की छड़ी लेके प्रभुता करनेको था और उसका लड़का ईश्वर के अर्थात उसके सिंहासन के आगे उठायागया। और वुह स्त्री बन में जहां ईश्वर ने उसके लिये स्थान ठीक कियाथा भागगई जिसतें वुह वहां बारह ७ सौ साठ दिन लों प्रतिपाल पावे। और स्वर्ग में संग्राम ऊआ मीकाईल और उसके दूतों ने उस अजगर से संग्राम किया और अजगर ने और उसके दूतों ने उन्हों से संग्राम ८ किया। तिसपर भी वे जीत न सके और उनके लिये स्वर्ग में ९ आगे को स्थान न रहा। और यों वुह बड़ा अजगर निकालागया वही पुराना सांप जिसका नाम इबलीस और शयतान है जो समस्त जगत को छलदेताहै पृथिवी पर गिरायागया और उसके दूत भी उसके संग गिरायेगये।

१० फेर मैंने स्वर्ग में एक बड़ा शब्द यह कहते सुना कि अब उद्धार और पराक्रम और हमारे ईश्वर का राज्य और उसके मसीह का सामर्थ्य आया क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक जो हमारे ईश्वर के आगे रात दिन उन पर
११ दोष देताथा गिरायागया। और उन्हों ने मेम्ना के लोहू से और अपनी साक्षी के बचन से उसे जीता और उन्हों ने
१२ अपने प्राणों को मृत्यु लों प्यार न किया। इस कारण तुम हे स्वर्ग और तुम जो उनमें रहतेहो आनंद करो संताप पृथिवी के और समुद्र के बासियों पर इस लिये कि शैतान बड़े क्रोध से तुम पर उतरा कि वुह जानताहै कि मेरा
१३ समय थोड़ा है। और जब उस अजगर ने देखा कि पृथिवी पर गिरायागया तो उसने उस स्त्री को जो पुरुष बालक
१४ जनीथी सताया। और उस स्त्री को बड़े गिद्ध के दो पंख दियेगये जिसतें वुह अजगर के सन्मुख से बन को अपने स्थान लों उड़जाय जहां वुह एक समय और समयों और आधा
१५ समय लों उस नाग के सन्मुख से प्रतिपाल पावे। फेर उस नागने अपने मुंह से पानी नदी के समान उस स्त्री के पीछे
१६ बहाया जिसतें वुह उसको धारा से लिवाजाय। और पृथिवी ने उस स्त्री का सहाय किया कि पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उस बाढ़ को जो अजगर ने अपने मुंह से
१७ बहायाथा पीलिया। और वुह अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और चलागया कि उसी के रहेहुए वंश से जो ईश्वर की आज्ञा मानतेहैं और ईसा मसीह की साक्षी रखतेहैं युद्ध करे।

१३ तेरहवां पर्व्व

१ और मैंने समुद्र के बालू पर खड़ा होके एक बनैले पशु को समुद्र से निकलतेहुए देखा जिसके सात सिर और दस सींग

थे और उसके सींगों पर दस मुकुट और उसके मस्तकों
२ पर ईश्वर की अपनिंदा का नाम। और वुह पशु जो मैं ने
देखा चीता के समान था और उसके पांव भालुक केसे और
उसका मुंह सिंह के मुंह के समान और उस अजगर ने अपना
सामर्थ्य और अपना सिंहासन और महापराक्रम उसे
३ दिया। और मैं ने उसके एक सिर पर मृत्यु के घाव की
नाईं देखा और तथापि उसका मारू घाव चंगा होगया
और समस्त पृथिवी उस बनैले पशु के पीछे आश्चर्य करती थी।
४ और वे उस अजगर को जिसने उस बनैले पशु को अपना
पराक्रम दिया पूजा करके बोले कौन इस पशु के समान है
५ कौन उस्से लड़सक्ता है। और उसे एक मुंह बड़ी बोलों
बोलने को और ईश्वर की अपनिंदा करने को दियागया
और उसे सामर्थ्य दियागया कि बयालीस महीने युद्ध करे।
६ और उसने अपने मुंह को बिरोध में ईश्वर की अपनिंदा में
खोला कि उसके नाम की और उसके स्थान की और उन्हों
७ की जो स्वर्ग में रहते हैं निंदा करे। और उसे दियागया कि
सिद्धों से युद्ध करे और उन्हें जीते और समस्त कुल और
८ भाषा और जाति पर उसे पराक्रम दियागया। और
पृथिवी के समस्त बासी जिनके नाम उस मेम्रा के जो जगत के
आरंभ से बलिदान कियागया जीवन की पोथी में लिखे नहीं
९ गये उसकी पूजा करेंगे। यदि किसीके कान होवे तो सुने।
१० जो बंधुआई को लियेजाता है सो बंधुआई में पड़ेगा और
जो खड्ग से मारता है वही खड्ग से माराजायगा सिद्धों का
११ संतोष और बिश्वास यहां है। फेर मैं ने एक और पशु को
पृथिवी से उठते देखा जो मेम्रा की नाईं दो सींग रखता था
१२ परंतु अजगर की नाईं बोलता था। और वुह पहिले पशु
के समस्त पराक्रम को उसके आगे प्रगट करता है और
पृथिवी से और उसके बासियों से पहिले पशु की जिसका

१३ माह्र घाव चंगा ऊआ पुजा करावताहै। और वुह बड़ आश्चर्य दिखावताहै यहांलों कि वुह मनुष्यन के आगे स्वर्ग
१४ से पृथिवी पर आग बरसावताहै। और उन आश्चर्यों से जो उसे दियेगये कि उस पशु के आगे दिखावे पृथिवी के निवासियों को छलदेताहै कि पृथिवी के निवासियों को आज्ञा करताहै कि उस पशु की जिसको खड्ग का घाव था और
१५ जीआ मूर्त्ति बनाओ। और उसमें सामर्थ्य था कि उस पशु की मूर्त्ति को श्वास देवे कि उस पशु की मूर्त्ति बातचीत करे और उन सभों को जो उस पशु की मूर्त्ति को दंडवत न करें
१६ घात करवावे। और क्या छोटे क्या बड़े क्या धनमान क्या कंगाल क्या निर्बंध क्या बंधायमान सबके दहिने हाथ और
१७ कपालों पर एक चिह्न लेने करावताहै। और कि कोई मनुष्य न मोल लेसके न बेचसके केवल वुही जिसमें वुह चिह्न अथवा उस पशु का नाम अथवा उसके नाम की गिनती हो।
१८ ज्ञान यहांहैं वुह जो ज्ञानमान है पशु की गिनतीको गिने क्योंकि वुह एक मनुष्य की गिनती है और उसकी गिनती छः सौ छियासठ हैं।

१४ चौदहवां पर्ब्ब

१ फेर मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि एक मेम्ना सोह्रन के पहाड़ पर खड़ाथा और उसके संग एक लाख चवालीस सहस्र जिनके कपालों पर उसके पिता का नाम
२ लिखाथा। और मैं ने स्वर्ग मेंसे एक शब्द सुना जैसा बऊत पानीयों का शब्द और जैसा महा गर्जन का शब्द और मैं ने
३ बीणा के बजानेवालों का शब्द सुना। और वे सिंहासन के आगे और उन चार जीवते जंतुन और प्राचीनों के आगे जैसा एक नये राग गारहेथे और कोई उन एक लाख चवालीस सहस्र को छोड़ जो पृथिवी से मोल लियेगयेथे उस

४ गीत को नहीं सीखसक्ताथा। ये वे हैं जो स्त्रियों के संग अशुद्ध नऊए कि वे कुमार हैं ये वे हैं जो मेम्ना के पीछे जहां कहीं वुह जाताहै जातेहैं ये ईश्वर के और मेम्ना के लिये पहिले
५ फल होके मनुष्यन मेंसे मोल लियेगयेहैं। और उनके मुंह में छल न पायागया क्योंकि वे ईश्वर के सिंहासन के आगे
६ निर्दोषहैं। और मैंने दूसरे दूतको स्वर्ग के मध्य मेंसे जो सर्वदा का मंगलसमाचार लियेऊए उड़रहाथा देखा कि पृथिवी के निवासियों के और लोगों के बीच उपदेश करके।
७ बड़े शब्द से कहताथा कि ईश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय की घड़ी आई और जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और पानी के सोते उत्पन्न किये
८ उसकी पूजा करो। और उसके पीछे एक दूसरा दूत आके यों बोला कि बाबलून वुह बड़ी नगरी गिरपड़ी गिरपड़ी क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोध की मदिरा सब जातों
९ को पिलाई। फेर एक तीसरा दूत उनके पीछे एक बड़े शब्द के साथ आके बोला कि यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्त्ति की पूजा करे और उसके चिह्न अपने कपाल में अथवा
१० अपने हाथ पर लेवे। वही ईश्वर के क्रोध की निराली मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में भरीगई पीयेगा और वुह पवित्र दूतों के और मेम्ना के आगे अग्नि और गंधक में
११ पीड़ा पावेगा। और उनकी पीड़ा का धूआं सर्वदा उठता रहताहै और उनको जो उस पशु और उसकी मूर्त्ति की पूजा करतेहैं और उनको जो उसके नाम का चिह्न लियेहैं
१२ रात दिन कभी बिश्राम नहीं पावते। सिद्धों का संतोष यहां है ये वे हैं जो ईश्वर की आज्ञा और ईसा के बिश्वास को
१३ लिये रहतेहैं। फेर मैंने स्वर्ग से एक शब्द मुझसे कहतेऊए सुना कि लिख धन्य वे मृतक जो अबसे प्रभु में मरतेहैं आत्मा कहताहै हां कि वे अपने परिश्रमों से चैन पावतेहैं और

१४ उनके कार्य उनके पीछे पीछे चलेआवतेहैं। फेर मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि एक श्वेत मेघ और उस मेघ पर कोई मनुष्य के पुत्र के ऐसा बैठाथा जिसके सिर पर सोनेका
१५ मुकुट और हाथ में एक चोखा हंसुआ था। और एक और दूत मंदिर से बड़े शब्द से उसको जो मेघ पर बैठाथा पुकारतेऊए निकला कि अपना हंसुआ लगा और काट क्योंकि तेरे लवने का समय आनपऊंचा कि पृथिवी की खेती
१६ पक्की है। और उसने जो मेघ पर बैठाथा अपना हंसुआ
१७ पृथिवी पर धरा और पृथिवी लवीगई। फेर एक और दूत मंदिर से जो स्वर्ग में है निकला उस पास एक चोखा
१८ हंसुआ था। और एक और दूत जिसका पराक्रम आग पर था यज्ञबेदी से निकला उसने उसको जिस पास चोखा हंसुआ था बड़े शब्द से पुकारके कहा कि अपना चोखा हंसुआ लगा और पृथिवी के दाखके गुच्छों को काट कि
१९ उसके दाख पकचुके। फेर उस दूत ने अपना हंसुआ पृथिवी पर धरा और पृथिवी के दाख को काटा और ईश्वर के
२० क्रोध के दाख के बड़े कोल्हू में डाल दिया। और वुह दाख का कोल्हू नगर के बाहर रौंदागया और उस दाख के कोल्हू से लोहू एक सहस्र छः सौ नलके अंटकल ऐसा बहा कि घोड़ों के बाग लों पऊंचा।

१५ पंदरहवां पर्व्व

१ फेर मैं ने एक और बड़ा आश्चर्य लक्षण स्वर्ग में देखा कि सात दूत जिसके पास पिछली सात मरी थीं इस कारण कि
२ उन्हों में ईश्वर का क्रोध संपूर्ण होनेपर था। और मैं ने देखा जैसा कि कांच का समुद्र आग से मिलाऊआ और वे जो उस पशु और उसकी मूर्त्ति और उसके चिह्न और उसके नाम की गिनती पर जय पायेथे उस कांच के समुद्र पर ईश्वर

३ की वीणाओं को लिये ऊए खड़ेथे। और वे ईश्वर के सेवक मूसा की गीत और मेम्ना की गीत यह कहतेऊए गातेथे कि महान और आश्चर्य तेरे कार्य हे प्रभु ईश्वर सर्बसामर्थी तेरे

४ मार्ग सच्चे और ठीक हैं हे साधुन के राजा। हे प्रभु कैान तुझसे न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा क्योंकि तू अकेला पवित्र निश्चय समस्त लोग आवेंगे और तेरे आगे पूजा करेंगे क्योंकि तेरे याथार्थ बिचार प्रगट कियेगयेहैं।

५ और इसके पीछे मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखताहों कि साची

६ के तंबू का मंदिर स्वर्ग में खोलागया। और वे सात दूत जो उन सात मरी को लियेऊए थे पावन और चमकताऊआ बस्त्र पहिनेऊए और सोने का पटूका छाती पर लपेटेऊए

७ मंदिर से निकलआये। और उन चार जंतुन मेंसे एकने सोने की सात कटोरियां नित्य जीवते ईश्वर के कोपसे भरी

८ ऊई उन सात दूतों को दियां। और वुह मंदिर ईश्वर के ऐश्वर्य और उसके सामर्थ्य के कारण धूएं से भरगया और जबलों उन सात दूतों की सात मरी संपूर्ण न ऊई कोई उसमें प्रवेश न करसका।

१६ सोलहवां पर्व्व

१ फेर मैं ने मंदिर से एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतों से कहताथा कि जाओ और ईश्वर के कोपकी उन कटोरियों

२ को पृथिवी पर उंडेलो। सो पहिला तो चलागया और अपनी कटोरी को पृथिवी पर उंडेला सो उन मनुष्यन पर जो उस पशु का चिन्ह रखतेथे और उनपर जो उसकी मूर्त्ति की पूजा करतेथे अति बुरा और पीड़ादायक घाव पड़ा।

३ फेर दूसरे दूतने अपनी कटोरी समुद्र पर उंडेली और वुह मरे मनुष्य के लोऊसा होगया और हरएक जीवता

४ प्राण समुद्रमें का मरगया। फेर तीसरे दूतने अपनी

कटोरी नदियों में और पानी के सोतों में उंडेली और वे
५ लोहू होगये। और मैं ने सुना कि पानियों के दूत ने कहा
हे प्रभु जो है और था और होगा तू यथार्थ है क्योंकि
६ तू ने यों बिचार कियाहै। क्योंकि उन्हों ने सिद्धों और
आगमज्ञानियों का लोहू बहायाहै सो तू ने उन्हें लोहू पीने
७ को दिया क्योंकि वे योग्य हैं। फेर मैं ने दूसरे को यज्ञबेदी
मेंसे यह कहते सुना हां हे प्रभु ईश्वर सर्बसामर्थी तेरे
८ बिचार सच्चे और यथार्थ हैं। फेर चौथे दूत ने अपनी
कटोरी सूर्य पर उंडेली और उसे सामर्थ्य दियागया कि
९ मनुष्यन को आग से भुलसावे। और मनुष्य महाताप से
भुलसगये और उन्हों ने ईश्वर के नाम को जो उन मरियों
पर सामर्थ्य रखताहै अपनिंदा किई और पश्चात्ताप न किया
१० कि उसकी महिमा करें। फेर पांचवें दूत ने उस पशु के
सिंहासन पर अपनी कटोरी उंडेली और उसका राज्य
अंधकार होगया और उन्हों ने मारे पीड़ा के अपनी जीभ
११ चबाईं। और अपनी पीड़ा और घावों के कारण स्वर्ग के
ईश्वर को अपनिंदा किई और अपने कार्यन से पश्चात्ताप न
१२ किया। फेर छठवें दूत ने अपनी कटोरी महानदी फुरात
में उंडेली और उसका पानी सूखगया जिसतें पूर्व के राजाओं
१३ के लिये मार्ग बनायाजाय। फेर उस अजगर के मुंह से
और उस पशु के मुंह से और उस झूठे आगमज्ञानी के मुंह
से मेंढुकों की नाईं मैं ने तीन अपवित्र आत्मा को निकलते
१४ देखा। क्योंकि ये आश्चर्य दिखानेवाले पिशाचों के आत्मा हैं
जो पृथिवी के राजाओं के पास और समस्त जगत में जातेहैं
कि उन्हें सर्बसामर्थी ईश्वर के महा दिन के युद्ध के लिये
१५ एकट्ठा करें। देख मैं चोर की नाईं आवताहों धन्य वुह जो
जागताहै और अपने बस्त्रों की चौकसी करताहै नहो कि
१६ वुह नंगा फिराकरे और लोग उसकी लज्जा देखें। फेर

एक स्थान में जो हिबरी भाषा में अरमगदून कहावताहै
१७ उसने उनको एकठ्ठा किया। फेर सातवें दूत ने अपनी
कटोरी आकाश में उंडेली तब स्वर्ग के मंदिर के सिंहासन
१८ से एक महा शब्द यह कहतेऊए निकला कि होचुका। तब
शब्द होनेलगे और गरजनेलगे और लैाकनेलगे और महान
और बड़ा भुइंडोल ऊआ कि जबसे मनुष्य पृथिवी पर ऊए
१९ ऐसा बड़ा भुइंडोल न ऊआथा। और वुह बड़ी नगरी तीन
भाग होगई और भिन्न देशियों के नगर गिरगये और बड़ी
बाबलून ईश्वर के आगे स्मरण किईगई कि उसे अपने कोप
२० के अत्यंत जलजलाहट की मदिरा की कटोरी देवे। तब
२१ हरएक टापू भागगया और फेर पहाड़नपायेगये। और
स्वर्ग से मनुष्यन पर मन मन भर के बोझ के ओले पड़े और
मनुष्यन ने ओलों की मरी से ईश्वर की अपनिंदा किई क्योंकि
उसकी मरी अत्यंत बड़ी थी।

१७ सतरहवां पर्व्व

१ और उन सात दूतों मेंसे जिन पास सात कटोरीयांथीं एक
आके मुझ से बातचीत करके कहनेलगा कि आ मैं तुझे उस
बड़ी वेश्या का जो बऊतसे पानियों पर बैठीहै दंड
२ दिखाओंगा। जिसके संग पृथिवी के राजाओं ने व्यभिचार
३ कियाहै और जिसके व्यभिचार की मदिरा से पृथिवी के बासी
मतवाले ऊएहैं। सो वुह मुझे आत्मिक रीति से बन में लेगया
और मैंने एक स्त्री को लाल बनैला पशु पर बैठी देखा जो
४ ईश्वरापनिंदक नामों से भरा था उसके सात सिर और दस
सींग थे। और वुह स्त्री बैंजनी और लाल वस्त्र पहिने थी
और सोने और रत्न और मोतीयों से बिभूषित थी और एक
सोने का कटोरा घिन से और अपने व्यभिचार की अपवित्रता

५ से भरा ऊआ अपने हाथ में लियेथो। उसके कपाल पर एक नाम लिखा था निगूढ़ भेद बड़ी बाबलून बेश्याओं को
६ और पृथिवी की घिनाहटों की माता। और मैं ने देखा कि वुह स्त्री साधुन के लोहू से और ईसा के साक्षियों के लोहू से मतवाली होरहीथी और उसको देखकर मैं बड़े बिस्मय से
७ बिस्मित होगया। तब उस दूत ने मुझे कहा तू क्यों अचंभा करता है मैं उस स्त्री का और उस पशु का भेद जिसके सात
८ सिर और दस सींग हैं तुझे कहोंगा। वुह पशु जो तू ने देखा सो था और अब नहीं है और उस अथाह गड़हे से निकलेगा और बिनाशता में जायगा और पृथिवी के बासी जिनके नाम जगत के आरंभ से जीवन के पुस्तक में नहीं लिखे हैं उस पशु को देखकर जो था और नहीं है तथापि है
९ अचंभा करेंगे। जो बुद्धि कि ज्ञान रखती है यह है वे सात
१० सिर सात पाहाड़ हैं जिन पर वुह स्त्री बैठी है। और सात राजा हैं पांच तो गिरगये एक है और दूसरा अबलों नहीं आया और जब वुह आवेगा तब थोड़े समय लों उसका
११ रहना होगा। और वुह पशु जो था और अब नहीं वही आठवां है और उन सातों में से है परंतु नाशता में जाता है।
१२ और दस सींग जो तू ने देखे दस राजा हैं जिन्हों ने राज्य अबलों न पाया परंतु उस पशु के संग एक घड़ी भर राजाओं
१३ के ऐसा पराक्रम पावते हैं। इन सभों का एकही मन है ये
१४ अपने पराक्रम और सामर्थ उस पशु को देंगे। वे मेम्ना से युद्ध करेंगे और मेम्ना उन्हें जीतेगा क्योंकि वुह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और वे जो उसके संग हैं सब बुलायेगये और चुनेगये और बिश्वास से भरे ऊए हैं।
१५ फेर उसने मुझे कहा वे पानी जिन्हें तू ने देखा जिन पर वुह बेश्या बैठी है लोग और मंडली और जाति और भाषा हैं।
१६ और उस पशु के दस सींग जो तू ने देखे उस बेश्या से बिरोध

करेंगे और उसे उजाड़ और नंगी करेंगे और उसका मांस
१७ खायेंगे और उसे आग से जलावेंगे। क्योंकि ईश्वर ने उनके अंतःकरणों में डाला कि उसकी आज्ञा को बजालावें अर्थात एकही बिचार को पूराकरें और अपने राज्य उस पशु को
१८ देवें जबलों कि ईश्वर के बचन संपूर्ण न होवें। और वुह स्त्री जिसे तूने देखा वुह बड़ी नगरी है जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य करतीहै।

१८ अठारहवां पर्व्व

१ इसके पीछे मैंने एक दूत को बड़े पराक्रम के संग स्वर्ग से उतरते देखा और पृथिवी उसकी महिमा से प्रकाश होगई।
२ और उसने पराक्रम के बड़े शब्द से पुकारके कहा कि बड़ी बाबलून गिरपड़ी गिरपड़ी और अब पिशाचों का निवास और अपवित्र आत्मा का गढ़ और हरएक अपवित्र और
३ निंदित पक्षियों का पिंजरा हुई। क्योंकि उसने सब जातों को अपने व्यभिचार के क्रोध की मदिरा पिलवाई और पृथिवी के राजाओं ने उसके संग व्यभिचार किया और पृथिवी के व्यापारी उसके भोगबिलास की अधिकाई से धनी
४ हुए। फेर मैंने एक और आकाशबाणी यह कहते सुनी कि हे मेरे लोगो उसमें से बाहर आओ जिसतें तुम उसके पापों के भागी न होओ और उसकी मरीयों मेंसे कुछ न पाओ।
५ क्योंकि उसके पाप स्वर्ग लों पहुंचगयेहैं और उसके अधम
६ कर्म ईश्वर के आगे स्मरण के लिये आयेहैं। जैसा उसने तुमसे व्यवहार किया तुमभी उस्से वैसाही व्यवहार करो और उसे उसके कर्म के समान दूना पलटा देउ उस कटोरे में
७ जिसे उसने मिलायाहै दूना मिलादेउ। जितना उसने अपने को बढ़ायाहै और भोगबिलास में रहीहै उतनाही उसको पीड़ा और शोक देउ क्योंकि वुह अपने मन में कहतीहै कि

मैं रानी की नाईं बैठीहों और बिधवा नहीं हूं और शोक
८ को न देखोंगी। सो उसकी मरी एक दिन आवेगी अर्थात
मृत्यु और बिलाप और काल और वुह आगसे जलाईजायगी
क्योंकि प्रभु ईश्वर जो उसका बिचार करताहै सामर्थी है।
९ और पृथिवी के राजा जिन्हों ने उसके संग व्यभिचार और
भोगबिलास कियाहै उसके जलने का धूआं देखके रोवेंगे
१० और बिलाप करेंगे। और उसके क्लेश के डरकेमारे दूर
खड़ेहुए कहेंगे हाय हाय वुह बड़ी नगरी बाबलून बलवंती
नगरी क्योंकि घड़ीभर में तेरा दंड बिचार आपहुंचाहै।
११ और पृथिवी के ब्यापारी उसके लिये बिलाप और शोक
करेंगे क्योंकि अब कोई उनका ब्यापार मोल नहीं लेता।
१२ सोना और रूपा और बहुमोल की मणि और मोती और
महीन कपड़ा और बैंजनी और चिउली और लाल बस्त्र
और हरएक सुगंधकाष्ठ और हाथीदांत के पात्र और
समस्त प्रकार के बहुमोल काष्ठ के पात्र और पीतल और
१३ लोहे और मर्मर के समस्त प्रकार के पात्र। और दारचीनी
और सुगंध और मुर और लुबान और मदिरा और तेल
और चोखा पिसान और गोहूं और पशु और भेड़ें और
१४ घोड़े और रथ और दास और मनुष्यन के प्राण हैं। और
तेरे मन के अभिलाष के फल तुझ से अलग होगयेहैं और
सारी अच्छी अच्छी और भड़कीली बस्तें तुझे छोड़गईं और
१५ तू उनको फेर कभी न पायेगी। इन बस्तुन के ब्यापारी लोग
जो उसके कारण धनी बनेथे उसके कष्ट के डरकेमारे दूर
१६ खड़े रहिके रोयेंगे और बिलाप करेंगे। और कहेंगे कि हाय
हाय वुह बड़ी नगरी जो महीन बस्त्र और बैंजनी और
लाल बस्त्र से बिभूषित थी और सोने और बहुमोल के मणि
१७ और मोतियों से सवांरीहुई थी। क्योंकि यह समस्त धन
घड़ीभर में नष्ट होगयेहैं और हरएक मांझी और सारे

जहाज के हर एक लाग और डांड़ी और जितने कि समुद्र
१८ पर व्यापार करते हैं दूर खड़े रहे। और उसके जलने का
धूआं उठते देखकर पुकारा कि उस बड़ी नगरी के समान
१९ कौनसी है। और उन्हों ने अपने सिरों पर धूल उड़ाई और
रोते पीटते और बिलाप करते यों पुकार उठे हाय हाय
ऐसी बड़ी नगरी जिसकी उठान की बहुताई से सब जो
समुद्र में जहाज रखते थे धनी होगये क्योंकि घड़ीभर में वुह
२० उजड़गई। हे स्वर्ग और पवित्र प्रेरितो और आगमज्ञानियो
उस पर आनंद करो क्योंकि तुम्हारे लिये ईश्वर ने उस पर
२१ दंड की आज्ञा दिई है। फेर एक बलवान दूत ने एक पत्थर
बड़ी चक्की के पाट की नाईं उठाया और समुद्र में यह कहिके
फेंका कि बाबलून वुह बड़ी नगरी यों प्रबल से फेंकी जायगी
२२ और फेर कभी पाई न जायगी। और बीणा बजानेवालों का
और बाजेवालों का और बांसरीवालों का और सिंगारीयों
का शब्द तुझ में फेर सुना न जायगा और हर एक व्यापार का
कार्यकारी तुझ में फेर पाया न जायगा और चक्की का शब्द
२३ तुझ में फेर न सुना जायगा। और दीपक का प्रकाश तुझ में
फेर न होगा और तुझ में दूल्हा दूल्हीन का शब्द कभी सुना
न जायगा क्योंकि तेरे व्यपारी पृथिवी के महाजन थे क्योंकि
२४ तेरे टोना से समस्त जाति ठगेगये। और आगमज्ञानियों
और सिद्धों का और जितने पृथिवी पर मारेगयेथे उनका
लोहू उसी में पायागया।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१ इन वस्तुन के पीछे मैं ने स्वर्ग में बड़ी मंडली का सा शब्द यह
कहते सुना कि ईश्वर का धन्य मानो मुक्ति और महिमा और
२ प्रतिष्ठा और पराक्रम हमारे प्रभु ईश्वर के लिये। क्योंकि
उसके न्याय सत्य और यथार्थ हैं इस लिये कि उस ने उस

बड़ी वेश्या का जिसने अपने छिनाला से पृथिवी को सड़ादिया
न्याय किया और अपने दासों के लोहू का पलटा उसके
३ हाथसे लिया। फेर उन्हों ने दूसरी बार कहा कि ईश्वर
का धन्य माना और उसका धूआं सर्व्वदा के लिये उठताहै।
४ और वे चैाबीस प्राचीन और चार जंतु औंधे गिरपड़े और
ईश्वर को जो सिंहासन पर बैठाहै यों कहिके पूजा किई कि
५ आमीन ईश्वर का धन्य माना। और सिंहासन से यह
कहतेऊए एक शब्द निकला कि तुम जो उसके दास हो और
तुम जो उसे डरतेहो क्या छोटे और क्या बड़े सब हमारे
६ ईश्वर का धन्य माना। और मैंने बड़ी मंडली कासा शब्द
और बऊतसे पानीयों कासा शब्द और महा गर्ज्जने कासा
शब्द यह कहते सुना कि ईश्वर का धन्यमाना क्योंकि सर्व्व
७ सामर्थी प्रभु ईश्वर राज्यकरताहै। हम आनंद और
ऊलास करें और उसको महिमा देवें क्योंकि मेम्ना का बिवाह
आपऊंचा और उसकी पत्नी ने अपने को सिद्ध कियाहै।
८ और उसे दियागया कि वुह मेहीन और शुद्ध और जगमगी
बस्त्र से पहिनाईजाय और मेहीन बस्त्र धर्म्मीयों का कर्म्म है।
९ और उसने मुझे कहा कि लिख धन्य वे हैं जिनका नेउता
मेम्ना के बिवाह की बियारी में कियागयाहै और उसने मुझे
१० कहा कि ये ईश्वर के सत्य बचन हैं। और उसकी पूजा के
लिये मैं उसके चरण पर गिरपड़ा और उसने मुझे कहा
कि देख ऐसा नकर कि मैं तेरा और तेरे भाइयों का जिन
पास ईसा की साची है संगी सेवक हों ईश्वर की स्तुति कर
११ क्योंकि आगमज्ञान का आत्मा ईसा की साची है। फेर मैंने
स्वर्ग को खुला देखा और क्या देखताहों कि एक श्वेत घोड़ा
और वुह जो उस पर चढ़ाथा बिश्वासी और सत्य
कहावताथा और वुह धर्म्म से न्याय और युद्ध करताहै।
१२ उसकी आंखें अग्नि के लवर कीसी थीं और बऊतसे मुकुट

उसके सिर पर थे जिस पर एक नाम लिखा था कि उसको
१३ छोड़ कोई न जानता था। और वुह लोहू में बोरे ऊए वस्त्र
से बिभूषित था और उसका नाम ईश्वर का बचन कहावता।
१४ और सेना जो स्वर्ग में हैं मेहीन और श्वेत और शुद्ध वस्त्र
१५ पहिने ऊए श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे पीछे होलियां। और
उसके मुंह से चोखा खड्ग निकला कि वुह उस्से अन्यदेशीयों
को मारे वुह लोहे के दंड से उन पर प्रभुता करेगा और
वुह सर्बसामर्थी ईश्वर के कोप और जलजलाहट के क्रोध
१६ की मदिरा के कोल्हू को लताड़ता है। और उसके वस्त्र और
जांघ पर यह नाम लिखा था राजाओं का राजा और प्रभुन
१७ का प्रभु। फेर मैं ने एक दूत को सूर्य में खड़ा ऊआ देखा उसने
सारे पक्षियों को जो आकाश के मध्य में उड़ते हैं यह कहिके
बड़े शब्द से पुकारा आओ और अतिमहान ईश्वर की
बियारी में एकट्ठा होओ। कि तुम राजाओं का मांस और
सेनापतियों का मांस और पराक्रमियों का मांस और घोड़े
का और उनके चढ़नेवालों का और निर्बंधों का और
बंधापमानों का क्या छोटों का क्या बड़ों का मांस खाओ।
१९ फेर मैं ने उस पशु को देखा और पृथिवी के राजा और
उनकी सेना एकट्ठे ऊई कि उस्से जो घोड़े पर चढ़ा था और
२० उसकी सेना से लड़ें। और वुह पशु और उसके संग वुह
झूठा आगमज्ञानी जिसने उसके आगे आश्चर्य दिखाये जिस्से
उसने उनको जिन्हों ने उस पशु के चिह्न को लिया और
उनको जो उसकी मूर्त्ति को पूजते थे छलदिया दोनों के दोनों
उस आग की झील में जो गंधक से जलरही है जीते डालेगये।
२१ और बचे ऊए लोग उस खड्ग से मारेगये जो उस घोड़े के
चढ़नेवाले के मुंह से निकलता था और सारे पक्षी उनके मांस
से अघागये।

२० बीसवां पर्व्व

१ फेर मैं ने एक दूत को उस अथाह गड़हे की कुंजी और एक
२ बड़ा सीकर हाथमें लिएहुए स्वर्ग से उतरते देखा। और
उसने उस अजगर को उस पुराने सांप को जो इबलीस
और शयतान है पकड़ा और सहस्र बरस लों जकड़ रक्खा।
३ और उसको उस अथाह गड़हे में डालदिया और बंद करके
उस पर छाप किया जिसतें वुह आगे लोग को छल न देवे
जब लों एक सहस्र बरस पूरे न होवे तब अवश्य है कि वुह
४ थोड़े समय के लिये छूटजाय। फेर सिंहासनों को और उन
पर के बैठनेवालों को मैं ने देखा और न्याय उन्हें दियागया
और उनके आत्माओं को जिनके सिर ईसा की साक्षी और
ईश्वर के बचन के लिये काटेगये और जिन्हों ने नतो उस पशु
को और न उसकी मूर्त्ति को पूजा और न उसका चिह्न अपने
कपालों पर और अपने हाथों पर लिया और वे जीये और
५ मसीह के संग सहस्र बरस लों राज्य किये। परंतु रहेहुए
लोग न जीये जबलों सहस्र बरस पूरे न हुए यह पहिला
६ पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र वुह जो पहिले पुनरुत्थान
में भाग रखताहै ऐसों पर दूसरे मृत्यु का पराक्रम नहीं
परंतु वे ईश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके संग
७ सहस्र बरस लों राज्य करेंगे। और जब सहस्र बरस
८ होचुकेंगे शयतान अपने बंधन से छूटेगा। और वुह उन
जातों को जो पृथिवी के चारों खंट में हैं अर्थात जूज और
माजूज को युद्ध के लिये एकट्ठे करके निकलेगा जिनकी गिनती
९ समुद्र के बालू के तुल्य है। वे पृथिवी की चौड़ाई पर चढ़गये
और सिद्धों की छावनी को और प्रिय नगर को घेरलिये
तब स्वर्ग से ईश्वर के पास से आग उतरी और उनको भक्ष
१० किया। और शयतान जिसने उनको छल दिया आग और
गंधक की झील में डालागया जहां वुह पशु और वुह झूठा

आगमज्ञानी है और रातदिन सर्वदा सर्वकाल पीड़ामें
११ रहेंगे। फेर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन को और उसको
जो उसपर बैठाथा देखा जिसके सम्मुख से पृथिवी और
१२ स्वर्ग भागगये और उनके लिये कहीं स्थान न मिला। फेर
मैं ने देखा कि मृतक क्या छोटे क्या बड़े ईश्वर के आगे खड़े हैं
और पोथीयां खोलीगईं और एक दूसरी पोथी जो जीवन
की है खोलीगई और उन पोथियों में लिखेके समान जैसी
१३ उनकी करणी थी मृतकन का बिचार कियागया। और समुद्र
ने उन मृतकन को जो उसमें थे और मृत्यु और परलोक ने
उन मृतकन को जो उन्में थे सौंपदिया और हरएक का
१४ उसकी करणी के समान बिचार कियागया। फेर मृत्यु और
परलोक आग की झील में डालेगये यह दूसरी मृत्यु है।
१५ और जो जीवन के पुस्तक में लिखा नथा वुह आग की झील
में डालागया।

२१ इक्कीसवां पर्व्व

१ फेर मैं ने एक नये स्वर्ग और एक नई पृथिवी को देखा
क्योंकि अगिले स्वर्ग और अगिली पृथिवी जातीरही और
२ कोई समुद्र नथा। और दूल्हीन की नाईं जो अपने पति के
लिये सिद्ध और बिभूषित होवे मैं यूहन्ना ने पवित्र नगरी
नई यिरोशलीम को ईश्वर के ओर से स्वर्ग से उतरते देखा।
३ और यह कहते मैंने स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुना कि देख
ईश्वर का तंबू मनुष्यन के संग है और वुह उनके संग बास
करेगा और वे उसके लोग होंगे और ईश्वर उनका ईश्वर
४ उनके बीचमें। और ईश्वर उनकी आंखों से आंसू पोंछेगा
और फेर मृत्यु और शोक और रोनापीटना और पीड़ा
५ न होगी क्योंकि अगिली बस्तें जातीरहीं। और वुह जो
सिंहासन पर बैठाथा बोला देख मैं समस्त बस्तुन को नई

बनाताहों और उसने मुझे कहा कि लिख क्योंकि ये बातें
६ सत्य और प्रतीति के योग्य हैं। और उसने मुझे कहा कि
होचुका मैं अलफा और उमगा आदि और अंत हों मैं
उसको जो प्यासा है अमृतजल के सोतेसे सेंत देउंगा।
७ जयमान समस्त बस्तुन का अधिकारी होगा और मैं उसका
८ ईश्वर होंगा और वुह मेरा पुत्र होगा। परंतु भयमान
और अबिश्वासी और घिनौना और हत्यारा और ब्यभिचारी
और टोनहा और मूर्त्ति पूजक और सारे झूठे उसी झीलमें
जो आग और गंधक से जलतीहै अपना अपना भाग पावेंगे
९ यह दूसरी मृत्युहै। अब एक उन सात दूतों मेंसे जिन पास
सात कटोरियां पिछली सात मरीसे भरी ऊईं थीं मुझ पास
आया और मुझे यों कहिके बोला कि इधर आ मैं तुझे मेम्ना
१० की पत्नी दूल्हीनको दिखाओंगा। और वुह मुझे आत्मा में
एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर लेगया और उसने उस बड़े
नगर पवित्र यिरोशलीम को स्वर्ग पर से ईश्वर के पास से
११ उतरते मुझे दिखाया। उसमें ईश्वर का तेज था और उसका
प्रकाश अति मोल के मणि कासा उस सूर्य्यकांत के समान था
१२ जो स्फटिक के ऐसा निर्मल हो। और उसकी भीत बड़ी
और ऊंची थी और उसके बारह फाटक थे और फाटकों
के ऊपर बारह दूत और उन पर इसराईल के संतानों के
१३ बारह घरानों के नाम लिखेऊए थे। पूर्ब को तीन फाटक
उत्तर को तीन फाटक दक्षिण को तीन फाटक और
१४ पश्चिम को तीन फाटक थे। और उस नगर की भीत की
बारह नेवें थीं और उनमें मेम्ना के बारह प्रेरितों के नाम।
१५ और जो मुझसे बोलरहाथा उसके हाथमें सोने का एक नल
था जिस्से वुह उस नगर और उसके फाटक और उसकी
१६ भीत को नापे। और वुह नगर चौकोर था और उसकी
लंबाई उसकी चौड़ाई के समान थी उसने उस नगर को

उस नलसे नापकर बारह सहस्र बाण पाया और उसकी
१७ लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई समान थी। फेर उसने
भीत को नापा तो उस मनुष्य के हाथसे जो वुह दूत है एक
१८ सौ चवालीस हाथ पाया। और उस भीतकी जोड़ाई
सूर्यकांत की थी और वुह नगर चोखे सोनेका था निर्मल
१९ कांच के समान। और उस नगर की भीत की नेवें अनेक
प्रकार के मणि से बिभूषित थीं पहिली नेंव सूर्यकांत की दूसरी
२० नीलकांत की तीसरी लालड़ी की चौथी गारुत्मत की। और
पांचवीं बैदूर्य की और छठवीं चंद्रकांत की और सातवीं
सुनहले की और आठवीं लशुनीय की और नवीं पद्मराग
की और दसवीं गोदंत की और ग्यारहवीं फिरोज़ा की
२१ और बारहवीं मरतिसे की। बारह फाटक बारह मोती
थे हर फाटक एक एक मती का और उस नगर की सड़क
२२ चोखे सोने की निर्मल कांच के समान थी। परंतु मैं ने उसमें
कोई मंदिर न देखा क्योंकि प्रभु ईश्वर सर्वशक्तिमान और
२३ मेम्ना उसके मंदिर हैं। और वुह नगर सूर्य और चंद्रमा से
कुछ प्रयोजन नहीं रखताथा कि उनसे प्रकाशित हो क्योंकि
ईश्वर के तेजने उसे प्रकाश कररक्खा और मेम्ना उसका
२४ प्रकाश है। और उन जातों के लोग जिन्हों ने मुक्ति पाई है
उसके प्रकाशमें फिरेंगे और पृथिवी के राजा अपनी महिमा
२५ और अपनी प्रतिष्ठा उसमें लाते हैं। और उसके फाटक
दिन को कभी बंद नहीं होंगे क्योंकि वहां रात नहीं होगी।
२६ और वे लोगों की महिमा और प्रतिष्ठा को उसमें लावेंगे।
२७ और कोई अपवित्र और घिन कार्य करनेवाली और झूट
उसमें किसी रीति से प्रवेश न करेगी परंतु केवल वेही जो
मेम्ना के जीवन के पुस्तक में लिखे हैं।

२२ बाईसवां पर्व

१ और उसने मुझे अमृत जल की एक शुद्ध नदी निर्मल स्फटिक के समान ईश्वर के और मेम्ना के सिंहासन से निकलतीऊई
२ दिखाई। और उसके सड़कके मध्यमें और उस नदी के वारपार जीवन का वृक्ष था जो बारह फल लावताथा हरएक महीनेमें एक फल और उस वृक्ष के पत्ते लोगों के
३ चंगा करनेके लियेथे। फेर कोई शाप न होगा और ईश्वर और मेम्ना का सिंहासन उसमें होगा और उसके सेवक
४ उसकी सेवा करेंगे। और वे उसका स्वरूप देखेंगे और
५ उसका नाम उनके कपालों पर होगा। वहां रात न होगी और उनको दीपक और सूर्यके प्रकाशका प्रयोजन नहीं क्योंकि प्रभु ईश्वर उनको प्रकाशित करेगा और वे सर्वदाके
६ लिये राज्य करेंगे। फेर उसने मुझे कहा कि ये बातें सत्य और बिश्वास के योग्य हैं और पवित्र आगमज्ञानियों के प्रभु ईश्वरने अपने दूतको भेजाहै कि उन बस्तुन को जो
७ शीघ्र होवेंगी अपने दासों पर प्रगट करे। देख मैं शीघ्र आवताहों धन्य वुह जो इस ग्रंथके आगमकी बातों को
८ ग्रहण करताहै। और मैं यूहन्ना ने उन बस्तुन को देखा और सुना और जब मैंने सुना और देखा मैं उस दूत के चरण पर जिसने ये बस्तें मुझे दिखाईं पूजाके कारण
९ गिरपड़ा। तब उसने मुझे कहा चौकसरह ऐसा नकर क्योंकि मैं तेरा और आगमज्ञानियों का जो तेरे भाईहैं और उनका जो इस ग्रंथ की बातों को ग्रहण करतेहैं संगी
१० सेवक हों ईश्वर को भज। फेर उसने मुझे कहा कि तू इस ग्रंथ के आगम की बातों पर छाप मत कर क्योंकि समय
११ निकट है। जो अन्यायी है सो अन्यायीही रहे और जो मलीन है सो मलीनही रहे जो धर्मी है सो धर्मीही रहे
१२ और जो पवित्र है सो पवित्रही रहे। और देख मैं शीघ्र

आवताहों और मेरा फल मेरे संग है कि हरएक को उसके
१३ कार्य के समान पलटा देउं। मैं अलफा और उमगा आदि
१४ और अंत्य आरंभ और समाप्त हों। धन्य वे हैं जो उसकी
आज्ञा पर चलतेहैं कि वे जीवन के वृक्ष के योग्य होवें और
१५ वे उन फाटकों से नगर में प्रवेश करें। क्योंकि कुत्ते और
टोनहा और छिनरे और हत्यारा और मूर्त्तिपूजक और
जो कोई झूठ बोलताहै और उसे प्यार करताहै सब बाहर
१६ हैं। मैं ईसा ने अपने दूत को भेजाहै कि इन बातों की साक्षी
तुम्हें मंडलीयों में देवे मैं दाऊद का मूल और वंश और
१७ प्रातःकाल का तेजस्वी तारा हों। और आत्मा और दूल्हीन
कहतींहैं आ और वुह जो सुनताहै कहे आ और जो प्यासा
है सो आवे और जो कोई चाहे सो अमृत जल सेंत से लेवे।
१८ और मैं हरएक जन के लिये जो उन आगम की बातों को जो
इस ग्रंथ में हैं सुनताहै यह साक्षी देताहों कि यदि कोई
इन बातों में कुछ मिलावेगा तो ईश्वर उन मरियों को जो
१९ इस ग्रंथ में लिखीऊई हैं उसमें मिलावेगा। और यदि कोई
इस ग्रंथ के आगम की बातों मेंसे कुछ निकालडाले तो ईश्वर
उसका भाग जीवन के पुस्तक और पवित्र नगर से और उन
२० बस्तुन से जो इस ग्रंथ में लिखीहैं दूर करेगा। जो इन बस्तुन
की साक्षी देताहै यह कहताहै कि मैं निश्चय शीघ्र आवताहों
आमीन हां हे प्रभु ईसा आ हमारे प्रभु ईसा मसीह का
अनुग्रह तुम सभों पर होवे आमीन।